सविनय प्रार्थना

प्रियवर मित्रों !

प्रथम भाग तो आप देखही चुके हैं ।

अब यह द्वितीय भाग सेवा में उपस्थित किया जाता है ।

इस पुस्तक के सब गाने रेकर्डोंसे सुन कर लिखे गये हैं । बहुत सम्भव है कि मेरे लिखने में या छपने में कुछ भूल रह गई हो और वह आपके दृष्टि गोचर हो तो कृपया मुझ को क्षमा करें और यदि सम्भव हो तो मुझको सूचित करें जिस से आगामी छपाई में शुद्ध करदी जावे ।

अब तीसरा भाग जिसमें नक़लें, हंसी, ड्रामों—और ज़ोनो फोन रेकार्डों का गाना होगा शीघ्र उपस्थि करूंगा । यह तीसरा भाग बहुत ही मनोरंजक होगा । आशा है कि आप सज्जन महाशय मेरे उतसाहको बढ़ा कर कृतार्थ करेंगे ।

प्रार्थी—

एस० पी० जैन

हिन्दी ग्रामोफ़ोन रेकर्ड सङ्गीत

द्वितीय भाग

जिसमें हिन्दुस्तान के बड़े प्रसिद्ध प्रसिद्ध गवैयोंके ५०० रेकार्डों के पूरे पूरे एक हज़ार गाने हैं ।

जिसको

मिस्टर एस० पी० जैन

कलकत्ता

ने संग्रह किया

प्रथम बार
२०००



मूल्य केवल १॥।)
रेशमी जिल्द २॥)



प्रथम भाग

हमने यह पुस्तक बड़े परिश्म से तैयार की है जिसमें ५०० हिन्दुस्तानी रिकर्डों के १००० पूरे पूरे गाने दिये गये हैं। ऐसी पुस्तक की हमारे पास लोगों की वर्षों से फ़रमाइश थी जिस के लिये हम वर्षों से पश्रिम कर रहे थे और अब हमारा परिश्रम सफल हुआ है।

इस पुस्तकमें तरह तरहके और बढ़िया बढ़िया गवैयोंके गाये हुए गाने दिये गये हैं। ग्रामोफ़ोन रिकर्ड पसंद करनेमें तो इससे बढ़कर दूसरी कोई पुस्तक नहीं है क्योंकि आपको इससे रिकर्डका पूरा गाना मालूम होगा।गानेके शौक़ीन महाशय भी इससे बहुत ही लाभ उठा सकते हैं क्योंकि इतने गाने और रंगत किसी भी पुस्तकमें नहीं मिल सकते। इतने गुण होते हुए भी हमने मूल्य केवल १॥) रक्खा है।

रेशमी जिल्द सहित २॥)

जैन ग्रामोफ़ोन रेकड संगीत

इस पुस्तकमें जैन रेकडों के पूरे गाने दिये गये हैं। मूल्य ।)

बंसी मंजरी (हारमोनियम शिक्षक)				ताल मंजरी (तबला शिक्षक)
प्रथम भाग	२ भाग	३ भाग	४ भाग	
१)	१।)	१)	१)	१) रुपिया

विषय सूची



द्वितीय भाग

मिस अख़्तरी जान

P. 4440. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ४४४०

हम आज मिलके निकालेंगे हौसले दिल के
कब आय यार से लिपटेंगे ख़ाक में मिलके—हम आज - - -
यह क्या हुआ कि जुदा हो गये गले मिलके
अभी तो ज़ख़्म भी भरने न पाये थे दिलके—हम आज - - -
वह मुझको मारे जिलाये आख़िर वह मेरा मालिक है
हमारी जान भी क़ातिल की हम भी क़ानिल के—हम आज - - -
यह किसने आते ही उलटी नक़ाब चेहरे से
यह दिल मिलाने लगे सब चिराग़ महफ़िल के—हम आज - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल काफ़ी

अन्दलीबे ज़ार को हसरतों ने मिटा दिया
कम्बख़्त सब ना मिली नामने गुल चुरा दिया—अन्दलीबे - - -
ज़ोरे क़दम की याद से क़िस्मत नाज़ कर दिये
आशिक़े नामुराद प ख़ंजरे ग़म चला दिया—अन्दीलीबे - - -

जाओ सिधारो मेरी जां तुम प ख़ुदा की होवे मार
बिछड़े हुए मिलेंगे फिर क़िस्मत ने गर मिला दिया—अ० - - -

—:-०-:—

P. 4589. **ग़ज़ल क़व्वाली** पी० ४५८९

क्यों जारहा है मेरी मिट्टी को ख़्वार करके
पामाल ठोकरों से मेरा मज़ार करके
मुझ से ही पूछता है तू रख़ दिल में क्यों है
तीरे नज़र को मेरे सीने के पार करके—क्यों - - -
पहिले नज़र मिला कर ओ बेवफ़ा सितमगर
क्यों फेर ली निगाहें आंखों को चार कर के—क्यों - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

दिल चुराये हुए दुज़दीदा नज़र जाता है (आता है)
कोई ढूंढ़े हुए अल्लाह का घर जाता है—दिल - - -
आप क्या जानिये तस्कीन की सूरत क्या है
हाथ रखने से कहीं दर्द जिगर जाता है—दिल - - -
क़त्ल करते हो तो तलवार की हाजित क्या है
मरने वाला तो फ़क़्त बात प मर जाता है—दिल - - -
काम इनसान का इनसान से पड़ता है ज़रूर
बात रह जाती है और वक़्त गुज़र जाता है—दिल - - -

—:-०-:—

P. 4659. **ग़ज़ल** पी० ४६५९

ख़ुदा ख़ुदा न सही राम राम कर लेंगे
हरम से बाहर जाकर क़याम कर लेंगे
उदू की कुन्द छुरी से गला कटा लेंगे

लहू लगाके शहीदों में नाम कर लेंगे—ख़ुदा - - -
तुम मिलो ग़ैर से जा अपने चाहने वालों से
हम अपना और कहीं इन्तज़ाम कर लेंगे—ख़ुदा - - -
नमाज़ इश्क़ पढ़ेंगे शराब ख़ाने में
हम अपने दिल जलोंका कोई नाम कर लेंगे—ख़ुदा - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हर एक बात प कहते हो तुम कि तू क्या है
तुम्हीं बताओ यह अन्दाज़े गुफ़्तगू क्या है
रगों में दौड़ने फिरने के हम नहीं क़ायल
जब आप हीसे न टपका तो फिर लहू क्या है—हर - - -
जला है जिस्म जहां दिल भी जल गया होगा
बुरे फंसे हो जो आप रख जुस्तजू क्या है—हर - - -
बना है जो काम साहब फिरे हैं इस रस्ते
वगर न शहर में ख़ालिक़ की आबरू क्या है—हर - - -

—:-०-:—

P. 4817. **ग़ज़ल** पी० ४८१७

लचक है शाख़ों में जुंबिश हवा है फूलों में
बहार झूल रही है ख़ुशी से झूलों में
वह गुलोज़ार से तुलते हैं रोज़ फूलों में
उन्हीं की ख़ाक शरीफ़ आज है बगूलों में
रक़ीब साथ है उनके यह ख़ौफ़ है हम को
कोई शगूफ़ा न छोड़े हमारे फूलों में
नज़र जो आये तेर बाल बाल में मोती
वह आके हंसी झूलते हैं झूलों में

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दिल फ़क़त हमने दिया था आज़माने के लिये
गोश च करने लगा था इलतजाने के लिये
हमद में जो देखा तुम को ग़ैर की हाजित है क्या
हम कोई जाकर तुम्हारे नाज़ उठाने के लिये—दिल - - -
ख़ून बिसमिल का बहेगा मिस्ल खाने जायगी
वह हिना कर बहा रहे हैं रंग लाने के लिये—दिल - - -
चश्म से रुखसार देखे मेंहदी रचाने के लिये
यार को दे दी लिये थे नाज़ उठाने के लिये

—:-०-:—

P. 4891. गाली तर्ज़ ग़ पी० ४८९१

फिर इन दिनों जो आमदे फ़स्ले बहार है
बादे सबा को छोड़ कर समधन सवार है
समधन तने प चोपटी का थानेदार है
मरती भवन का रहत मिला चौकीदार है—फिर - - -
डोंगी के इर्द गिर्द अगर के किवाड़ है
समधन लगाके हाथ को बेड़ा ही पार है—फिर इन - - -
पैकर मय तेरे दर की जो करते हैं दूर तक
समधन तुम्हारे दर के मय जानी मदार है—फिर इन - - -

दूसरी तरफ़ :— मज़ाकिया

बे हुनरी मेहरिया मेरे पाले पड़ी—बे हुनरी - - -
मैंने कहा ज़रा खाना पका ले
आटे को फेंक फांक चूल्हे को तोड़ ताड़ आगे खड़ी—बे - - -
मैंने कहा ज़रा न्हाय धोय ले

होटों को नोंच नाच पानी को फेंक कांक लुंजी खड़ी—बे - - -
मैंने कहा ज़रा मिस्सी लगा ले
मिस्सी को फेंक फांक दांतों को तोड़ ताड़ कुबड़ी खड़ी—बे - - -
एक पान दो पान तीन पान जंगी—आय राजा की सवारी
आई मैं खड़ी थी नंगी ज़रा देख लेवो (आय आंय) देख लेओ—बे - -
मैने कहा ज़रा सुर्मा लगा ले
सुर्मे को फेंक फांक आंखों को फोड़ फाड़ अन्धी खड़ी—बे - - -

—:-०-:—

मिस असग़री जान

P. 8865. कजरी पी० ८८६५

कि जनियां ग़ज़ब उठे तोरे जोबना केहकर जियरा मरिहोना - - -
जोबन जवानी ज़ोर किये हैं सीधे पग धरिहोना-कि जनियां ग़ज़ब - -
कहत मुरौवत बीती जवानी फिर का करिहोना—कि जनिमां ग़ज़ब - -
कि जनियां ग़ज़ब - - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— कजरी

रामां चलो जात मुसकात पिया संग गोरी रे हरी
अरे रामां सोने की थरिया में जौना बना डारे रामां रे हारी
अरे रामां चली जात - - - - -
अरे रामां सोने का गड़वा गंगा जल पनिया रामां रे हारी - - -
अरे रामां पनिया पीवन नहीं देत पिया संग गोरी रे हारी - रामां - -
अरे रामां पसा पान पंच बीड़ा बनाया रामां रे हारी
अरे रामां पिया रचन नहीं देत हां हां रे रामां पिया रचन नहीं देत
पिया संग गोरी रे हारी—अरे रामां चली - - - -

P. 8954. भजन पी० ८९५४

तुम बिन नाथ सुन को मेरी - -
जल डूबत गजराज उभारो
धायो नाथ न आया देरी—तुम बिन नाथ - - - - - -
भरी सभा में लज्जा राखे
खींचत चीर दुःशासन मेरी—तुम बिन नाथ - - - - - -
गहिरी नदिया अगम बहत है
खेवत नाव बिना गुन घेरी—तुम बिन नाथ - - - - -
सूर श्याम आसा चरन की
देव दरश करो न देरी—तुम बिन नाथ - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

चल मन प्रयाग बेनी तीर - - -
घाट घाट पर राम मिलत हैं
बंधवा पर महाबीर—चलो मन प्रयाग - - - -
गंगा नहाये से पाप कटत हैं
निर्मल होत शरीर—चलो मन निर्मल - - - -
गंगा गोरी जमना सांवरी
दोनों बहत एक तीर—चलो मन दोनों बहत - -
तुलती दास आस रघुबर की
कब मिलि हैं रघुबीर—चलो मन कब - - -
चलो मन प्रयाग बेनी - - -

P. 9052. ग़ज़ल क़ौव्वाली पी० ९०५२

किन बलाओं में है जाने बुलबुले नाशाद भी
बाग़बां भी ताक में गुलचीं भी है सैयाद भी

छोड़ना मेहमां को था मेहमां नेवाज़ी से बईद
साथ पैकां के निकल आया दिले नाशाद भी
यास है कुछ मेरे दिल में कुछ उमीदे वस्ल है
ख़ूब बसती है कि है बरबाद भी आबाद भी
ग़ैर के हमराह आये हैं अयादत के लिये
लुत्फ़ के परदे में होती जाती है बेदाद भी—किन बलाओं में - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

छुरी के नीचे अभी जान ज़ार बाक़ी है
लगा हुवा अभी तसमे का तार बाक़ी है
न हम से प्यारी अदायें न प्यार की बातें
शिकायतें दिले उम्मीदवार बाक़ी है
अगर वह दिल को दुखायें तो दिल के मालिक हैं
अगर वह जब्र करें अख़तियार बाक़ी है
वह क़त्लगाह से जाते हैं कोई बढ़के कहो
निसार होनेको एक जां निसार बाक़ी है

P. 9232. भजन पी० ९२३२

मधुबन तुम रहत खड़े - - - - - - - - - - - -
तुमरे तरे प्रभु बन्सी बजावत इत उत रहत खड़े—मधुबन - - -
अधम निर्लज लाज न आवे, फलत फलत हरे - मधुबन - - -
हमरे तरे प्रभु बन्सी बजावत, जहां तहां रहत खड़े।
तुम न मेरी बृषभान दुलारी, भेटत अंग भरे—मधुबन - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

बजाये यार मोहना कैसी बंसुरिया - - - - - - - - -
जैसे सड़कियों पर मोटर चलत है

वैसे सबत चली जाय यार मोहना—कैसी बंसुरिता - - -
जैसे सड़कियों पर धूर उड़त है
वैसे सबत उड़जाय यार मोहना—कैसी बंसुरिया - - -
जैसे कढ़ैया में तेल जलत है
वैसे सबत जल जाय यार मोहना—कैसी बंसुरिया - - -

P. 9414. ठुमरी पी० ६४१४

डगर चलत मोसे कीनी रार - - - - - - - - -
दधि बेचन मैं न जाऊंगी—डगर चलत - - -
लपट झपट मटकी मोरी फोरी—सगरी चूनर गोरी
छल बलिया से मैं तो गई हार—डगर चलत - - -
शेर—इत से हम जात हथो उत से आवत शाम बजावत बीना
आन अचानक भेंट भई हम सकुचिन उन घूंघट छीना
डगर चलत - - - - - - - -

दूसरो तरफ़ :— दादरा

तूने जादुआ डालारे अरे सांवरा
तेरे बाग़ की कोयल रे अरे सांवरा—तूने - - -
तेरे जंगल की हिरनी रे अरे बावला
तूने गोली मारा रे अरे सांवरा—तूने - - -
तेरे तालकी मछली रे अरे बावला
तूने बरछी डाला रे अरे सांवरा
तेरे महल की रनिया रे अरे बावला - - - - - - -
तूने नैना मारा अरे सांवरा - तूने - - -

P. 9617. दादरा पी० ९६१७

तेरे नैन हमें मारा हो ज़ालिम - - -
जाइ बैठो बगिया के किनारे
अइबै हो ज़ालिम फूला बिनन हम अइब हो ज़ालिम।
मारा हो - - -
जाइ बैठो कुइयां के किनारे
अइबै हो ज़ालिम पानी भरन हम अइबै हो ज़ालिम।
जाइ बैठो सेजिया के किनारे
अइबै हो ज़ालिम सेजा सोवन हम अइबै हो ज़ालिम।

दूसरी तरफ़ :— दादरा

दिखाये जाव जनियां तिरछी नजरिया - - -
इन नैनन की मारी मरत हूं
दिल प कटरिया लगाये जाव जनियां
मन में मोरी आग लगी है
ऐसी लगी को बुझाये जाव जनियां
शेर—क़मर को होता है हर माह में कमाल व ज़वाल
तेरे भी हुस्न का आलम रहे रहे न रहे
दिखाये जाव जनियां - - -

मिस अज़ीज़न और लतीफ़न

P. 5656. गाना मोटर पी० ५६५६

मोटर वाला रे मोटर को ज़रा डांट ले—मोटर - - -
सास मोरी बसमें ससुर मोरा बस में

बाला जोबन रे नहीं मोरे बसमें—मोटर वाला - - -
देवर मोरा बस में देवरानी मोरे बस में
बाला जोबन रे नहीं मोरे बस में—मोटर - - -
जेठ मोरे बस में जिठानी मोरे बस में
बाला जोबन रे नहीं मोरे बस में—मोटर - - -
किस प पहनू हंसला किस प पहनू कठला
किस प करूं मान गुमान मोरे रसिय—मोटर वाला - - -
किस प सारूं सुर्मा किस प चाबूं बिड़ियां
किस प करूं मान गुमान मोरे रसियां—मोटर - - -
किस प चाबूं पान—गोला लगे पान तमाखू बिन रसिया—मोटर - -

दूसरी तरफ़ :— रसिया

वस्ल की बे घर जुदाई देख ली—कि हक़ने क़ुदरत दिखाई देख ली
दिलके आइने में तस्वीरे यार—जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली
सपेहरा बनके आइयो चलूंगी तेरे साथ
ज़रा हंस के बीन बजाइयों चलूंगी तेरे साथ
पूरी की खाने वाली तुझे टुकड़े लगें उदास
टुकड़ों में गुज़र करूंगो चलूंगी तेरे साथ—ज़रा - - -
पानी की पीने वाली तुझे शर्बत लगे उदास
शर्बत में गुज़र करूंगी चलूंगी तेरे साथ—ज़रा - - -
बीड़ों की चाबने वाली तुझे पत्ते लगें उदास
पत्तों में गुज़र करूंगी चलूंगी तेरे साथ—ज़रा - - -
महलों की रहने वाली तुझे धरती लगे उदास
धरती में गुज़र करूंगी चलूंगो तेरे साथ—ज़रा - - -

P. 6367. रसिया पो० ६३६७

बैरन बीन बजी आधी रतियां—बैरन - - - -
सोने की थलिया में जुमना परोसा
तू खाओ मुन्ना जान करो दो दो बतियां—बैरन - - - -
धब्बा अगर बशर में लग जाय तो धोकर छूटे
दाग़ बदनामी का लग जाये तो क्यों कर छूटे—बैरन - - -
पांच पान का बीड़ा लगाया
तू चाबो मुन्ना जान करो दो दो बतियां—बैरन - - - -
चुन चुन कलियां में सेज बिछाई
तू सो मुन्ना जान करो दो दो वतियां—बैरन - - - -

दूसरी तरफ़ :— रसिया

चला जा चन्दा बदले की ओट—चला जा - - -
सोनेकी थलिया में जुमना परोसा
खिलाई जाई कर घूंघट की ओट—चला जा - - -
पांच पान का बीड़ा लगाया
चबाई जाई कर घूंघट की ओट—चला जा - -
बेला चमेली के हर्वा गुंदाये
पिन्हाई जाई कर घूंघट की ओट—चला जा - - -
चुन चुन कलियां में सेज बिछाई
सुलाई जाई कर घूंघट की ओट—चला जा - - -
भोर भई बिरियां गत बिरियां
भगाई जाई कर घूंघट की ओट—चला जा - - -

मिस बिब्बो जान

P. 1128. पहाड़ी पी० ११२८

अलबेला छैला ऐसा लावेंगे जो रंगीला
नई आन का नई बान का नई शान का - अलबेला - -
मोटर गाड़ी की सैर करावे ऐसी शान का-रंगीला छैला ऐसा लावेंगे -
बड़ी मोटर बिठाने वाली अरी चल चल चल
बड़ी बातें बनाने वाली अरी चल चल चल
नये नये फ़ैशन गोरे गोरे काजल
बड़ी फ़ैशन दिखाने वाली अरी चल चल चल
साइकिल बिठलाकर जी बहलावे - ऐसा अबबेला छला - - -
मोटर - - - बड़ी - - - बातें - - साइकिल - - - - -

दूसरी तरफ़ :— नाटक

तू ला ला ला ला ला
भर भर जाम पिला गुले ला ला बनादे मतवाला
तू ला ला ला ला तू ला ला ला ला
भर भर जाम पिला गुले ला ला बनादे मतवाला
फ़स्ले बहार है जोबन निखार है
शीशेमें मय और बस पहलू में यार है - ला ला ला ला - भर - - -
फ़स्ले - - - पीके - - ला ला - - भर भर - - -

मिस चुन्नी जान

P. 8955. ग़ज़ल पी० ८९५५

वोह हम से तनकर अलग हैं बैठे, बला के ग़मज़े दिखा रहे हैं

यही मोहब्बत का इम्तिहाँ है, जो मुझको नाहक़ सता रहे हैं
मैं उनका आशिक़ था उनका शैदा अबस है मरने का मुझको सदमा
हमारे फूलों में आये हंसते गले में दुशमन के बाँहें डाले
ग़रज़ उन्हीं का है सारा जलवा, तमाशे अपने दिखा रहे हैं
कहीं है लैला कहीं है अज़रा कहीं है शीरीं कहीं ज़लेख़ा
यह तुरफ़ा अन्दाज़े ताज़ियत है, यह नाज़ किसको दिखा रहे हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

रोज़ बेदाद नई माह लक़ा करते हैं
हम न उफ़ मुंह से न शिकवा न गिला करते हैं
किस तरफ़ रुख़ निगहे नाज़ का है ओ शफ़्फ़ाक़
आज क्यों तीर मेरी जान ख़ता करते हैं
काफ़िरे इश्क़ में मज़हब है न मिल्लत है कोई
मस्त हम बादये उलफ़त से रहा करते हैं

P. 9346. ग़ज़ल पी० ९३४६

अपनी हसती का अगर हुस्न नुमायां होजाय
आदमी कसरते अनवार से हैरां होजाय
देनेवाले तुझे देना है तो इतना दे दे
कि मुझे शिकवये कोताहिये दामां होजाय
ओ नमक पाश तुझे अपनी मलाहत की क़सम
बात तो जब है कि हर ज़ख़्म नमकदां होजाय
ज़ाहिदा उसको कहीं जाने की ज़रूरत क्या है
काबा जिसके लिये संगे दरे जानां होजाय

दूसरी तरफ़ :— दादरा

जो मैं जानती बिछुड़त हो सैयां घंघट में आग लगादेती

मानले मोरी बतिया धड़के हैं मोरी छतिया
मोहे न छेड़ो सयां - - -
कर जोड़त हूं मिनती करत हूं
और पड़ूं पयां - मोंहे न छेड़ो - -
आबरु का पास था जबतक कि हालत और थी
अब तरद्दुद क्या कि जब दर दर सदा देने लगे
अच्छा वफ़ा पिया। जावहीं तुम्हीं मौजी पिया को चैन न आवे
कैसी करूं गोइयां - मोंहे न छेड़ो सैंया - - - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

अरे कन्हैया मैं तो हारी रे छोड़ो मेरा हाथ - - - -
कानन कुण्डल गल बिच माला
अरे घर घर अलख जगाऊं री छोड़ो मेरा हाथ
गंगा निकारे गऊ धन चारें
रुमुक झुमक चली आवैं री छोड़ो मेरा हाथ
कन्हैया मैं तो हारी रे - -
डोर डालियां पनिया भरन लगी—रुमुक - - अरे कन्हैया - - -

P. 9233. भजन पी० ६२३३

ईश्वर ? फ़क़्त तुम्हीं हो दुःख के मिटानेवाले
आवागवन छुड़ाके मुक्ति दिलानेवाले
दरया पहाड़ जंगल हर जा तुम्हारा जलवा
छोटे से ज़र्रे में भी तुम हो समानेवाले
माला तो हाथ में है दिल दाओं घात में है
क्या ख़ाक तुमको पाओं यह ख़ाक उड़ानेवाले

दूसरी तरफ़ :— भजन

जीमें बन जाने को और थामे जिगर बैठे हैं
साथ जाने को लखन बांधे कमर बैठे हैं
डरसे कुछ कहता नहीं हूं न जवाब अपना नहीं
टकटकी बांधे है चरणों प नज़र बैठे हैं
प्राण जाओं रहे तन यह अवध सुनने को
राम बन में हैं लखन चैन से घर बैठे हैं

P. 9347. थियेट्रिकल पी० ६३४७

पल छिन तड़पै मोरा जिया रे सांवरिया बिन - पल - - -
कल नहीं आवे मोरे हिया रे सिपैया बिन - पल - - (अलाप)
ग़म करो ना, पैयां पड़ूं मैं, मिनती मानो,
मनो मानो, मानो मेरी जान।
लगी बुझाये दिल की मेरी
अरे किसी ने दिल जो लिये तो लुभा लुभा के लिये
मगर हुज़ूर ने ख़न्जर लगा लगा के लिये
जो ले चुके तो लगे बेवफ़ाइयां करने
क़ुसूर ढूंढ़ते पैदा किये जफ़ा के लिये
अरे सबब किसी ने जो पूछा तो हंस के फ़रमाया
वही ख़ुदा के लिये था नहीं फ़ना के लिये
अरे गोइयां मैं कैसे रहूं

दूसरी तरफ़ :— मांड

हठ छोड़ सखी चल संग मेरे तोहे कांधा आज बुलावत है
किस सोच में बैठी मान किये उठ सोच मोहन घर आवत है

नहीं तुम बिन वांका चैन पड़त नहीं खान पान कुछ भावत है
नहीं मोर मुकुट कछु नहीं पहिने नहीं अङ्ग सुगंध लगावत है
नहीं धैनु चरावन जात सखी नहीं बन्सी नाग बजावत है
तेरी ऐसी हियो कठोर भयो तोहे शाम सुरत कर लावत है
जाको जोगी जन ध्यान धरत ब्रह्मादिक पार न पावत है
तोरी प्रीत में भूल गयो प्रभुता रखते बोल माथे कलावत है
एक बात न झूठ कहूं सजनी अब क्यों इतना तरसावत है
सिया माधो से बेग मिलो प्यारी वोह तो तेरी ही नाद बजावत है
हठ छोड़ - - -

P. 9416. ग़ज़ल पी० ६४१६

तेरे नाज़ो अदाने है मारा हमें - नहीं जीनेका अपना सहारा हमें
अपने बेगाने सभी कोई छूटे - हुवा जिस दिनसे इश्क़ तुम्हारा हमें
ग़ैरोंसे सोहबत रहती तुम्हारी - नहीं ऐसा है अब तो गवारा हमें
मुद्दत से फुर्क़त में मरता हूं तेरी - गले अब तो लगा ले खुदारा हमें

दूसरी तरफ़ :— दादर

दरद लावो बालम अभी उमर लरकैयां दरद लावो बालम - - -
जब सैयां तुम ब्याहन आये - खेलत रहयो पैयां पैयां - दरद - -
कर जोरत हूं मिनती करत हूं - सब हूं सुख दूं तोरे ठैयां—दरद - -

P. 9417. ग़ज़ल पी० ९४१७

तुम यह मुंह देखे की उलफ़त भी जताते क्यों हो
दिल तो मिलता ही नहीं आंख मिलाते क्यों हो
क्या तमाशा है मेरी जान भी वह लेते हैं

और फिर पूछते हैं जान से जाते क्यों हो
कोई दममें वही दुनिया से उठा जाता है
अपने बीमार से तुम हाथ उठाते क्यों हो

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

पूछ कर इस लिये हम पर वह जफ़ा करते हैं
लोग जाने कि यह इनका ही कहा करते हैं
इससे क्या बहस है बख़्शे या न बख़्शे कोई
हम ख़तावार मोहब्बत हैं ख़ता करते हैं
पूछ कर इस लिये हम पर वह जफ़ा करते हैं

P. 9618. मांड पी० ६६१८

महाराजा नजरिया लग जायेगी - - -
अमी हलाहल मध भरे कि शोयत शाम रतनार
जियत मरत झुक झुक पड़त जेह चितवत एकबार
महाराजा नजरिया लग - - - - - - - - -
प्रभु तू ऐसी कीजिये कि जैसी लुटिया डोर
आपन गला फंसाय के जल को लावै बोर
सलोने पिया परदेसा न जायो तोहे सौतनियां हर लेगी

दूसरी तरफ़ :— दादरा

मोहे छेड़त मोहन गिरधारी - -
डगर चलत मोहे देख दीनी गारी
नट खट नन्द जी के लाल न माने
बिन्दा सुनो मैं उन संग हारो
मोहे छेड़त - - -

P. 9619. ग़ज़ल पी० ९६१९

गर हम से कोई पूछे यह इश्क़ क्या बला है
बेशक मैं यह कहूंगी यह इश्क़ बेवफ़ा हैं
देखी जो नब्ज़ मेरी हंसकर तबीत बोला
दीदार हो सनम का येह इश्क़ की दवा हैं
लख़्ते जिगर है खाना ख़ूने जिगर है पीना
हाय यह फांस इश्क़ की हैं येह इश्क़ की ग़िज़ा है
साबिर कहूं मैं किस से क़िस्मत की कम नसीबी
दिलबर को दिल दिया है पर हम से वोह ख़फ़ा है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

तुरबत में सुला देगी एक दिन तेरी रूपोशी
इस परदे में निकलेगा आरामे हम-आग़ोशी
हम रंज भी पाने पर ममनून ही होते हैं
हम से तो नहीं मुमकिन ऐहसान फ़रामोशी
यारब तेरी हसरत में आंखे मेरी रोती हैं
मातम की शहादत है पुतली की सियह पोशी

मिस दुर्गा बाई

P. 9234. ग़ज़ल पी० ९२३४

वोह दिल में समझते हैं हुशियार हमीं हैं
हम उनसे यह कैहते हैं कि ऐयार हमीं हैं - वोह दिल - - -

यह तो कहो औरों प सितम क्यों नहीं करते
क्या चाहने वालों में ख़तावार हमीं हैं - वोह - - - -
इनकार तो करते हैं मगर यह नहीं कहते
हां हमने लिया दिल तेरे दिलदार हमीं हैं
वोह दिल में समझते - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

तासीर दो तरह की है रफ़्तार यार में
कोई तड़प रहा है दिले बेक़रार में
ज़ालिम तू मेरा हाल ज़रा आके देख जा
आंखें खुली हुई हैं तेरे इन्तिज़ार में - तासीर दो तरह - - -
आईने में वोह देखते हैं अपनी अदायें
मैं महवे दीद था वोह थे अपने सिंगार में - तासीर दो तरह - - -

P. 9348. तराना कामोद पी० ९३४८

धारा धीम, धारा धीम, धीम धीम ता ता दानी
ओ दे ने ता ना तम द्रे ना ता दानी दोस्त धारा धीम
ज़िहे नक्श पाये बर दोश अहमद
मोहरे नबूवत मुक़द्दम नशीन अस्त - धारा - - -

दूसरी तरफ़ :— मालकोस

बोले, काले की चिरैया बोले, पर उरसों, काले - - -
हमसों औधू बिध गये सदा रङ्ग। आज हू न आये
पन्थी डोरैं काले की चिरैया - - -

P. 9415. **बेहाग** पी० ९४१५

लगंर ढीठ मग मग रोकत बरजोरी
सजनी कै बिध पनियां भरन सागर को जांऊ - लगंर - - -
हुं लाजन मरी जात हूं दे छाड़त नन्द को ढोटा
निलज मान भई दूबर भई बस बो यह ठाम
राज करो गोकुल गाम - लगंर ढीठ - - -

दूसरी तरफ़ :— **बिहाग**

प्रीत का काम कठिन है साजन - - -
नयन बहे इन बिन बदरारे
रैन गंवाई का हूं सौतन संग - प्रीत का - - -
साजन उपजत दुःख वाकन में लाखन - प्रीत - -

P. 9620. **ग़ज़ल** पी० ९६२०

फ़ितनागर लुत्फ़ के परदे में जफ़ा करते हैं
मुझसे बे-मेहरिये दुशमन के गिले करते हैं
वाह किस लुत्फ़ के परदे में जफ़ा करते हैं
सब्र बनकर कहीं बैठे कहीं अरमां बनकर
सब तेरे नाम को दिनरात रटा करते हैं
लोग क्यों दर्द मोहब्बत की दवा करते हैं
मरनेवाले भी कहीं मर के जिया करते हैं

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

हसीनों से बे-फ़ायदा गुफ़्तगू है
जफ़ा उनकी आदत सितम उनकी ख़ू है
गला काटना दस्ते नाज़क बचाकर

बहुत गम क़ातिल हमारा लहू है
इतात्रत में रक्खी है ऐसी कचहरी
न कहने में तू है न क़ाबू में तू है
चले हैं छुरी फेर कर कोई कह दे
कि दामन में आशिक़ का ख़ूने गुलू है

मिस गोहर जान

P. 8957. **ग़ज़ल** पी० ८९५७

दिले नाकाम की हसरत न जीते जी कभी निकली
कहा जब उनसे कुछ मैंने तो बस मुंह से "नहीं" निकली
अदू से रोज़ करते हो वफ़ा तुम वस्ल के वादे
मेरी हसरत भी तुमसे मेहरबां कहिये कभी निकली
तुम्हारी एक "हां" पर बस मरीज़े ग़म को सेहत है
मेरी जां मर ही जायेगा अगर मुंह से "नहीं" निकली
शबे वसलत किसी का हाय सिसकी भरके यूं कहना
बता बेदर्द क्या अब भी तेरी हसरत "नहीं" निकली
दिले नाकाम की हसरत - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

शबे विसाल जो हसने लिपट के प्यार किया
अदा ने और भी उस बुत को बेक़रार किया
लिये मैं बैठा था पहलू में चैन से दिल को
दिखा के जलवये दीदार बेक़रार किया
यह पाया तू ने मोहब्बत का अब क़रार ऐ दिल

उठाया बज़्म से उसने ज़लील व ख़ार किया
तपिश ने दिल की कफ़न तक लहद में फूंक दिया
ख़मोश आह चिरागां सरे मज़ार किया शबे—विसाल - - - -

P. 9349. ग़ज़ल पी० ६३४६

आप जिनको हदफ़े तीरे नज़र करते हैं
रात दिन हाय जिगर हाय जिगर करते हैं
ग़ैर के सामने यूं होते हैं शिकवे मुझसे
देखते हैं वोह उधर बात इधर करते हैं
दर व दीवार प भी रश्क मुझे आता है
ग़ैर से जब किसी जानिब वोह नज़र करते हैं
ग़ैर के क़त्ल प बांधी है बहाना है फ़क़त
खींचकर और भी पतली वोह कमर करते हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

माशूक़ का तो जुर्म हो आशिक़ ख़राब हो
कोई करे गुनाह किसी पर अज़ाब हो
जलता नहीं रक़ीब ताअज्जुब की बात है
बिजली तुम्हीं ज़मीं प तुम्हीं आफ़ताब हो
साक़ी हमारे जाम में क्यों बाल पड़ गया
ऐसा न हो कि ग़ैर की झूठी शराब हो
दुनिया से रुसियाह चला हूं पसे फ़ना
मुंह पर मेरे कफ़न से जुदा एक नक़ाब हो

मिस ग़फ़ूरन जान

P. 9235. बेहाग पी० ६२३५

मुझे लाके शहरे बक़ा से क्यों सुए मुल्के हसती फंसा दिया
मेरे रहने की यह जगह न थी जिया कैसी बसती बसा दिया
न तो जी से शोला उठा मेरे न बलन्द नाला हुवा ज़रा
अरे इश्क़ तू ने यह क्या क्या मुझे किस बला में फंसा दिया
मुझे लाके - -
अभी जामे उम्र भरा न था कफ़े दस्त साक़ी से लड़ पड़ा
कहीं नीची नीची थीं हसरतें कि निशां क़ज़ा ने मिटा दिया

दूसरी तरफ़ :— दरबारी कानहड़ा

साक़ी ने साग़रे मये उलफ़त पिला दिया
आंखें मिला के क्या से मुझे क्या बना दिया
करते खुदा से इश्क़ गर बन जाते और कुछ
बन्दों के इश्क़ ने मुझे बन्दा बना दिया
कितने ही तीर निकलेंगे कितनी ही बरछियां
जब सीना चीर कर उन्हें हमने दिखा दिया

P. 9350. ग़ज़ल पी० ६३५०

लज्ज़ते दर्द मिली यार प शदा होकर
दिल में आता है तसौवर भी तमन्ना होकर
किस तवक़्क़ो प करे दर्द की ख़ाहिश कोई
तुमको नफ़रत है मरीज़ों से मसीहा होकर
मुद्दई कौन मेरे ख़ून का होता बिसमिल
रह गया चार पहर क़त्ल का चर्चा होकर

लुत्फ़ है या तो किसी को कोई अपना कर ले
या रहे दहर में इन्सान किसी का होकर

दूसरी तरफ़ :— बेहाग

तड़प रहा हूं मैं नीम बिसमिल अदू की हसरत निकल रही है
है नाज़ जिसका शवे तमन्ना वोह आज आंखें बदल रही है
हुवा है जिस दिन से इश्क़ तेरा हुवा यह अफ़सोस हाल मेरा
कि दिल कहीं है नज़र कहीं है जिसिम से हालत बदल रही है
गर अदू छेड़ छाड़ पर है इधर हम भी बिगाड़ पर हैं
जहां की नज़रों में है तमाशा हमारी आफ़त मचल रही है

मिस जवाहिर बाई

P. 1175. ग़ज़ल पी० ११७५

न दिल बाक़ी न दम बाक़ी ख़याले यार बाक़ी है
हमारी ख़ाक में भी हशरते दीदार बाक़ी है - न - -
यातो मेरे मुशफ़िक़ हो मेरे बेस डाला है
मेरे आगे यह फिर क्यों शोख़ीये रफ़्तार बाक़ी है - न - -
हज़ारों आगये ख़ानां मुझी पर जान देते हैं
मेरे यूसुफ़ की अब तक गर्मीये पेज़ार बाक़ी है - न - -
इलाही अब तो घर भी अगया हंगामेंय मह शर
लगा होने को अब तक वारये दीदार बाकी है - न - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

तेरी गली में ज़ालिम आदिल को ढूंढते है - -
जिस दिलने हम को खोया उस दिल को ढूंढते हैं—तेरी - - -

मुश्ताक़ अपने जो है आदिल को ढूंढते हैं
आदिल जो हैं वह अपने बिसमिल को ढूंढते हैं - तेरी - -
ऐसा ही जानते हम कि चर्चा हो रहे हैं
हल चल की जुस्तजू है क़ातिल को ढूंढते हैं - तेरी - -
मजनूं हैं अपने दिलके चन्दन यह कह रहा है
लली को ढूंढते हैं महमिल को ढूंढते हैं - तेरी - -

——:०:——

मिस खुर्शेद जान

P. 9055. ग़ज़ल पी० ६०५५

किसी हसीन से हम दिल लगाये बैठे हैं
क़सम ख़ुदा की हम हसतीं मिटाये बैठे हैं
मेरी नज़र में तो उनका कोई नज़ीर नहीं
वोह अपनी नज़रों में मुझको भुलाये बैठे हैं - किसी - -
ख़ुदा करे भी इधर हो निगाह क़ातिल की
कि सर कटाने को हम सर झुकाये बैठे हैं - किसी - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मुबारक हो दिले शैदा कि वस्ले दिलरुबा होगा
बहारे ऐश आती है हमें फ़ुरक़त हुवा होगा
वोह भोले पन से नामे वस्ल पर डर डर के कहते हैं
बता दो वस्ल क्या शै है नतीजा इसका क्या होगा
वोह नावाक़िफ़ हैं इन बातों से नाज़ुक है मिज़ाज उनका
दिले बेताब अभी वोह रुठ बैठेंगे तो क्या होग - मुबारिक - -

——:०:——

P. 9351. ग़ज़ल पी० ६३५१

ए बुतो दिल का लगाना कोई तक़सीर नहीं
न करो ज़ुल्म कि हम क़ाबिले ताज़ीर नहीं
जुम्बिशे अबरुये पुरख़म से गले कटते हैं (वाहवा)
क़त्ल करते हो मगर हाथ में शमशीर नहीं
नावके नाज़ से दम भर में बनाया बिसमिल
हम तो समझे थे कि तर्कश में कोई तीर नहीं—ए बुतो - - -
ऐ रशीद इश्क़ में हसनैन के तू भी रो ले
दिल वोह कमबख़ है जिस में ग़मे शब्बीर नहीं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दिले मुज़तर को आख़िर किस तरह फुरक़त में कल आये
इलाही उनसे मिलने का कोई पेहलू निकल आये
दोआये वस्ल हो लब पर ख़याले वस्ल हो दिल में
यह क्या बैठे बिठाये आंख से आंसू निकल आये
दिले मुज़तर - - - - - - - - - - - -
ख़ुदा के वासते नासेह न समझा ख़ुद समझ दिल में
न हो मतलूब पेहलू में तो फिर किस तरह कल आये

———— :c: ————

P. 9418. दादरा पी० ६४१८

आवो प्रीतम गले लग जावो
तेरे बिछड़े हो गई हूं बांवरी
आन लगें अंखियां इन्हीं संग जाके
सोच सोच रलना दिया उनकी घड़ी
न बिसारूं एक पल पल छिन छिन

प्रेम पीत काहू से न करिये आवत है नहीं चैन
लागे या करे सों - आवो प्रीतम - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

जोरा जोरी बहियां मिरोरी रे - - - - - -
बरजोरी कर पकरत पिया - जोरा जोरी - -
देखो देखो सारी मोरी चुरियां करक गईं - अङ्गिया मसक गई
ऐसी कोई करत ढिठाई - जोरा जोरी मीरी - -

———:-०-:———

P. 9621. दादरा पी० ६६२१

तुमही दुनिया मां अनोखी जवान गोइयां
पीतल की नथुनी पर इतना गुमान गोइयां
होता सोना तो चलतीं उतान गोइयां
टापटी के लेहंगे पर इतना गुमान गोइयां .
होता नैनूं तो चलतीं उतान गोइयां—तुमही - - -
फड़दे भतार पर इतना गुमान गोइयां
होता छैला तो चलतीं उतान गोइयां (वाह)

दूसरी तरफ़ :— होली

जावो न सतावो सैयाँ नींद हमें आई रे - - -
मैं तो न मानूंगी तुमरी ढिठाई रे
जावो न सतावो सैयां नींद - - - - -
राथे कुतवां सौतने हुई यह
सगरी रैन यहां गंवाई रे
जावो न सतावो - - - - - - - - - - -

—:-०-:—

मिस मल्का जान (पठियाला)

P. 5803.　　ग़ज़ल　　पी० ५८०३

लबे दरया हो सबज़ा हो घटा मय हो दिलबर हो
सुराही हो जाम दो मय हो साग़िर हो
यह पर्दा गुल कादा ये फूलोंका बिस्तर हो
मेरा पा तेरा सर हो तेरा पा मेरा सर हो
श्रयां हों इश्क़ की शैरें वह हो और या मैं हूं
न हो खटका रकीबों का न कुछ अग़ियार का डर हो
यह कोई बुलबुल है वह बुले तन की
सबा हो जाम हो या कोई और दिलबर हो

दूसरी तरफ़ :—　　ग़ज़ल

लगा के सुर्मा वह जिस दम निगाह करते हैं
फ़ल्क प फ़र्श वह मानिन्द रहा करते हैं
मैं अंदलीब हूं फ़रयाद तेरी सुन सुन कर
कूचे से उन के भी गुल आह आह करते हैं
बताया फ़रिश्तों ने मुझे बशर की चाह को
कूये रक्खे हुए कूये चाह चाह करते हैं

:०:

मिस मुशतरी जान

P. 8958.　　ग़ज़ल　　पी० ८९५८

हमारी सारे हसीनों में आबरु हो जाय
कमन्दे जुल्फ़ अगर हल्क़ये गुलू हो जाय

और जो दुनिया की ख़ूबी है दुनिया को मिले
मेरी तक़्दीर में अल्लाह करे तू हो जाय
दर्द दिलका क़िस्सा हम सुनायें क्यों कर
डाक में भेज दिया होके सुनायें क्यों कर
दिल को बहलायें किस तरह यह बहलता ही नहीं
यह तो कमबख़्त संभाले से संभलता ही नहीं - हमारी - -
बेवफ़ाई की सज़ा तुझको यही है काफ़ी
कुछ दिनोंके लिये पाबन्द वफ़ा हो जाये - हमारी सारे हसीनों - -

दूसरी तरफ़ :—　　ग़ज़ल

डरते डरते अर्ज़ की ऐ शोख़ हरजाई न हो
खींच कर ख़न्जर कहा शामत तेरी आई न हो
बेकसी रोती है ज़ालिम देख कर रखना क़दम
यां किसी हसरत ज़दा की लाश दफ़नाई न हो
उड़ गया बू की तरह वोह हुस्न जिस प नाज़ था
क्या करे उस गुल को कोई जिसमें रानाई न हो
ज़ब्ह करना उस जगह जहां प तमाशाई न हो
मेरी बदनामी न हो और तेरी रुसवाई न हो - डरते - -

:०:

P. 9056.　　ग़ज़ल　　पी० ९०५६

ज़ालिम तेरी आंखों ने दीवाना बना डाला
अपने रुख़े रौशन का परवाना बना डाला
तसवीर सनम रख दी मेमबर के क़रीब हमने
काबे में भी छोटा सा बुतख़ाना बना डाला
मसजिद में जो वायज़ ने कौसर का बयां छेड़ा

रिन्दों ने वहीं अपना मैखाना बना डाला
ज़ाहिद को हुवा पैदा पीने का नया चसका
कूज़ा जो वज़ू का था पैमाना बना डाला

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मेरे इसरार का एक शख्स तमन्नाई है
उनका अठला के यह कहना हमें नींद आई है
ख़मे अबरू का इशारा है कि सिजदा कीजे
आंख केहती है न मिलना बुते हरजाई है
चश्मे गिरयां जो आवो तो संभल कर आना
देखना पांव न फिसले यहां काई है
हम उन्हें प्यार करें वोह हमें दुश्मन समझें
वाह क्या दिल के लगाने की सज़ा पाई है

———— ० ————

P. 9236. भैरवीं पी० ६२३६

बिरहन के घर छाई बदरिया बरसत है घनघोर - -
पिया पपीहा पिउ नहीं आये काहे मचावे शोर - बिरहन - -
कोयलिया काली काली बोले बोली बोले बोले
जिया हिया में डोले कानों में रस घोले - बिरहन -
मन की कली खिली आवों सांवरिया सोहनी न जिया मोरी
बिरहन के घर - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

बड़ी कृपा है मो प तिहारी - घनश्याम मोरे गिरधारी
तुम वृजबासी गिरवर गिरधारी - तुमरे हाथन है लाज हमारी
मोरी नैया है तुमने तारी - घनश्याम मोरे गिरधारी - बड़ी - -

देवता तुम हो हम हैं पुजारी - करेंगे पूजा हर दम तिहारी
मोरी नैया है तुमने तारी - घनश्याम मोरे गिरधारी—बड़ी - - -

——— :-०-: ———

P. 9352. ग़ज़ल पी० ६३५२

पहले तो शौक़ में ख़ाके दरे मैख़ाना बनूं
फिर तेरे जाम से बेख़ुद बनूं मसताना बनूं
मस्त शैदा बनूं रुसवा बनूं दीवाना बनूं
शौक़ कहता है तेरे इश्क़ में क्या क्या न बनूं
जब से वोह सूरते माह परीशां नज़र आई है
दिल चाहे की मचता है कि मैं शाना बनूं
असरे जोशे जुनूं दोनों तरफ़ हो यकसां
तू अगर शमअ बने मैं तेरा परवाना बनूं—पहिले - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

जब कहा दिल तेरे मिलने का तमन्नाई है
हंस के फ़रमाते हैं दीवाना है सौदाई है
उनको आराइश है मैकदे में ख़ुदराइश
और यहां मौत का पैग़ाम अजल लाई है
दिल को थामे हुवे जब सामने आया तो कहा
ख़ैर है सच तो कहो चोट कहां खाई है
इस प शोख़ी कि दिया हार को उलझा कर
ताकि सुलझा न सकें हार टुकड़े कर दें
सर रखकर सो ही गये आतशे रुख़सार पर
दिल को चैन था तो नींद आगई अंगारों पर - जब कहा दिल - -

—:०:—

P. 9419. ग़ज़ल पी० ६४१६

तोरी सूरत समागई नैनों में यार - - -
लोज बैठे हुवे यासीन पढ़ी जाती है
लब जो हिलते हैं तो मुंह से यह सदा आती है—तोरी - - -
गोरे मजनूं पर किसी ने जाके पूछा यह सुख़न (वाह वाह)
इश्क़े लैला अब भी बाक़ी है तुझे ऐ ख़सता तन—तोरी - - -
क़ब्र से चिल्लाके बोला फाड़कर मुंह से कफ़न
ता क़यामत मैं न भूलूंगा तुझे ऐ जाने मन
तेरी सूरत समा गई नैनों में यार - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

तुम्हें शोख़ी दिखा देगा शबाब आहिस्ता आहिस्ता
अभी कमसिन हो टूटगा हिजाब आहिस्ता आहिस्ता (ओ हो)
कहीं ऐसा न हो दुशमन के कानों तक भनक पहुंचे
सवाले वस्ल पर देना जवाब आहिस्ता आहिस्ता
किसी की क्यों करें मिन्नत किसी के हाथ क्यों जोड़ें
कशिश ख़ुद खैंच लायेगी उन्हें आहिस्ता आहिस्ता
ज़रा तो ठैर जा ऐ दिल तू इतना क्यों तड़पता है
मिल ही जायेंगे वोह तुझसे कभी आहिस्ता आहिस्ता

—:०:—

P. 9622. ग़ज़ल पी० ६६२२

कम न होगी बेकली और चाकदामानी मेरी
इश्क़ है आशिक़ मेरा वहशत है दीवानी मेरी
शाम ही से वोह ज़ालिम यह कहकर सोगया
सुबह तक बैठे किये जावो निगहबानी मेरी

हाय उसका झेंपकर सवाले वस्ल पर कहना
क्या इन्हीं आंखों से देखोगे पशेमानी मेरी
वस्ल की शब ख़ुश तो था पर उससे यह ग़म कम न था
मुझसे रुख़सत हो रही थी पाकदामानी मेरी

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

अगर वोह क़त्ल करने को लिये तलवार बैठे हैं
वोह बिगड़े दिल हैं हम भी सरबकफ़ तैयार बैठे हैं
बला से तेरी अबरु कल की चलते आज चल जाये
कि इस जीने से मुद्दत हुई बेज़ार बैठे हैं
रक़ीबों को हसद क्यों है हमारी ख़सता हालत पर
किसी का क्या जो हम सायऐ दीवार बैठे हैं
चलो चलकर करें शराब नाब की तारीफ़
कि मुशताक़े सुख़न मेरे वहां सब यार बैठे हैं—अगर - - -

मिस नवाब ज़ान

P. 1121. भैरवीं पी० ११२१

खड़ा है देर से आशिक़ कफ़न बांध हुए सरसे
तेरे सदक़े तेरे क़ुर्बां मेरे क़ातिल निकल घर से - खड़ा - -
यह कह दो अब्र बारां से अगर बरसे तो यूं बरसे
कि जैसे मैंह बरस्ता है हमारे दीदऐ तरसे - खड़ा - - -
मिला होगा किसी को बावफ़ा कोई मुक़द्दर से
हुआ होगा किसी को वस्ल यां तो उम्र भर तरसे - खड़ा - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

यही दिन है दुआ ले लो किसी के क़ल्ब मुज़तर से
जवानी आ नहीं सकती मेरी जां फिर नये सर से - यही - - -
न बोलो वस्ल शब क्या क्या यह ठंडी हवा है
दुआ का काम भी अब तो लिया जाता है खंजर से—यही - - -
किसी की बेकली की क्या हुई तुम को गवारा हैं
तुम्हारी साजगी से हर एक हो जायेगा ज़ेबर से—यही - - -

—:०:—

P. 1715. सारंग पी० १७१५

तो को बरज रही सांवरिया तू तो पर घर मत नहीं जाय
तू तो पर घर मत नहीं जाय—तू तो - - - -
हमने जोबन तोपे खोया तू सौतन घर जाके सोया परेगी मोरी आह
बालम पर घर मत नहीं जाय—तू तो - - -
तातो पानी कर में न्हाई चुन चुन कलियां सेज बिछाई हमको गले लगाय
बालम पर घर—तू तो - - - -
अंगिया मेरी है पचरंगो इसमें छतियां हे नारङ्गी डर के दही मत खाय
तो को - - - तू तो - - -

दूसरी तरफ़ :— सारंग

जवानी बार बार नहीं आवे गोरा धन अबके मज़ा उड़ाले—जानी - -
या जुवानी में तीरथ करले मुथरा कर विन्द्राबन करले
बहुतन मूंड मुंडाय - जानी अबके - - - - जुवानी - - -
या जुवानी में हाथ रचाले—हाथ रचाले पैर रचाले
छतियन गले लगाले—जुवानी - - - जानी अब - - - -

या जुवानी में हरो रङ्गवाले, हरो रङ्गवाले पीला रङ्गवाले
सुर्ख़ सुनहरी गोटा लगाले जुवानी - - जानी - - -

——0——

मिस राधा बाई

P. 8959. भजन पी० ८९५९

गोकुल बाजत बधैया घर आनन्द भये - - -
बोलो री ए सासे अपनी चखा चढ़ाई नेग मांगं
कंधैया जी ने जनम लियो—गोकुल बाजत - - -
बोलो री ए ननंद अपनी सीता धराई नेग मांगं
कंधैया जी ने जनम लियो—गोकुल बाजत - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

झूलेउ मोरी सजनी राम झूलैं पालना - - -
अगर चनन का बना है पालना रेशम के फुन्दन
झूलेव मोरी सजनी कृष्णा झूलैं - - -

———:(-०-):———

P. 9057. भजन पी० ९०५७

मुनि केह दो जनक पुर होते चलें
मुनि कह दो सिया को बियाहे चलें
राजा जनक घर कुंवारी कन्या
मुनि केह दो धनुष को तोड़े चलें
राजा जनक घर यज्ञ रची है
मुनि केह दो यह कार्य करके चलें—मुनि - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

कहते हैं जिसे राम कन्हैया तुम्हीं तो हो - - - - -
मथुरा जन्म लीना गोकुल में प्रगट भये
यशोदा वोह नन्द गोद खेलैया तुम्हीं तो हो
जमुना में तो कूद गिरे काली नाग नाथा रे
ग्वाल बाल सब संग लिये खेल खेलैया तुम्हीं तो हो
कहते हैं जिसे राम - - - - - - -

—:-०-:—

P. 9237. भजन पी० ९२३७

प्रभु जी मैं धरूं तुम्हारो ध्यान
मोंहे कब रे मिलेंगे दीना नाथ
ले भोजन जब चली हैं मन्दोदरी फूल बाग़ को जाने
ले सीता भोजन करोरी लियो लङ्क को राज
स्वामी जी मैं धरूं तुम्हारो ध्यान
ऐसे भोजन न करूं री न लेउं लङ्क को राज
स्वामी जी मैं धरूं - - - - - -
लङ्का हमारे नाहे तोरे बाहे मन्दोदरी नार
स्वामी जी मैं धरूं - - - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

बसे मोरे नैनन में नन्दलाल - -
सांवली सूरत मोहनी मूरत गले बेजयन्ती माल
इधर सुधार से मुरली बाजे ओ बेजयन्ती माल
बसे मोरे नैनन में - - -

—:-०-:—

P. 9420. भजन पी० ९४२०

बन ठन आईं श्याम प्यारी - -
चन्द्रबदन मृगनयनी ओढ़ें सारी—बन ठन - - -
मालती गुंदाये केस प्यारे घूंघरवाले
मोतियन माल चाल मतवारी—बन ठन - - -
बेंदी भाल सरवन कुंडल पीठ चोटी पड़ी कारी—बन ठन - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

सखी नन्दलाल आवन नहीं पावें रे - - -
भीतर चरन धरन नाहीं दीजो रे—कपट की बातें बनावें रे
सखी नन्दलाल - - -
ऐसन को विश्वास न रहे—चाहे देख ललचायें रे
सखी नन्दलाल - - -

मिस राज दुलारी

P. 8960. भजन पी० ८९६०

राधा छुप गई शरम की मारी
आयो मोरी गलियन में गिरधारी
आयो मोरी गलियन में गिरधारी—राधा - - - - - -
भवें कमान तोर पलकन के नैनन अन्जन सारी
बृहा के बाण आन लगे हैं कैसे बचे राधा प्यारी
आयो मोरी गलियन में गिरधारी
राधा छुप गई शरम की मारी - - -

दूसरी तरफ़ :— मल्हार

जो बरसत मेघिया घर से जाते हो—तुमहीं ग्रनोखे बिदेस - -
जवंया पिया हा बरसत मेघिया घर से जाते हो
तुमहीं ग्रनोखे बिदेस जवैंया - - -
ऐसी समय में जाने न दूंगी
भर गये चलत नाले तलैया पिया—बरसत मेघिया - - -
गहिरी जो नदिया नाव पुरानी
तुमहीं खेवैया यार कन्धैया—बरसत - - -

P. 9058. सारंग पी० ६०५८

अब दोऊ झूलत रङ्ग हिंडोरे - - - - - - -
नन्हीं नन्हीं बूंदें पवन पुरवइया बरसत ब्योरे ब्योरे
हरी हरी ब्योम घटा चढ़ि आई सियाजी हंसे मुख मोर
ऐदल पैदल रथ दल गज कोट ने चो आवे
उप बिन बांग भंग बोले दादर मोर चकोरे
अब दोऊ झूलत - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— बिर्वा कालंगड़ा

झूला किन डालो रे हमरिमा
सुन री सखी पिया संग झूल रहियां—झूला किन - - -
दू जने झूलें दू झुलावैं दोनों मिल बैठी गर बहियां - - -

P. 9623. पहाड़ो पी० ९६२३

सुध भूली न राजा मोहनियां की - - - - -
होले होले कंगना खोल मोरे राजा
गूंज न टूटै कंगना की—सुध - - - - - -
होले होले चोली खोल मोरे राजा
नोक न टूटै जोबना की—सुध भूली न - - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी

आज मोरे भावन पिया आये
करूंगी खोल दिल प्यार
जब से गये मोरी सुधहू न लीनी
करूंगी खोल दिल प्यार—आज मोरे भावन - -

—:(- :: -):—

मिस शमशाद बेगम

P. 2326. दादरा भैरवीं पी० २३२६

कैसी कटेगी रतियां हां हां हां हां कैसे कैसे कटेगी रतियां
जब से गये मोरी सुधहू न लीनी तारे गिन रतियां—कैसे - - -
आप की आदत यह हरजाई जाने की नहीं
और हमें सर खपाने की आदत नहीं
अज़मा देखा और ज़रूरत आज़माने की नहीं
ताबे रंज फ़ुर्क़त उठाने की नहीं—कैसे - - -
महरबान पिया गले लगा लूं तन मन वारूं जुबना—हां कैसे - - -

दूसरी तरफ़ :— झुला सारंग

आज बगिया में झूल रही पियारयां
जोबन दिखावें ख़ुशियां मनावें रल मिल गावें नारियां—आज - -
तूने जो रश्के क़मर बाग़में डाला झूला
बन गया रुख़ पै तेरे चांद का आला झूला
इस क़दर न कभी देखा न भाला झूला
जाबनों कहीं मजेदार निराला झूला
चाहत बहुत परत तुम्हारे करत सिंगार नारियां—आज बगिया - -
इलाही अपना सनम ताबेदार क्यों कर हो
पराये दिल प मेरा अख़्तियार क्यों कर हो
इलाही क्या करूं वस्ले दीदार क्यों कर हो
क़रार तुझ को दिल बेक़ारर क्यों कर हो—आज - - -

मिस शमशाद बाई

P. 9238. सारंग पी० ६२३८

लगन तो से लागी रे सांवरा - - - - - - - -
टेर सुनाई मोहन मोरे मन भाई
सगरी रतियां मैं लागो लगन तो से लागो
करें सिंगार नेवल नार बन आई
ंग ढंग राखूंगी जियरा जी लगन तो से लागी

दूसरी तरफ़ :— सारंग

रघुबीर मोरी सजनी प्यारी लागे
प्यारो लागे री मतवारी लागे
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे
ऐसे कन्हैया मतवारी लागे री
रघुबीर मोरी सजनी - - - - - - - - - - -
रवि से केवल अनेक हैं केवलन से रवि एक
हमसे तुमको बहुत हैं तुम से हमको एक
रघुबीर मोरी सजनी - - - - -

P. 9421. पहाड़ी पी० ६४२१

मैं पड़ी रे गिरी रे डरी रे जान क्या जादू डारा
सौतन की मुठ चलाई रे जान क्या जादू डारा
तेरी गोरी गरदन पर वारी जाऊं सैयां
हाय मैं पेचों लिये खड़ी रे जान क्या जादू डारा
तेरी मोटी मोटी अंखियां पर वारी जाऊं सैयां
हाय मैं सुरमा लिये खड़ी रे जान क्या जादू डारा—मैं गिरी - - -
तेरी उजली बतीसी पर वारी जाऊं सैयां
हाय मैं मिस्सी लिये खड़ी रे जान क्या जादू डारा

दूसरी तरफ़ :— दादरा

हाय बेईमान मेरा हिया जला दिया
अरे दग़ा बाज़ मेरा हिया जला दिया
कांसी जो पीतल सक कोई लेइ
इस भोदू निखट्टू को कोई नहीं लेइ री

कलेजा जला दिया—हाय बेईमान - - -
अन्नी में देउं दुअन्नी में देउं
इस भोदू निखट्टू को धेला नहीं देइ री
कलेजा जला दिया—हाय बेईमान - - -
मेरे पछोकड़े बहै दरिया
इस भोदू निखट्टू से डूबा न जाय री कलेजा - - -
छोटी ननन्द को ब्याहे मंडेउ
इस भोदू निखट्टू को दाय जमे देरी कलेजा

मिस उषारानी (एमेचर)

P. 5533. दादरा पी० ५५३३

तिरछी नज़रियाँ से मार गये बालम—मार गगे बालम—तिरछी - -
कब की मैं ठारी रे अर्ज़ करत हूँ
कभी तो गले से लगाये मोरे हो बालम—तिरछी - - -

दूसरो तरफ़ :— दादरा

प्यारो री मेरो उमंग भरा जोबना—प्यारो री - -
मेरो कहा सैयां मानत नाहीं
अबना कहियो रे सैयां को किस जगको—प्यारो री - - -

मिस ज़ेबन जान

P. 141. ग़ज़ल पी० १४१

दिल के अन्दर यार का जलवा नज़र आया मुझे
गौर से देखा अजब नक़शा नज़र आया मुझे
एक चाहे राह वो सर गुज़िशता नज़र आया मुझे
आलिमे हैरत तेरा कूचा नज़र आया मुझे—गौर - - -
हर जगह था वही और सर गुल के नाज़ थे
दोनों में बस एक ही अल्लाह नज़र आया मुझे
पहन के आप कफ़नी बनके वह परदेनशीन
आप के पर्दे में दर पर्दा नज़र आया मुझे

दूसरो तरफ़ :— ग़ज़ल

लैला को यार तूने मजनूं बनाके मारा
ऐसे शकिस्ता दिलको दर दर फिराके मारा
गोजां गई बलासे यह दिल नहीं है पर्वा
मनसूर को अनुलहक़ किसने बहाके मारा—लैला - - -
मुझ को नमाज़ पढ़ते तिरछी नज़र से देखा
अल्लाह देख तोक़ीर घरमें ख़ुदा के मारा—लैला - - -

—:-०-:—

मिस ज़ोहरा ज़ान

P. 9239. भैरवीं पी० ९२३९

बलम हरजाई रे - - - - - -
तुम तो सौतन को ललना रे देना
हमका बनावे रे खिलाइया बलम रे—बलम हरजाई रे - - -

दूसरी तरफ़ :— पीलू

पिया तुम हो हरजाई नाहक़ तुमसे पीत लगाई
पिया तुम हो हरजाई - - -
लाख जतन करे एक हू न मानी ज़ोहरा न बस में आए
पिया तुम - - -
मिन्नत करे क़दम प गिरे इलतिजा करे
उस पर भी तू न माने तो फिर कोई क्या करे
एक दिल है और चारों तरफ़ ग़म का सामना
अल्लाह यह ग़रीब किधर जाय क्या करे
नाहक़ तुम से प्रीत लगाई—पिया तुम हो - - -

P. 9422. दादरा पी० ६४२२

सोवत निंदिया जगाय दीनो राम
ऐसे बेदरदी ने नींद हरी मोरी
वस्ल की रात तो राहत से बसर होने दो
शाम ही से है यह धमकी कि सहर होने दो
नावके नाज़ का पैहलू में गुज़र होने दो सोवन निंदिया - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

रात सैयां नहीं आये ग़ज़ब है नन्दी सितम है
वोह रही बोल कोयलया रे बोली
बैसे कि कुकै मोरा जियरा—ग़ज़ब है नन्दी सितम - - - -
जैसे कढ़ैया में मछली तलत है
वैसे तलत मोरा जियरा - - - रात सैंयां - - - -

मिस ज़ोहरा बाई

P. 9134. क़ौवाली पी० ६१३४

बतहा को बाशी मन मोहन जब अर्श प आयो आननमें
कासे कहूँ मैं सखी जब रूप दिखा मकानन में
बन लालमा की ज़ुल्फ़ दुता बन कजर मुखड़ा चांदन सा
कब मुझसे भला होगा किया की सिफ़्त लिखी पुराननमें—बतहा - -
जब वह मन मोहन बोल उठा हां मुख परसे पर्दा खोल दिया
लौलाक कलमा हक़ बोल उठा मुख नूर नबीकी अचानन में
ऐसा रूप दिखावत है मक्की मदनी कहलावत है
जब ओढ़ कमलया आवत है दिल छीनलेत इक रानन में—बतहा - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल नातया

अरी ऐरी सखी बतहा का बसैया सुपने में मन हर ले गये
आंख रसीली लौलाक का सुर्मा लौलेकलमे का चक्र फिरैये
साबिर मुख पर उजयारी उजयारे में हाजी को प्यार है
रहत सहत नाम धरैया—अरी एरी सखी - - -
यह नैया मंझधार पड़ी है तुमरे बिन नहीं कोई और खिवैया
हमरी बारी क्यों देर लगैया—अरी ऐरी सखी - - -

P. 9135. ग़ज़ल जिला दादर पी० ६१३५

बैठे हैं आज हाथ उठा कर दुआ से हम
बिगड़े बुतोंसे रूठ गये हैं ख़ुदा से हम
जाओ भी अब न दो हमें झूठी तसल्लियां
मर जायगे तड़प के तुम्हारी बला से हम

मजनू न करें जो हसीनों से तोफ़ीक़
दीवाना हैं निगाहें जो किसी बेवफ़ा से हम—बैंठे - -
तुमको हमारी रश्क पर उसको रोना ही चाहिये
यह क्या कहा कि रो न सकेंगे हया से हम—बैंठे - -
उम्र अबत तुम्हीं को मुबारिक जनाज़े ख़िद
ऐसे नहीं कि जान चुराये क़ज़ासे हम—बैंठे - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल ज़िला

पीके हम तुम जो चले झूमते मैखाने से
झुकके पुशपात कही किसी पैमाने से
शबको ख़िलबत में बोसा मोब्बत का हाय
शमय से मैंने कहा शमय ने पर्वाने स
हमने देखी है किसी शोख़ की मस्ती भरी आंख
मिलती जुलती है छलते हुए पैमाने से—पीके - -
बावफ़ा कहके तुम्हें याद हसीं करते हैं
जोहरा एक मात हुआ इश्क़में मिट जाने से—पीके - -

—:-०-:—

P. 9136. भैरवीं पी० ६१३६

मानो सैंयां बिनती मोरी—मानो - - - -
काहे पिया तुम हमसे रूठे
अरे आओ मनाऊं मनाऊं सैंयां—बिनती मोरी—मानो - - -

दूसरी तरफ़ :— पीलू

संवरिया नेहा लगाय दुख पाय - - - -
जबसे पिया तोसे नेहा लगे हैं
निस दिन जिया तड़पाय—सवंरिया - - -

P. 9137. मजमूआ पी० ६१३७

मोरा सैंयां तनक झुलादे
टीका हराना बागमें रे—मोतिया हराना सैंयां—तनक - - -
अपने पिया की मैं बड़ी रे दुलारी
कबहु न छूरे कन्हैयां—तनक - - मोरा - - -
टीका हराना बाग़ में हो मोतिया हराना रे सैंयां—तनक - - -

दूसरी तरफ़ :— काफ़ी

तूने महाराजा दरदिया ना जानी - - -
अरे दरदिया न जानी कसकया न जानी—तूने
सगरी रैन मोहे तरपत बीती—
ऐसे रूठे अरजिया न मानी—तूने महाराजा - - - -

P. 9138. कजरी पी० ६१३८

आज मन लेगई झांक झरोके झुलनिया वाली रे दैया
झुलनिय वाली रे दैया - - - आज मन लेगई - - -
चंचल चपल चपला सी चमकत है
नैन मिला गई रे दैया—झुलनिया वाली रे दैया - - -

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी

लागी मोरी बिन्दया चमकन लागी - - -
जब से पिया परदेस गवन कीनों
धड़कन लागी मोरी अंखिया (छतिया) चमकन - - -

P. 9139. **देस** पी० ९१३९

पिया को ढूंढन जाऊं सखी री
सैयां को ढ़ूंढन जाऊं सखी री निकस (बिरम) गये कौन देस
घरसे निकसी मैं जो अकेली संग नहीं मेरे कोई सहेली
पिया बिना तो रहयों अकेली उन्हींने भरा क्यों न भेस-निकस - -

दूसरी तरफ़ :— **खम्माच**

गारी दीनी नन्द को काहन
डगर चलत छेरे काहन—सगरी सखी अकेले काहन—गारी - - -
दधकी मटकी छीन लीनी गागर मोरी फोर दीनी
अचरा पकड़ धोरे कीनी—कैसे जाऊं सखी जमना न्हान—गारी - -
बन ही बन में मुरली बाजे बन में ही है तेरा राज
हमारे गाममें न जाओ आज—देखो सखी ऐसो है यह नन्दको लाल - -

P. 9140. **सारंग** पी० ९१४०

निर्मोही मोरा जियारा कैसा जादू डाला - - -
जब से पिया तोसे नेहा लगी हैं नैन भर लागे
बदन भरो जियरा—निर्मोही - - -

दूसरी तरफ़ :— **सारंग**

तेरी कटीली निगाहों ने मारा
निगाहों ने मारा रे अदाओं ने मारा—तेरी कटीली - - -
भवें कमान नंना रसीले—इन दोनो झूठे गवाहों ने मारा—तेरी - -

P. 9142. **खम्माच** पी० ९१४२

निराली शोखियां हैं ख़ुद बख़ुद इतराई जाती हैं
तेरी तस्वीर आइने से बाहर आई जाती हैं
उधर जाती है शाने से बिखर जाती हैं अर्श पर
चढ़ आया है जो बज़्म में तो पसवाई जाती हैं
नहीं है कोई बीमार अपनी तुर्बत बाग़े आलम में
हवा ऐसी चली है कली मुरझाई जाती हैं—निराली - - -
जलाया जिसके पर्वाने को है तू रे ज़ोहरा
क़यामत है वह सूरत कि महफ़िल भराई जाती है—निराली - - -

दूसरी तरफ़ :— **मजमूआ**

नजद से जानिबे लैला जो हवा आती है
दिले मजनू के भड़कने की सदा आती है
हूर बन कर तेरे कुशते की घरदार आती है
दामने तेरे से जिन्नत की ख़बर आती है—नजद - - - -
अबरू अश्कों को जिस्म आसानी से बारी
अब तो रोते हुए आखों को ग़ैरत आती है—नजद - - - - -
हिज्र दर्दे शब लादे कोई दर्द की ऐ सनम
ज़ाहिद नख़द हिफ़ाजत कि बला आती है—नजद - - -

P. 9143. **ज़िला** पी० ९१४३

काले के गई हो गवनवा राम
सुन्दर सारी मोरे मैके मैली भई—कालेके गई हो - - -
नाय तो तूने रंग नाय तो जोबना नाय तो पहरूं गहनवा राम
खोल घूंघट मुख देखे वह बापरो एक हू न माने कहनवा

दूसरी तरफ़ :— सावनी

पार जवैया ना—केवटा लादे रे मोरी नैया हमको पार जवैया ना
आन परो गहरे जलमें जहां नाव मल्लाह नहीं खेवन हारो
पियारो नहीं दिल जान नहीं अब तन नहीं कोई देत सहारो
काम क्रोध की धार अथाह बहे लोभ का भंवर फिरे अति भारो है
बृज के नन्द माफ़ करो अब लोटे पंथ को पार उतारो—केवटा - - -

प्रोफ़ेसर अबदुल करीम खां

P. 167. मुलतानी पी० १६७

कङ्गन मुंदरिया मोरी
कर दे रे मोरे जियरे सुंदरवा—कङ्गन - - - - -
ऐसी कर दे पिया मन भावे जगत सरहावे तोरे सुन्दर को जिवरे
कङ्गन मुंदरिया मोरी

बाबा काहन दास

दूसरी तरफ़ :— मालकोस

करम कर मेरे हाल पर ऐ करीम—तेरा नाम रहमान या है रहीम
तूही दोनों आलमका सुलतान है—जहांमें नमाया तेरो शान हैक—रम
फ़ना होनेवाला अजब कारोबार—रहे नूर तेरा सदा आशकार—करम

मि० अबदुल्ला खां

P. 9240. भजन पी० ६२४०

बंसीधर पिनाकधर गिरधरधर गंगाधर जटाधर
मुकुटधर ओम श्री हरिहर बंसीधर
सुधाधर बिषधर धरणीधर शशिधर
गोपीधर गौरीधर श्रीहरि शिव-शंकर
बंसीधर पिनाकधर - - - -
डमरुधर त्रिशूलधर शंखधर चक्रधर
प्राण से प्यारे संग गावत गुनी तान सेन
बंसीधर पिनाकधर - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

अभिगती अपरम पार शीश हूं न पायो पार - - -
जाकर जस सुजस कहो कौन कापर कहि आवे—अभिगती - -
शंकर सनका दिख ब्रह्मा से धरत ध्यान
सुख मन जिन अगम अगम नित नित गावे—अभिगती - - -
जाके डर डरत काल साईं नन्द को गोपाल
भगत हेत जिस मत घर बाछरा चरावे—अभिगती - -
देवन को देव जाको सुर नर मुनि लेवें भेद
ला हा राम दरस वाके चरणन चित लावे—अभिगती - -

मि० अबदुल्लाह

P. 9423. चौबोला पी० ६४२३

आवो जी लावो यहां पलंगे प तशरीफ़
आवो जी लावो यहां पलंगे प तशरीफ़
है तो इस दम आपका कहां मिज़ाज शरीफ़
कहां मिज़ाज शरीफ़ न बोलो किस सोच में तो पड़े हो
करो तर्क इस रन्जो अलम को किस आफ़त में जकड़े हो
करो सब्र क्या हक्का बक्का होकर चुप चाप खड़े हो
ज़रा मुख से तो बोलो अरे कैसी अंख मीची तो खोलो
जिगर पर क्या धुक धुक है चमक सब उड़गई क्यों
चेहरे का रङ्ग क्यों फ़क़ है
क्यों चेहरे का रङ्ग क्यों फ़क़ है चमक - -

दूसरी तरफ़ :— चौबोला

बांदी ने जाकर कहा है मौसी बीमार
और उसी वक्त बस चलदिया रहा न सब्रो क़रार
रहा न सब्रो क़रार हुई दिल ग़म को पैदाइस है
हुई दिल ग़म की पैदाइस है
अरे एक मिनट होसके न फिर डटने की गुन्जाइश है
क्या क्या धोका दिया करे क्या मेरी आज़माइश है
क्या यह धोका दिया करे क्या मेरी आज़माइश है
अरे हूं फ़रमांबर कहो मौसी क्या फ़रमाइश है

तेरी बांदी खंडी ने दग़ा की छल गदी ने
चखा दूं मज़ा प्यार का उड़ादूं सर छिनाल का - - -

मि० अल्लादिया

P. 2314. चौबोला पी० २३१४

मैं अपने घर पर भला आया खेल शिकार
बाज़ लगाया था मुझे खोल धरे हथियार
खोल धरे हथियार भोजी जल्दी पानी मुझे पिलादे
न्हावेंगे तो इस वक्त गरम जल करने को धरवादे
कमरे के अन्दर निवार का पलका मेरा बिछादे
तुरन्त भोजी खाना करके मुझको अभी खिलादे
कमरे के अन्दर निवार का पलका मेरा बिछादे
होक़ा ताज़ी करके चिलम को धरदे भरके
जो ज़रा देर लगाये ओबे अगर देर अबेर हो सज़ा पावे

दूसरी तरफ़ :— चौबोला

देवर हकूमत आप की हम प सही न जाय
देते जो कुछ दो मती हमें नहीं परवाय
हमें नहीं परवाय आज तुम किस दिमाग़ में छाये
तत्ता पानी कर खाना सब हुक्म चलाते आये
सुखन आप के हैं देवर मेरे दिलमें नहीं समाये
कहू जी क्या जनो अभी नोटंकी ब्याह कर लाये
सुखन आप के हे देवर मेरे दिलमें नही समाय

आप की खिदमतगार रहेगी बियाही नारी
जो तनखुवाह तुमरो पावे अष्ट पहर हर घड़ी पेशवाई में रहवे

मि० अल्लन

P. 5335. दादरा पी० ५३३५

बिगड़ी कौन बनाये नाथ बिन —बिगड़ी - - - -
गोकुल गांव गौवें चरावें मुरली के सुर सुनाय सुनाय—बिगड़ी - -
पापी पपीहा पिउ नहीं आये काहे मचावत शोर—बिगड़ी - - -
अपना प्यारा वह तो सिधारा—दिलों में मेरे सुहाय—बिगड़ी - -
गोकुल ननगी हां बिन तन मनमें—दिलोंमें मेरे सुहाय—बिगड़ी - -
गोकुल गांव - - - - - - - - - - - - बिनड़ी - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

मैं वरने करूंगी मैं आहो ज़ारी—सूरत जल्दी दिखालाना प्यारी प्यारी
बात्रेला नानेजित्ती और मैं ने हारी
ज़ख़मो हुवा है सैदा को कारी
चली सीने पर आरी कटारी—सूरत जल्दी दिखलाना प्यारी प्यारी
तुम हो देवता मैं हूं पुजारी
पूजा करूंगी हर दम तुम्हारी
चली सीने पै आरी कटारी—सूरत जल्दी - - -
बात्रेला - - - - सूरत - - - - पूजा - - - - सूरत - - -

मस्टर अमीर अली

P. 8962. ग़ज़ल पी० ८९६२

बरसों से तड़पता हूं मैं बिसमिल नहीं होता
इतना सा मेरा काम भी क़ातिल नहीं होता
जिस बज़्म में वह रुख़ से उठा देते हैं परदा
परवाना वहां शमअ पर मायल नहीं होता
तीर उसने लगाया वह पड़ा आके जिगर पर
कमसिन है वह क्या जाने इधर दिल नहीं होता
वह हम हैं कि ज़िन्दा हैं और उस कूचे में पहुंचे
बे मौत कोई खुल्द में दाख़िल नहीं होता

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

रहमतुल लिल आलमीं तुम जाने क्या परदे में हो
देखने में मुस्तफ़ा हो पर ख़ुदा परदे में हो
परदे परदे में तो यह हो, हो जो बे परदा तो क्या
यह भी अच्छा है कि तुम नामे ख़ुदा परदे में हो
मजमये अग़यार में मिलना भी मिलना है कोई
लुत्फ़ आजाये अगर रोज़ जज़ा परदे में हो
जिस का साया भी न हो और जिस का साया सब प हो
वह महम्मद मुस्तफ़ा हो या ख़ुदा परदे में हो;

—:०:—

P. 9059. मियां की टूडी पी० ९०५९

लोक लाज नहिं आवे मोरा जिया तोको चाहे
घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन मैंका बिरह सतावे, चैन न आवे

अमन पिया को आन मिलावे लोक लाज नहिं - - -
थारे डग बैठ रहूँगी लोक लाज - - -

दूसरी तरफ़ :— असावरी

हम रहें सो बृहन के पात
पट पट बीजे नाथ—बूंद पड़त हम रहें - - -

——:०:——

P. 9241. ग़ज़ल पी० ९२४१

रूबरू आइने के तू जो मेरी जां होगा
आइना एक तरफ़ अक्स भी हैरां होगा
हूं वोह दीवाना मेरे हाथ में रोज़े महशर
एवज़े नामए आमाल गरेबां होगा
ख़ाहिशे वस्ल तो क्योंकर कहूं लेकिन नासेह
देख लेने का तो हज़रत को भी अरमां होगा
एक परीरू ने हमारी यह बनाई सूरत
सैकड़ों परयों में क्या हाले सुलैमां होगा

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

आलम वही है सिन से उतरकर भी यार का
जोबन ख़िज़ां ने छीन लिया है बहार का
इस प्यार से फ़िशार दिये गोरे तंग ने
याद आगया मज़ा मुझे आग़ोशे यार का
हिलती नहीं हवा से चमन में यह डालियां
मुंह चूमते हैं फूल उरूसे बहार का
आईना देखते ही वोह ख़ुद लोट हो गये
आख़िर पड़ा ही सब्र दिले बेक़रार का

——:-०-:——

मि० बाबू क़व्वाल

P. 9060. ग़ज़ल पी० ९०६०

क़िस्मये शेख़ व बरहमन, हमने दिला मिटा दिया
बन्दये इश्क़ हो गये, दैर व हरम भुला दिया
साफ़ यह कह रहे हैं हम, करते हैं सिजदये सनम
चाहे बुरा हो या भला, कलमये हक़ सुना दिया
रहज़न व रहनुमा बने, काफ़िर व पारसा बने
हाय किसी के इश्क़ ने, क्या क्या हमें बना दिया

दूसरी तरफ़ :— क़ौवाली

मैं किसी ग़ैर से क्यों शिकवये बेदाद करूं
लुत्फ़ जब है कि तुझी से तेरी फ़रयाद करूं
दिल जिगर में तो कोई ख़ून का क़तरा न रहा
क्या तवाज़ो तेरी ऐ नावके जल्लाद करूं
दो घड़ी चैन से रहने की भी सूरत ही नहीं
तुझको क़ातिल के हवाले दिले नाशाद करूं
तुझको मुद्दत हुई रहते हुवे गुलशन में जलील
मैं कहां तक दहने ज़ख़्म से फ़रयाद करूं—मैं किसी ग़ैर से - - -

——:०:——

पण्डित विशम्भर दयाल

P. 3691. चौबोला हाथरस पी० ३६९१

वक्त पड़े पर या ख़ुदा और लई बाप की आस
वह भी दुशमन होगया अब जायें कौन के पास

जाये कौन के पास ज़मानत कहां से तुम्हें दिलावें
बड़े ग़ज़ब की बात किसी का कोई नहीं जहांमें
निकले दिल अरमान इनायत जो हुज़ूर फ़रमावें
तो एक बालापन का यार हमारा उस को भी अज़मावें
मुझे उसका भरोसा है तरस करलेगा वह मेरा
ज़मानत देकर छुटा लेगा रात भर मुझे बिठा लेगा
मेरे संग हो रवाना तुम चलो जहां यार गबरू की
मत जाने दो आगे मेरे इंकार करने की
धरूं सर क़दम तुम्हारे चलो तुम साथ हमारे
वह अगम निगम बताते तो धीरज धरूं जी—आफ़त में जी - - -

दूसरी तरफ़ :— चौबोला, हाथरस

आवोगे मेरे महल और खड़े करो पुकार
सुन पावें माता पिता करें आपको खुवार
करें आपको खुवार मत आवो महलन में
पाक मोहब्बत कर देखो नहीं होवें तसल्ली मन में
आप का क्या हाल होगा उठती हिलोर तन में
कली कली रंग भरी छिटक रही मेरे हुस्न जोबन में
हमारे महल में आकर और नहीं दिल जान टिक सकते
इस का - - - - - - - - -

—०—

स्वर्गीय महता ब्रह्म दास

P. 866. रामकली पी० ८६६

सुन तू सखी महमान घनश्याम की री पदम चर्णा मदन हरन मदन देत चमत्कार
तुम तो ऐसा तिलक भाल शंकर बरन बरन घनश्याकी री

आप दीन दीना नाथ की री—सुन - - -
जमना तट पर बंसी बजत है मोपे चलत कटार
तू तो सुन री सखी बिन्द्राबन धाम की री
राम दास बार बार चरनन पर दिया वार
रुक्मन की सखी सुधाम की री—सुन तू

दूसरी तरफ़ :— (शाम) आशा

ऐलो बसी कृष्णा (श्याम) मुमार कैसी अधिक बजाई
धुन बंसी की है निआरी वाह वाह वाह गिरधारी—कैसी - - -
बंसी नई बंधू की है ना बाली दुख में तान
पकड़ो दुख में धर्म धरी मेरी सखी के लेंगे आन
बंसी वाला मोहना बसी नेक बजा
ते बंसी मेरा मन हरो गई कलेजा खाय—धुन - - कैसी - - -

P. 870. सारंग पी० ८७०

कैसी राधे सुन्दर नार
चन्दन बदन मृगकी धनकी निरखत देख सुबाहु—कैसी - - -
खटके हर खटकीले नैन हैं कोकला कंठ सुहावे—कैसी - -
हाय घूंघट भागनी कौन तपस्या कीन
त्र लोकी के देवता तुमरे आधीन—कैसी - - -

दूसरी तरफ़ :— संधेड़ा

पल पल तन मन धन वारूं रे
प्राण प्यारे छल बल हारे नैन वाकी सैन बाकी चितवन आय रे
पिया के दरस बिन कल न पड़त मोहे कटत रैन गिनतारो रे

मोरी आली मोरी अली कछु न सुहावे अब
नैन वार पिया न मार जाला प्रोहो मोहे तार
नैन की कटारी पिया नहीं करें दारी
पिया काहे को हो म्हारो रे—पल - - - - - -
पिया - - - - - - - - मोरी - - - - - - -

———o———

पंडित बुद्धीचन्द्र

P. 7439. **महाराना प्रतापका जीवन चरित्रर** पी० ७४३९

नाट्य भूमि पर आज है तो नाटक उभास
नाट्य पात्र की लगरही सबके हृदय प्यास
संसार एक लीलामय की लीला का दृष्य दिखाता है
जिन साधारन के लिये असाधारन व्यक्ति पर घटाता है
जिसके होने से धर्म देश चातुरी गौरव बढ़ जाता है
और जो अपने चारों चरित्रों से सब को चरित्रार्थ बनाता है
उन महान पुरुष के जीवन को छन्दो में खिदमत कर जाऊं
जिसकी सबको उत्कंठा है उसका सरूप बांधू गाऊं
वह कोई अभाग जन होगा जिसको परीक्षा नहीं आप से है
मेवाड़ पति राणा प्रताप जिन जीते मुग़ल प्रताप से है
भारत के उद्धार पतित समय श्रीमान पधारे भारत में
दौर था बड़ा भयानक अंधका जिन दिनों में सारे भारत में
वीरत वीरता विद्या का जाति में फिर संचार किया
जो नाम धाम खो बैठे थे आप ने पुनर सत्कार किया - - - -

दूसरी तरफ़ :— महाराना प्रतापका जीवन चरित्रर २

केवल मेवाड़ बहुत दिन तक अपनी रक्षा करता आया - - - -
इस ओर अगर सर होने का अवकाश नहीं किसी ने पाया
सब देश पपहिये के सत वर्ष परतन्त्र घाट पर बैठा था
और कुछ तो स्वतन्त्रता वप्यंगो ऊपर को मुख कर बैठा था
करुणा निधान के कानों में निराकार ध्वनि जाती है
वह पुत्र देश मेवाड़ लखे साकार रूप में आती है
हिन्दू जाति के सब प्रताप का एक नमूना यूं भेज दिया
जोतषो पंडितो ने प्रताप राणा सिंधिया संस्कार किया
दोहा—ठीक उसी समय परारौता देव हुआ
आज सब के हिये मस्तक में भरा वीरज और ज्ञान
साम ने देश के साधन का जब अपना उदाहरन रक्खा
सुख भोगवन को पिदोलत किया जाति के लिये मरन रक्खा
अपनी प्रवाह झली जो लनत भाषा में जब उपदेश किया
अमन बैर दो क़तरा ने अहा मतवाला सारा देश किया

——:-o-:——

P. 7471. **मांड** पी० ७४७१

मेरे काहन मेरे लाल—रे गोपाल जागो
तुम को जगावें प्रभात यशुमति मैया - - -
चिड़िया चिचलाय रहीं शिशु को जगाय रहीं
खोलो अलसाने नैन अलम मद त्यागो - तुम को - मेरे - -
प्रभात भानु प्रगट भये रजनी चर अस्त गये
लकड़ी ले हाथ श्याम गई न संग भागो - तुम को -

द्वारे पर तेरे लाल ठाड़े सब गुआल बाल
बुद्धी चन्द्र तेरा प्रेम सब के हिय लागो - तुम को - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

हर हर करें शम्भू शीश रज धर धरिये
करुणा करन जटा छुर सिरि साजे - हर - -
त्रिकुटी झंनक देत त्रिष्टी दर से यह जात
मदन सदन शशि प्रभा कोटि लाज - हर - -
पद कमल मर मर मन निशि दिन चाहत देव
बुद्धि चन्द्र देखूं दर्शन उमां बाम राज - हर - -

P. 7594. भजन पी० ७५९४

मेरे मन मोहना मोहन तुम्हारी इन्तेज़ारी है
(महारानी रुक्मिनी भगवान कृष्ण से प्रार्थना करती हैं)
मेरे मन मोहना मोहन तुम्हारी इन्तेज़ारी है
इसे चरनों से लालीना रुक्मिनी प्राण प्यारी है
मेरा शिशुपाल से जाना रे मुनासिब समझते हो क्या
पधारो इस घड़ी भगवन यह दिल को बेक़रारी है
सुनी आवाज़ अपने प्रेम में लवलीन दासी की
कहां फिर चैन हो भगवान को भी बेक़रारी है
बली शिशुपाल के हाथों में कङ्कन रह गया बान्धा
कोइ तजवीज़ चालाकी न चलने दे क़रारी है

दूसरी तरफ़ :— भजन

जिगर को थामूं या आंसुओं को दर्द ने मारा सता सताकर
नक़ाब डाले वह जारही है कुछ अपनी सरत दिखा दिखा कर

अरे यह घाव तेग़ो तबर के होते तो कोइ मरहम लगाही देता
मगर यहां तो फटा है सीना थका हूं इसको सिला सिलाकर
अरे मैं मर रहा हू तड़प तड़प कर न इस तरफ़ है ख़याल तक भी
अरे नल सम्भाल अपने दर्द दिलको मरेगा आंसु बहाबहा कर
है खदशा जान का लगन की राहपर कफ़न तलक भी लाश पर न होगा
यह दर्द आता है बुद्धिचन्द्र समझ तू दिल को हटा हठा कर

P. 7665. पीलू पी० ७६६५

मेरे नाथ नेह से लगाले मुझे
बुलाले मुझे अपने धाममें राम बुलाले मुझे
सहस्र वाहू का कुश्ता बना दिया पल में
अपार सीनेको ग़रक़ा दिया रसातल में
अपने पांव की ख़ाक बनाले मुझे - - -
तमाम विशु कुल्हाड़े के तले झलकता था
दलों के दल हों खड़े तो भी नहीं रुकता था
इस के साये में नाथ बिठाले मुझे - - -
यह बुद्धी चन्द्र से सदमा सहा नहीं जाता
ज़माना पलट गया कुछ कहा नहीं जाता
अपना मोहनी मन्त्र पढ़ा दे मुझे

दूसरी तरफ :— भजन

किसी ने सूरत पे डाली आंखें किसी ने शम्श क़मर को देखा
किसी ने नक्शो निगार देखे किसी ने बाली उम्र को देखा
किसी ने देखा रक़ीब उसको किसी ने साहब नसीब देखा
किसी ने देखा अदा को उसकी किसी ने अपने शोहरको देखा

किसी ने देखी मामूली हसती — किसी ने आंखोंमें देखी मस्ती
किसी ने ज़ुल्फ़ों के कल्फ़ देखे — किसी ने बांकी नज़र को देखा
दौड़ाया जिस जिसने ख़याल जो जो — दिखाई उसको भी शकल सोसो
है बुद्धि चन्द्र दस यह खेल हरके — किसी ने दुख्तर के बरको देखा

—:-०-:—

P. 7714. **संघेड़ा** पी० ७७१४:

यह वह भारत है जिस भारत का सब गुलशन लहराता था
अधितर क्या स्वर्ग तक भी सुन्गधी लेने आता था
जो भारत के सितारे हैं ग़ुब्बार से ख़ाक के देखो
जिन्हों की शान के आगे क़मर आंख निमाता था
अरे इसी गुलशन का था ग़ुंचा रघु जिसको कहा करते - - -
उमर थी पांच वर्षों की समर इन्द्र से लाता था
वह अर्जुन भीम है किस जा दिखादे खोल कर पर्दा - -
अरे कहां जमना के तट पर जो मधुर बंसी बजाता था -

दूसरी तरफ़ :— **संघेड़ा**

अरे हां ज़र्रे से सभी आलम जलवां नुमां हुआ
अरे हां क़ुदरत का खेल सारा जिससे अयां हुआ
अरे ज़र्रे में कोहकन का क़ालिब बना लिया
ज़र्रा ही शाहो ओलिया पीरो जवां हुआ
जो है नज़र में तेरी ज़र्रे का नूर है
अरे हां ज़र्रा ही कोह तूर प आतिश फ़िशां हुआ
अरे ज़र्रे का बुद्धिचन्द्र ज़ाहिर ज़हूर है
ज़र्रा बनाके कोई बस ल मकां हुआ—अरे हां ज़र्रे



भाई छैला

P. 9061. **ग़ज़ल** पी० ६०६१

और तो पास मेरे हिज्र में क्या रक्खा है
इक तेरे दर्द को पेंहलू में छुपा रक्खा है
सब्र आता है जुदाई में न ख़ाब
रात आती है इलाही कि अज़ाब
इक दर्द को पेंहलू में छुपा रक्खा है
क्या तअम्मुल है मेरे क़त्ल में ऐ बाज़ुवे यार
एक ही वार में सिर तन से जुदा रक्खा है
हुस्न को जौर से बेगाना न समझो कि उसे
यह सबक़ इश्क़ ने पेंहले ही पढ़ा रक्खा है—और तो पास मेरे --

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

क्या मुफ़्त का दिल है जो युंही कर दें हवाले
उसके लिये हाज़िर है जो अरमान निकाले
दिल क़ाबू से बाहर है जिगर पेंहलू में बेचैन
एक जान अकेली मेरी किस किस को संभाले
मेहमान की ख़ातिर में कमी होने न पाये
दर्द उट्ठे जो दिल से तो जिगर उसको सिंभाले
चलते हैं मिटाते हुवे नक़्शे कफ़े पा को
ज़िद है कि कोई इसको न आंखों से लगाले
सरसब्ज़ हों फूलों कि तरह ख़ारे बियाबां
करते हैं दोआ फूट के यह पावं के छाले

———————

P. 9242. गज़ल पो० ६२४२

बाद अज़ फ़ना यही है हमारी सदाय दिल
इन गुलरुख़ों से कोई न हरगिज़ लगाय दिल
अल्लाह रे जलन किसी पैहलू नहीं क़रार
शोला है अपने पैहलू में शायद बजाय दिल
बाग़ जहां का रंग बहुत बे सबात है
बुलबुल से कैहदो गुल से न हरगिज़ लगाय दिल
ऐ मौत जल्द आ कि यह झगड़ा कहीं चुके
कबतक शबे फ़िराक़ में सदमे उठाया दिल—बाद

दूसरी तरफ़ :— गज़ल

बिसमिल्ला उठिये कसिये कमर इमतिहान पर
आया हूं मैं भी खेलने आज अपनी जान पर
ज़ब्ते फ़ुगां न करते अगर हम शबे फ़िराक़
होता फ़लक ज़मीं प ज़मीं आसमान पर
अच्छी कही यह शैख़ ने दुनिया को छोड़ दो
क्या इस को तर्क करके रहें आसमान पर
किस किस मज़े से खाते हैं हम हिज्रे यार में
वोह ज़ेहर जिसको कोई न रक्खे ज़बान पर—बिसमिल्ला - - -

——:-०-:——

P. 9353. गज़ल पो० ६३५३

क्यों न हूं मैं बस दिवाना यार का
मुबतिला है एक ज़माना यार का
चश्मे मख़मूरे निगाहे नाज़ से

क्या सितम है दिल लुभाना यार का—क्यों - - -
पान की सुरख़ी लबों पर आगई
क्या अदा से मुसकुराना यार का
तीरे मिज़गां मे वोह करता है शिकार
हो गया हूं मैं निशाना यार का—क्यों - - -

दूसरी तरफ़ :— गज़ल

यह बरहम वस्ल में कैसे बुते मग़रूर होजाना
बिगड़ना मुंह बनाना कुसमुसाना दूर होजाना
अगर पीना तो यूं पीना कि पीकर चूर होजाना
मुझे मख़मूर करते करते ख़ुद मख़मूर होजाना
हमारी आरज़ू उस शोख़ से ऐ हम-नशीं कहना
अगर बिगड़ें बहाना ढूंढना मग़रूर होजाना
तमन्नाये दिली निकले तजल्ली की अभी सब कुछ
बहुत काफ़ी है उसके वस्ल का मनज़र होजाना

———

P. 9424. गज़ल पो० ६४२४

शौक़ है उनको ख़ुद-नुमाई का
अब ख़ुदा हाफ़िज़ है इस ख़ुदाई का
किसी बन्दे को दर्द इश्क़ न दे
वासता अपनी किबरियाई का
फंस गया दिल बुरी जगह अफ़सोस
कोई पैहलू नहीं रिहाई का
आज वोह इमतिहान करते हैं
वक्त. है क़िसमत आज़माई का

बुतकदे की जो सैर की हमने
कारख़ान था एक ख़ुदाई का—शौक़ - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :—　ग़ज़ल

नक़्शा किसी की जुल्फ़ का तारे नज़र में हैं
ऐ ख़िज़र ले ख़बर मेरी किश्ती भंवर में है
ख़ंजर कोई आज तुम्हारी नज़र में है
क्यों आज चीख़ सी मेरे ज़ख़्मे जिगर में है
उठता ग़ुबार देख के लैला ने की दोआ
यारब बचाइयो मेरा मजनूं सफ़र में है
तुमको भी याद होगा शबे वस्ल का समां
मेरे तो आज तक वही मन्ज़र नज़र में है—नक़्शा - - -

P. 9624.　ग़ज़ल　पो० ६६२४

असरे इश्क़ से निकलें जो तुम्हारे आंसू
दामने जां में वोह लै लीजिये सारे आंसू
जलवये हुस्न से रंगीं हैं जो आंखें उनकी
सुर्ख़ निकले हैं इसी रंग के मारे आंसू
देखकर ग़ैर की मेहफ़िल में उन्हें मस्ते शराब
न हुवा ज़ब्त निकल आये हमारे आंसू
आलमे हुस्न में हैं नूर की लहरें जारी
या रवां आरिज़े जानां के कनारे आंसू

दूसरी तरफ़ :—　ग़ज़ल

इश्क़ में जान से गुज़र जायें
अब यही जी में है कि मर जायें

यह हमीं हैं कि कूचे यार से रोज़
बे-ख़तर आये बे ख़तर जायें
जामाज़ेबी न पूछिये उनकी
जो बिगड़ने प भी संवर जायें
उनको मद्दे-नज़र है जब परदा
ऐहले शौक़ अब कहो किधर जायें

—:(- :: -):—

माष्टर दुल्हा मियां

P. 9625.　ग़ज़ल　पो० ६६२५

मोरी उठती जवानी गुलाब चुवे रे—टोपीवाले संवरिया
सो रही थी मैं अपने महल पर
वोह तो मार मार गेंदवा जगाय दीनो रे—टोपी—उठती - - -
जाय रही थी मैं अपने बाग़ में
वोह तो मार मार नैनां बुलाय दीनों रे—टोपी—उठती - - -
कमाल को मेरे हरगिज़ कभी ज़वाक नहीं
कमाल यह है कि मुझ में कोई कमाल नहीं—उठती जवानी - -

दूसरी तरफ़ :—　ग़ज़ल

पिया नहीं आयो मोरा मैं कैसो करूं री
नाहीं कटें मोसे रतियां
पिया हमारे परदेस सिधारे
वोह तो लिख लिख भेजें हैं चिठियां रे
नाहीं कटें मोसे रतियां—पिया नाहीं - - - - -

कासे कहूं मैं कौन सुनै रे काटे कटत नहीं रतियां
मैं कैसे करूं रे नाहीं कटें ------

भाई देसा

P. 9354. ग़ज़ल पी० ९३५४

मुझे पैहले तुम एक नज़र देख लेना
जिधर चाहना फिर उधर देख लेना
तुम्हारी निगाह के नदीरे खड़े हैं
जवानी का सदक़ा इधर देख लेना
मुसाफ़िरों प तरस खा ज़रा ख़ुदा के लिये
ख़याल हो में मज़े वस्ले दिलरुबा के लिये
लिये जो बोसे तो होंटों से भी छुपा के लिये—मुसाफ़िरों
दहाने ज़ख़्म प ख़न्जर वोह रख के कहते हैं
कि मेहरबां तुझे देते हैं मरहबा के लिये—मुसाफ़िरों
वोह आये मिज़गां में चलती नहीं ज़बां ये कहे
किसी अदा का तो रख छोड़ियो हया के लिये—मुसाफ़िरों
दमे अख़ीर न तरसा तू अपने जलवे से
मुसाफ़िरों प तरस खा जरा ख़ुदा के लिये

दूसरी तरफ़ :— ग़ुलाम नबी भैरवीं

कूचये यार में रहने की इजाज़त न मिली
में गुनहगार जो था इसलिये जन्नत न मिली
मेहर से माह से ख़ुरशीद से आईने से

मैंने इन सब से मिलाई तेरी सूरत न मिली
तुरबते मजनूं प एक दिन लैलिये मैहमिल नशीं
जाके बोली मेरे प्यारे मेरे मजनूं दिल-नशीं
हुस्न बे बुनियाद था अब आगया मुझको यक़ीं
आ गले मिलजा कि पाये चैन यह जाने हज़ीं
क़ब्र का गोशा फटा मजनूं ने दी इतनी सदा
मैंने इन सब से मिलाई तेरी सूरत न मिली
बाहरे गर्दिश फ़लक तक़दीर के चक्कर मेरे
फ़ातहा पढ़ने को आये मेरी तुर्बत न मिली

आग़ा फ़ैज़

P. 9062. ग़ज़ल पी० ९०६२

शेर—ऐसी भी जल्दी है क्या जाने की जाना जानां
हां तवक़्क़ुफ़ करो ठैरो ज़रा जाना जानां
फ़ैज़ लिपटा तो वोह घबराके लगे कहने यूं
देखना कौन दरवाज़े प जाना जानां
घुट घुट के दिल में हसरत व अरमान रह गये
होकर किसी से वस्ल के अरमान रह गये
इक़रार करके उनका न आना है क्या सबब
शायद वोह घर रक़ीब के मेहमान रह गये
खिंचकर कमर से रहगई शमशीरे यार हैफ़
होकर हमारे क़त्ल के सामान रह गये
ख़ाली हुवा न घर कभी मेहमां से सरफ़राज़
आ आ के दिल में सैकड़ों अरमान रह गये
घुट घुट के दिल में ---

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

शेर—कहा बीमार को भी देखने आया न गया
बोले मेंहदी थी लगी इसलिये आया न गया
कहा कांधा न दिया तुमने जनाज़े को मेरे
बोले नाज़ुक थे बहुत बोझ उठाया न गया
जो मैयत पर हमारी आप का दीदार हो जाता
ख़ुशी से ज़िन्दा मैं ऐ हुस्न की सरकार हो जाता
सवाले वस्ल पर त्योरी चढ़ा कर मुझ को कहते हैं
यह तुम हो और गर होता कोई तकरार हो जाता
सवाले वस्ल पर अच्छा हुवा इनकार कर बैठे
ख़ुशी के मारे मर जाता अगर इक़रार हो जाता
तुम्हारी मांग पर यक दिल ही क्या हर चीज़ हाज़िर है
हमारी मांग पर बोसे से भी इनकार हो जाता

P. 9063. आग़ा फ़ैज़ा और पार्टी भजन पी० ९०६३

आगये—नाचो नाचो रे यार प्रीतम मेरे पास आगये - - - -
गरवा लगाऊं कि सर पर बिठाऊं अरे तन मन सभी डारूं वार वार
प्रीतम मेरे पास आगये नाचो नाचो रे यार - - -
(जं मेरे माधो की मेरे कन्हैया धर मेरे बन्सीवाले की)

दूसरी तरफ़ :— भजन

रघुपति रघु राजा राम पतित पावन सीताराम - - -
प्रीत उस ईश्वर से जोड़ो। राम नाम न मुख ने छोड़ो - - -
चाहे निकल जायेंगे प्राण। पतित पावनि सीताराम - - -
रघुपती रघु - - - - - - - - - - - -

रामचन्द्र दसरथ के जाये सीता जी के साथ बियाहे
अयोध्या है उनका ग्राम पतित पावन सीताराम—रघु - - -
बचन मान पिता का दिल में छोड़ अयोध्या गये जंगल में
चौदा साल किया बश राम। पतित पावन—रघु - - - - -

—:-०-:—

P. 9243. ग़ज़ल पी० ९२४३

शेर—कौन कहता है कि माशूक वफ़ा करते हैं
यह दग़ाबाज़ हैं दिल लेले के दग़ा करते हैं
कौन कहता है कि माशूक़ वफ़ादार नहीं
अरे दिल में घर करते हैं क्या थोड़ी वफ़ा करते हैं
क्यों न हो तुम पर तसद्दुक़ जान ऐ जानी मेरी
बसगया नज़रों में तू ऐ यसफ़े सानी मेरी
हम शबीमे ग़ैर था यूं काम मेरा बन गया
अरे क़सम खाकर रहगये जब शक्ल पहचानी मेरी
मेरे धोके में जो दरबान ऐ अदू को रोका
उनका यह हुक्म वोह आये ये न आने पावे—बस क़सम - - -
अरे जानता था बेवफ़ा फिर भी हुवा तुम पर फ़िदा
बेवफ़ा को दिल दिया बेशक है नादानी हुई—क्यों न हो - - -
(मिसरा अर्ज़ है) वल में मैं ख़ुश था
लेकिन रंज भी कुछ कम न था
मुझ से रुख़सत हो रही थी पाकदामानी मेरी—क्यों न हो तुम पर -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

शेर—अदू को सर चढ़ाते हो यह जल जाने की बातें हैं
हमारे वासते ऐ जां यह मर जाने की बातें हैं

तुमने जो ग़ैर को पैहलू में बिठा रक्खा है
यह सितम मुझ प मेरी जान उठा रक्खा है
ज़ुल्फ़ें जब सीने पे आई तो कहा मैं ने उसे
अरे दूध के वासते नागों को लिटा रक्खा है

शेर—च्योंटी के बदले है उसने सर मिरोड़ा सांप का
मारने आशिक़ को रक्खा है यह कोड़ा सांप का
दोनों ज़ुल्फ़ें आई सीने पर तो आसिक़ ने कहा
दूध पीने के लिये बैठा है जोड़ा सांप का
दूध के वास्ते नागों को - - - - - - - -
कैहती हैं रुख़ प बिखर कर तेरी ज़ुल्फ़ें ऐ जान
अरे हमीं ने चांद को बदली में छुपा रक्खा है
आग़ा फ़ैज़ा उस बुते कमसिन की मोहब्बत ने तुम्हें
सच तो यह है मियां दीवाना बना रक्खा है

—:०:—

P. 9355. **मंधेड़ा** पी० ६३५५

गेंदा से लागी मोरी प्रीत
वोह कैसे गोइयां सन न न न - - - - गेंदा से लागी - - -
अंबवा की डाली प कोयल बोलै
सैयां ने मारी उसे ईंट री
हां री गोइयां सैयां ने मारी उसे ईंट
वोह कैसे उड़ी फर र र र र र र—गेंदा से लागी - - वो कैसे - - -
मैं तो चली थी पिया सग मिलने
आगे मिला मुझे भूत री
हां री गोइयां आगे से मिला मुझे भूत
मैं कैसे कांपी थर र र र र र र—गेंदा से लागी - - वह कैसे - - -

मैं तो चली थी पिया की सेज पे
आगे पड़ा था देवर री
हां री गोइयां आगे पड़ा था देवर
मैं हंस के बोली हा हा हा अर र र र र र र - - गेंदा से लागी - वह
एक जंगल में हिरन बैठा था
सैयां ने मारदी बदूंक़
री हां री गुइयां सैयां ने मारदी बदूंक़
वा हिरन चला सर र र र र—गेंदासे - - - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

अपने पराये की तुम्हें पैहचान भी नहीं
ननन्हे नहीं हो तुम कोई नादान भी नहीं
देता हूं एक बोसे प दिल आप सोच लो
कुछ फ़ायदा नहीं है तो नुक़सान भी नहीं
जैसा तड़प रहा है मेरा दिल शबे फ़िराक़
ऐसी तो उनकी ज़ुल्फ़ परेशान भी नहीं—अपने
दानिश ज़रा संभल के चलो कूये यार में
मुशकिल नहीं ये राह तो आसान भी नहीं
अपने पराये - - - - - -

—:०:—

P. 9356. **ग़ज़ल** पी० ६३५६

शेर—जब हुवे तुम देखने क़ाबिल तो शरमाने लगे
जब नज़र पड़ने लगी जोबन प इतराने लगे
एक बोसः हमने मांगा तो यह फ़रमाने लगे
फिर हमारे सामने तुम हाथ फैलाने लगे
सवाले बोसे प त्योरी चढ़ा चढ़ा के मुझे

डरा रहे है वोह ख़न्जर दिखा दिखा के मुझे
में ख़ुद सताया हूँ इस गरदिशे ज़मीन का
तुम्हें मिलेगा मेरी जान क्या सता के मुझे
जो छेड़ा वस्ल की शब इस तरह लगे कहने
सता न हमको अबस रात भर जगा के मुझे

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

शेर—तू लाख कोस हमको दिन रात बद दोआ दे
तेरे लिये ओ ज़ालिम हम तो वफ़ा करेंगे
दिल देदिया है उनको देखें वोह क्या करेंगे
रखते हैं दिल को दिल में या कि जुदा करेंगे
दिया है दिल तुझे शैदा तेरा ज़रूर हुवा
बड़ा क़ुसूर किया है बड़ा क़ुसूर हुवा
यह सुन चुका हूँ क़यामत में वोह मिलेंगे ज़रूर
अब इन्तिज़ारे क़यामत मुझे ज़रूर हुवा
ख़ुदा के फ़ज़्ल से इज्ज़त मिली हसीनों में
कहीं जनाब रहा में कहीं हुज़ूर हुवा
ऐ फ़ज़ उनको नदामत पसन्द आती है
वोह बख़्श देंगे जो कह दोगे तुम क़ुसूर हुवा

P. 9425. ग़ज़ल पी० ६४२५

छा गई काली घटा है आनकर गुलज़ार पर
खोल दी यह ज़ुल्फ़ किसने फूल से रुख़सार पर
काली काली नहीं ज़ुल्फ़ें तेरे रुख़सारों पर
यह घवां धार घटा छाई है गुलज़ारों पर

वायज़ा फ़ज़्ले ख़ुदा यह है गुनहगारों पर
देख वोह आई घटा झूमती मैख़ारों पर
हाय अफ़सोस मुक़द्दर कभी सीधा न रहा
दिल भी आया तो जफ़ाकार तरहदारों पर

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

कभी दिल शाद रहे हम कभी नाशाद रहे
उलझे क़ातिल में कभी और कभी आज़ाद रहे
हुस्न कहता है कि जी इश्क़ कहता है कि मर
अरे कहिये कहिये कि बजा कौन सा इरशाद रहे
शबे फ़ुरक़त न तुम आये न क़ज़ा ही आई
न तुझे याद रहे हम न उसे याद रहे
अच्छी शकलों का हमेशा ही तसौवर दिल में
ऐ शरर घर तेरा परायों से ही आबाद रहे

— :०: —

P. 9426. ग़ज़ल पी० ६४२६

जब लिखी हक़ ने तेरी तसवीर अपने हाथ से
हाथ मलते रह गई तक़दीर अपने हाथ से
दांत को गौहर लिखा लब को लिखा आबेहयात
चश्म को क़ौसर किया तहरीर अपने हाथ से
बोले आफ़त रोते रोते या मेरे मुशकिल कुशा
खोल मुशकिल की मेरी जन्जीर अपने हाथ से
इमतिहाने हक़ में इबराहीम पट्टी बांध ली
पिसर पर जब न चली शमशीर अपने हाथ से
यह भी दिल तो देखिये थे मां के मासूम दो.
इसके नाज़क पर चलाया तीर अपने हाथ से—जब लिखी - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

कमबख़्त दिल भी आया तो ऐसे नाज़नों पर
जो नाज़ से क़दम भी रखता नहीं ज़मीं पर
जिस जिस जगह प ज़ालिम तूने क़दम धरा था
टुकड़े दिलो जिगर के पाये वहीं वहीं पर
ऐ जज़बये मोहब्बत कुछ तो असर दिखा दे
बेताब होके घर से आ जाय वोह वहीं पर

P. 9626. ग़ज़ल पी० ९६२६

शमअ में हिम्मत कहां जो एक परवाने में है
लुत्फ़ जलने में नहीं जल जल के मर जाने में है
मुझको मजनूं देखकर वोह मुसकुराये और कहा
ख़ूबिये जोशे जुनूं घर से निकल जाने में है
क्या मज़ा जो रोके टोके तेरे दर तक आगया
लज़्ज़ते कूचा नेवाज़ी ठोकरें खाने में है
शमअ में हिम्मत कहां - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

क्यों न तड़पें ग़ैर यह ग़म यह मुसीबत देखकर
ख़ुद मुझे आता है रोना अपनी सूरत देखकर
यह कभी मुमकिन नहीं मुमकिन नहीं मुमकिन नहीं
ग़ैर पर डालें हम आंखें तेरी सूरत देखकर
होगये जी से फ़िदा हम दिल से आशिक़ होगये
भोली भाली प्यारी प्यारी तेरी सूरत देखकर



P. 9627. ग़ज़ल पी० ९६२७

हसरत को मेरी ख़ाक में उसने मिला दिया
इनकार वस्ल ख़त में अदू से लिखा दिया
आहों ने मेरी अर्शे बरीं को हिला दिया
नालों ने आसमां को ज़मीं से मिला दिया
तेग़े अदा ने क्या कहूं क्या क्या अता किया
ज़ख़मी जिगर दिया उसे अदना बता दिया
इसमें ख़ता हमारी कुछ ऐ जाने जां नहीं
मेहफ़िल से तेरी दर्द ने उठकर उठा दिया
हसरत को मेरी - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

फ़ुरक़त गवारा ऐ सनम कबतक भला करेंगे हम।
आतशे इश्क़ में सदा कबतक जला करेंगे हम।
हम तेरे इश्क़ में सनम क्या क्या उठाये रंज व ग़म।
आठों पहर का यह सितम क्योंकर सहा करेंगे हम।
सुनकर यह हाल फ़ितना-गर ख़न्जर यूं ही निकालकर।
कहने लगा कि तेरा सर तन से जुदा करेंगे हम।

मि० फ़क़ीरुद्दीन

P. 6354. ग़ज़ल पी० ६३५४

उनके क़दमों पर जो मैंने दौड़कर सर रख दिया
मुसकरा कर हाथ से क़ातिल ने ख़ंजर रख दिया

आज तो वह इज़गिरज़दो ने बड़ी ताज़ीम की
मंकद्दे में लाके इक छोटा सा मिमबर रख दिया
न संयारों ने नहीं की लिल्लाहो मेरी क़ब्र पर
देखिये संगी दिली सीने पै पत्थर रख दिया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

धोके में आन जाना ऐ जाने जां किसी के
होते हैं रोज़ दुशमन सब यार हैं बनी के
जी में है यूं निकालूं अरमान अपने दिल के
तुम सा न जंग जूं में नारे लगाऊं पी के—धोके - - -
वह शमा खफ़ा है अन्धेर हो रहा है
जलते हैं दुशमनों के घर में चिराग़ घी के—धोके - - - -

——0——

P. 7442. ग़ज़ल पी० ७४४२

सोज़े ग़म दे गया कौन सा रश्के गुल
यह हवा इश्क़ की किस चमन में लगी
आह दिल से उठी लो जिगर तक गई
मुंह से निकला धूआं आग मनमें लगी
यह अचानक नज़र किस तरफ़ जापड़ी
सादगी की अदा आंख में खुब गई
लो कनखियों से तकना सितम होगया
दिल प बरछी इसी बांकपन में लगी
ता ब अहद जुनूं धूम नालो की थो
फिर बढ़ी बेखुदी धुन लगी दश्त की
लो वह दिल की गिरह खुद बखुद खुल गई

लो वह महरे ख़ामोशी दहन में लगी
आरज़ू आरज़ू क्या हुआ क्या हुआ
चुप हो क्यों चुप हो क्यों कुछ कहो कुछ कहो
फ़क़ है मुंह ज़र्द रुख खुश्क लब चश्म तर
चोट दिलको इसी अंजमन में लगी

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

जागते जागते फिर सोगई क़िसमत मेरी
मिलके रोती है गले रंजो से राहत मेरी
ऐ फ़लक रहम न कर ख़ूब सताले मुझको
ज़ुल्म सहने की तो खूगर है तबियत मेरी
दरो दीवार भी हसरत से मुझे देखते हैं
मेरे अरमानों से क्यों लिपटी है हसरत मेरी—जागते - - -

—:-०-:—

P. 7474. ग़ज़ल पी० ७४७४

सदक़े ऐ जोशे जुनूं हम क्या थे और क्या बन गये
रंजो हसरत भी हमारे ख़ाक सहरा बन गये
इश्क़ के मज़हब से निकले ख़ाक उड़ाने के लिये
पहिले लैला थे पर अब मजनूं सरापा बन गये—सदक़े - - -
सोज़ फ़ुरक़त में सती दिल जल जल के दिल ऐसा हुआ
हम भी अपने राम की उलफ़त में सीता बन गये
राज़ क्या मैं यह कहूं हां भला इस इश्क़ का
अपने यूसुफ़ के लिये हम ज़ुलेख़ा बन गये—सदक़े - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

है दूर वतन परदेश में है ऐ चर्ख़ हमें बर्बाद न कर
कुछ हद भी है रंजो मुसिबत की अब तर्ज़ सितम ऐजादन कर

हम हिन्द के रहने वाले हैं दुख दर्द के सहने वाले हैं
कुछ मुंह से न कहने वाले हैं नाशाद को तू नाशाद न कर
दुनिया के यही सब धंधे हैं हर सिम्त फ़रेब के फन्दे हैं
हम भी तो ख़ुदा के बन्दे हैं तू हम पर नई बेदाद न कर—हां - - -
ऐ सम्श मुक़द्दर सोता है रोने से नहीं कुछ होता है
क्यों हिन्द का नाम डुबोता है परदेस में तू फ़र्याद न कर—है दूर - -

P. 7597. **भजन** पी० ७५९७

सुबह बैकुण्ठ में बेचैन तेरा शाम रहा—हाय - - -
तड़पा परवाना तो क्या शमा को आराम रहा—हाय तड़प - - -
मैं यह समझता था कि कलिजुग में कोई भकत नहीं
हां हां मैं यह समझा - - - - -
तेरी भक्ती से मैं समझा कि मेरा नाम रहा
हाय तेरी भगती - - - - - सुबह बैकुण्ठ में - - - -
मुझ को आना ही पड़ा तेरी मदद को बुलबुल
हां हां हां रे मुझको - - -
जब तेरे वास्ते दाना न रहा दाम रहा
हाय जब तेरे वास्ते - - सुबह बैकुण्ठ में - - -
तड़पा परवाना - - मुझको आना ही पड़ा - जब तेरे वा- -स्ते

दूसरी तरफ़ :— **मांड**

जब काया ने जनम लिया जग हसारे काया रोई
पाप क्या है इस जगमें अन्त समय यह रोई
बारा बरष की भई अवस्था काया मल मल धोई
जनम भयो सन्तान का फिर तो रूप की रंगत खोई

माता पिता ने घर से निकाला कन्थ सेज पर सोई
जात बिपौ सन्तान का जब तु रख कर जान होई
जनम भयो सन्तान का फिर तो जान की रंगत खोई
जब काया ने - - - - - - - -
जनम भयो सन्तान का फिर तो रूप की रंगत खोई
जब काया ने जनम - - - - - -

———:(-०-):———

P. 7717. **नात** पी० ७७१७

क्यों न हूं तुझ प मैं कुर्बान रसूले अरबी—हां रे रसूले अरबी (सले अल्ला)
कर दिया मुझको मुसलमान रसूले अरबी—हां हां जी - -
इससे क्या और तेरी शान की तरीफ़ करूं
मुझ प नाज़िल हुआ फ़रमान रसूल अरबी—हां रे - - -
ले ख़बर जल्द मेरी तेरे घर से हैं बे घर मुसलिम
मस्जिदें होगई वीरान रसूले अरबी—हां हां जी - - -
जब मुसीबत में लिया नाम अली महशर में
मुशकिलें होगई आसान रसूले अरबी—हां हां रे - - - -
क्यों न हूं तुझ प मैं कुर्बान रसूले अरबी - - -

दूसरी तरफ़ :— **नात**

सदह शुक्र राज़ हक़ीक़त का समझा दिया कमली वाले ने
उलझा हुआ डोरा मज़हब का सुलझा दिया कमली वाले ने
तोहीद का रस्ता दिखला कर सब अमरोनवाही समझा कर
फ़रदोस का रस्ता उम्मत को दिखा दिया कमली वाले ने
हज़रत प निसार हूं मैं दिलोजान और शानोशराफ़त पर क़ुर्बान
बन्दों ने जो मांगा खालिक़ से दिलवा दिया कमली वाले ने

कहते हैं जिन्हें मक्की मदनी मशहूर हैं जो दीन के नबी
गुंगोको भी कलमा तोहीद का पढ़ा दिया कमली वाले ने—सद - -

—————— :: ——————

P. 7857. नात पी० ७८५७

अजमेर में रोशन वह चिराग़ मदनी है
बिगड़ी तेरी चौखट प हज़ारों की बनी है
लाखों वली बना दिये उस्मान का सदक़ा
तू हिन्द का वाली है विलायत का धनी है
इक इक को मिलेगा यहां हुसैनन का सदक़ा
तु शेर का पोता है सख़ावत में ग़नी है
पहुंचा जो दरे ख़ुल्द प आई मुझे निदा
यह मदनी मेरी दरे ख़्वाजा प चली है—अजमेर - -

दूसरी तरफ़ :— नात

लिल्लाह मेरी कीजे इमदाद या मोहम्मद
तुमही करोगे मेरा दिल शाद या मोहम्मद
रंजो बला की आंधी बरबाद कर गई है
गुलशन को मेरे कीजिये आबाद या मोहम्मद
तू मेरे दुशमनों को नेकी की दे हिदायत
करते हैं मुझ प ज़ालिम बेदाद या मोहम्मद
नाशाद में रहूं क्यों बरबाद मैं रहूं क्यों
कर क़ैद ग़म से मुझको आज़ाद या मोहम्मद—लिल्लाह -

—:०:—

P. 8033. ग़ज़ल पी० ८०३३

बरबाद मुझे करके सभी है अदावत की
क्यों ख़ाक उड़ाते हो बैठे हुए तुर्बत की
एक उनकी इनायत ने एक और इनायत की
दूनी है तपिश कलसे बीमारे मुहब्बत की
वह अब्र घिरा साक़ी फिर ठंडी हवा आई
फिर मुंह से लगा बैठे छूटी हुई मुद्दत की
आप आये तो क्या आये इतना ही नहीं दिल में
अर्मानों का मजमा है इक भीड़ है हसरत की

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

कुछ ख़बर मेरी नहीं लेते हैं मरने वाले
कैसे बेफ़िक्र हैं दुनियां से गुज़रने वाले
अब तो देखें दिल मुज़तर की मुसीबत अगर
ख़ाक सहरा की उड़ाते हैं संवरने वाले
दावरे हश्र में फ़रयाद करूंगा जाकर
सामने हज़ूर के मुकर जायं मुकरने वाले
शम्श याद आता है रो रो कर किसी का कहना
चल दिये छोड़ कर तिन्हा हमें मरने वाले—कुछ ख़बर - - -

—:-०-:—

P. 8162. ग़ज़ल पी० ८१६२

मैकदे में जब कोई मर्दे ख़ुदा होता नहीं
कलस के मीना में हू हक़ का मज़ा होता नहीं
चार तिनकों का आशियां है ख़ार है सैयाद क्यों

मेरी बरबादी से कुछ तेरा भला होता नहीं
छांव ने दामन समेटा महर मुंह तकने लगा
सच है ग़ुरबत में कोई दर्द आशना होता नहीं
या ख़ुदा अब तो दे दे मेरी दुआओं में असर
वह हंसेगे हां ग़रीबों का ख़ुदा होता नहीं—मकदे - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

जब कहा दिल तेरे मिलने का तमन्नाई है
हंस के फ़रमाते हैं दीवाना है सौदाई है
उन को है आरायशे महफ़िल है ख़ुदाराई
और यहां मौत है पैग़ामे अजल आई ह
मेरी हालत से बिगड़ते हैं कि वहशत क्यों ह
तेरी सूरत ही है मेरा बाइसे रुसवाई है
दिलको थामे हुए जब सामने आया तो कहा
ख़ैर है तो सच कहो रात कहां गंवाई है—जब - - - -

P. 8285. ग़ज़ल पी० ८२८५

दिन को मुंह अब्र में सूरज ने और शब को छुपाया हाले ने
जब रुख़ से परदा कमली का सरका दिया कमलीवाले ने
बेहोश नहीं बाहोश हूं मैं मैं वैहदत का मैनोश हूं मैं
अब होश में मुझको करडाला तौहीद के एक पियाले ने
फ़िरदौस में सरवर जब पहुंचे ताज़ीम को झुक गये सब ग़ुन्चे
जो तुझ में है रंगत मुझ में कहां शरमा के कहा यूं लाले ने
महशर प हुई रहमत की नज़र किया कुफ़्र से पाक यह क़ल्बो जिगर
काफ़िर से मुसलमां कर डाला इक अरब के रहनेवाले ने

दूसरी तरफ़ :— नात

मेरे ऐब छुपाले कमलो में या रसूल तेरे क़ुरबान
तूही हामी है मेरा हश्र के दिन तूही दीन तूही ईमान
जब अर्श प हक़ का हबीब चला जिबरील पुकारे सल्ले अला
हूरों ने मुबारकबाद कहा सजदे में गिरे ग़िलमान—मेरे ऐब - - -
तेरी ज़ात सी कोई ज़ात नहीं मेहराज सी कोई रात नहीं
उसी रात को राज़ का परदा खुला अहमद से मिले यज़दां—मेरे - -
मेकदे में नज़र कर रहमत की तेरे हाथ में डोरी उम्मत की
हमें इस सियह तारीकी से बचा ऐ मालिक अनवर हां—मेरे

P.8966. भजन पी० ८९६६

आप श्रीकृष्ण हैं दुःख जगत का हरनेवाले
पार भव सिन्धु से हर शख़्स को करनेवाले
उनको सुख यहां भी है और वहां भी सुख होगा
जो हैं संसार में हर नाम के लेनेवाले
होम करते हुए नहीं हाथ किसी का जलता
जो हैं संसार में दुशनाम के करनेवाले
राम की सेवा में यह प्राण ही है दान मेरा
पार भव सिन्धु से हर शख़्स को करनेवाले
लक्ष्मी पत को सदा राम से हो काम रहा
आप मिटते हैं वह ग़ैरों को मिटानेवाले

दूसरी तरफ़ :— भजन

जो तुम से पूछें ऐ गोपियो हम सुनो उसे चित लगा लगा कर
सब अपने घट ही में उसको पावो जो देखो परदा उठा उठा कर

वही है हम में वही है तुम में वही है सब जगत में कुटुम्ब म
यह एक परदा पड़ा हुआ है नज़र मिलावो मिला मिला कर
वही है सेवक वही है स्वामी वही है दानी वही है कामी
हर एक शै में छुपा हुआ है अनेकों जलवे दिखा दिखा कर
जो तुम यह कहते हो कि है हर जा तो क्यों नहीं रहम हम प करता
सुनो उसीका है नाम माया दिखाता है वह बना बना कर

P. 9064. **ग़ज़ल** पी० ९०६४

जाने है क्या क्या छुपा सरकार तुम्हारी आंखों में
दीन व दुनिया इन दोनों का दीदार तुम्हारी आंखों में
तुम मार भी सकते हो पल में तुम तार भी सकते हो छिन में
विष और अमृत का रहता है भण्डार तुम्हारी आंखों में
कोई पाक सरूप का ज्ञान भी है और आत्मारामका ध्यान भी है
जिसको देवें तार तू ही है आधार तुम्हारी आंखों में

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

घाट लगता ही न था जिसका वोह घट ही में मिला
जब किये पट बन्द आंखों के वोह पट ही में मिला
कुछ नहीं मिलता है माला फेरने से उसका पता
यह जतन जिसने किया उसको वोह हर घट में मिला
उसकी माया जगत में व्यापक भी है न्यारी भी है
वोह हर एक रंग में भी है और रंग से भी नट खट भी है
मन नहा जिन का है अच्छा उसको में न कुछ तुझ से अर्ज़ है
राम रस तू है बली जिस को मिला घट में मिला

—०—

P. 9244. **भजन** पी० ९२४४

अब धर्म का प्रचार कहीं है कहीं नहीं
कलिजुग का संस्कार कहीं है कहीं नहीं
प्रकाश लक्ष्मी का न क्यों दिन बदिन हो कम
हर नाम का आधार कहीं है कहीं नहीं
कैसा सुफ़ेद हो गया दुनिया का खून हाय
अब भाइयों में प्यार कहीं है कहीं नहीं
महताब इनक़लाब ज़माने का ऐसा हाल
अब नीच ऊंच का बिचार कहीं है कहीं नहीं—अब धर्म - - -

दूसरी तरफ़ :— **भजन**

दोहा—राम नाम की लूट है जो लूट सके तो लूट
अन्त समय पछताएगा जब प्राण जायंगा छूट
गाना—कृष्ण ने जब तोड़ डाला कंस अधर्मी का घमंड
अन्त में कुछ काम न आया जिसने किया हो यह घमंड
जिसने जग में सर उठाया नीचा देखा है ज़रूर
हो गया निधन वोह धन से जिसने किया यह घमंड
जीवन का सुख जानकर तुम संग कीनी प्रीत
प्रीत किये दुःख देत हो देखी इनकी रीत
नाम तेरा है सदा हृदय में मेरे ऐ प्रभु
पापियों के मन का तो प्रभु जी तू ने तोड़ा घमंड

——:०:——

P. 9427. **नात** पी० ९४२७

बांको छैला कमलीवालो अपने रब से मिलने जाय
सिग सामान बहिशती आयो भरी सुराही जल कौसर आयो

आप अहमद जब वोह बन आयो अहमद मलमल नहाय—मेरो बांको
ख़ास बहिशती पैग़ाम आयो अहमद प्यारा सोता पायो
मली जबीं तलवों से उनके सोता लियो जगाय—मेरो बांको - - -
आज नबी को दूल्हा बनायो हूरां परियां मंगल गायो
सर सेहरा फूलों का बिराजै गेसू मुखड़े पर बल खाय—बांको - - -
हो सवार चले नबी-अल्लाह, पहुंचे जिस वक्त, दना फ़तदल्ला
कहे जिबरील बढ़ूं जो आगे एक एक पर जल जाय—मेरो बांको - - -

दूसरी तरफ़ :— **नात**

सूरज ख़िजिल है हुस्ने पयम्बर के सामने
मह मुनफ़इल ह उस रूबे अनवर के सामने
उम्मत के बख़्शवाने मो करबल में लुट गये
सर रख दिया हुसैन ने ख़न्जर के सामने
ज़िन्दा न जिसको हज़रते ईसा भी कर सकें
ले आवो उसको मेरे पयम्बर के सामने
क्यों बहरे ग़म में ग़र्क़ है हो शाद ऐ फ़क़ीर
मुशकिल नहीं जो हल न हो हैदर के सामने
जन्नत की है हवस न तो दोज़ख़ का डर मुझे
बिसतर फ़क़ीर का है तेरे दर के सामने

P. 9628. **ग़ज़ल** पी० ९६२८

किसी का ज़ोर मुक़द्दर के आगे चल न सका
यह वोह नविशता है जिसको कोई बदल न सका
जो उखड़ी सांस तो बीमारे ग़म संभल न सका
हवा थी तेज़ चराग़े हयात जल न सका

हैरान न हो जान मैं क्या देख रहा हूं
बन्दे तेरी सूरत में ख़ुदा देख रहा हूं
उगा जो नख़्ले तमन्ना तो गिर पड़ी बिजली
येह वोह जहां है जहां कोई फूल फल न सका
वोह आये शम्स की तुरबत प कब अयादत को
कि सिर्फ़ होंट हिले मुंह से कुछ निकल न सका

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

तुम मिटावो तो मुक़द्दर का लिखा बन जाऊं
ब्राह्मन बनके जो पूजो तो ख़ुदा बन जाऊं
इमतिहां लो तो मैं नक़्शे कफ़ पा बन जाऊं
रङ्ग लावो न मेरी जां तो हिना बन जाऊं
आसमां टूट पड़ेगा यही अनदेशा है
वरना मज़लूमों की मैं आहे रसा बन जाऊं
तेग़ खींचे हुए मक़तल में जो तुम आजावो
या ख़ुदा आप ही मैं अपनी क़ज़ा बन जाऊं
शम्स जब ख़ालिक़ो मख़लूक़ का है एक वजूद
क्यों न मैं ख़ुद को मिटा कर के ख़ुदा बन जाऊं

———:-०-:———

मि० फ़ुलाजी बोत्रा

P. 7830. **भजन** पी० ७८३०

हीन दीन जात मोरी—पंडदी बिदायां
दुनिया में तंती नामा काहे को बनाया पंडदी बिदायां
काल दित दीले चल रामा केवल मैं आया

पूजा करत बमन भूले बाहर गंग सिदाया—हीन - - -
तुम कैसे बम्मन और हम कैसे कूरमी
काला बरन गाई और एक बरन हैं
केवल के पीछे - - - रामा लग बनाते जिधर तिधर
नाम इधर वन्से दे - - -
सुना तेरा तूही रख धाया

दूसरी तरफ़ :— भजन

हरो तुम काहे को प्रीत लगाई
प्रीत लगाई बली तुम कीनो—कैसी लाज न आई—तुम - -
गोकुल छोड़ मुथरा को जाऊं वामें कौन बड़ाई—प्रीत लगाई
मीरा कहे प्रभु श्री रघुनाथ है—तुम कुंदन से दुहाई—प्रीत - - - -

P. 7831. भजन पी० ८७३१

भजन बिना जिवड़ा दुखी मन तू राम भजन कर ले
जीव तू तो जायगो जरूर मन तू राम भजन कर ले—भजन - - -
लख चौरासी फेरे फिरेगो जीव जन भी जन ही मरे
माता पिता तेरा नारायण बन काम कछु ना करे—राम - -
हाथिन घोड़ा पालक जितना धन भंडार भरो है तेरा
मीरा कहे प्रभु फिर लाज ना गहे मेरो चित भजनमें करे—भजन - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

रघुबीर की सुधि आई आज मोहे—सिया बरकी - - -
आगे आगे राम चलत हैं पीछे लछमन भाई
उनके पाछल सीता जानकी चित्रकोट में चलाई—आज - - -

सीता बिना मोहे सूनी रसैया कौन करे चतुराई
दशरथ रोये धरनी लोटे कहि कहि बचन सुधवाई—आज - - -
राम लछीमन भरत ना सूझे अन्त काल को लही मोही
तुलसी दास भजो बन माला हरके चरण चित लाई—आज - - -

P. 8052. भजन पी० ८०५२

करना फ़क़ीरी क्या दलगीरी सदा गुन न रहना जी
कोई दिन हाथिन कोई दिन घोड़ा कोई दिन पांवसे चलना जी
कोई दिन महल कोई दिन दुमहला कोई दिन भूमि प लोटना जी—करना -
कोई दिन काजा कोई दिन राजा कोई दिन पीछे में बठना जी
कौन दिन धोवे आन कौन दिन दुखड़ा जी—करना - - -
मीरा कहे प्रभु गिरधर राज करना पड़े छुद्र राजू—करना - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

हरी नाम बिना नर ऐसा हो रेगा मन्त्री जैसा
जैसी बिना पुरुष की नारी—जैसी बिन पुत्र महतारी
जल बिना सरबर जैसा, रेगा बिना मन्त्री जैसा—हरी - - -
जैसी बिना लवन की रसोई—जैसो बिना रजनी सोही
जिन का जग मन्त्र जैसे रगा - - - - - - - - - - -
सुत्र बिन बृन्ना बनाया जैसी छमतन की माया
गुरुज बिन गज जेसा रेगा - - - -
मीरा कहे प्रभु हरसे जहां जन्म मरण नहीं टलता
बिन गुरुके चेला जैसा—रेगा - - - - - - - - - -

P. 8053. **भजन** पी० ८०५३

भलाई करते बुराई होती तो भी भलाई करना
बाल वाल की जड़ भी हारो अंग अंग थारी—भलाई - - -
एक पलंग पर दो बैठे एक जागे एक सोवे
उलहाथ की दो घट बाजे मारे के हाथ दिखाई—भलाई - - -
जो हरनाने से जी छूटा गत तो हो क्यों कर
लश्कर वाले बनको चले तो निकल चले गत हारे
मा कहती मेरा बेटा बाप कहे बेटा मेरा
कहे कबीरा सनो भई साधू न घर तेरा न मेरा

दूसरी तरफ़ :— **भजन**

सन्तन के संग लाग तेरी अच्छी बनेगी
अन्तन की गती अन्त ही जाने कोई न जाने कागरे अच्छी बनेगी
संतन के संग पुन कमाई हुई बड़ो तेरो भाग अच्छी बनेगी—संत - -
ध्रुव की बनी प्रहलाद की बन गई हर जिसमें रंग लाग तेरी अच्छी बनेगी
कहत कबीरा सुनो भाई साधु राम भजन में लाग तेरी अच्छी बनेगी—संत

मि० गौहर ख़ां

P. 7397. **ग़ज़ल** पी० ७३६७

कहके पछताये हम आंखों में ठैरने के लिये
पांव फैलाते हैं अब दिल में उतरने के लिये
रे आंखे साक़ी सलामतत मे दुशमन रसें

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

आशिक़ के अगर दिल में मर जाने की ठन जाये।
बिगड़ा हुवा काम उसका एक आन में बन जाये।
आशिक़ का जनाज़ा है इस शान से ले जाना।
ससुराल में मैके से जिस तर्ह दुल्हन जाये।
मत जा अरे ओ ज़ाहिद क़ानून है भट्टी का।
मै खाने में वोह आये जो तौब-शिकन जाये।
उसने मेरे मिलने की खाली है क़सम शायद।
क्या चारा करूं जिससे यह दिल की दुखन जाये।

मि० गुलमोहम्मद

P. 8036. **क़ौवाली भैरवीं** पी० ८०३६

मेरा दर्द वह दर्द वाले से कह दो, मदीने के बांके निराले से कह दो
कोई खार तीश्नान रहजाये पियासा, कफ़ पाके हरएक छाले से कहदो-मेरा -
नहीं हमसरी ज़ुल्फ़ अहमद की यकसां, कोई दश्तमें जाके काले से कह दो

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल क़ौवाली**

वालील की खुशबू से महकते हैं यह काले—ऐ गेसुवे वाले
हर सुए तन अपना तेरे गेसू के हिलाले—ऐ गेसुए वाले
कितना ही सियाहकार रहे कैसा हो गुनहगार—पुरशिश न हो ज़िनहार
रहमत सहज से अपनी तेरी कमली में छिपाले—ऐ गेसुए वाले
कहती है खुदाई तुझे कोनियन का खुवाजा—इमदाद को आजा
जो आई हुई सरप वला मेरी तू टाले—ऐ गेसु वाले

वह गोर की मंज़िल तो बड़ी पुर ख़ौफ़ क़तर है—हर तरह का डर है
बेकस की यहां कौन सिवा तेरे ख़बर ले—ऐ गेसु वाले

मस्टर के गुल मोहम्मद

P. 9630. क़ौवाली पी० ९६३०

फ़लक पर शोर है बरपा रसूलल्लाह आते हैं
हर एक घर से यह है कहता रसूलल्लाह आते हैं - फ़लक
ज़रा तो देखिये चलकर फ़ख़र औलाद का अपनी।
कहा आदम ने ऐ हौवा रसूलल्लाह आते हैं।
तजल्लो नूर बरसेगी जो तुम देख लो इस दम।
कहा जिबरील ने मूसा रसूलल्लाह आते हैं —फ़लक पर - - -

दूसरी तरफ़ :— होली हक्क़ानी

होली खेलूं मैं कहकर बिसमिल्लाह
कलमये ला इलाह इल लल लाह—होली - - -
अलिफ़ बरासख़ पीतम बोले
सब सखियों ने घूंघट खोले
कालू-बला सब कहकर बोले
मांगी अलबिदाअ ख़ैरुल्लाह—होली - - -
नेहन व अक़रब की बंसी मंगाई
मन अरबाशी कूकू सुनाई
पसन्द ग़रबल्लाह धूम मचाई
की की दरबार रसूलल्लाह—होली - - - - -

बाबा गणपत लाल

P. 3692. ग़ज़ल पो० ३६९२

अजब हैरान हूं भगवन तुम्हे क्यों कर रिझाऊं मैं
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लाऊं मैं
करूं किस तौर आवाहन कि तू मौजूद है हरजा
निरादर है बुलानेको अगर (दीपक दिखांऊ) घन्टी बजाऊं मैं—अजब -
लगाना भोग कुछ तुम को तेरा अपमान करना है
खिलाता है जो सब संसार को उस को खिलाऊं मैं—अजब - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन माण्ड

सुध शामको हमारी मन मोहने मुरारी मुख चन्द सा मुकन्दा
नन्द लाल हो बिहारी मुख चन्द सा मुकन्दा
कभी नगर पास आया कभी मुखड़ा सजाया
हर जां तुझको पाया मेरे मोर मोर मुकट धारी—सुध - - -
दिल में समागई है तेरी चाल ढाल शाम
फ़क़ीर हो गई हूं तुझे देख भाल शाम—मुख - - -
तेरा ध्यान धर कर ग़नी हो गया गदा गर
घनश्याम श्याम मुरारी ब्रज राज चक्र धारी—मुख - -

P. 4414. भजन पी० ४४१४

तान बंसी फिर तो ज़रा बंसी सुना दो ब्रज राज कुंज फिरसे ज़रा सजा दो
करना छनन छनन वह और डोलना क़दम का
मोहन वह रास क्रीड़ा फिर वह फिर दिखा दो
निराली सज धज दिखा दे माधो नहीं है दिल को क़रार आजा

लगी बृहा की आग तन में बस अब तो करले प्यार आजा
पकड़ के बंसी उठाके कम्बल लेगैयां अपनो बसाया जगंल
मनाया जगंल में जाके मंगल हमारे दुख भी संवार आजा
वह तेरा माखन चुरा के खाना अपने नाखा के पास जाना
जो पूछे मैया तो मुकर जानाओ भोले भाले मुरार आजा

दूसरी तरफ़ :— भजन क़ौवाला

ऐ दो आलम के निरालों से निराले आजा
आजा आजा ऐ मेरे बांसुरी वाले आजा
वह ढूंढा किया मसजिदे वकलीसा में क्या
द्वारे सभी मन्दिर व शिवालय आजा—आजा आजा - -
किनारे जमना के सखियों ने धूम डाली है
अदाहर एक की हर एक से निराली है
बजा के ये सदा हश्र की निशानी है
हुए हैं होश से बेहोश अजब बेहाली है—आजा आजा - -
शाम का वक्त, हो और साथ हों गैयां तेरी
उसी शाम प्यारे कृष्णा दुलारे आजा—आजा आजा - -

—ः-०-ः—

P. 5659. ग़ज़ल पी० ५६५६

गर ख़ुदा काबे में रहता है तो बुत ख़ाने में कौन
हर है गंगा जल में तो ज़म ज़म के पैमाने में कौन
दार पर उसको चढ़ाया पर न समझा यह कोई
था अनलहक़ कह रहा मनसूर दीवाने में कौन
किस से बातें कर रहा है मुझ को भी ज़ाहिर दिखा
छुप के बैठा है तेरी तसबीह के दाने में कौन

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हक़ तो यह है कि सदा हक़में तेरा ध्यान रहे
हक़ की बातों ही से होने की तरफ़ ध्यान रहे
तुम तो भोले हैं सदा काम कमीनों का करें
फिर समझता है कि सागिर मेरा ईमान रहे
जलवाये नूर इलाही नहीं मुमकिन चमके
जब तलक दिलमें तेरे पापका तूफ़ान रहे
जिससे अब सुनये अर्ज़ करता है जो विश्वासी
अब परम देव के चरणों में लगा ध्यान रहे

P. 5727. ग़ज़ल पी० ५७२७

उनसे जाकर कोई कह दे कि सताया न करें
या जो हम रूठें तो फिर आके मनाया न करें
या तो ख़िलवत में बुलाकर मेरा क़िस्सा सुन लें
या मुझे बज़मे अदू के बुलाया न करें—उन से - -
तुम तो रूठे दिल हो सामने ठेरें दिल हो
या आगे हटो ऐ तुम को पाया न करें - उन से - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

रिवालवर का निगाहों से काम करते हैं
जिधर भी जाती है वह क़त्ले आम करते हैं
तेरी ख़ुदाई में या रब हुसीन मिल जुलकर
ग़रीब बन्दों का जीना ख़राब करते हैं—रिवालवर - - -
बुतों से फ़ायदा क्या है भला ज़माने को
तेरी ख़ुदाई का कुछ इन्तज़ाम करते हैं—रिवालवर - - -

—ः०ः—

बाबू गणपति

P. 8967. **भजन** पी० ८६६७

ऊंचे सुर से जब बजाई बांसुरी घनश्याम ने
सारा आलम झुक गया तेरी नज़र के सामने
भीलनी के बेर खाये पिदर के घर सागपात
निर्धनों से प्यार करना यह सिखाया राम ने
ऐ दिल न जाइयो कहीं ज़िन्हार देखना
दुनिया है ख़ारदार ख़बरदार देखना
लज़्ज़ेते हज़्ज़े नफ़्स के फन्दे से भागियो
शैतान की है चाल ख़बरदार देखना
बांसुरी घनश्याम ने - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— **भजन**

मज़े लेती है क्या क्या आत्मा परमात्मा होकर
बक़ा को ढूंढ लेती है ख़ुदी में ख़ुद फना होकर
नहीं देखा था उसने जबतलक नरो जमाल अपना
सभी मन्दिर व गिरजे छान डाले पारसा होकर
शेर—दुनिया मिस्ले सुराब है इस पर न भूलना
ज़ाहिद तमाशा ख़ाब है इस पर न भूलना
चशमे दुई से और का कुछ और देखना
दीदार का नक़ाब है उस पर न भूलना
पारसा होकर—मज़े लेती है - - -
था जलवा आत्मा का राम गौतम और कृष्ण में
बने आत्मा से परमात्मा वह सच्चे रहनुमा होकर—मज़े - - -

P. 9065. **ज़िला** पी० ६०६५

राम सा बनके कोई हमको दिखाये तो सही
ताज शाही को कोई सर से डिगाये तो सही
कोई भीष्म सा मुजर्रद तो दिखाये हमको
मिस्ल अरजुन के कोई तीर चलाये तो सही
धरम के नाम पर प्यारो तुम्हें मरना नहीं आता
हक़ीक़त की तरह क़ुरबान सर करना नहीं आता
तुम हो औलाद शेरों की मगर अब बहरे हसती में
समय का फेर है सीधा तुम्हें तिरना नहीं आता
यह करलेंगे वोह करलेंगे यह सब कहने की बातें हैं
तुम्हें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता—बन के - - -
जिसकी दहशत से हिला करते थे शाहों के निशां
कोई शिवा कोई प्रताप बन आये तो सही

दूसरी तरफ़ :— **तिलांग**

मैं आर्य-सन्तान की महिमा सुनाऊं क्या
उन सोनेवाले बीरों को फिर से जगाऊं क्या
अरजुन का तीर चरणों में भीष्म को था प्रणाम
उस सभ्यता का मैं तुम्हें नक़्शा दिखाऊं क्या—मैं आर्य - -
भारत के योधाओं का था मथलाश में हज़्म
शंकर के धनुष्य का तुम्हें क़िस्सा सुनाऊं क्या
नन्हे से बालपन में दिया कन्स को पिछा़ड़
इस रास के खिलाड़ी के करतब बताऊं क्य—मैं आर्य - - -

P. 9245. **प्रार्थना** पी० ६२४५

घनश्याम तेरी भारत में याद हो रही है
जिस तरफ़ देखते हैं फ़रयाद हो रही है
मन्दिर शिवाले तेरे मिसमार कर दिये हैं
हरनाजब की बसती आबाद हो रही है
मथुरा की उच्च भूमी बन के जो थे नज़ारे
वोह ब्रज तेरी सारी बरबाद हो रही है
भारत की दुर्दशा में क्या रह गया है बाक़ी
प्रजा प तेरी माधो बेदाद हो रही है

दूसरी तरफ़ :— **ज़िला**

नारद से कह रहे हैं बंसी बजानेवाले
क्यों शोर कर रहे हैं मुझको बुला - वाले
उपदेश मेरा पढ़ पढ़ हर रोज़ भूलते हैं
सब हो गये हैं बुज़दिल गीता सुनाने वाले
श्रद्धा नहीं रही है पूजा व मूरती में
मतलब के हैं पुजारी मन्दिर टिकाने वाले
इस वासते ग़मी में भारत में कैसे जाऊं
माता पिता को सब हैं ज़ालिम सताने वाले

P. 9357. **भजन** पी० ६३५७

ऐ जलवये नूरानी ऐ सूरते रानाई
हर छब में तेरी लाखों अन्दाज़ दिल आराई
पूजा जो करे तेरी ऐ कृष्ण वोह दीवाना
ईश्वर जो तुम्हें समझे ऐ श्याम वोह सौदाई

अब इससे सिवा होगी और धर्म ग्लानी क्या
हैं दीन के वाली जो दुनिया के तमन्नाई
रक़्साने मोहब्बत हो जमना के किनारों पर
आजाय तने मुरदा में फिर से तवानाई

दूसरी तरफ़ :— **भजन**

मेरी इमदाद को ऐ बांसरीवाले आजा
हाथ में अपने सुदर्शन को संभाले आजा
खींचता चीर है बेदर्द दुशासन मेरी
उसको नापाक इरादे से हटा दे आजा
भीम व सहदेव तो क्या चुपके हुवे सब के सब
लग गये मुंह प अभी मौन के ताले आजा

——— :-०-: ———

P. 9428. **पहाड़ी** पी० ६४२८

नहीं जिनसे हमको थी कुछ ग़रज़ वोह अज़ीज़ बनके रुला गये
बिला मुझ से कुछ कहे सुने मेरे दिल प क़बज़ा जमा गये
मैं नशे में अपने ही चूर था भरा आखों बीच सरूर था
मुझे प्यार करना तो दूर था छुरी उलटी मुझ प चला गये
मेरे भोले दिल को न थी ख़बर कि यह हक़ में होगा मेरे ज़हर
मेरा हुस्न व जोबन लूटकर फ़क़त आहें भरना सिखा गये
मैंने पूछा हज़रत आपने किया ज़ुल्म बेबस प किस लिये
यह सवाल सुनते ही हंस दिये जले दिल को और जला गये

दूसरी तरफ़ :— **पहाड़ी**

मिला के ख़ाक में उल्फ़त जिताई जाती है
सरे मिज़ार क़यामत उठाई जाती है
ज़हे नसीब हमें ज़हर भी नहीं देते

शराब वस्ल ग्रदू को पिलाई जाती है
हज़ार बार वह काबे से गर निकाले जांयें
बुतों के दिल से कहीं ख़ुद नमाई जाती है
वह भी ख़रीदार हुआ सीना उभर गया उनका
कहीं छिपाने से चोरी छिपाई जाती है

—:(- :: -):—

मि० गुरु टीकम दास

P. 8037. भजन पी० ८०३७

बनी के चेहरे पर लाखों निसार होते हैं
बनी जब गुज़रती है दुशमन हज़ार होते हैं
क्यों भूलिया दीवाना दुनिया में सार नाहीं—दुनिया - - - -
दिन चार का तमाशा आख़िर क़रार नाहीं—आख़िर - - -
राजा वज़ीर रानी पण्डित सुवीर ज्ञानी
सब हो गये हैं फ़ानी जिन का शुमार नाहीं
दुनिया से हो नियारा सत संग कर प्यारा
सुन ज्ञान का विचारा नर जन्म हार नाहीं
भव सिंधु नीर भारी हर नाम पार तारी
ब्रह्मानंद माष कारी दिलसे विसार नाहीं—क्यों - - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

काया का तुम क्यों सिंगार काया झूठी मायारे
जिस काया ने पाप कमाया वह क्या इक छायारे

राजा को धन लोभ ने मारा युद्ध क्रोध और बल ने
रूपवन्त को काम ने मारा तीनों ही मूरख छायारे—काया - - -
झूठी है बाज़ार बांवरे झूठी धन और नारी
तोल में झूठा बोल में झूठा धोका दिया और खाया रे—काया
अन लोभ है शरीर की शक्ती वह भीतो है ठगती-काया - -
सोच समझ नर मुरख जागो

—:o:—

मास्टर हाशिम

P. 9359. ग़ज़ल पी० ९३५९

दिलो जां नबी पर जो वारे हुवे हैं
वही तो ख़ुदा के पियारे हुवे हैं
बसी जिनके दिल में मुहम्मद की सूरत
ख़ुदाई बग़ल में दाबाये हुवे हैं
जियेंगे न एजाज़े ईसा से हरगिज़
तुम्हारी जो नज़रों के मारे हुवे हैं
कहा जो ख़ुदा ने वोह समझे मोहम्मद
छुपे आइनों में इशारे हुवे हैं

दूसरी तरफ़ :— बतर्ज़ झूमर

आज दूल्हा बने हैं अरब के कुंवर - - -
आये हूरो मलक आप के दर तलक
गुल हुवा ता फ़लक देख लो एक झलक

नूर सल्ले अला का हुवा अर्श पर—आज - - -
घर से निकले नबी कहके या उम्मती
हक़ से आई वही हमने सब बख़्शदी
फिर तो शौक़ में दुलदुल चला भ़ूमकर—आज - - -
आये सिद्रे में जब बोले जिबरील तब
मेरे शाहे अरब मुझे ताक़त है कब
आगे जाऊं अगर तो जलें बाल व पर—आज - - - -

मि० हुसैन मोहम्मद

P. 4823. चौबोला पी० ४८२३

बस बस बस ख़ामोश रहो ज़्यादा जबां न खोल
ओ बेहूदी बेहया और मुंह संभाल कर बोल
मुंह संभाल कर बोल लगी क्या तिरिया चरित्र दिखाने
मारू हंटर चार अक़्ल सारी आजाय ठिकाने
तू कायर की सुता सार क्या छतरापन की जाने
अमर सिंह है शेर समर को जाये नाहर जित लाने
मैंतो जांऊ तू रोरोक अपशगुन करे है तू बेहूदी तुझ को अक़्ल ही नहीं
चल हट मेरे सामने से और नहीं तो ज़रा बस दिखाना मुझे शकलही नहीं
जो तू चाहे कुशल अपनी तो चुप चाप रहो
वरने अपनी समझना कुशल ही नहीं
गर मने फिर किया तो उड़ादूंगा सर मेरे जाने में कोई कसर ही नहीं
मैं तो जाकरके आता हूं वापिस अभी तू समझता मनमें कुछ डर ही नहीं

दूसरी तरफ़ :— मि० अनवर चौबोला

चौतरफ़ा सेती लगे बूंदी गढ़ में आग
जाघर तो बियाही गई फूटे मेरे भाग
फूटे मेरे भाग डसे बाबल को बिसयर कारो
पड़े बीजरी बाहमन प मरयो नाई पट मारो
जिन्हों फेटा कटार संग कीनो है बियाह हमारो
अगर ऐसा ही करना था तो क्यों क़िस्सा बढ़ानाथा
जो मरना था तो मर जाते न दोनों घर जलाना था
तू जगदीश कुछ सोचकर इन्साफ़ तो करना - - - -

माष्टर जमाल

P. 6475. ग़ज़ल पी० ६४७५

रुसवा तुम्हारे इश्क़ में सरकार होगया
बदनाम अब तो कूच व बाजार होगया
दिल में थी आरज़ू वह सरे राह मिल गये
क़िस्मत में था तो यार का दीदार होगया
रोका जो बज़्म ग़ैर से उनको तो यूं कहा
मेरा अज़ीज़ आप का अग़यार होगया
आइना लूटता है मज़ा हुस्ने यार का
कम्बख़्त यह भी दाख़िले अग़यार हागया
ऐ सरफ़राज़ सोहबते बद का असर बुरा
रिंदों में बैठ बैठ के मय ख़ुवार होगया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

क़त्ल गाह को जब चले वह लेके ख़ंजर हाथ में
ख़ुद बख़ुद आने लगे आशिक़ लिये सर हाथ में
आरसी मुझ को दिखाई और दिखाकर यह कहा
रख लिया करते हैं हम यूं काट के सर हाथ में
जब कहा मैंने मेरे सर में है सौदा आपका
फोड़ना सर इस से बोले देके पत्थर हाथ में
दिल में था कि हूं मैं आशिक़ न कोई पहचान ले
इस लिये वह आये हैं महन्दी लगा कर हाथ में
कहता है रम्माल अब गरदन गई दिन भी गये
आगया क़िसमत से अब पैरों का चक्कर हाथ में—क़त्ल - - -

P. 6530. ग़ज़ल पी० ६५३०

मज़ा होंटो पे फिरता है तलाश ख़ून बिसमिल है
ज़बां बिगड़ी हुई है क्या चटोरी तेग़ क़ातिल है
सियाही भी नहीं है बे सबब रुख़सार जानां पर
नज़र बद से बचाने के लिये रुख़सार पर तिल है
झुका दे मुझ को ऐ शौक़े शहादत उन के क़दमों पर
बहुत छोटी सी है तलवार कमसिन मेरा क़ातिल है
चढ़े अबरू बढ़े गेसू तुली नज़रें तिफ़ तने मुज़गां
यह फ़ौजें ईक तरफ़ हैं और तनतन्हा मेरा दिल है—मज़ा

दूसरी तरफ़ :—
ग़ज़ल

जिस प मरता है ज़माना वह अदा कौन सी है
हम भी देखें तो सही तर्ज़ जफ़ा कौन सी है

तुम हसीन थे तो मेरे दिल ने भी चाहा तुम को
इस में बतलाओ भला मेरी ख़ता कौन सी है—जिस - - -
क़ैस रोता हुआ कहता है बयाबानों में
या ख़ुदा दर्दे मुहब्बत की दवा कौन सी है—हम भी - - -

P. 6617. ग़ज़ल पी० ६६१७

बन संवर कर जब कभी वह बाम के ऊपर गये
बेगुनाह और बेख़ता लाखों हज़ारों मर गये
गये बन कर हम शिकारी इन बुतों का दश्त में
ताड़ने इन को लगे पर आप ही ख़ुद तड़ गये
चांद जब निकला तो चिलमन फेंक कर कहने लगे
कैसी सूरत है तेरी चल हट परे हम डर गये
इस से साबित यह हुआ उल्फ़त नहीं तू आग है
होते ही महमान मेरे दिल में छाले पड़ गये

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दिल जुदा माल जुदा जान जुदा लेते हैं
काम सब अपने बिगड़ कर वह बना लेते हैं
बुत भी क्या चीज़ है अल्लाह सलामत रक्खे
गालियां देके ग़रीबों की दुआ लेते हैं
जी अकेला शबे फ़ुर्क़त में जो घबराता है
फ़ितना गर हश्र को नालों से जगालेते हैं
अपनी महफ़िल से अबस हम को उठाते हैं हज़ूर
चुपके बैठे हैं अलग आप का क्या लेते हैं

——0——

P. 6717. **ग़ज़ल** पी० ६७१७

राहत का इस तहर से ज़माना गुज़र गया
झोका हवा का जैसे इधर से उधर गया
ग़म वह गिज़ा है जिस का मज़ा कुछ अजीब है
भूका भी मैं रहा तो पेट मेरा फर गया
सोज़ ग़म फिराक़ से सीना है जल गया
वह आबले उठे कि बाग़ मेरा फल गया
हैरत है क्या हुआ तुझे जब लोग आगये
आंखें बदल गईं वह तेरा दिल बदल गया
है शुक्र उनके पास नहीं आता अब रक़ीब
दिल में खटक रहा था जो कांटा निकल गया
किस चोज़ पर है नाज़ और किस बात पर ग़रूर
तेरे तो आफ़ताबका साया भी ढल गया-सोने - - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

हम से झूठी तो क़सम सामने खाई न गई
बात परदे की मुहब्बत में छिपाई न गई
लड़ रहे थे मेरे शिकवे जो मैं पहुंचा सर प
सख़्त घबराये मगर बात बनाई न गई
बोसे देते हुए जब मैने उन्हें पकड़ लिया
सख़्त शरमिंदा हुए आंख चुराई न गई
मैं तो घर उन के गया और वह मेरे पहुंचा
वस्ल की रात भी क़िस्मत की बुराई न गई
ज़ब्त दिल कर न सका हो गया दीवाना वह
क़ैस से चोट मोहब्बतकी उठाई न गई

दूहरे मैख़ाने हैं नीयत मेरी भरने के लिये
तुम जो बन ठन के चले हो मेरे घर आने को
बिगड़े बैठे हैं नसीब आज संवरने के लिये
किस मसीहा की है मक़तल में इलाही आमद
मौत भी आज मरी जाती है मरने के लिये

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

'जिगर थामे हुए बैठे हैं जितने सुनने वाले हैं
मेरे पुर दर्द नाले भी बड़े बेदर्द नाले हैं
चला है इस तज़क से तेरा दीवाना बयाबां को
कि दहने बायें फ़ौज अश्क आगे आगे नाले हैं
कोई क्या जाने क्या चुन्ती है लैला अपनी पलकों से
यह वह कांटे है मजनू ने जो तलुओं से निकाले हैं
मुहब्बत में बुत बेदर्द से यह कहलवा छोड़ा
कि वह अच्छे रहे यारब जो हम पर मरने वाले हैं

P. 7475. **ग़ज़ल** पी० ७४७५

किस के खोये हुए औसान चले आते हैं
वह जो यों बे सरोसामान चले आते हैं
ग़ैर से मिलने की ताकीद है हर ख़त में मुझे
किस क़यामत के यह फ़रमान चले आते हैं
तुम जो नाज़ुक हो तो क्या आ नहीं सकते दिल में
आंख की राह भी इन्सान चले आते हैं—तुम - - -
बुत निकाले गये काबे से मगर बू न गई
आज तक दुशमने ईमान चले आते हैं—किस के खोये - - -

दूसरो तरफ़ :— ग़ज़ल

शादी व अलम सब से हासिल है सुबुक दोशी
सौ होश मेरे सदक़े तुझ पर मेरी बेहोशी
हम रब्ज भी पाने पर ममनून ही होते हैं
हम से तो नहीं मुमकिन ऐहसान फ़रामोशो
हर क़तरे को है बेदम दरया से हम आग़ोशी
हर ख़ाक के ज़र्रे में ख़ुरशीद के जलवे में
कल अरशये मेहशर में जब ऐब खुले मेरे
हां हां रेहमां तेरी पैदा ने सामाने ख़ता पोशी

P. 7598. सारंग पी० ७५९८

गन गनन गरजात छैला चमक आई दोहू बसर करत आये—गन - - -
यों झर झरात बिजली चमक आई दोहू बसर करत आये—गन - - -
यो झर झरात बिजलो चमक आई - - - गन गनन - - -

दूसरी तरफ़ :— असावरा

विद्याधर गुनन जनन सोंका करिये उन चरचा की लड़ाई लड़िये
मोरा तोरा बनाओ सजन तोरे आगे और गुनिन के चरण धारिये
विद्याधर - - - मोरे तोरा - - - विद्याधर - - -

P. 8034. भैरवीं पी० ८०३४

बन्दे कैसा तेरा नाता - - -
माता रोवे जबलग जीवे बहन रोवे दस मासा

त्रिया रोवे तेरह दिना तक फेर करे घर बासा—बन्दे - - -
खूब ऐश दुनिया में कीना अगनि में फूंका जाता
हाड़ जले जिस जङ्गलमें लकड़ी के सङ्ग जले जस घासा—बन्दे - -
(वोहजी भाई साहब) खूब ऐश - - हाड़ जले - - - बन्दे - - -
पांच बीर प्रकम्मा करके मुख में अगन लगाता
कहत कबीर उठो बुरान मान्यो मेरे प डडं कहाता—बन्दे - - -
हां रोती है शबनम कि नीरङ्ग जहां उस में नहीं
चीख़ती हैं बुलबुलें गुलका पता कुछ भी नहीं—बन्दे

दूसरी तरफ़ :— मि० राम औयार दादरा

जब से गयों बजरिया सवरिया से लड़ गई नजरिया - - -
प्रेम नगर के हा रङ्गरेज़वा रङ्गदे हमारी चुनरिया - - -
अरे हां रे हमारी चुनरिया—संवरिया से लड़गई नजरिया—जब - -
रूमत भूमत आवे रङ्गरेजवा ओढ़े कारी कमरिया
अरे हां रे - - - संवरिया से लड़ गई नजजिया—जब - -

मि० ग़फ्फ़ूर

P. 7238. बोलियां पी० ७२३८

पिया देना चन्दा बरखी नार पाणी पिया देना - - -
इक भेद पूछना चाहता था, तेरे से—इक भेद - - -
दिल कहते हुए दहलाता था—बिन भेद पता नहीं पाता था - -
तो किस की राज कुंवारी पाणी पिया देना - - चन्दा बरखी - -

तों किस राजा की जाई से और किसके संग में ब्याही से
(तुम्हें पूछूं)—के पूछे नपुत्त बावरे भाग जा भाग जा)
अरी किसके संग में बियाही से और किस राजा की जाई से
ऐसी क्या पड़गई तबाई से क्यों आप भरे तू नार—पाणी - -
क्या थोटा घरमें भारी से—क्या मरे बाप महतारी से
चौरा चन्दा अगारीसे तोरी राज कुंवार पाणी पिया देणा—चन्द -

दूसरी तरफ़ :— बोलियां

ऐ नपुत्त मत बके नहीं उड़ादूं तेरा चामरे
अपने रस्ते लाग तू तुम्हें क्या मुझ से कामरे
(अरे तू बक बक करे माथे की फूट गई)
क्या मुझसे काम नपुत्त क्यों राह करी तें खोटी—क्यों - -
जो घरका भेरे आजाये तेरे पकड़ के मार दे सोटी (भाग जा भाग जा)
भग जाये तू भाग नपुत्त नहीं गही काल ने चोटी
अरे क्या बकता है तू पाजी बदकार रे—क्या बकता है - -
(जानो ऐसा मालूम हो अपनी किसी मां बहन से पंदा नहीं हुआ)
अरे क्या बकता है तू पाजी बदकार - - - - -
तू बोल छलका बोलेसे (अरे वाह वाह ग़फ़ूर) तू बोल छल - -
मेरे घाव जिगर में खोले से—तो मारिया किसी का डोले से
मैंने लिया है जान गंवार—अरे क्या बकता है पाजी बदकार
(चोरवा गावे से चोरवा गावे से वाह रे वाह ग़फ़ूर)
ओरी मख़मल की जाकट पहने बदन चमके सीस का फोड़ा
इक ज़रा सा पानी पिया देना बैठके ज़रा घट को
(अरे भाग जा - भाग जा तोरी शामत आई रे—भाग जा तू क्या करे)
है ओरी मुख तेरा रमजा है पकड़ मारूं सोटी
अरी तेरी माया तो म्हारे टांडेने चलदे नैन (कलाका क्या भगन काला नहीं)

P. 8035. चौबाला चलंत (पूरनका माताको जबाव) पी० ८०३५

लोना पूरन को हरचन्द समझा देन्दी और यह हुक्म देन्दी की
किसी तरह मेरे क़बज़े बिच आजीव और पूरन जवाब देन्दा
धरम दा पुत्र जन्दा सा माता मेरी धर्म दा - -
माता पुत्र न कहे जो बहन न आ कहे बीर
फिर तो माता बहेगा जो उल्टा नदियां नीर—हांरे उल्टा - -
नीर बहेगा धरती फट जावेगी हे माता मेरी - -
सब लिपटेगी है अरी माता मेरी त्रलोकि की मिट्टी सी मिट जावेगी
लई सूरज चन्द्रमां हो जायेंगे काले जोत चमक घट जावेगी
(देखो तो ज़रा ग़ौर कर माता जी) सूरज चन्द्रमां - -
अरी महान घोर धुन्दकार मचेगा अरी धर्म रीत घट जावेगी

दूसरी तरफ़ :— चौबाला (जबाव लोना का पूरन से)

कब मैं कक्खों जाया कब मैं अख्या पूत
मां बेटे के सांक का जो है फिर कौन सबूत
खड़े तों साक ले मैनूं है जी मां बनावें
हां जी आकहूं जो मैं पुत्र मैनू शरम सी आवे
(वाह भई हबीब खां क्या ही कहने) आकहूं - - - -
(वाह भैया छैला खूब चौबोलेते चौबोला आनन्द रहैया)
(जोड़ी सज जावे) जोड़ी कब में कुक्खों जाया तैनूं कबमै
अखिया पूत (नहीं माता) मां बेटे दे साकले काजो है फिर कौन सबूत
खड़े तों साकले मैनूं है जी मां - - - -
जोड़ी सज जावे जे तों नेहो लगावें (भला सोच तो कर माता
तेरी सर भद्रा होगई मैं माता उलटी हुई) जोड़ी सज जावे - - -

——:-०-:——

पण्डित घनश्याम

P. 123. **बिहाग** पी० १२३

तारीफ़ उस ख़ुदा की जिस ने जहां बनाया
कैसी ज़मीं बनाई क्या आस्मां बनाया—तारीफ़ - -
सूरज के अन्नताई गर्मी भी और रोशनी भी
क्या ख़ूब कृष्णा तूने महरबां बनाया—तारिफ़ - - -
यह प्यारी प्यारी चिड़ियां फिरतो हैं जो चहकती
क़ुदरत ने तेरी उनको तदबीर दां बनाया—तारीफ़ - - -
क्या दूध देने वाली गइयां हैं बनाई तूने
चढ़ने को मेरे घोड़ा क्या ख़ूब रवां बनाया—तारीफ़ - - - - -

दूसरी तरफ़ :— बिहाग

नशों पे मर रहे हैं हिन्दोस्तान वाले
आख़िर के मुसीबत आई यह हिन्दुस्तान वाले
करते ख़राब ज़ालिम औलाद को अपनी यह सब
मिट्टी को देखते है वह फिर मकान वाले—नशों -
यह पाक करम लाना यह पाक कर्म पर देता है दिल
तेरे ही आसरे है तीरो कमान वाले—नशों - - -
नकशे के दम की सूरत इसने मिटा के छाड़ा
माइल जो मय पर नहों गर हिन्दुस्तान वाले—नशों - - -
कट कट जा मय कशी की बुत दिल से जी रही है
यह बात कर रहे गे यह दिलो जान वाले—नशों - -

—— ——:०: ——

मि० गुलाब नबी

P. 6185. **ग़ज़ल** पी० ६१८५

रंगे शरब से मेरी नीयत बदल गई
माहिर की बात रह गई साइत निकल गई
तैयार थे लिबासमें हम खुल के निकले यूं
जलवा कुतों का देख के नीयत बदल गई
चमका तेरा जमाल जो महफ़िल में वक़्ते शाम
पर्वाना बेक़रार हुआ शमय जल गई—रंगे - - -
न लड़ा आंख किसी मस्त के मैख़ाने से
बाल आजायगा साक़ी तेरे पैमाने में
नीची नज़रों से भला देखो भला क्यों देखा
लोग भी समझ गये मेरे पर्वाने में—रंगे - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

ज़ाहिद शराब नाब से जब तक बज़ू न हो
क़ाबिल नमाज़ पढ़ने के मस्जद में तू न हो
तू हो तो कुछ भला मुझे काबासे कम नहीं
काबा सनम कदा हो जो काबा में तू न हो
महन्दी लगाये बैठे हैं कहते हैं बार बार
कामिल किसी शहीद नहीं जिसमें कि ख़ू न हो—जाहिद - -

—:-०-:—

P. 6244. **मांड** पी० ६२४४

तेरा अबरु में बिस्म अल्लाह से मिलती हुई
गफ़्तगू उनकी क़नाउल्लाह से मिलती हुई

जिस्म दिल से उनके हम दाग़ पर कीजे नज़र
जिन अदाको देखिये अल्लाह से मिलती हुई
मैं तेरे क़ुर्बान जाऊं ऐ मेरे बन्दे नवाज़
तेरी सूरत हूर रसूलिल्ला से मिलती हुई
बर ज़बां नूरे ख़ुदा हुस्न जानां सर बसर
यार की तस्वीर है अल्लाह से मिलती हुई

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

दर पर नबीके पहुंचू दिल में यह आरही हैं
आंखे तरस रही हैं व्याकुल बना रही हैं—दर - - -
कोई नसीब वाली रोज़ पे जारहे है
बदबख़्त कोई बैठीं आंसू बहा रही है
सारे नबीके सदक़े क्या है अगल ज़माने
कंकर बुला रही है पा का घर रही है—दर पै - - -

——:-०-:——

P. 6474. ग़ज़ल पी० ६४७४

न तू जोगी बन न बिरोगी बन न लगा के ख़ाक़ तू बनमें जा
जो ख़ुदा को है तुझे ढूंढना किसी मारफ़त दे तमन्ना दे जा
जो ख़ुदी अपनी को मिटायेगा वह ख़ुदा की ज़ात से पायेगा
तुझ नर है देखना थुतिसाड़े साडे दे हन्ना दे जा
वही शमय में वही बुर्क़ में वही काबे में वही कलीता में
वह कृष्णा बनके छुट गया उसे ढूंढ गोकुलके बनमें जा - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

वही राम में वही रहीम में वलफ़त्ता मरयम में
मुझे उसका कुछ भी पता नहीं इत्थे देख अपने तू तन्ने दे जा

वही बदर में वही मलाल में वही गेसू में वही ख़ार में
मुझे उसका कुछ भी पता नहीं उत्थे देख चाह सतन्ना देजा - -
जो पराग में जाकर के कोई ग़मे हुस्न में रोय है
नहीं अब तेरी राह हमें रे देख गुल के हन्ने दे जा

P. 8698. नात पी० ८६९८

देखे जो तेरा जलवा तड़प जाय नज़र भी
रौशन हैं तेरे नूर से सूरज भी क़मर भी
मिलती है तेरे ख़ुल्क़ की हर जा से शहादत
बोल उट्ठे तेरे हुक्म से पत्थर भी शजर भी
एक मैं ही नहीं सब हैं तेरे चाहने वाले
अल्लाह भी हूरें भी फ़रिशते भी बशर भी
(वाह वाह) (या मोहम्मद तू ही है तू ही)
जिस राह चल दिये हुवे ख़ुशबू से मोअत्तर
कूचे भी मकानात भी दीवार भी दर भी
(वाह वाह) देखे जो तेरा जलवा - - -

दूसरी तरफ़ :— नात क़ौवाली

शेर—इलाही औज क़िसमत है अरब के रहने वालों की
ज़ियारत उनको होती है निरालों से निरालों की
ख़ियाले ज़ुल्फ़े अहमद में मैं रोया इस क़दर शब को
कि पहुंचीं चर्ख़ हफ़तुम पर सदायें मेरे नालों की
पेच पाया दिल का मेरे ज़ुल्फ़ की ज़न्जरी ने
और घायल कर दिया तेरी निगाह के तीर ने
दिल में है तेरा तसौवर रात दिन तेरा ख़ियाल

कर दिया तसौवर मुझको इस तेरी तसवीर ने
वार दोनों के गये ख़ाली न वक्त़ इमतिहां
तेग़ ने काटा गला दिल चीर डाला तीर ने

———:०:———

P. 8876. ग़ज़ल पो० ८८७६

तुरबत ज़रूर है यह किसी बेक़रार की
लौ थरथरा रही चिराग़े मज़ार की
क़िसमत खुली है आज हमारे मज़ार की
चादर पड़ी है गोशये दामाने यार की
बादे सबा मिटाती है तुरबत मज़ार की
मिटती है यादगार तेरे यादगार की
बेदम हमारा नख़्ले तमन्ना हरा हुआ
आई भी और गुज़र भी गई रुत बहार की

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मह लक़ा की याद ने वक्त़ सहर रुला दिया
तीरे निगाहे शोख़ ने ज़ख़मी जिगर हिला दिया
अरे अदू हमें जलाये क्यों अरे दिलबर हमें सताये क्यों
गिला तो है ख़ुदा से दिल जिसने तुमको हंसी बना दिया
हाय रे तेरी बेरुख़ी आये न मेरे मरने पर
बल्कि जनाज़ा देखकर नफ़रत से मुसकुरा दिया
मह लक़ा कि याद ने

P. 7017. ज़िला पो० ७०१७

किस के ख़िराम नाज़ ने क़ब्र में दिल हिला दिया
चैन से सो रहा था मैं किस ने मुझे जगा दिया
हाय ! किस ने मुझे जगा दिया—किसे के - - -
तुम तो अदू पै जान दो करते हो हमसे दिल तलब
अब तुम को दिल से क्या गर्ज़ पहिले ही दिल जला दिया
हाय ! पहिले ही दिल जला जिया—किस - - -
मैं वह शमय मज़ार हूं हाथ में तेरे सनम
शाम हुई जला दिया हाय ! शाम हुई जला दिया
सुवह हुई बुझा दिया हाय ! सुबह हुई बुझा दिया—किस - - -

दूसरी तरफ़ :— मास्टर जमाल ग़ज़ल

यह बेरुख़ी तुम्हारी दिलको दुखा रही है
ग़ैरत की आग मेरा तन कन मेरा जला रही है
क्या वक्त़ था कि तूने हंस हंस के दिल लिया था
अब वह हंसी प्यारे मुझ को रुला रही है
यह बेरुख़ी - - - - - - - - - - - -
साग़िर है और मय है वह दिलरुबा नहीं है
छाई हुई घटा है दिल को घटा रही है
ग़ैरों से कर रहे हैं ऐ दाग़ वह इशारे
उन की नज़र फ़रेबी चरके लगा रही है—यह - - -

गोस्वामी नारायण

P. 9066. अंगद सम्बाद पहिला भाग रामायण पी० ९०६६

समुद्र के पार रामचन्द्र जी अपनी सैना सहित प्रातकाल उठते ही अपनी सेना के मन्त्रीयों से पूछते हैं।

चौपाई—यहां प्रात जागे रघुराई
पूछा मती सब सेचू बुलाई

(पूछते हैं) हे भाई अब यह बतलावो तुम सब ने क्या ठैराया है
देख उस रावण राजा ने क्या अद्भुत चक्र चलाया है
यहां बीत चुके हैं कई दिवस बोह नहीं युद्ध में आया है
लङ्का के द्वार बन्द हैं क्यों कुछ भेद भी उसका पाया है
प्रथम विभीषण ने कहा सुनिये कृपा निधान
रावण साधारण नहीं है सुजान विद्वान
दरवाज़े बन्द किये हैं सो यह मत समझो डरता होगा
मन्त्रीयों से सैनापतियों से मशवरा बोह कुछ करता होगा
कुछ रोज और देखिये राह यह राजनीति बतलाती है
रिपु को परबन्ध करने के लिये कुछ मोहलत भी दी जाती है

दूसरी तरफ़ :— अंगद सम्बाद २ भाग रामायण

(जब हनुमान जी ने देरी का शब्द सुना तो आप कहते है)
दो चार रोज़ की यह देरी मुझ को तो बहुत खटकती है
वहां सीता मां को घड़ी घड़ी बरसों की तरह से कटती है
हम वृक्षों और पत्थरों से रावण का क़िला गिरा देंगे
पल भर में द्वार कपाट तोड़ लङ्का में प्रलय मचा देंगे
जब राजमहल को तोड़ेंगे तब तो रावण घबरायेगा
सीता जो को देजायेगा या रन में लड़ने आयेगा

गाना—कर पर हार तोड़ द्वार करदें हाहाकार सीता मां का हों उद्धार
चले बहम क़दम क़दम निकम निगम दिलेर हम करें असुर को
दमबदम ख़तम हो बेड़ा पार
दें महल को ढाय, सिन्धु में बहाय
तीर से उड़ाय, अगनी से जलाय
तंग करके जंग करके ढङ्ग करके
संग संग जानकी को लायेगा छुड़ाय
तब हो अपना नाम शीघ्र हो सब काम जन्म हो तमाम
जय हो राधे श्याम देर में अंधेर होगी हुक्म दो सरकार
(जय हो जय हो जय हो मेरे माधो कृष्ण का)

—:o:—

P. 9067. अंगद सम्बाद भाग रामायण पी० ९०६७

(बजरंग बली की बात सुनकर के सुग्रीव जो कहते हैं)
बजरंगी की बात सुन उठ बोले सुगरीउ
शीघ्र विजय हो जायेगी ठीक यही तरकीब
तो भी नहीं राय मैं देता हूं क़ासिद का काम पैशतर है
इस ढङ्ग से हम मालूम करें क्या उनके दिलके अन्दर है
यदि किसी प्रकार सुलह होवे तब तो विचार यह सुन्दर है
इस मरने कटने से पहले समझाना उसको बेहतर है
तुम बुद्धिमान हो हनुमान कहते हो बात ठिकाने की
फिर एक मरतबा तुम्हीं वहां तकलीफ़ उठावो जाने की
जामवन्त कहने लगे ठीक तो है यह राय
किन्तु ज़रा सा भेद है कहता हूं समझाय
बजरंग बली के जाने से हमको हर तरह सुभीता है
पर दूसरो बार यह जाते हैं इस कारण एक फ़ज़ीता है

रावण अवश्य यह समझेगा सब दार व मदार इसी पर है
हर बार इसी को भेजते हैं बस यह ही एक दिलावर है
जो कुछ भी अर्ज़ मैं करता हूं सब ज़ाहिर ख़ास व आम के है
इस बार भेजिये अंगद को यह भी लायक़ इस काम के हैं

दूसरी तरफ़ :— अंगद सम्बाद ४ भाग रामायण

(जामवन्त जी कहते हैं कि हनुमानजी को मत भेजो अंगद जी को भेजो। उसी समय अंगद जी खड़े होते हैं। अंगद जी को खड़े देख कर के रामचन्द्र जी कहते हैं)

हे अंगद तुमको हृदय से हम निज पुत्र समान समझते हैं
भय है कुछ तुम्हें भेजने में, इसलिये भजते डरते हैं
फिर उचित नहीं है दूत कार यह एक राजपुत्र शहज़ादे को
इस कारण हम यह कहते हैं अब तुम भी कहो इरादे को
हाथ जोड़ अंगद कहा सुनिये कौशल-नाथ
रखिये आशिरबाद का मेरे सिर पर हाथ
जिस जन पर कृपा तुम्हारी है वोह जाकर लड़े रसातल तक
निर्भय है उसको ख़ौफ़ नहीं उदयाचल से अस्ताचल तक
फिर लङ्कावाले तो क्या हैं वोह कौन जो उसको डर पाये
इक़बाल आप कर ऐसा है पानी पर पत्थर तैराये
जन से हो कार यह जनार्द्दन का तो इस से बढ़कर मान नहीं
युवराज तुम्हारा दूत बनूं तो कुछ घटती है शान नहीं

P. 9738. भजन पी० ९७३८

छुवो न मोरी मटकी को चलो जावो हटीले ब्रजराज छुवो न - -
याद करो लाला अहीरों ने पाला
तू ने गोपियों से छेड़ नटखट की क्यों
मोरी बइयां पकड़ तूने झिटकी क्यों
छुवो न मोरी मटकी को चलो जावो हटीले ब्रजराज - - -
गौवें चरावो दधि माखन चुरावो जावो
भरी जल की गगर मोरी पटकी क्यों—छुवो न मोरो - - -
कहां जायें कैसी करें कौन भांति समझायें
घर बाहर नहिं चैन है गाम छोड़ कित जायें
चलो जावो हटीले ब्रजराज छुवो न - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

गगरी गिरावै काहे काहे रे मोहनवा - - -
जाय कहूंगी मैं यशोदा से गारियां सुनावै बीर तेरी ललनवा
चुरियां गहीं तो मैं नहीं मानूं
चुरियां गहीं तोहे चार चित कटवा—गगरी गिरावै - - -
राधे श्याम शाम से बोले
छूटत है नहीं यारी रे लगनवा—गगरी गिरावै - - -

सैयद गुलाम हुसैन

P. 9358. ग़ज़ल पी० ९३५८

वर ख़ुशी से राहे हक़ में लुटानेवाले
कैसे साबिर थे मोहम्मद के घरानेवाले

हाय अफ़सोस रहे ख़ुद लबे दरया प्यासे
हश्र में चशमये कौसर के लुटानेवाले
कैसे पछतायेंगे दोख़ज़ में जलेंगे जिसदम
ख़ेमये आल मोहम्मद के जलानेवाले
भूख में प्यास में एक एक हज़ारों से लड़े
क्या बहादुर थे मोहम्मद के घरानेवाले
तू भी राही हो मदीने की तरफ़ जल्द अमीर
ग़ोल के ग़ोल चले जाते हैं जानेवाले

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हमें तैबा में बुलवालो तुम्हें हम याद करते हैं
यहां पर किस लिये मिट्टी मेरी बरबाद करते है
सबा तुझको क़सम देते हैं हम इश्क़े मोहम्मद की
भला सच सच बता हज़रत भी हमको याद करते है
उसी दम तुझको शादी मर्ग हो जाये अजब क्या है
कोई आकर यह कैहदे तुझको हज़रत याद करते हैं
फ़रिशतों ने यह कैहकर रुह खींची निज़ा में मेरी
गुलामे मुसतुफ़ा को आज हम आज़ाद करते हैं—हमें - -

P. 9629. ग़ज़ल पी० ९६२९

इश्क़ ख़ाना ख़राब होता है। दिल लगाना अज़ाब होता है।
जल्द पीने दे ज़ाहिदा थोड़ी। बन्द तौबा का बाब होता है—इश्क़ - -
ख़ल के मूसा को जलवा दिखलाया। आशिक़ों से हिजाब होता है।
तुम से बिगड़ी रक़ीब से साहब। मुझ प नाहक़ इताब होता है।
तूर पर रक्खा जिसको परदे में, आज वोह बे नक़ाब होता है—इश्क़ - -

मि० जमालुद्दीन

P. 3693. नेहालदे भाग १ पी० ३६९३

धन बिन कैसी री धना तरी प्यारी रुत बिन कैसा री मल्हार
ऐ भाइयों बिन री बाहर कैसा मेरी प्यारी पी बिन कैसा सिगार
पिया बिन कैसा री सिगार - - -
भगती बिना री बेटी के बिना रूप री पिया बिना कैसा री सिगार
धन बिन वह झिरवे जगत में डाल
ऐरी ऐरी बहनी पीपल झिखे मारी भला ज़ेर हो रहा
झिरवे पानी फूल नहीं री
ऐरी ऐरी बहनी फड़ नदी झिखे पानी नागर भेद बांझ लुगाई री
झिखे - - - -

दूसरी तरफ़ :— नेहालदे भाग २

ऐरी ऐरी रानी पियाने गिखा रानी कवंर निहाल सेज पुरानी री
होगई थी पियाकी
ऐरी ऐरी कैसी बाना सेजों बनवाई यहक्या साजे फूल पुरानी पडे हैं
मेरी सेज परी - - - -
ऐरी ऐरी बहनी एक सने न मारू सबसे छुपाके एक वार पियाने
जाके घोरे घेर लई - -
ऐरी ऐरी बहनी बुध की याद वैरन हो जागी रात
चुड़ला फोड़ेगी री बहनी हाथी दांत का
ऐरी ऐरी कैसी साज भरेगी बैरन अपनी साथ
सुरखे चुंदडिया उदहर ही प्यारी बाप में री
ऐरी ऐरी बहनी जलके मरेगी बैरन पिया के साथ में इतनी विपत

———:(-o-):———

P. 3793. **चौबोला हाथरस** पी० ३७९३

बादशाहसे डर गये तुम कैसे राठौड़
पर्वाना भेजूं बापके मंगावादूं सात किरोड़
मंगावा दूं सात किरोड़ पिता के कल भेजूं पर्वाना
हज़रत का जुर्माना भरके तब खाऊंगी खाना
बैठ महल के बीच पति जी मैं कहूं सो कहन पुगाना
तुझे कहती है रानी जी यह सोची दिल पै थानी है
ग़ैर वक्त है पती मेरे मतना दिल्ली को जाना है
हाथ जोड़ कर खड़ी ज़रा बन्दीका कहन पुगाना
सीस महल के बीच पती बेशक चैन उड़ाना
हाथ जोड़ के खड़ी है पिया मेरा कहना पुगाना

दूसरी तरफ़ :— **चौबोला हाथरस**

हाथ जोड़ रानी कहे सुन मेरे भर तार
अभी तो आधी रात है मांगत हो हथियार
मांगत हो हथियार पती जी करी किधर की तैयारी
आज की रात रहो महलों में मैं ताबेदार तुम्हारी
सांच कहो पीतम मेरे क्यो मांगी तेग़ दुधारी
चले अकेली छोड़ मुझे किस बिध जीवे नारी
तेरे बिना शीश महल में पीतम लगे न तबियत म्हारी
इसी वक्त मत जाव पीतम यह रैन है अंधयारी
मेरे महलों में रहना बजा है तबतक रहना
क्या बन्दी ताबेदार मेरे महलों में रहना

P. 4665. **सोरठ काफ़ी** पी०

थोड़ा सा नीर पिलादे बाक़ी घाल मेरे लोटे में
तुझे क्या बात कही सी मुसीबत पड़रही सी पानी के टोटे में
मुसीबत पड़ रही सी प्यारी पानी के टोटे में-थाड़ा - - -
तेरी टूम घडा दूं सारी दिके तेरी टूम घडा दूं सारी
तू चले न साथ हमारी सावन किस के खोटे में-थोड़ा सा
दिके बिर लाखों छतरी खप गये पर तिरिया के मोहने में
तू मुझ को देख हंसे से एक कुली नाग बसे से
एक तिरिया के चोटे में—
मैं हाथ जोड़ के कहती अब झोली भर देगा
एक बार घूंघट के खोल में

दूसरी तरफ़ :— **सोरठ काफ़ी**

मुझे थोड़ा सा नीर पिलादे नेक करके हाथ आगे ने
मैं कैसे कर जीऊंगा करता जो ना इत उम्र में जागे ने
तेरे गोरे बदन ने मारा नेक हाथ करो आगे ने
क्या लालोला जागो धोय मांज कर पिया दूं
मेरा केला जो जावेगा
पनघट फोट्ट कनावे बिलकुल धोका खाजागा
जादू पै आपको हीरा डेला बन गई
कि वे आशिक करें क्या आशक़ी दिल पै न रखते बद गोई
हम तो - - - - -
बांस को खोल कांपे से - - - - - - - -

P. 37?

जटाधारी झा

P. 9246. **भजन ताल तिताला** पी० ९२४६

यह अवसर बार बार नहिं अइ है
या दुनिया में तू कछु कर ले भलाई
जन्म जन्म क्यों खपइ है—यह अवसर - -
जा दिन मन पंछी उड़ जइ है
ता दिन तेरे तन तरवर को सभी पात झर जइ है—यह - - -
यह संसार ओस के पानी पलक मूंद ढल जइ है
अब सूरदास भगवन्त भजन बिन वृथा ही जन्म गंवाइ है
यह अवसर बार बार - - -

दूसरी तरफ़ :— **भैरवीं ताल दादरा**

बंसिया काहे को बजाये
अब मोरी पिया ललचाये, बंसिया काहे को बजाये
रसिक पिया अब भई हूं बांवरी, सुध बुध सब बिसराये
बंसिया काहे को बजाये
रसिक पिया अब भाई हूं बावरी—तनमन सुध बिसराये
बंसिया काहे को बजाये

—:०:—

P. 9360. **धानी पीलू ठुमर** पी० ९३६०

देखो मोरी ढरक ना जाय गगरी - - -
कान्हा जी बैयां मोरी छरकें मुरकें नरमी कलाई—मोरी - - -
देखो मोरी ढरक ना जाय गगरी - - -

हूं तो जानत असर तेरे रंग ढंग
बरो जोरी मैंका मारे नैन की जल झारी
सखियन संग निरखत सगरी—मोरी ढरक - - देखो - -

दूसरी तरफ़ :— **खम्माच दादरा**

कहीं लचक लचक चलत मोहन आवे—मन भावे - -
सांवरी सूरत मोहनी मूरत बन मुरली बजावे
मुरली धुन बजावे—कहीं लचक लचक - -
हाथन कोंदिया कांधे कमलिया बन में गौवा चरावे
ग्वालन के संग रास रचावत राधे राधे गावे—कहीं लचक - - -

—:०:—

मि० काकू राम

P. 6531. **बंगला** पी० ६५३१

नादान से नेह लगाना नहीं—दिलको आफ़त में मुफ़्त में फंसाना नहीं
गर तुम्हें ज़िंदगी दुनियां में रखनी हो मंज़ूर
किसी नादान को दिल अपना न दो हत्तुलमक़ दूर
कमसिन को नहीं दिलदारी का हरग़िज़ है शऊर
लेके दिल शीशे की मानिन्द यह कर देते हैं चूर
भोली सूरत समझ बसमें आना नहीं
नादान से नेह लगाना नहीं - - - -
पहिले किस क़दर मुहब्बत को बढ़ाते हैं हसीं
मुर्ग़ दिल बतमय दाना में फंसाते हैं हसीं
फ़र्श से अर्श पै इकदम में बिठाते हैं हसीं

आख़रश ख़ाक में आशिक़ को मिलाते हैं हसीं
इन के जोरो सितम का ठिकाना नहीं—नादान - - -

दूसरी तरफ़ :— कालंगड़ा

हैं ख़ुश तेरी रज़ा में चाहे कर तू प्यारे
है दिल फ़िदा हमारा तेरी हर इक अदा में
यां बिठादे वां बिठादे जी चाहे जहां बिठादे
अर्श पै जगह जो चाहे ज़ेर ख़ाक यादे—हैं ख़ुश - - -
चाहे तू करे हमसे प्यार चाहे दिलसे दे बिसार
चाहे दे बहार चाहे डाल दे बला में—हैं ख़ुश - - -

—:०:—

P. 6618. ग़ज़ल पी० ६६१८

ज़ुल्फ़ों के तेर बाल जो बल खाये हुए हैं
कुछ आज लहर में यह अजब आये हुए हैं
क्या प्यार से पाले हैं सनम तू ने यह काले
किस शौक़ से झूमर तले बिठलाये हुए हैं—ज़ुल्फ़ों - -
शैदा प लपकते हैं ग़ज़ब डङ्क उठा कर
बस जान लिया आप के सिखलाये हुए हैं
उस बुत ने कहा मुझ से चरन छेड़ो न इन को
सर तूने चढ़ा रक्खे हैं मचलाये हुए हैं—ज़ुल्फ़ों - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

रूबरू यार के गर तू भी ख़ुदाया होता
शमय रू शोख़ ने तुझ को भी जलाया होता
नासहायावा गोई से तेरे लब होते हैं बन्द
लबे शीरी का मज़ा तुझको जो आया होता—रूबरू - -

ख़ूब तड़पाता तुझे चैन न लेने देता
नाज़ो अन्दाज़ अगर हमको सिखाया होता—रूबरू - - -
शादये मर्ग से लिपे में जान आजाती
लफ़्ज़ इक वस्ल का गर उसने सुनाया होता—रूबरू - - -

—०—

P. 8700. ग़ज़ल पी० ८७००

बादे बहार दो दिन की है - - -
बादे बहार दुनिया ऐ दिल नादां संभल जा मत कर इस
गुल से प्यार दो दिन की है
बादे बहार दो दिन - - -
रही न बचपन की उम्र तेरी
फ़ज़ूल गुज़री जवानी सारी
ज़ईफ़ी ने आके मत जो मारी
फिर यह गुलशन है ख़ार दो दिन की है
बादे बहार दो दिन - - -
हवास ख़मसा हुवे जो ज़ायल
बिगाड़ी आज़ाय तन की महफ़िल
ग़मे जुदाई में रोयेगा दिल
कि जूं जूं बिछड़ेंगे यार—दो दिन की है
बादे बहार दो दिन - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

रश्के आदाब ख़ुशी दिल प सहा करते हैं
इश्क़ के ज़ोर का आशिक न गिला करते हैं
तुम जफ़ा करते हैं या हम से वफ़ा करते हैं
हमने यक दिन भी कहा तुम से ये क्या करते हैं

तेरे ज़ुल्म की बसती वोह कर देते हैं तबाह
हज़रते इश्क़ जहां क़दम धरा करते हैं—रश्के आदाब - - -
मैंने उनसे कहा कि मारो न क़ज़ाय दिल मुझको
बोले बस दूर हो हम हुक्मे ख़ुदा करते हैं—रश्के आदाब -

——————:०:——————

मि० खेवे ख़ां

P. 7718. बोलियां हक़ीक़ राय पी० ७७१८

धरम मत हारना रे - - - - - - - - - - - -
धरम के ऊपर तन मन धन सब वारना रे—धरम - - -
मारा हुवा यह तुमको मारे रक्षक रक्षा करता सारे
ऋषि मुनि की शिक्षा मनमें धारना रे - - -
हरीचन्द्र ने धर्म न हारा राज पाट तज दीना सारा
विपत समय का उसका कोई पार नारे—धर्म - - -
सीस हक़ीक़त ने कटवाया निर्भय होके धर्म बचाया
पदमापत के सत पर दृष्टि धारना रे - - अरे - - - - -
श्री गुरू गोविन्द के राज दुलारे चुने हुवे भीतों में पुकारे
अरे मर जाना मन्ज़ूर धर्म नहीं हारना रे - - - -

दूसरी तरफ़ :— बोलियां हक़ीक़त राय

ऐ माता तुम्हारी कोख से हुए बड़े बड़े बलकारी
अर्जुन भीमसेन बलकारी नन्द के लाला कृष्णा मुरारी
जिसको माने ख़लक़त सारी बड़े भूप थे चक्रधारी

जिन वेद उचारे मुख से—हां जिन वेद - - - - - - - -
हुए हैं गुरू तेग़ बहादुर—राख लई जिन धर्म की चादर
क्यों न हो फिर उनका आदर—जिस जान धर्म पर बारी
भई दुनिया अब तक सुख से - - ऐ माता - - -
श्री गुरू नानक कमली वाला—बावेकाल् राचर वाला
दुनिया जिसदी फेरे से माला—जिन डबड़ी ख़लक़त तारी
नहीं घबराये किसी दुखसे—ऐ माता तुम्हारो - - -

मि० किशोरी लाल

P. 3694. ज़िला भैरवीं पी० ३६६५

बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिलको क़रारी है
भरत लोटे ज़मीं ऊपर नैनों से नीर जारी है
सुना जब तात का मरना मनो बरछो सी मारी है
करी मेरी मात ने करनी सकल दुनिया से न्यारी है
हा हा करती सुने माता यह क्या करनी बिचारी है
सखी आप बिन मेरे बदन में घाव भारी है
तड़फती मीन बिन पानी यहीगत तो हमारी है
नहीं महाराज का हूंगा नहीं भक्त तुम्हारी है
रघुनाथ की चरनी यही दिलमें बिचारी है - बिना - -

दूसरी तरफ़ :— सिंधी

लगा है इश्क़ तुम सेती निभा दोगे तो क्या होगा
मुझे है जान सेती मिलावोगे तो क्या होगा

दहको जाते वक्त. पिलाओगे तो क्या होगा—लगा - - -
तुमने आन कर पकड़ा दिखाओगे तो क्या होगा
लेके सरे महफ़िल लगा है जिमाने को बिठाओगे तो क्या होगा
बनके बहुत रुलाये तो है ज़ालिम हसांओगे तो क्या होगा
न तो यह सुनते ग़म मेरे खिलाओगे तो क्या होगा
जिगर के दर्द की दारू बताओगे तो क्या होगा
यह दिल को दिलसे लगा लोगे तो क्या होगा

मास्टर कृष्णा

P. 4692. सोहनी पी० ४६९२

काहे अब तुम आज आये तू मेरे द्वार
किस बिध तदियां करुणा भरे तो को
काहे अब तुम आज - - -
चली जाओ जी चली अनुराग—काहे - - -

दूसरी तरफ़ :— जौन पुरी

बाजे छननन बाजे दुतारा सनानन
माधू मद मग फिर तोरे सहार लाग
बाजे छननन बाजे - - -

P. 6214. होली ठुमरी पी० ६२१४

मोपै डार गयो सारी रंग की गगर—मोपै डार गयो सारी रंग
मैं तो धोके से देखन लागी उधर

आ मोपै डार गयो सारी रंग की गगर
रंग डारे जाने न दूंगी जाते कहां हो
ज़रा ठैरो—मो पै डार गयो रे - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

तोरी बिनती करत हूं रे ना मारो पिचकारी
सगरी चुन्दरिया भीजी मोरी काहे करत हो बरजोरी
तोरी बिनती - - -

मि० मास्टर लभ्भू

P. 4344. ग़ज़ल पी० ४३४४

पसन्द आया है दिल मेरा तो अपने पास रहने दो
इस से सारी ख़ुदाई गर बुरा कहती है कहने दो
उदू के घर से आपको पिछले पहर अब फ़ुर्सत मिली तुम को
अभी क्यों रहम करते हो मुसीबत मुझको सहने दो
क्या गर क़त्ल ही मुझको ज़रा सी हाय देर तो ठैरो
तड़पना देख लो मेरा लहू बहता है बहने दो
तुम्हारे हर घड़ी झगड़ों से मेरा नाकमें दम है
न खुलवाओ ज़बां मेरी अपनी बस इसको यूं ही रहने दो
पसन्द आया है दिल मेरा तो अपने पास रहने दो

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दर्द उल्फ़त ने वहांसे भी निकाला होता
क़ैद करी अर्श की ज़ंजीर में नाला होता

हम सुनाते जो कोई दर्द हमारा सुनता
दिल दिखाते जो कोई देखने वाला होता—दर्द - - -
एक ही जल्वे में ग़श खाके गिरे दुमंज़ला
कौन सी बात यह थी दिल को संभाला होता—दर्द - - -

—:-०-:—

P. 4443. **मालकोस** पी० ४४४३

मुख मोर मुकट मोसे कहत जात
अब कल न पड़त मोको दिन रैन—मुख मोर - - -
तड़प तड़प सारी रैन बेहाय
क्यों नहीं आये श्याम सुन्दर—मुख मोर - - -

दूसरी तरफ़ :— **मुलतानी**

पिया मोरा बालम रे मैं तो वा हूं देस के बलहारी
कवना देश के पिया मोरा—पिया मोरा - - -
पिया मोरे मन्दरवा में आज हूं नहीं आये
उन्हीं से वारे पिया मोरा—पिया मोरा - - -

—:-०-:—

P. 4563. **दर्दे जिगर** पी० ४५६३

हुस्न माशूक़ में आया तो अदा भी आई
नाज़ों अन्दाज़ के हमराह जबां भी आई
सादगी से तुम्हे कल तक न था कुछ भी खयाल
आज पहलू में जो आये तो हया भी आई
दिलबर दिलआर तेरे नाज़ ने अन्दाज़ ने घायल किया
तेरा अबरू ने दिल राज़ को तीर जिगर किया

बारी जाऊं तेरी प्यारी सूरत के बल बल जाऊं मोहनी मुरत के
मेरी जान मैं क़ुर्बान तू हैरान जान जान—दिल बर दिल - - -

दूसरी तरफ़ :— **दर्दे जिगर**

जानी कहना न टालो दिलराज़ का—बोसा दे दे गुल रुख़सार का
मौसम आया है फ़स्ले बहार का रे—बोसा दे दे - - जानी - - -
फिर कभी बोस न देंगे हम से जान क्या कर दिया
यह क्या किया आपने तो गाल मैला कर दिया
अजब दिलदार नये रुख़सार होओ निसार
बोसा देंगे न अब तो पैज़ार का—जानी - -

—:-०-:—

P. 4666. **ग़ज़ल पहाड़ी** पी० ४६६६

किस बला के यह सितमगर सहीं होते हैं
दिल चुरा लेते हैं वह परदानशीं होते हैं
लाखियां चलके न छिपाओ न ज़रा जाने जिगर
सूरज भी कहीं परदानशीं होते हैं
अश को जानते हैं मर्ज़ मुक़ाबिल अपना
देख कर आइना वह बीन जबीं होते हैं
कूचये यार में दिल लेके न जाये कोई
लूट होती है जहां चन्द हसीं होते हैं

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल पहाड़ी**

उसने ग़मज़े से जिधर तीर नज़र छोड़ दिया
मरने वालों ने सुना तुम ने किधर छोड़ दिया
उठो पहनो कपड़े वह दूलहा यह भूला मंजमआ

आते आते मेरा मकां तुमने किधर छोड़ दिया
हाल पर मेरे प भी न कुछ ग़ौर किया
दिल में मेरे दर्द जिगर छोड़ दिया
तुम तो कहते थे न छोड़ेंगे कभी जीतेजी
हम तो अपने वायदे पर रहें तुमने मगर छोड़ दिया

P. 4738. तर्ज़ नाटक पी० ४७३८

हुस्न जब मक़तल की जानिब से नजरी ले चला
इश्क़ अपने मुजरिमों को शौक़ जाना ले चला
तेरी फ़ुर्क़त में ऐ प्यारे सीने पर चलते हैं आरे
दिन रो रो मैं ने गुज़ारे और शब को गिनती हूं तारे
बहरे खुदा जल्दी से आजा दिल की लगी बुझाजा
आज खून कशी है दिलमें हिज्र में तेरे प्यारे
और शब को गिनती हूं तारे—तेरी - - -

दूसरी तरफ़ :— तर्ज़ नाटक

समन्दे नाज़ पर खोले हुए वह बाल फिरते हैं
बचे हुए लिये अब्रस में जान फिरते हैं
फूल से गालों प मतवाली चालों प मैं फ़िदा दिलरुबा
कहां खोंचा है उसने शबाब करके मुझे
कहां गया मेरा बचपन खराब करके मुझे
किसी के दर्द मुहब्बत ने उम्र भर के लिये
ख़ुदा से मांग लिया यूं ख़्वार करके मुझे
अबरू कटारी सोने प मारो तेरा दुधारो—फूल - -

—:०:—

P. 4896. ग़ज़ल पीलू पी० ४८९६

अगर बीमारे उलफ़त की ख़बर अहले वफ़ा लेते
तो लेते कुछ मगर दुक्खे हुए दिल की दुआ लेते
हज़ारों बिगड़ियां दिल पर थी लेकिन वस्ल को शब है
मोहब्बत शम्श है तेरा तो खंजर में छिपा लेते
न होनी थी जो हालत हुई कमज़ोर मुहब्बत में
जब दिलबर फ़ुर्क़त में उसका नाम क्या लेते—अगर
किसी के आते ही ख़्वाब को जो हवाओं रुखसे मैं—तो - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल पीलू

टकरा के सरको जानन दूं मैं तो क्या करूं
कब तक फ़िराक़े यार के सदमे सहा करूं—टकरा - - - -
वह बुत अदासे सामने आकर जो बैठ जाये
काबे में भी नमाज़ को अपनी अदा करूं—टकरा - - -
मैं मर गया यह सुन वह कहने लगा
किसको सुनाये दर्द दिल किसको जवां करूं—टकरा - -
वह बुत अदा - - - काबे - -

———०———

P. 4976. पहाड़ी पी० ४९७६

अब लड़कपन छोड़दे ज़ालिम शबाब आने को है
इन हबाबों की कटोरी में गुलाब आने को है
इस पते से ढूंढना क़ातिल मेरे दिलदार को
चश्म हरगिस का मतवाली शबाब आने को है
याद कहती है कि तेरा नाम पर्वाना गया
आस कहती है तेरे ख़त का जवाब आने को है

थोड़ी सी जां छोड़ देना रहने वाले गोर के
इस नई पत्ती में इक ख़ाना ख़राब आने को है

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी तर्ज़ नाटक

मैं तो रंगी वह रंग मेरा जिस रंग में मतवाला
रंग में मतवाला मेरा दिल रंग में मतवाला - - -
ऐ गुलशने हस्ती तेरे रंग से गुले लाला
क़फ़नी रंगी जोगन बनी क्या रंग है आला—मेरा दिल
हूं मस्त मैं उस रङ्ग की जिस रङ्ग में रङ्ग डाला
रङ्गरेज़ तुही रङ्ग तुही क्या रङ्ग है आला—मेरा - -

P. 6477. गज़ल पी० ६४७७

ख़ुश्क डाली प वह कहते हैं समर देखेंगे
नोक शमशीर प मुझ ज़ार का सर देखेंगे
तीर गड़ जायेंगे हर दिलमें हरएक पहलू में
जिस तरफ़ नाज़ से वह तिरछी नज़र देखेंगे
दोनों शरमायेंगे ग़ैरत से यक़ी है हम को
जब लबे बामसे शम्श क़मर देखेंगे
आयेगी बूए वफ़ा क़त्लके वक्त. है बलबीर
जब कि ख़ंजर को मेरे ख़ून में तर देखेंगे

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

जहां से नक़्शये हस्ती अगर मिटाना था
मेरा मज़ार सरे राहे गुज़र बनाता था
अगर चें हुस्न परस्ती लिखी थी क़िसमत में
मेरा मिज़ाज लड़कपन से आशक़ानां था—जहां - -

यह दिल तो क्या है फ़िदा जान तक भी कर देंगे
हमें तो रूठे हुए यार को मनाना था—जहां - -
तुम्हार क़ब्ले सितम के निसार हो बलबीर
मेरे जिगर प लगा तीर का निशाना था—जहां - -

P. 6619. ग़ज़ल पी० ६६१९

तेरा तीर अबरू जिगर के पार होगया
ख़बर ले जल्दी अपने शहीदे नाज़ की
आतिशे जुदाई से मेरा जीना दुशवार होगया—तेरा - -
ख़बर ले जल्दी अपने शहीदे नाज़ की
जिगर और दिल भी कलेजा सोनेमें फ़िगार होगया—तेरा - - -

दूसरी तरफ़ :— तर्ज़ नाटक

है सुन्दर सोहन मोहन मुखड़ा चन्द्रमा साउजियाला
मेरा मन नट खट तुझ से खेले—तूहै चीनी की गुड़िया
मन हरवा-जान प्राण तो प वारूं
अरे ओ डीअर ! ओ डार्लिंग ! बी कुआइट-यू बागड़ बिला !
मेरे साथ गार्डन में तुम को कोई देख पावे
मेरी खुश नसीबी से वह रश्क खाके जलही जाये
फ़ैशन तेरा आला—जैन्टिलमैनों की ख़ाला
देखो डीअर ! आंख मारे मुझ को डाढ़ी वाला
वह कहां है ? वह देखो
ओसाडी भगल लू न अक्खां मार तू ओ बुडिया—है सुन्दर - - -

P. 6656. **रसिया पीलू** पी० ६६५६

मोरे सैयां जो रंडी रखन लागे—मोरे दिन दिन मान घटन लागे मोरे - -
सैयां मनावन हमरे चली हैं—वह तो घोड़े प जीन धरन लागे—मोरे - -
जब देखूं सैयां रंडीके घरमें—वां तो तबला सांरगी बजन लागे
(आहा हा उई अल्ला) मोरे दिन दिन मान घटन लागे—मोरे - (उई अल्ला)
सोनेका गडुआ गंगाजल पानी—वह तो पीने
वह तो पीने—वह तो कोल्हन प सीना धरन लागे—मोरे - -

दूसरी तरफ़ :— **रसिया कालंगड़ा**

हाय बछरा तोरी मारी मरूं—हाय मारी मरूं तिहारी मारी मरूं
मोरे सैयां से कहियो सलाम बछरा तोरी मारी मरूं - - -
जेठ से कहियो जिठानी से कहियो हमारे सैयां से कहियो सलाम - -

—:-०-:—

P. 7381. **ग़ज़ल** पी० ७३८१

वह कह रहे हैं कि बाहर हम आ नहीं सकते
लगी है पांव में महन्दी छुड़ा नहीं सकते
यह कैसी बज़्म है और कैसे यहां के हैं साक़ी
शराब हाथों में है और पिला नहीं सकते
तुम्हारे हिज्र में जो जो सितम उठाये हैं
जिगर को चीर के तुम को दिखा नहीं सकते—वह - - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

बुतों के इश्क़ में हम जाने ज़ार खो बैठे
अजब अमानते परवर दिगर खो बैठे—बुतों - - -
सरे ख़दग नज़र आचुका था हायरे दिल
हम अपने हाथों से अपना शिकार खो बैठे

वह क्या अदा थी कि जिस पर हुए फ़क़ीर नज़ीर
ज़रा सी बात प सब्रो क़रारखो बैठे—बुतों - -

——:-०-:——

P 7476. **ड्रामा** पी० ७४७६

आज निकलेंगे डियर अरमां विसाल के—अरमां - - - - -
बोसये लाल जब लब लेंगे उनके बिसाल के हां हां
गुंचा उम्मीद का शबको खिलेगा सीनेसे सीना जिसदम मिलेगा
होंगे जब बीसों कनार बार बार यार निकलेंगे दिलके ग़ुबार
ओयेस ओयेस ओयेस होंगे जब - - आज निकलेंगे - - -
बोसये लाल जब लब लेंगे उनके विसाल के हां हां—आज - -

दूसरी तरफ़ :— **ड्रामा पतंग**

दिलबर यार का पतंग उड़ायेंगे - - -
अब तो हो चुकी है शाम सवेरे फिर उड़ायेंगे—दिलबर - -
ढील दे बे डील दे (ले ढील) ढील देबे ढील दे—(ले ढील)
रील तो पूरी रील दे (ले रील) रील तो पूरी रील दे (ले रील)
अब तो हो चुकी है शाम सवेरे फिर उड़ायेंगे—दिलबर - -
वह काटा भई वह काटा (वह काटा) वह काटा भई वह काटा (वह काटा)
(लेना भाई चुवन्नी वालो लेना)("बन्स मोर" "बन्स मोर" आवाज ताली)
दिलबर यार - - वह काटा - - ढील दे - - अरे ढील - -
अब तो हो चुकी है शाम सवेरे फिर - - दिलबर - - -
वह काटा - - (लेना भाई चुवन्नी वाली लेना) अब तो - - दिलबर - -

—:-०-:—

P. 7668. **ग़ज़ल** पी० ७६६८

शैर—अरे पेच तेरी ज़ुल्फ़ का और बल मेरी तक़दीर का
सिलसिला अच्छा मिला ज़ंजीर से ज़ंजीर का

तिरछी नज़र से देखिये तलवार चल गई
ज़ख़्मे जिगर की राह से हसरत निकल गई
गाना—अरे चाहे वह हम प जोर करे याकिजफ़ा करें
राज़ी हैं हम उसीमें जो तू दिलरूबा करें
जिसने हमारे यार को हमसे जुदा किया
हायरे वह भी मुराद दिलकी न पाये ख़ुदा करे
चाहे वह हम प जोर करें या कि जफ़ा करें—राज़ी - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

ज़ुल्फ़ें नये अन्दाज़ से सुलझाये हुए हो
फिर उस पर यह तमाशा है कि बल खाये हुए हो
मख़लूक़ ख़ुदा देख के क्या तुम को कहेगी
हां रे क्यों हश्र में इस तरह घबराये हुए हो
तुम घरसे चले आते हो या बज़्मे अदू से
क्या बात है इस तरह से जो घबराये हुए हो—ज़ुल्फ़
सब राज़ कहे देती हैं दुज़दीदा निगाहें
तुम फूल की मानिन्द जो कुम्हलाये हुए हो—ज़ुल्फ़ों - -

P. 7719. थियेट्रिकल पी० ७७१९

शेर—इश्क़ कहते आये हैं शायद किसी ख़ंजर का नाम
आज पहिली बार है दिल जिससे घायल होगया
गाना—बाज़ार जाओ मेरे ख़ाविन्द - - अरे लाना पड़ेगा लाओ सब कुछ
एक एक दिनमें तीस तीस अंडे देनेवाली मुर्ग़ी हो
अरे बाज़ार जाओ मेरे ख़ाविन्द - -
आटा लाओ दाल लाओ कलेजी लाओ पान लाओ

एक एक दिन में तीस तीस - - अरे लाना - -
ऐसी ऐसी बातों को तो गोली मारो जी
बाज़ार जाओ - - एक - - बाज़ार - - आटा लाओ - -
बटाये लाओ कलेजी लाओ—एक एक - -
ऐसी ऐसी बातों को - - (हाय उई) बाज़ार - - लाना - -

दूसरी तरफ़ :— थियेट्रिकल

शादमान महर्बान महर्बान जगमें तुम सुख पाओ सुख पाओ
हां जाओ जाओ शादमन महरबान महरबान जगमें - -
ध्यान रहेगा सुबह व शाम मुझको समझियेगा ग़ुलाम
याद करूंगी मैं मुदाम लीजिये मेरा सलाम—शादमां महर्बान जगमें -
आन मिला था एक परदेसी भूलन यह तुम जाना जी
दर्शन बिन तरसेंगी अंखियां फिर मुखड़ा दिखलाना जी
लाना जी लाना जी लाना जी—शादमान - - ख़याल - - -
आन मिला था एक परदेसी - - दर्शन - शादमान - - - -

P. 7858. ग़ज़ल पी० ७८५८

ऐ चारा गर न देख हमारे जिगर की चोट
यह उम्र भर का दाग़ है यह उम्र भर की चोट—ऐ चारा - - -
अपने जिगर से पूछिये मेरी नज़र की चोट
मेरे जिगर से पूछिये अपनी नज़र की चोट—ऐ चारा - - -
अरे सीने से मेरे हाथ न लिल्हा हटाइये
डर है उभर न आये हमारे जिगर की चोट—ऐ चारा - - -
यह उम्र भरका दाग़ है यह उम्र भर की चोट—ऐ चारा - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मारा मुझे ए जान तेरी हर इक अदाने
अन्दाज़ ने शोख़ी ने नज़ाकत ने हयाने—मारा - -
क्या हुस्न दिया उस बुते काफ़िर को ख़ुदाने
अरे देखे से न हुआ ईमान ठिकाने
हां रे स्याह दाग़ किसी रुख़सार के ऊपर
है रे आशिक़ के उड़ाने को है बारूद के दाने—मारा - -
है रे दिल सीना जिगर पहलुए आशिक़ में बेकार
हैं रे तीर निगाह नाज़ के हैं चार निशाने—मारा - - -

P. 8038. पील्लू पी० ८०३८

अच्छी सूरत प ग़ज़ब हाय टूट के आना दिलका है
याद आता है मुझे हाय ज़माना दिल का है
इन हसीनों का लड़कपन ही रहे या अल्लाह
होश आता है ता आता है सताना दिल का है
पूरी महन्दी भी लगानी आती नहीं अबतक
क्यों कर आया तुझे ग़ैरों से लगाना दिल का

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

अपनी तक़दीर मिलालो मेरी तक़दीर के साथ
सिल सिला दिल का है ज़ुल्फ़ की ज़ंजीर के साथ
ज़ख़्म के साथ मरहम भो है रक्खा जाता
हसरतें दिल में हैं और दिल है मेरे तीर के साथ
खीचले तीर रसी पहलू से निकल जायें कहीं
मुझ प क़ातिल की नज़र पड़ती है तीर के साथ

अपनी तस्वीर का खींचना नहीं मंज़ूर मुझे
हां गो राहे अगर हो तस्वीर के साथ

——:-०-:——

P. 8164. पील्लू पी० ८१६४

बांके मिरज़ा मैं दुलरी लूंगी
दुलरी दुलरी तिलरी रे—बांके - -
चम्पा गले का हार मिरज़ा मैं दुलरी लूंगी - - -
दुलरी टूटी बाग़ मेंर ख़बर जहानाबाद—मिरज़ा मैं दुलरी लूंगी
दुलरी गुंधाने हमचली रे पटुवा मांगेपान-मिरज़ा मैं दुलरी लूंगी

दूसरी तरफ़ :— बिरवा

बंद टूट गयो अलबर का-बालमा बह गये आधी रात
बह गये आधी रात बालमा - - - - हो बंद टूट - - - -
अलवर जयपुर और भरतपुर तीनों वाही रात अरे टूट गयो बंद
बंद टूट गयो - - - -
अरे भाई बहन और कुटुम्ब कबीला छोड़ो हमरो साथ
अरे टूट गयो अलवर हो बंद टूट गयो - - बलमा - -

P. 8701. बतर्ज़ नाटक पी० ८७०१

तेरी आंखों ने मतवाला किया बीमारे उलफ़त को
तेरी ज़ुल्फ़ों ने उलझाया असीराये मोहब्बत को
तेरी रफ़्तार के फ़ितने से दुनिया भर गई सारी
नहीं आनेको अब रस्ता कोई मिलता क़यामत को
अरे हाय रे उफ़ रे ज़ालिम यह तनना तेरा हाय मरगई उई

जीवन का सुख जान के उन संग कीनी प्रीत
प्रीत किये दुख देत हैं देखो उलटी रीत
जा जा रे मुवे पाजी क्यों घेरा मुझको (आवाज़ ताली वन्स मोर)
क्यों घेरा मुझको क्यों छेड़ा मुझको हां हां रे - -
जीवन का सुख जान के - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— थियेट्रिकल

तीरे आदा से दिल को हमारे काहेको भरमाती हो
आवो लगालो सीने से मुझको काहेको शरमाती हो
ग़ज़ब किया तेरे वादे का एतिबार किया
तमाम रात क़यामत का इन्तिज़ार किया
तेरी निगह के तसौवर में हमने एे क़ातिल
लगा लगा के गले से छुरी को प्यार किया
अरे आवो लगालो सीने से मुझको काहेको शरमाते हो
तीरे आदा से दिल को - - -
आवो लगालो सीने से - - - -
ग़ज़ब किया तेरे - - - तमाम - -

P. 8968. ग़ज़ल पी० ८९६८

ए सबा गुलशन में ग़म की जा ख़ुशी काहेको थी
गिरेया शबनम में फूलों में हंसी काहेको थी
फ़ातिहे को भी न आये तुम हमारी क़ब्र पर
दिल में सोचो तो कि हमने जान दी काहेको थी
मेरी बेताबी प हंसते थे या मेरी शक्ल पर
हायरे देखकर मुझको हसीनों में हंसी काहेको थी

मेरी क़िस्मत का कोई पेच उसमें शायद पड़गया
वरना तेरी ज़ुल्फ़ में इतनी कजी काहेको थी

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मुद्दत से आरज़ू थी कोई दिलरुबा मिले
एक तुम मिले तो तुम भी ग़रज़ आशना मिले
मुझसे ख़ुलूस दिल से मिले तो मज़ा मिले
दुनिया के देखने को मिले भी तो क्या मिले
मिलने का तब मज़ा है कि ता ज़िन्दगी मिले
दो चार दिन को मुझसे मिले भी तो क्या मिले
हमतो उसी से मिलते हैं जो किसी से न मिले
मिलता हो जो ज़माने से फिर उस से क्या मिले

P. 7443. भीम पो० ७४४३

मया ने जाल बिछाया-भरमाया-लुभाया-तू मूरख क्यों ललचाया
अरे मोह लोभ ने तुझ को घेरा-अरे छाया चोरों ओर अंधेरा
अरे परधन को कहता है मेरा-यह चलता फिरतासाया - -भर माया
अरे मोह लोभ ने तुझ को घेरा-छाया चारों ओर अंधेरा
अरे पर धन को कहता है मेरा-इस दुनियां में कबतक डेरा
यह चलता फिरता साया-भर माया-लुभाया-तू मूरख क्यों ललचाया

दूसरी तरफ़ :— मास्टर लब्भू और मिस दुलारी महाभारत

सुख में सब आयु गुज़ार-दुख एक घड़ी जब आवत है
कलपावत है घबरावत हैं मन को फिर कलंक लगावत हैं।
मन प्रीत में जीत लियो जिनको अनरीत के गीत वह गावत हैं

कुछ प्रेम के जोश में होश नहीं है बरु औरों को दोस लगावत हैं
बाहरी यह बतियां-थारी यह घतियां-थारी - - - - -
दोनों का मन समझाना पूरे नट खट हो कान्हा
कैसी हुश्यारी प मैं बलिहारी यह बतियां थारी - -
मानो जी मानो री मानो बाते यह कोरीजानो
दोनों की दोनों भोली हैं ज़ाहिर बतियां अनमोली हैं
लेकिन अंदर पोली हैं जायें बलहारी—

—:-०-:—

P. 6119. पीलू पी० ६११६

हमें दिन डूब गयो रामां पहाड़न में
नन्हीं नन्हीं बुंदियां मेघा परत गयो मुरला बोले पहाड़न में-हमें - - -
चलत चलत मोरी पिडंलो दुखत गई डोलिया लेचल पहाड़न में-हमें

दूसरी तरफ़ :— मास्टर अमीर अली जंगला

ऐ मेरे दिल शैदा जो तू है वही मैं हूं
फिर किस लिये यह पर्दा जो तू है वही मैं हूं
ऐ मेरे माहे पारा अल्लाह रे तेरा जलवा
जलने को यही है दावा जो तू है वही मैं हूं
हुस्न माशूक़ में आया तो अदा भी आई
नाज़ अंदाज़ कि हमराह जफ़ा भी आई
सादगी से तुम्हें करना था न कुछ भी ख़याल
आज पहलू में जो आये तो हया भी आई—ऐ मेरे - - - -
आइना उठाकर वह अक्स देखता है
क्यों बात नहीं करता जो तू है वही मै हूं—ऐ मेरे - - -

पण्डित लक्ष्मी दत्त

कथा रामायण बालकांड

P. 9068. राम जनम और सीता का मिलाप पी० ९०६८

राम जन्म की शुभ कथा सुनिये लगाकर ध्यान
जेहि बिध प्रगटे जगत में लक्ष्मी घर भगवान
(पुत्र के न होने से महाराजा दशरथ गुरू बशिष्ठ से फ़रयाद करते हैं)
ऐ स्वामी तीन बिवाह किये पर आशान्ता हरी न हुई
है चौथा पन आनेवाला अबतक वोह स्मरन घड़ी न हुई
अफ़सोस वोह बर कुछ निरर्थक है जिसमें न एक भी फल होवे
वोह मेघ कहां शोभा पाता जिस में न बूंद भर जल होवे
गर ज़ियादा नहीं एक ही हो जो बंश बढ़ाने वाला हो
इस राज का भी अधिकारी हो और नाम चलाने वाला हो
(गुरूदेव कहने लगे, राजन चिन्ता त्याग कर मेरा विचार सुन)
मेरा विचार अब ऐसा है सन्तान हेतु शुभ यज्ञ करो
वोह बेड़ा पार लगायें गे लक्ष्मीश्वर में अनुराग करो
पैहले बस इतना यतन करो ऋष्यश्रृङ्ग ऋषी को बुलवावो तुम
फिर लक्ष्मेश्वर का लेके नाम पुत्रेष्टि यज्ञ रचावो तुम
(गुरू की आज्ञा मान दशरथ ने ऋष्यश्रृङ्ग ऋषी को बुलाया और यज्ञ आरम्भ किया। यज्ञ कुण्ड से अग्निदेव प्रगट हुवे)
आकर अग्निदेव ने दी ऐसी अकसीर
गर्भवती रानी हुईं खाते ही वोह खीर
जब आये जगत पती गर्भ बीच, छागई बहार अवध पुर में
सूखे हुवे पौधे हरे हुवे लागी गुलज़ार अवध पुर में
कोयल भी ऐसी मस्त हुई नग़मा दिन रात सुनाती थी

बाग़ों में आकर ख़ुद क़ुदरत फूलों के फ़र्श बिछाती थी
चैत्र मास नवमी तिथि उजित चन्दर वार
गो ब्राह्मण हित नाथ ने लिया मनुज अवतार

दूसरी तरफ़ :— राम जनम

जन्मे केकई के यहां एक पुत्र तत् काल
फिर सुमित्रा के यहां प्रगट हुवे दो लाल
अब आगे जैसा हुवा सुनिये वोही चरित्र
दशरथ के घर एक दिन आये विश्वामित्र
(विश्वामित्र जी राम लक्ष्मण को साथ ले जाते हैं और मार्ग में ताड़का सिंघार कराते हैं और फिर अपना यज्ञ रचाते हैं)
यज्ञ प्रारम्भ होते ही असुरों का मगड आ पहुंचा
शुभ काम में विघ्न डालने को बदमाशों का दल आ पहुंचा
रघुबन्सी राजकुमारों ने आगे बढ़कर सब को ललकारा
और हाथों में कर धनुष बाण उन सब को पल में संहारा
भूना बस दुष्ट सबाहू को एक अग्नि बाण चला करके
मारीच नीच को उड़ाय दिया सौ योजन पार समुन्दर के
(फिर सिया सोयम्बर देखने को जनकपुर को चले और मार्ग में अहलिया उद्धार गंगा स्नान किया फिर मिथिला में जाकर गुरूपूजन के लिये बाग़ में फूल चुनने लगे)
अब सुनिये जिस बाग़ में थे यह दोनों भाई
उसी समय उस बाग़ में सीता पहुंची आई
तब देखे होंट घनबीर श्रेष्ठ भरे अनुराग भरे
ललटा लाली लावनिया लाल लालपट लाली और माल भरे
सीता जी ने रघुनन्दन का वोह रूप हृदय में धर लिया
रघुनन्दन ने सीता जी का दिलमें सब अक्स उतार लिया

सीता से बोली सखी बात होगई भारी
दशा तुम्हारी इस समय ले न कोई निहारी।

P. 9247. अंगद और रावण का संबाद भाग १ पी० ९२४७

१ कथा रामायण लङ्का कांड अङ्गद और रावण का सम्बाद।
रावण के दरबार में जब अङ्गद पहुंचे तो रावण ने पूछा तू कौन है और किस लिये आया है। अङ्गद ने कहा मैं बाली का पूत हूं और राम का दूत हूं।
दोहा—रावण बोला मैं तेरे समझा नहीं कलाम
याद मुझे आता नहीं कौन बाली और राम
अङ्गद बोले याद हो क्योंकर तब तुमको मुर्छा थी
जब रहे बाली का कांख में तुम उस उसय उचित अवस्था थी
श्री शूपनखा हमशीरा को घरमें तुम नित देखते हो
इसलिये अचम्भा तो यह है श्रीराम को कैसे भूलते हो
बुरा लगा महाराज को अङ्गद का व्याख्यान
आंख बदल करके कहा बस मवन हुवा ज्ञान
यदि तेरा गर्भ नष्ट होता तो होता आज अकाज नहीं
पती का दूत कहाने में आती है तुझको लाज नहीं
अब भी तू मुझसे मिलजाय तो तेरी शुभ गती होजाय
एक बड़े राज का लङ्का का कल से सेनापति होजाय
दोहा—अङ्गद ने जब यूं सुनी भेद भरी गुफ़तार
बोले क्या महाराज को सेनापती दरकार
पर शायद ही मनजूर करे कोई इस मीठे गहने को
स्त्रीयां चुराई जायें जहां बस ऐसी जगह पर रहने को
अलबत्ता एक बिभीषण तो इस सेवा को आ सकता है

सेनापती क्या तुम चाहो तो वोह राज भी चला सकता है
(इसलिये राम से सन्धि कर लीजिये । तब रावण ने कहा)
अच्छा यदि सन्धि चाहते हैं मनज़ूर मुझे इन शर्तों पर
दें भेज विभीषण को सिर धरे वोह मेरे चरणों पर

दूसरी तरफ़ :— भाग २

फिर तोड़ें सेतु समुद्रका दें तुझको नज़र सलामी में
फिर हनुमान के हाथ बांधकर देवें मेरी ग़ुलामी में
फिर दांतों में तिनका दबाये शरणागत हों इन बातों की
कर जोड़ें मेरे राम राम लक्ष्मण और भिक्षा मांगें प्राणों की
(अङ्गद ने कहा)
जितनी हानियां हुईं अबतक उन सब को तो हम भर देंगे
पर एक हुई है महा हानि वह कैसे पूरी कर देंगे
जब जब तुम घर में जावोगे तब तब नज़रों में आयेगी
श्री शूर्पनखा की कटी नाक किस ढब से जोड़ी जायेगी
दोहा—अब तो रावण जलगया बोला चुप बदज़ात
छोटे मुह से कर रहा बहुत बड़ो तू बात
ओ बेवक़ूफ़ ओ दीवाने किस घमन्ड में तू फूला है
दुनिया में नर है इस प्रकार जल पर जिस तरह बबूला है
यह कहते कहते उछल पड़े स्मरण किया फिर शक्ति का
रावण को आज दिखाते हैं युवराज नमूना भक्ति का
दम भर में पैर पड़ाह हुवा जम गया ज़मीन की सूरत हो
तब गजर के यूं नाहर बोला "वोह आये जिसमें ताक़त हो
यह पैर मेरा पृथ्वी से गर तिल भर भी कोई टार गया
तो रामचन्द्र जी जायेंगे मैं सीता जी को हार गया

P. 9631. सती सावित्री भाग १ पी० ६६३१

सावित्री ने अपने पिता अशोपती की आज्ञा ले ली जब राजा द्युमत सेन के पुत्र सत्यबान को पती बनाना स्वीकार किया। तब नारद जी ने राजा आशोपती को कहा कि सत्यबान की आयु सिर्फ़ एक साल की है। तब आशोपती ने कहा बेटी किसी और राजा से शादी करले। सावित्री ने कहा।

पिता बचन जब यूं सुने हुई सावित्री आग
उसी समय कहने लगी राज भाव को त्याग
ऐ पिता जी मुझको बार बार इस तरह न आप तंग करें
यूं धर्म को म्लीन करके प्रतिज्ञा न अपनी भंग करें
तख़्त छीन हुवा एक बार वह फिर नहीं बांटा जाता है
जो तीर एक दफ़ा छूट चुका वोह फिर न लौटकर आता है
जो चीज़ कर चुके दान कभी वोह फिर न लौटाई जाती है
जो कन्या एक दफ़ा दे बैठे वोह फिर न बिवाही जाती है
जब एक पती मैं कर बैठी फिर दूसरा क्यों करवाते हो
व्यभिचार का कर प्रचार यहां क्यों कुल को कलङ्क लगाते हो
सब यह सुनकर के राजा ने उस मन में अति उत्साह किया
शुभ लगन महूरत तिथि बिषय सत्यबान सावित्री विवाह किया
इतने में कुल्हाड़ी हाथ में ले चले सत्यबान लकड़ी लाने
वोह पती को बन में जाता देख सावित्री लगी यूं फ़रमाने
यह प्रण है मेरे कुल के बीच, मैं हरगिज़ तोड़ नहीं सकती
हे नाथ अकेले आज तुम्हें मैं हरगिज़ छोड़ नहीं सकती
आज्ञा पा प्रसन्न हुई बहुरि नवाकर माथ
पितर पुष्प लाने लिये बन को चली पती साथ

दूसरी तरफ़ :— सती सावित्री भाग २

उसी बन में जा रहे सावित्री सत्यबान
जिस बन में था बालमीक बैठा लिये कमान
भोले भाले कुंवर ने जा लकड़ी में शस्त्र चलाया जभी
और उधर नीमकाल ने भी ज़हरीला फनी फैलाया तभी
फनी ज़हरीला अगनी भरा जिस समय कुंवर के तन को लगा
रंग पीला हुवा तन फट गया पानी शरीरसे भर निकला
उस समय परसा लिये प्रगट हुवे यमराज
रक्त बसन पहरे हुवे और सीस पर नारी
निगाह साबित्री की पड़ी कम्पित हुवा शरीर
भरी भरी आह तभी गिरा नैनों से नीर
पतो लेजाने वाले ज़रा डरकर फिर बुलाने लगी
लेचलो मुझे भी उनके साथ यह कह करके पीछे जाने लगी
इस लिये वहीं प चलूंगी मैं जहां जायेंगे जीवन प्राण मेरे
नहीं पीछे लौटकर जाऊंगी चाहे निकल तन से प्राण मेरे
धर्मराज कम्पित हुवे सुनकर सती विलाप
कहा पती को छोड़कर मांग चौथा वर आप
कहा सावित्री ने तभी सुनिये दीनदयाल
मेरे पती का राज करे हुई एक सौ औलाद
(तब धर्मराज ने कहा ऐसा ही होगा पती को छोड़ कर अब तुम जावो)
कहा सावित्री ने तभी होश करो यमराज
सिवा पती के कहते तुम्हें ज़रा न आती लाज
बिन पती पतनी का सोहाग कहां और पुत्र कैसे कर सकते हैं
जब पती पतनी के साथ नहीं फिर पुत्र कहां से आ सकते हैं

पण्डित लक्ष्मण शर्मा

P. 9096. रामायण भाग १ पी० ६०६६

(सब राजा लोग बैठे हैं और धनुष बीच में रक्खा हुवा है। पण्डित गण आदि राजा लोगों को एलान करता है)

सावधान योधा गण सुन लो कान लगाय.
प्रण हम राजा का कहें शिव धनु लेव उठाय
वोह देखो दरमियान में पड़ा हैं धनुष विसाल
इधर देखलो जानकी खड़ी लिये जयमाल
बाज़ुवों में जिसके क़ुवत है बस वही जीत कर जावेगा
जिसको न जान की परवाह है बस वही जानकी पावेगा
अपनी अपनी क़ुवतें सभी ऐ बहादुरों दिखला देना
गर तुम्हें जानकी लेना है तो अपनी जान लड़ा देना
देखें वोह कौन दिलावर है जिस से दामादी की जावे
शहज़ोर कौन शहज़ादा है किसको शहज़ादी दी जावे
गाना—हे वीरो हे शूरो हे राजाओ योधाओ आओ धनुष को उठाओ
सब दरजे बदरजे कलेजे की बातों की बाज़ी है शेरो जगाओ
सब हिम्मत जुरअत ताक़त क़ुवत शौक़त सनअत दिखावो
तो प्यारी दुलारी विदेही कुमारी विदेही को सीता को ब्याहो
अब बढ़ो बीतन मरदानये पुरफ़न - - -
बल दिखावो. जान लड़ावो जीत जावो फ़तह पावो आवो आज़माओ

दूसरी तरफ़ :— भाग २

(सब राजाओंसे स्वयम्बर में बैठे हुवों से पण्डितगण क्या कहता है)

हे वीरो हे शूरो हे राजाओ योधाओ आओ धनुष को उठावो
सब दरजे बदरजे कलेजे की बातों की बाज़ी है शेरो लगावो

सब हिम्मत जुरअत ताक़त क़ूवत शौक़त सनअत दिखावो
तू प्यारी दुलारी विदेही कुमारी विदेही को सीता को ब्याहो
अब उठो वीरतन मरदानये पुरफ़न बलवानो
वीरगण दिखावो दिलावरपन
बल दिखावो जान लड़ावो जीत जावो
फ़तह पावो आवो आज़माओ
(सब राजा लोग उठते हैं और धनुष उठाने के लिये तैयार होते हैं)
आये सब राजा और योधा धनुष उठाने को वां पर
खेल रहे हैं सब राजा और देखो अपनी जानों पर

—:(- :: -):—

P. 9361. लावनी पी० ६३६१

फिरते हैं तंग दाने दाने को दाना
करमों से जब आता है बुरा ज़माना
विष्णु बाहन को सर्प निगल जाते हैं
दुशमन के सामने सर के बल जाते हैं
ठंढे जल में दें हाथ तो जल जाते हैं
होंटों में ग्रास के पांव फिसल जाते हैं
पड़ता है नीच के आगे सीस झुकाना
करमों से जब आता है बुरा ज़माना
पितु मात सहायक कोई नहीं उस दिन का—दुनियां -
बल दस हज़ार हाथी से अधिक था जिनका
जब आये बुरे दिन तोड़ सके नहीं तिन का
रहता नहीं फिर कुछ याद हथियार चलाना
करमों से जब आता है बुरा ज़मान

दूसरी तरफ़ :— भजन

जिसमें तेरा नहीं विकाश ऐसा कोई फूल नहीं है
मैंने देख लिया सब ठौर तुझसा माहोत मिला न और
सबका एक तूही सरमोर इसमें कुछ भी भूल नहीं है—जिसमें तेरा - -
तुझसे मिलकर करुणाकन्द, मुनिवर पाते हैं आनन्द
तेरा प्रेम सच्चिदानन्द किस को मंगल मूल नहीं है—जिसमें - -
उरधर धर्म अधम बिसार गुरुजन कहें पुकार पुकार
उसका बेड़ा होगा पार इसमें कुछ भी भूल नहीं है—जिसमें तेरा - -

—:-०-:—

P. 9632. रसिया पी० ६६३२

मसका हौले दीजो बीजरी के मारे रसिया - - -
आगरे की गैल मोरे हाथ पड़ा था नामा
जिनवाके मैं तीनों जैयो डीग भरतपुर कामा—मसका - - -
आगरे की गैल मोरे हाथ पड़ा था तुक्का
जिनवाके मैं तीनों जैयो चिलम चिमटा हुक्क़ा—मसका - -
आगरे की गैल मोरे हाथ पड़ा था चियां
जिनवाके मैं तीनों जैयो तेली तबलवामियां—मस्का - -

दूसरी तरफ़ :— रसिया

तेरी जवानी को सन्नाटा काहू दिन ले बैठैगो मोय
सुन रे बेटा ब्राह्मन का तू महूरत बतादे मोय
चार दिना गौने के रह गए मज़ा चखा देऊं तोय—तेरी - -
सुन रे बेटा बनिया का तू अंगियां लादे मोय
चार दिना गौने के रह गए मज़ा चखा देऊं तोय
हां रे गले लगा लेऊं तोय—तेरी - -

छन रे बेटा सोनी का तू रखड़ी घड़ा दे मोये
चार दिना गोने के रह गये मज़ चखा देऊं तोये—तेरी - - -

पण्डित महादेव प्रसाद

P. 7599. **बिहाग** पी० ७५९९

दो यार एक दिल जहां में ज़ाहिर यके सुदामा दिगर कन्हैया
इधर सुदामा ग़रीब बेज़र ग़रीब परवर उधर कन्हैया
दो दिल मोहब्बत के जाम जम हैं जो तन जुदा हैं दो जां बहम हैं
कुमार कन्हैया के दिल में हम हैं हमारे दिल में कुमार कन्हैया
जो तै करूंगा मैं यह मुशक्क़त टलेगी सर से हज़ारों आफ़त
हरेगा दिल की मेरे कशाफ़त करेगा जिस दम नज़र कन्हैया
यह हैं तरीक़े वफ़ा के नादां यहां पै ऐदिल न हो हिरासां
अजब नहीं है कि मुशकिल हो आसां कि सब का है कुमार कन्हैया
मुक़ीम रैहता है दिल के अन्दर निगाह रखता है मुलतजी पर
सजन बंसी सीजां समुदत सुशील सुन्दर कुमार कन्हैया

दूसरी तरफ़ :—

खम्माच

मुकट धरे आवत शाम लचक चले - - शाम लचक - - -
हां मुरली ऐसी बाजी सब के मन को हरे
आवत शाम लचक चले आवत - - -
नयनन की सैनन मारत कुन्जन में
चाल निराली बिन्दा देखो बैठी बैठी सोचत सब ब्रज बाम

मुकट धरे आवत - - -
मुरली ऐसी बाजी सबके मनको हरे लचक चले ओ शाम
मुकट धरे आवत - - -

—— :-० :——

P. 7859. **ग़ज़ल** पी० ७८५९

या क़रार आयेगा दिलको उन के मिल जाने के बाद
या उसे राहत मिलेगी दम निकल जाने के बाद
या ख़ुशामद हो रही थी मेरा दिल लेने के क़ब्ल
कैसी आंखें फेर ली मतलब निकल जानेके बाद—या क़रार - -
जीते जी करता नहीं तू मेरी उल्फ़त की क़दर
बेवफ़ा ढूंढेगा मुझको मेरे मर जानेके बाद—या क़रार
वक्त दो गुज़रे हैं मुझ पर सख़्त सारी उम्र में
आपके आने से पहिले आपके जानके बाद—या क़रार - -

दूसरी तरफ़ :— **ठुमरी**

नैनां लगे री आली - - -
इन संग है री आली - - नैना लगे - - -
बांसुरी की धुन सुन भई बांसुरी सी, बन्दा न ठौर शाम ऐसे भये री आली
इन संग है री आली—नैना लगे - -

P. 8642. **भजन** पी० ८६४२

ऐसे जोगिया के संग मैं न करूंगी बिवाह
वोह तो बिष की लहर मोरी गोरां मर जाय—ऐसे - - -
नागिन की रुंड माल गर लिपटाये—ऐसे जोगिया - - -

पीवत भंग वां की जटा में गंग है
माथे प चन्द्रमां रहो रे सुभाय—ऐसे जोगिया - - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी

हियां न बजावो शाम मुरलिया हो - - -
चौंक परी बाह में मुरलिया यहां - - -
बांसुरी की धुन सुन भई हूं बांवरिया
निकस जात मम प्राण—मुरलिया - - हियां न बजावो - - -

P. 8880. ग़ज़ल पी० ८८८०

बरसात का समां हो पेहलू में गुलबदन हो
ठन्डीं हवायें आयें और ख़ुशनुमा चमन हो
हो चांद पूरा निकला तारों का अनजुमन हो
अरे हां पेहलू में मेरे बैठा वोह ग़ुन्चऐ दहन हो
वोह शोख़ियां दिखाये और हम ख़ुशी से देखें
हां हां लगकर कभी गले से मेरे नग़मा ज़न हो
उस बेवफ़ा ने मुझ को ऐसा सताया यारब
हां हां कभी उसके दिल में पैदा यारब मेरी लगन हो
हरदम यही दुआ है हक़ से जमील अपनी
मरकर भी ऊसका मेरा एक गोर एक कफ़न हो

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल बसंत

क्या क्या खिले जहां में गुलज़ार पीले पीले
सरसों की क्यारियां गुले बे ख़ार पीले पीले
क्या जान ले रहे हैं गुल हाय हाय गेंदा
पंहने जो उस परी ने वोह हार पीले पीले—क्या - -

क़ुदरत के कोह से गुले सूरज मुखी जो चमका
एकदम से होगये हैं दरोदीवार पीले पीले—क्या - -
सजकर क़बा सुनहरी वोह गुल जिधर से गुज़रा
कूचे हुवे बसन्ती बाज़ार पीले पीले—क्या - - -
पैहलू में आचरन के ले जाम ज़ाफ़रानी
मोसिम बहार का है ऐ यार पीले पीले

—:०:—

P. 8969. ठुमरी पी० ८६६६

जब से गये शाम सुध न लई री - - - -
कल न पड़त मोहे एक घड़ी री—जब से गये - - -
आहो बीर आहो बीर जिया न धरत धीर
उनके दरश बिन नींद गई री—जब से गये - - -

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी

देखो तो नहीं मानै कन्हैया - - -
रोकत मोहे आते जाते दैया - - -
बरगाही बुलाय आके बासे पूछों नया रंग
रैयत है नर नारी बाके बृज के बसैया
देखो तो नहीं मानै - - - - -

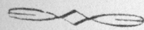
P. 9248. पहाड़ी पी० ६२४८

कमान है हाथ में रघुनाथ जी के तीर चुटकी में
भवें बांकी पलक तिरछी सी है नख़चीर चुटकी में

जड़ाऊ है मुकुट सिरपर जड़ाऊ कान में कुन्डल
चलाते हैं अजब अन्दाज़ से वोह तीर चुटकी में
दिखाकर सांवरी सूरत लुभाकर मीठी बातों में
लिये जाते हैं दिल देखो मेरा रघुबीर चुटकी में
हिले धरती वोह अम्बर तक था रावण कौन गिनती में
मिलाये ख़ाक में मल मल के लाखों बीर चुटकी में
वोह लें अवतार भारत में वोह अपने भक्त के कारण
वोह हर लेते हैं दम भर में हीं सब की पीर चुटकी में

दूसरी तरफ़ : — असावरी

सब दिन गये बिशियन के हित - - -
गंगा जल छोड़ कूप जल पीवत हरि तज पूजत प्रीत
सब दिन गये बिशियन के हित - -
जान बूझ अपना तन खोवत बाल भये सब सोहत
श्रवण न सुनत नयन नहीं देखत थके चरण के चीत—सब दिन - -
अौंधे द्वार शब्द कृष्ण नहीं आवत चन्द्रगिर से जैसे कीत
सूरदास कछु ग्रन्थ नहीं लागत अब कृष्ण नाम को चीत—सब - -



P. 9363. पी० ९३६३

गज़ल

ऐ सितमगर बात ऐसी चाहिये ईजाद में
सब जफ़ाओं का मज़ा आजाय एक बेदाद में
है क़यामत हश्र पर मौक़ूफ़ रखना वस्ल का
कुछ कमी कर दीजिये बैहरे ख़ुदा फ़रयाद में
रोज बढ़ते हैं किसी गेसुवे मुशकी के बाल
रोज़ होती है तवालत क़ैद की फ़रयाद में

आये थे सैरे चमन को हो गये दोनों असीर
दस्ते गुलचीं में है गुल बुलबुल कफ़े बेदाद में
मैं वोह बुलबुल हू जो मुट्ठी में उसकी आगया
दिन कटा सैयाद का बांगे मुबारक बाद में

दूसरी तरफ़ :— गज़ल

ख़ाब में डर किसका होगा मेहरबां मेरे लिये
आप रक्खेंगे कहांतक पासबां मेरे लिये
कौन कहता है कि तनहा जायेंगे सूये अदम
साथ को है हसरतों का कारवां मेरे लिये
रात दिन गरदिश में हूं दिल देके एक बेदाद को
बन गया रंग आसमां भी आसमां मेरे लिये
फिर तकल्लुफ़ क्या है उनको शौक़ से बांधें कमर
मैं हुं बैहरे इमतिहां और इमतिहां मेरे लिये

——0——

P. 9429. गज़ल पी० ९४२९

क्या अजब है दिल अगर मचले जवानी देखकर
कौन वह मछली है जो तड़पे न पानी देखकर
चार दिन बेकल न आये कुछ बहारे ज़िन्दगी
जल गया पीरे फ़लक तेरी जवानी देखकर
गिर पड़ी दीवार दिल तखते जिगर के बह गये
दीदये गिरयां से तूफ़ां की रवानी देखकर—जल - - -
कर दिया मौक़ूफ़ क़ातिल ने लगाना वार का
ऐ दहाने ज़ख़्म तेरी बेज़बानी देखकर

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

आगई फ़ौजे मिज़ा मुझ प सफ़ आरा होकर
आज चल जायगी यह सीने प आरा होकर
उनके कूचे से जो गुज़रा मैं क़ज़ारा होकर
चल गई तेरी निगह मुझ प इशारा होकर
आज वह आये तो यह फ़ैसिला उससे कर लें
ग़ैर का होके रहो या कि हमारा होकर
दिल के देने का मज़ा हमने न पाया कुछ भी
अपना होता तो वोह रहता ही हमारा होकर

—— ——:०:——

मि० मोहम्मद हुसैन

P. 412. ग़ज़ल टोडी क़व्वाली पी० ४१२

हमारे क़त्ल करने को निगाहे यार काफ़ी है
जिगर पर फेर देने को यही तलवार काफ़ी है—हमारे - - -
न जावो सैर गुलशन को जिगर में मेरे आवे तो
तुम्हारे दिल बहलने को यही गुलज़ार काफ़ी है
निगाहें तुम ग़ैरों से जो रखते हो रक्खो साहब
जफ़ायें आपकी पहले यह ग़म ख्वार काफ़ी है—हमारे - -
अबस करना है आप का दिल चला है यह ख़ंजर ख़ूनी
निगाहे यार का हम पर यही एक तीर काफ़ी है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

तबस्सुम से वहां ख़ाली नमक़दां होते जाते हैं
यहां ज़ख़्मी जिगर सदक़े गरयां होते जाते हैं
नहीं बे वजह तावीज़ों का रहना उनके सीने पर
यह फ़ितने उटते जोबन के निगहबां होते जाते हैं—तबस्सुम - -
ख़ुदा के वास्ते पत्थर न हो जाना जवां होकर
अयां सीने के दो दाने बदख़शां होते जाते हैं
लबे नाज़ुक का बोसा ले लिया तो हंस के यूं बोले
कहो अब तो तुम्हारे हां पूरे अरमां होते जाते हैं

P 415. भैरवीं क़हर्वा पी० ४१५

तरसे बिन बालम मोरा जिया तरसे
रैन अन्धेरी जिया घबरावे सूनी सेज बिदेस पिया
तरसे मेरा जिया बिन बालम तरसे - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं क़हर्वा

बहुतेरा समझायारी लाखन बार
बहुतेरा समझाया री मानत नाहीं
लाखन गारी देत पहिरवा समझ समझ समझाया री लाखन बार—बहु- -
मना करता हूं रक़ीबों से न लेओ मांग कर बोसा
हमारी मांग पहिली है अगर लेंगे तो हम लेंगे—बहुतेरा - -

P. 419. **भजन क़हर्वा** पी० ४१६

भजन मुलाहज़ा फ़रमाइये कन्हैया जी की तारीफ़ में
कन्हैया तोरे कारो कैसे वियाहूं राधा
कारो कारो मत कर मालन मेरो जग उजियारो
कारो नागन सीने डारो मारी फुंकार बदन भयो कारो—कन्हैया - -
मेरी राधा किस बरनी है जैसे जग उजियारो
तेरो कन्हैयो ऐसो कारो छिप गया चांद निकस आये तारो—कन्हैया - -
बोल कन्हैया जी की जय

दूसरी तरफ़ :— **काफ़ी पश्तो**

सुनो तुम यार परदेसी बचन कैसे निबाहोगे
बही एक ज़ोर से नदिया कि बहिया तूल न पाता
पुकारूं राम अपने को लगादे पार मोरी नैया—सुनो - - -
अरे मल्लाह लगा किश्ती मेरा महबूब जाता है
कभी अखियां जो भर आती कभी दिल जो बुझाता है—सुनो - - -

P. 889. **मज़ाक़िया** पी० ८८९

जनानेआली दो दिलका एक होने वाला—अरे मेरी जान अपने वस्ल का दिलादे मुझको पियाला।
मेरे जिया का मिलोना कब होगा—कब - - मेरे - -
एक बताशा दो जने रे घोला घाली चुप—मिलोना - मेरे - - -
एक चदरिया दो जने रे खींचा तानी चुप—मिलोना—मेरे - - -
एक लुगैया दो जने रे घूरा घारी चुप—मिलोना—मेरे - - -
(अहा हा हा घूर लो घूर लो मुफ़्त का माल है)

दूसरी तरफ़ :— **मज़ाक़िया**

देखो यारो घरमें नाज नहीं और भूनने को दाने नहीं और
कैसी टेढ़ी टोपी करके चलते हैं ज़रा ग़ौर से देखना
चलो बांके यार देखी तुम्हारी शेख़ी
घरमे मेहरिया झरना झारे बाहर तिरछी टोपी—चलो - - -
खुली अगाड़ी फटी पिछाड़ी खुल गई अगाड़ी फट गई पिछाड़ी
ओढ़ी छज्जेदार टोपी—चलो छैला - - चलो - - -

P. 890. **ग़ज़ल** पी० ८९०

यार था गुलज़ार था बादे सबा थी मै न था
जाके बाग़ों में जाना वह हिना थी मैं न था—यार - -
मैंने पूछा उस परी से क्या हुआ हुसनो जमाल
हंस के बोला वह सनम शाने ख़ुदा थी मैं न था—यार - -
नातवानी ने बचाई जान मेरी मौत से
भोले भोले ढूंढती फिरती क़ज़ा थी कि मैं न था—यार - -
बेख़ुदी में ले लिया बोसा बता ख़ता कीजो मुआफ़
इस दिले बेताब की ख़ाली ख़ता थो मैं न था—यार - -
ऐ ज़फ़र यह दाग़ मेरे दिल प कैसा रहगया
खाने पावें यार से अजब ख़ुदा थी मैं न था—यार - -

दूसरो तरफ़ :— **ग़ज़ल**

किसी से दिल को लगा चुके हैं हम अपनी हस्ती मिटा चुके हैं—किसी - -
सज़ा मुहब्बत की पा चुके हैं हम ग़ज़ब यह सदमे उठा चुके हैं—किसी - -
लगीको कब है यह ताब ताक़त फ़लक को कब है यह दस्त क़ुदरत
हमीं उठायेंगे यह बार उल्फ़त यह नाज़ तेरा उठा चुके हैं—किसी - - -

कहा यह हूरों ने जाय बहार बोले कि आये हैं जामकोसर
नहीं हूं जाता है आब ख़ंजर अभी अज़ीज़ोंको लेजा चुके हैं—किसी - -
किसी ने उसका पता न पाया गया जो कोई वह फिर न आया
कोई कुछ भी ख़बर न लाया हज़ारों क़ाफ़ले जा चुके हैं—किसी - - -

P. 892. **ठुमरी दर्बारी** पी० ८९२

घर जाने दे छांड दे मोरी बैयां
मोरे सैयां - - जाने दे छांड दे मोरी बैयां—घर - -
हा हा करत तोरी बिनती करत हूं
और पड़ूं तोरे पैयां—घर जाने दे - - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

हसीनों का हर एक आलम में शोहरा हो ही जाता है
जिसे वह देख लेते हैं वह शैदा हो ही जाता है—हसीनों - - -
ख़ुदा जाने मेरे कमबख़्त दिलकी क्या ही आदत है
कलेजा मलते मलते दर्द पैदा हो ही जाता है—हसीनों - - -
कभी हीला है महन्दी का कभी है दर्द गर्दन में
हमारे घर प आने का बहाना हो ही जाता है—हसीनों - - -

P. 895. **भैरवीं** पी० ७९५

शहीदे ख़ंजर बेदाद हूं मैं, शीरीं फ़रहाद हूं मैं—शहीदे - - -
जिसे मैं याद करता हूं शबो रोज़, ख़ुदा जाने उसे याद हूं मैं
लिये फिरता मेरी ख़ाक कोई, बगूले की तरह बर्बाद हूं मैं—शहीद - -

मुझे मुफ़लिस न समझो रे दुनियां, लिये सारी ख़ुशी जायदाद हूं मैं
वह जान जाये ज़ालिम गदा हूं मैं, वह ख़ुद मालिक बे बुनियाद हूं मैं

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

तदबीर से क़िस्मत की बुराई नहीं जाती
बुराई नहीं जाती बुराई नहीं जाती—तदबीर - - -
आंसू न छिये न जाये ऐ नासये मेरा
हीरे की कनी जानके खाई नहीं जाती—तदबीर - - -
मय भी तो खोली सो अभी हो जायेगी ज़ाहिर
कमबख़्त क़यामत इलाही आही नहीं जाती—तदबीर - -
ऐ दाग़ बुरा मान मत उनके कहे का
माशूक़ की गाली से तो इज़्ज़त नहीं जाती

P. 908. **काफ़ी होली** पी० ९०८

जियारा कैसे समझाऊं
रात सैयां मैं ने सुपन में देखा था लाद चले संग दौड़
इतने में खुल गई आंख अचानक पिया पिया कर के पुकारूं
हाथ मल मल पछताऊं-जियारा कैसे समझाऊं
अपने सैयां को ढूढंन निकसी किन सौतन भिरमोये
अंग भबूत जोगन बन कर घर घर अलख जगाऊं
पिया को मैं ढूढ के लाऊं-जियारा कैसे समझाऊं

दूसरी तरफ़ :— **मल्हार काफ़ी**

कारी कारी क्या बदरिया छाई रे-छाई रे मन भाई रे-कारी - -
रैन अंधियारी कारी बदरा छाये बिजरी चमके चम चम चम

हवा चलत सन सन न न न न न न न न-कारी - - - -
झूम झूम झूम झूम मेंहा बरसे आई घटा घन घो
। पी पपैहिया कूकू कोयलिया मोर मचावें शोर-कारी - - -

——:——

P. 909. भैरवीं पी० ९०९

सैयां भये दलगीर सखी री-सखी री-सैयां - - - - - -
उन के चरण की धूली ले आओं
सब सखियन के पीरे सखी री-सैयां भये - - - - -
उन के चरण - - सब - - सैयां - - - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

बहार आई है गुल फूले बादल घिर के आया है
मदीने का चमन इस वक्त आखों में समाया है—बहार - - -
मिलेगा एक मोती सा महल जन्नत में रहने को
ग़मे हज़रत में जिसने एक भी आंसू बहाया है—बहार - - -
आ चले मेरो दिल जिगरी अम्मीने यह कहा आकर
हज़ूर यह शहनशाह दो आलम ने बुलाया है
ग़मे हज़रत में जो रोया वह हंसता ख़ुल्द को पहुंचा
यह वह शीशा है जिसमें दोज़ख़ हो बिछाया है

————०————

P. 917. माण्ड पी० ९१७

पिया उठ जागो रे अकेली डर लागे
अकेली डर लागे रे अकेली डर लागे—लागे—पिया - - -
आधी आधी रैन को पपैहया उठ बोले
सैयां धीर को धराओ रे—अकेली डर लागे - पिया - - -

दूसरी तरफ़ :— अजन दादरा

संवरिया संवरिया संवरिया रे काहे मारे नजरिया
इत बहे गङ्गा उत बहे जमना
बीच में शाम कन्हैया रे काहे मारे नजरिया—संवरिया - - -
इत गोकुल उत मथुरा नगरी
बीच में थारी नगरिया रे काहे मारे नजरिया—संवरियां - -
आज महफ़िल में कन्हैया का जशन होता है
या जिन में बजने राम भजन होता है

P. 920. माण्ड पी० ९२०

न क्यों कर नाम लूं हर दम तुम्हारा या रसूललिल्लाह
ख़ुदारे शौक़ से दिल को बुलाना या रसूललिल्लाह
अन्धेरी क़ब्र में रोशन तुम्हारे नूर अनवर का
हमारे सामने शमशीर दुधारा या रसूललिल्लाह—न क्यों - -
ख़ुदा पूछेगा जब तुम से कि अपने उम्मती लाओ
हमारी भी तरफ़ करना इशारा या रसूललिल्लाह—न क्यों - -
ख़ुदा के ख़ौफ़से जिस दिन नबी बेताब होवेंगे
न होगा वहां मुमकिन गुज़ारा या रसूलिलल्लाह—न क्यों - -

दूसरी तरफ़ :— माण्ड

आन पड़ी दरबार ख़ुवाजा आन पड़ी दरबार
चिड़ियन चिड़ियन बैठी रे मालन गूंद रही सब हार
मेरे ख़ुवाजा जी - - आन पड़ी - -
बांधो जात मुझे बस छनेगा रे नोलख लागे रंग
मेरे ख़ुवाजा जी - - आन पड़ी - - -

या ख़्वाजा करम दीदार है—एक नजर में अब तो बेड़ा पार है
आंन पड़ी - - - - - - - - - - - - -

—— :(-०-): ——

P. 921. **मज़ाक़िया** पी० ९२१

अहाहाहा काहे को यह लटपटा यह चटपटा यह खटपटा
गाना मज़ाक़िया ग़ौर से सुनयेगा
आगरे के बागरे में बोई थी मसूर
अब के छैला जोरू के मज़दूर—आगरे के - - -
अद्धी की हल्दी मिर्चों अद्धी का धनिया
रंडी ने ख़सम करा मोती राम बनियां हा हा हा
गोरी बिलैया के भूरे भूरे कान भूरी - - हा हा हा
भूरी को धर कन्धे उसमें चार बनी धरले ह ह ह
कहां गई थी—सासू गई थी—क्या हुआ था
लौंडा हुआ था—क्यों कर हुवा था—हू हू हू हा हा हा

दूसरी तरफ़ :— **मज़ाक़िया**

नैनों में सुर्मा सारे फिरे गलियारे में नाई की
लड्डू खागई पेड़े खागई खागई हाट हलवाई की—नैनों -
जलेबी खागई बालूशाही खागई खागई हाट हलवाई की—नैनों - -
हाहाहा यारो ज़माना बहुत बड़ा खोटा और मैं इसी वास्ते हंसते हंसते
ज़मीन पर लोटा
और वाह रे तमाशबीनों रंडियोंकी पीछे ज़माने में ले जाते हो [illegible] - हा

—-०-—

P. 930. **ग़ज़ल** पी० ९३०

कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में इसकी मुशकिल है
यहां परियों का मजमा है वहां हूरों की महफ़िल है—कहां - - -

मेरा दिल ले के शीशे की तरह पत्थर प दे मारा
मैं कहता रह गया ज़ालिम मेरा दिल है मेरा दिल है—कहां - -
इलाहो कैसी कैसी सूरतें तूने बनाई हैं
कि हर सूरत कलेजे से लगा लेने के क़ाबिल है—कहां - - -
चली आती है नज़र घूमते दरबारे क़ातिल में
किसी का सर हथेली पर किसी का हाथ में दिल है

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

दर्द बन कर दिल में आना कोई तुमसे सीख जाय
जाने आशिक़ होके जाना कोई तुमसे सीख जाय—दर्द - - - -
कोई सीखे ख़ाक सारी को रोशने अब के आर
ख़ाक में दिल को मिलाना कोई तुमसे सीख जाय—दर्द - - - -
हर फ़नोंसे तोबा करलो है जब जवानी हो चुकी
ज़ाहिदा जन्नत में जाना कोई तुमसे सीख जाय दर्द - - - -
रूठ कर अर्श ख़ुदसे रूठ जाना कोई तुमसे सीख जाय
रूठ कर फिर मुसकराना कोई तुमसे सीख जाय - दर्द - -

—— :: ——

P. 1560. **शाहाना कान्हड़ा** पी० १५६०

उठो मोरी प्यारी अब भोर भई
सगरी रैन रोवत रोवत बोती
शशी की चौथ बनी डरपती - उठो मोरी - - -
राज दुलारी तो प जाऊं बलिहारी - उठो मोरी - - - -

दूसरी तरफ़ :— **दरबारी कान्हड़ा**

उन बिन नाहीं चैन पड़त मोहे कैसे कटत दिन रतियां मोरी माई
बढ़ गई बन पार न वाजे सबका बेड़ा पार करो
मैं गुरू को हूं शरण लाज रख लीजो - उन - - -

—०—

P. 1562. बिहाग पी० १५६२

उसने यह ज़ुल्म का अन्दाज़ नया रक्खा है
ग़ैर कमबख़्त को पहलू में बिठा रक्खा है - उसने - - - -
मर्ज़े इश्क़ कहता है कि यह तेरा इलाज
दर्द का नाम सितमगर ने दवा रक्खा है - उसने - - - - -
क्या दिखाते हो हमें खींच के अबरू साहब
हमने इस तेग़ प सौ बार गला रक्खा है - उसने - - -
हर घड़ी पेशे नज़र रहता है उस बुतका ख़याल
हमने आंखों को परीख़ाना बना रक्खा है - उसने - - - -
गर नहीं मर्द नज़र तुमको कटाना उसका
इस लिये लू लबको फूंक दिलमें बुला रक्खा है - उसने - -

दूसरी तरफ़ :— बिहाग

मंज़िले इश्क़ का हाल आपमें आंलू तो कहूं
लब दराज़ न तो मैं दिल को संभालूं तो कहूं - मंज़िले - -
क्या कहूं कैसी उस शोख़ की तिरछी चितवन
एक छुरी अपने कलेजे प लगलूं तो कहूं—मंज़िले - - -
न कहूंगा कभी कैफ़ियते दिल
मलकुल मौत को पहलू में बिठालूं तो कहूं—मंज़िले - -
पूछते क्या हो मेरी क़ब्र तक आने वाला
ठैरो मैं मुंह से कफ़न को जो हटालूं तो कहूं—मंज़िले - -

P. 1696.

दादरा पी० १६९६

बहुतेरा समझाया रे फिर आया आधी रात
कहां धरी तेरी परी कचौरी कहां धरा अचार—बहुतेरा - - -

कहां पड़े तेरे बालक बच्चे कहां पड़ी तू आप—बहुतेरा - - -
हगो पड़े मेरे बालक बच्चे सनी पड़ी मैं आप—बहुतेरा - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

अनारमें से निकला है दिलजानी का दुपट्टा
रंगरेज़ पूछे बार बार किसका है दुपट्टा
धानी रंगने आया है दिलजानी का दुपट्टा—अनार - - -
दर्ज़ी पूछे बार बार किसका है दुपट्टा
यह गोटा टकने आया है दिनजानी का दुपट्टा—अनार - -
दर्ज़ी पूछे बार बार किसका है दुपट्टा
यह इत्र में बसने को आया है दिलजानी का दुपट्टा—अनार - -

P. 1697. क़व्वाली पी० १६९७

आके दुनियां में सभी क़ौल बशर भूल गया
थे जो उधर या बगियां वह इधर भूल गया—आके - - -
वेद पुराण में क्या तूने किया था इक़रार
फिर तुझे याद दिलाते हैं अगर भूल गया—आके - - -
क़शय शाही में तू रखता है हज़ारों ख़ादिम
जिस में तन्हा तुझे सोना है वह घर भूल गया—आके - -
दौलते उम्र का तुबंत प हुआ है अफ़सोस
किसको दे आया है कहां कोई किधर भूल गया
यार थे सैंकड़ो बन आगई जब तक न अजल
कोई हिकमत न चली सारे हुनर भूल गया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

आंखों में बस गये हैं मस्ते शबाब होकर
रहते हैं दिलके अन्दर शर्मो हिजाब होकर—आंखों - - -

इस शक्ल के मैं सदक़े चमके हैं दोनों आलम
एक आफ़ताब होकर एक महाताब होकर—आंखों - - -
इस इश्क़ का बुरा हो इंजाम कुछ न सोचा
दिल दे दिया बुतों को ख़ाना ख़राब होकर—आंखों - - -
इस हुस्न की क्यों जश्न में हो नादां जाबन है चार दिनका
बह जायेगा यह दरिया एक दिन हुबाब होकर—आंखों - - -
इस इश्क की गली में रखना क़दम संभाल कर
लाखों बिगड़ गये हैं दूल्हा नवाब होकर

P. 1981. ग़ज़ल पहाड़ी पी० १६८१

नसीब यार की बोसो किनार कैसे हो
क़रार इस में यह जिगर बे करार कैसे हो—नसीब - -
हया व शरम न साहब नज़ाकत है वसूल की
किसी हसीन से जो भरके प्यार कैसे हो—नसीब - - -
दिखा के ख़ंजेर अबरू वह हंसके कहते हैं
क़ज़ा से डरते हो तुम जां निसार कैसे हो—नसीब - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

वह पर्दा दर अन्दाज़ है या पर्दा नशीं है
जो मुश्क है ईरान की तो दिल के नशीं है—वह - - -
आ जाइये हाज़िर है दिल व दीद हमारे
पर्दे में रहें आप गर पर्दा नशीं है—वह - -
बाक़ी न रहा इश्क़ मे झगड़ा मन्नतों का
उनको नज़र ग़ौर से देखा तो हसीं हैं—वह - -

काबे में कलीसा में पुकारूं मैं कहां कहां
देदीज यह आवाज़ अगर आप कहीं हैं—वह - - -

P. 1985. ठुमरी क़व्वाली पी० १६८५

चल देख सखी क़ोसीन अदना यसरब का बांका सांवरिया
अब तुम पर अगर वह देखा करना बहार सांवरिया—चल - - -
गलियों में मदीने की चलत सखी री मन छीनत घर घरसे
यसरब की कमली कांधे धरो कलमें की बजावे बांसरिया—चल - - -
शाही शतरंज बनावत है फिर बाकि गुलाल उड़ावत है
वह सेराब कोर पिलावत है जिसे देख भई मैं बावरिया—चल - -
बरखारी आली शीश धरी मोहन सूरत ख़ूब भरी
अब वह आया अरब सखी री जाकी खुलती चादरिया—चल - - -

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

जहां में दीन अहमद की रसाई होने वाली है
अयां काबा शाने मुसतफ़ाई होने वाली है
समझता ख़ुद था मैं वह वह महबूब ख़ुदा होंगे
कि जिन पर सारी ख़ुदाई होने वाली है - जहां - - -
बजेगा दीनका डंका मिटेगी कुफ़्र की ज़ुलमत
बुराई दूर करने को भलाई होने वाली है - जहां - - -
अगर मुशकिल पड़े तुझ पर तजम्मुल चाहिये साहब
ख़ुदा चाहे तो मुशकिल कुशाई हाने वाली है - जहां

—:-०-:—

P. 2193. **भैरवीं** पो० २१९३

मोंहे जल्दी मदीने बुलालो नबी तोरे दर्श की आसा लगी -
मोरा अच्छा नबी मोरा प्यारा नबी तोरे दर्सकी आसा लगी - मोंहे - -
नैया हमारी अधर में डोले मोरी नैयाको पार लगाओ नबी तोरे-मोंहे- -
ख़्वाजा पिया तोरी बिनती करत हूं मोरी बिगड़ीको आज बना दो नबी
बना दो नबी तोरे दरस की आस लगी - मोंहे - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

जमाले यार हर सू जलवागर है, किसीका किस तरफ़ दिलमें गुज़र है-जमाले
तुझे सजदा करूं या तेरे दरको, तूही बतला मेरा दिलदार किधर है-जमाले
किसी की बेकली को कौन जाने, किसीके दर्द की किसको ख़बर है-जमाले
मज़ा आया मरनेमें,भी हमको, क़दम हो यारका और अपना सर है-जमाले

—:—

P. 2328. **खम्माच** पी० २३२८

दरे ख़्वाजा प सर टकराये जायें गे-रुख़े रोशन जबतक दिखाये जायें गे—दरे
करो जोरो सितम या दयाकी नज़र तोरे चरणों से नैना लगाये जायें गे-दरे
तेरा दामन न छोडेंगे रोज़े जज़ा-जब कि आगे ख़ुदा के बुलवाये जायें गे—

दूसरी तरफ़ : नात

या जनाबे ग़ौसे आज़म मैं तेरे बलहारियां
चाहे जंगी चाहे संगी तेरियां मैं तेरियां
जब से प्यारे मुख दिखाया सद आहो ज़ारियां-या - - -
मैं निकम्मी कौन जम्मी दर्द बनके मारियां

रखियो पर्दा बे हुनर का कहीं न शरम दारियां - या - - - -
चोर ने जा खुटखटी तब डूबी तेरी तारियां - या - - -
मेरी गैइयां लख संयां पायें फड़ फड़ हारियां - या - - - -

P. 3390. **ग़ज़ल खम्माच** पी० ३३९०

वहां ख़ून मेरा जो सारा चमन में
फिर आप आया मैं हज़ारा चमन में—वहां - -
तेरी मिसल गुलरू कहां कोई गुल है
सरासर गुलों का नज़ारा चमन में—वहां - - -
क्यों हंसते हो खिल खिल क्यों फूले हो इतना
ख़िज़ां की ख़बर है कि आया चमन में—वहां - -
घड़ियाल खड़ा देता है दो दो कमनासी
एक और घड़ी उम्र की गर तूने घटा दी - वहां - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल भैरवीं

साक़ी है तुझ प रहमत एक जाम और भर दे
कहता हूं मैं बच तक एक जाम और भर दे—साक़ी - - -
साक़ी तेरी बलाएं, क़दमों को तेरे चूमूं
हो मयकदे में भर कर एक जाम और भर दे—साक़ी - - -
मैख़ाना खुल रहा है और मस्त कह रहा है
भरती नहीं तबियत एक जाम और भर दे—साक़ी - -

—:—

P. 3558. **काफ़ी ज़िला** पी० ३५५८

दर्द बन कर दिल में आना कोई तुमसे सीख जाये
और ख़ुद ब ख़ुद से रूठ जाना कोई तुम से सीख जाये—दर्द - - -

कोई सीखे ख़ाकसारी की रविश तो हम सिखाये
ख़ाक में दिल को मिलाना कोई तुम से सीख जाये—दद - - - - -
एक निगाह जो तुमने की लाखों दुआयें मिल गईं
उम्र का अपनी बहाना कोई तुम से सीख जाये—दर्द - -
आपने तौबा करली जब जवानी हो चुकी
ज़ाहिद जन्नत में जाना कोई तुम से सीख जाये—दद - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल खम्माच

राज़ दिल यारसे इजहार करूं या न करूं
बेवफ़ा वह हो और मैं प्यार करूं या न करूं—राज़ - -
एक बोसे प करी आपने इतनी हुज्जत
दिल के देने में इन्कार करूं या न करूं—राज़ - - - -
वह भरोके से जो झांके तो मैं इतना पूछूं
इस तरफ़ ना पतेकी बार करूं या न करूं—राज़ - - -
यार आराम में है वस्ल की पहिली शब है
मिस्ल हैयर के बेदाद करूं या न करूं—राज़ - -

—— :०: ——

P. 3695.

मज़ाक़िया काफ़ी पी० ३६९५

तबीबों पास ले जाकर कोई तो नब्ज़ दिखलाये
यह है बीमारे मुजर्रब क्या दवा खाये
तबीबों ने हवश्शा की लिखा नुसख़ा मरीजोंका
जहां हो हुस्न की दुखका यह अजज़ हो बदन फूला है—तबीबों -
बड़े दुशकाम गर फ़ितना वह चश्मे शाक़ बादामी
फ़क़त गुल सुर्ख़ रुखसारे लबे शीरीं शहद डाले—तबीबों - -
तबिस आक़िल का अरे कमबख़्त जो शादां

लबालब इश्क़का प्याला तब भरकर वह तो पिलवावे—तबीबों - -
उढ़ा कर वस्ल की चादर उड़ा देखा न ख़िलवत में
अजब हिजरा कब कैसा उसके बदन से ताप निकल जावे-तबीबों -

दूसरी तरफ़ :— दादरा मज़ाक़िय

हलुवा ख़ूब गरम जानो मैं लाया हूं री - - - - - - -
जिस गली को आऊं जाऊं बीच खड़ी थी बेरी
बेरी में को तीर मारा जयपुर वाली मेरी उदय पुर वाली मेरी—हलवा -
जिस गली को आऊं जाऊं बीच पड़ा था गारा
गारे में को तीर मारा बच्चे दिये बारा-हाऊ हाऊ हाऊ - हलवा
गंजेके दो पंजे खर्गोश के थे हो पांव
जब गंजा घरमें बैठा तो कूद पड़ा शैतान-गंजे हाऊ हाऊ हाऊ-हलवा -
जिस गली को आऊं जाऊं बीच पड़ी थी नरंगी
नरंगी में जो तीर मारा हो पड़ी वह रंडी—हलवा - - - - -
अद्धी की हल्दी मिर्चो अद्धी का धनिया
रंडी ने ख़सम किया मोती राम बनिया

—:-०-:—

P. 3794. ग़ज़ल पी० ३७९४

तुम तो करते हो दिललगी दिल की
क्या मिटाओगे बे कली दिल की - तुम - - - - - - - -
अहद था उन के घर प जाने का
हाय बेताबी ले चली दिलकी - तुम - - -
बे ख़ुदीमें बता दिया मैं ने
बात ज़ालिम ने पूछ ली दिल की - तुम - - - - -

हम से पूछा कि हम प गूंदी है
आप क्या जाने बेकली दिल की - तुम - - -
किसकी बातों में आगये बे ग़म
तुम ने मिट्टी ख़राब की मेरी - तुम - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

दिल छीना निगाहें चुरा कर चले
कोई पूछे यह जादूसा क्या कर चले - दिल - -
मुझे छोड़ा तड़पता हुआ नीमजां
मेरी जानिब से दामन बचा कर चले - दिल - -
यह ख़ुशी है तेरी भीख दे या न दे
तेरे दर प भिकारी दुआ कर चले - दिल - - -

—:-०-:—

P. 3927. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ३९२७

मुहम्मद प दिल को फ़िदा कर चुके हैं
जो फ़र्ज़ ख़ुदा था अदा कर चुके हैं - मुहम्मद - -
न जायेगा दोज़ख़ में कोई भी मश्रोमिल
यह वायदा रसूले ख़ुदा कर चुके हैं - मुहम्मद - -
लगाया कोई ख़ाक को ए मुहम्मद
हवा संदकी हम इलतजा कर चुके हैं - मुहम्मद - -
बुलाते नहीं दर प क्यों शाह हज़रत
ख़ुदा जाने हम क्या ख़ता कर चुके हैं...मुहम्मद - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

पार बेड़ा लगा हुआ जाने जो मुहम्मद को ना ख़ुदा जाने
इस समन्दर के घाट लाखों हैं पार उतरे जो रस्ता जाने...पार - -

दर्द दिलका इलाज करना तबीब आशिक़ों की दवा तू क्या जाने - पार
जिसने पीली शराब मुर्शद की हबा हक़ीक़त सदाक़त जाने—पार - - -

—:-०-:—

P. 4417. क़व्वाली पी० ४४१७

नहीं है कुछ हम को ख़ौफ़ महशर हमें सहारा मोहम्मदी है
कि हिज्र में इखतिताम बख़शी ख़ुदा से कहना मोहम्मदी है-नहीं
कलीम ने तोर बख़ुदा से कहा कि दुनियां को क्यों बनाया
कहा ख़ुदा ने कि मेरे सामने यह नूर सारा मोहम्मदी है-नहीं
लहद ने मुझ से नज़ीरे मंज़िल लगे जो आकर सवाल करने
निगाह यह हातिमने जीसे फेरो कि यह ठिकाना मोहम्मदी है-नहीं

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली दादरा

ख़ालिक ने क्या बनाई है नूर नज़र नमाज़
अंधेर हो काया में न होगी और नमाज़-ख़ालिक - - - -
जिन को ख़याल रहता नमाज़ों का रात दिन
उन के लिये बनाई जिन्नत में घर नमाज़-ख़ालिक़ - - -
आयदे नमाज़ी संग दिलों हर्ज का बतौर
देखो अब यह दिखायेगी क्या क्या असर नमाज़ - ख़ालिक
शैतान पास रहता हर दम नमाज़ के
गर उस से बचना चाहे तो पहिले कर तर्क नमाज़-ख़ालि
मर जायेंगे नमाज़ी हां रे नमाज़ियों
बहता न कुछ जनाज़े प न नपाक कर नमाज़-ख़ालि - ख़ालिक़ - -

—•—

P. 4595. काफ़ी पी० ४५६५

दिखादे हम को जमाल अपना मजादेलब यह कार क्या है
यह खाकसारों से रंज क्या है यह बेकसों से मलाल क्या है-दिखादे
इसी तवक़्क़ह में उम्र गुज़री कि यार हम से तू आमिलेगा
न हम ने जाना कि वस्ल क्या है न हम ने जाना विसाल क्या है-दिखादे
तुम्हारे क़दमों में दम निकल जा यही तमन्ना है ग़मज़दों की
जो बादशाहोंका वस्ल चाहे फ़क़ीर मिसकों मजाल क्या है-दिखादे
यह दिल में हसरतहो ले चले हम शबाब अपनी है शिकायत
कभी न पूछा कि तेरा ज़ालिम हमारी फ़ुर्क़त में हाल क्या है-दिखादे

दूसरी तरफ़ :— सेहरा

चश्मे मुदम में रहा पुतलियां बन कर सेहरा
कम नहीं आंख की पुतली से भी दिलबर तेरा-चश्मे - -
शौक़ दीदार में तारों की लगा कर ऐनक
आसमां देख रहा है तेरा झुक कर सेहरा-चश्मे - - - -
और भी होगई मां बाप को दूनी उल्फ़त
दिल में घर कर गया नज़रों में समाकर सेहरा-चश्मे - - - -
दुल्हन जब सास के मुजरे को आई
दिया घर बार सारा मुंह दिखाई
आख़िर कार मोहम्मद हुसैन की नज़र हो मंजूर
किश्तिये हिज्र में दामन बचा कर सेहरा-चश्मे - -

—:०:—

P. 4596. भैरवीं पी० ४५९६

दुख पूछत हमरा कोई नहीं
रात पिया संग सोई नहीं-दुख पूछत - - -

अपने बेगाने सभी मिल बैठे, जिस को मैं चाहती वोही नही
रात पिया संग सोई नहीं-दुख पूछत - -
सास ननद मारी जनम की बैरन सूनी सेज मैं तो सोई नहीं
रात - - - दुख - - - इनक़ ग़ुंचे दहन जाय-सोई नहीं - - -

दूसरी तरफ़ :— मालकोस

बिजरी चमके डरमोहे लागे
उमडे दल बादल श्याम घटा-बिजली चमके - - -
लिख लिख पतियां पिया पास भेजू बांचन हारे-ऊंची अटारी-बिजली
उमड दल बादल - - - बिजरी - -

P. 4667. ग़ज़ल पी० ४६६७

वह देखो कौन है बुड्ढा कमर झुकाये हुए
यह क्यों हसीनों मे फिरता है तनतनाये हुए-वह - -
शबे लिहाफ़ में सर्दी के मार ऐंठ गये
पड़ा है दर्द में मुर्दा वह सर झुकाये हुए-वह - -
ग़ज़ब है आंख में भर नींदका न हाशम की
वह कंजी आंखों में सुर्मा भी है लगाये हुए-वह - - -
ख़ुदा के वास्ते हो जायेंगे वह हाफ़िज़ भी
बुढ़ापा आगया है एनक भी लगाये हुए-वह - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

चलो हमारे साथ बुढ़िया - -
जो मेरी बुढ़ियाको भूक लगेगी आगे खिलाऊं लड्डू पेडे बुढ़िया-चलो
जो मेरी बुढ़िया को पियास लगेगी रस्ते में जमना घाट बुढ़िया-चलो
जो मेरी बुढ़िया को नींद लगेगी चल के आगे बिछाऊं सेज बुढ़िया

P. 4822. दादरा पो० ४८२२

ज़रा घूंघट में करलो इशारा सनम - - - -
चढ़ी जवानी में ग़मज़ानया ढाते हैं
अदा से नाज़ से शोख़ी से दिल लुभाते हैं
वह अपने चाहने वालों से रूठ जाते हैं
दुल्हन की तरह वह पर्दे में मुंह छिपाते हैं-ज़रा - -
अदा शबाव के खंजर अजब चलाती है
निगाहे नाज़ तुम्हारी सितम यह ढाती है
मिटाती कोट यह सो बरछियां चलाती है
अदा शबाव के खंजर अजब चलाती है
लड़ी है आंख यह जबसे मुझे यह लड़ाती है
करूं मैं किस से मैं शिकवा तुम्हारा (पिया) सनम-ज़रा- - -
इस की गली को आऊं जाऊं बीच खड़ी थी बेरी
बेरी में को तीर मारा घूंघट वालो मेरी-ज़रा - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

सुन सुन री मालन मोल बाहादे इन अनारका
इस हार का कुछ प्यार का—सुन सुन - -
नहाल कर डाला ये सवेर आये हुए हैं
पिस्तां तो अभी तेरे ये गदराये हुए हैं—सुन सुन - -
देखो न छुओ महरमे पिस्तां मेरे हैं है
यह तेरा बहिशती अभी गदराये हुए हैं—सुन सुन - -
बांकी छैल छबीलो मलनिया चाल चले मस्ताना
केला लेके नारंगी देती हमें न तू तरसाना—सुन सुन - -

—

P. 4898. ग़ज़ल क़व्वाली पहाड़ी पो० ४८९८

जिस घड़ी गर्दन कटेगी आशिक़े नाशाद की
सुर्ख़ मछली बन के तरेगी छुरी जल्लाद की
ऐ बुरे ज़ालिम तुझे कुछ भी नहीं मेरा ख़याल
मैंने सारी उम्र तेरे इश्क़ में बर्बाद की
आप मेरी आरज़ू सुन कर हुए नाराज़ क्यों
जब क्या बेचैन दिल ने आप से फ़रियाद की--जिस - - -
सख़्त जानों का गला कटता नहीं हाथान से
क़त्ल करने को हमारे तेग़ हो फ़ौलाद की—जिस - - -
सैर गुलशन के मज़े में भूल जाता हूं तमाम
याद जब आती है मुझ को ख़ानये संयाद की

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

है फ़िज़ा जोबन की उस गुलरंग प आई हुई
वाह क्या नारंगियां पिस्तां हैं गदराई हुई—है - -
करते हैं बाते अभी तक वह शर्माई हुई
पर नहीं छिपती जवानी की तरङ्ग आई हुई - है - - -
करके वायदा हमसे घर ग़ैरों के जाते हो मुदाम
धोकेबाज़ी करते हो यह किस की सिखलाई हुई हुई - है- -
नाज़ से जिस दम चलते थे वह चाल अठलाई हुई
हम हुए पामाल और ख़लक़्त तमाशाई हुई
ग़ैर को नामा भी लिखवाते हो मुनशी से मगर
यह तो कहिये चार बोसे किस की लिखवाई हुई - है - -

—

P. 4978. ग़ज़ल पी० ४६७८

फ़िराक़ यार में दिलको क़रार कैसे हो
मरीज़े रंजो अलम हो ज़ियार कैसे हो - फ़िराक़ - - -
लगाओ नाव के मिज़गां तो देख लें हम भी
एक तीर कलेजे के पार कैसे हो - फ़िराक़ - -
उठाके तेग़ कहा मुसकराके क़ातिल ने
झुकाओ सर को मेरे जां निसार कैसे हो - फ़िराक़ - -
नहीं है ग़र की सोहबत से एकदम फ़ुर्सत
हमें नसींब भला वस्ले यार कैसे हो - फ़िराक़ - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दिल तड़प कर जानिबे क़ातिल गया
बेवफ़ा था बेवफ़ा में मिल गया
क़ब्र में आराम से सोयेंगे हम
मरने वालों को ठिकाना मिल गया - दिल - - -
क्या निशां था दिलका मन मन में मिला
ख़ाक था वह ख़ाक ही में मिल गया - दिल - - - -
इश्क़ में इज्ज़त गई रुसवा हुए
दिल लगाने का नतीजा मिल गया - दिल - -

—:-०-:—

P. 5013. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ५०१३

लगा न रहने दे झगड़े को यार तू बाक़ी
रुके न हाथ अभी है रगे गुल बाक़ी—लगा—
उठा के फूल मेरा गुंचा दहन यूं बोला
अभी तलक है मुहब्बत की इसमें बू बाक़ी—लगा - - -

ज़िबह तू करता है पर खोल दे मेरे सैयाद
रह न कोई तड़फ ने की आरज़ू बाक़ी—लगा - - -
फ़ना है सब के लिये हम प कुछ नहीं मौक़ूफ़
यह रश्क वह है अकेला रह न तू बाक़ी—लगा - - -
हां से हां में बाद हुये जब कि हज़रत यूसुफ़
रही न इश्क़ में जीने की आरज़ू बाक़ी—लगा - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल भैरवीं

एक फ़क़त मैं ही नहीं चाहने वाला तेरा
जिस ने पैदा किया है वह भी तो शैदा तेरा—एक - -
फेर कर मेरे गले पर वह छुरी यूं बोला
हम भी देखेंगे तड़पने का तमाशा तेरा—एक - - -
उम्र भर तुम से सर न उठाऊंगा कभी
हाथ आजयेगा नक़्श कफ़ेबां तेरा—एक - - -
मेरे ज़ख़मों पर नमक छिड़के न जाये पानी
अभी ठंडा न हुआ क़ातिल न कलेजा तेरा—एक - - -

P. 5014. दादरा भैरवीं पी० ५०१४

मेरे सैयां ने अंगिया मोरी फाड़ डाली रे
सैयां हमारे बड़े निखट्टू—मोरी साड़ी सारी फाड़ डाली रे—मोरी - -
उंगली पकड़ मोरा पहुंचा रे पकड़ा
पैयां पकड़ के दे मारी रे—मोरे सैयां - - - -
यह कपड़ा मोरे अब्बा के से आया
अब्बा ने सुनके मोहे दो गारी रे—मोरे - -

फ़ज़्ले ख़ुदा का देखिये पहलुये पीरमें
क्या जोश आ रहा है पुराने खमीर में

दूसरी तरफ़ :— रसिया दादरा

गोना करदे री मैया कि बलमा तासे प्यारी राखे
तू तो छलावे टूटी खटोली अररररर बलमासे जो प सुलावेगा—तोसे - -
तू तो खिलावे रूखी सूखीअररर बलमा पूरी कचौरी खिलावेगा—तोसे - -
(अरे वाह मेरी जान क्या बलमा की तारीफ़ करती है - -) गोना - -
तू तो पहनावे फटे पुराने अरेररर बलमा लाल लाल चुन्दडी उढ़ावेगा-तो
तू तो छलावे रे टूटी खटोली अररररर बलमा सेजों प सुलावेगा तोसे - -

—:०:—

P. 5083. नात पी० ५०८३

जिस दिलमें इश्क़ यारो शाहे उमम न होगा
हरगिज़ ख़ुदा का उन पर लुत्फ़ो करम न होगा
मुनकिर है जो नबी का दुशमन है वह ख़ुदा का
गर्दन में तौक़ पहना कर शैतान से कम न होगा—जिस - - -
इश्क़े मोहम्मदी की पीली शराब जिसने
वल्लाह ताक़्मामत फिर उसको ग़म न होगा—जिस - - -
अफ़सोस दिन जुमेका और थी दुपहरी ढलती
क्यों कर बला में गुज़रा ऐसा सितम न होगा—जिस - - -

दूसरी तरफ़ :— नात

नाते अहमद में लिखूं यह मेरा रुतबा क्या है
वस्ले ख़ालिक ही जो फरमाये तो बतला क्या है—नात - - - - -

लब चिपट जाते हैं कहता है मोहम्मद जो कोई
और उस नाम से बढ़ कर मुझे दीखा क्या है—नात - - -
ऐ अजल मुझको मदीनां में पहुंच जाने दो
बात बनती है मेरे तेरा बिगड़ता क्या है—नात - - -
तूर पर हज़रते मूसा तो गिरे ग़श खाकर
जलवये यार पुकारा अभी देखा क्या है
मैं भी झूठा मेरे शिकवे भी सरासर झूठे
तुम ही सच्चे सही इस बात का झगड़ा क्या है—नात - - - - -

P. 5084. ग़ज़ल भैरवीं पी० ५०८४

यह गाली जो दिलरुबा मिल रहा है
दुआ को फिरतो सज़ा मिल रही है
गले पर जो कसके चलता है ख़ंजर
यह गोया क़ज़ा से क़ज़ा मिल रही है - -
मेरे क़त्ल का दिन हैं याईद का दिन
अरे तेग़ से क्यों क़ज़ा मिल रही है - यह गाली - -
वह मलते हैं पांवों से सर को मेरे
यह मिट्टी में मेरी वफ़ा मिल रही है - यह गाली - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

ताक़ में रक्खो चलो जाने दो ऐसे प्यार को
गालियां हम को मिलें बोसे मिलें अग़ियार को
जिस घड़ी सुन के हमारे सोज़ अब रो दिया
उफ़रे देखा भी गले पर रख दिया तलवार को - ताक़ - -
चुपके चुपके दिलमें घर करती है अफ़सोस ज़ारियां

शोख़ियां तालीम देती है निगाहे यार को
मना कर दो रक़ीबों से न देवें मांग का बोसा
हमारी मांग पहिली है अगर लेंगे तो हम लेंगे - ताक़ - - -

—:-०-:—

P. 5286. ग़ज़ल क़व्वाली पाहड़ी पी० ५२८६

अदा से नाज़ से शोख़ी से बन संवर लेना
जवानी आने दो चाहो नाज़ कर लेना—अदा - -
पहनाये हार तो उस गुलबदन हंस के कहा
फूलों के बोझ से टूटी मेरी कमर लेना - अदा - -
कहा जो उनसे कि मत आओ हंस के फ़रमाया
कोई हंसीन जो देखो उसी प मर लेना - अदा - -
इधर शबाब यह कहता है चूम लो रुख़सार
उठा के हाथ जो अंगड़ाइयां भर लेना - अदा - -
शबे विसाल में बोसा जो लिया हंस के कहा
तमाम रात है ऐ दूल्हा प्यार कर लेना - अदा - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हां जनाब आली हमारी हालत सुन कर आप भी दो
दो आंसू बहाइये लो ज़रा सुन लो
तलवार ख़ून में रंग लो अरमान रह न जाये
बिसमिल से जब कि कोई अहसान रह न जायें
निगाह मेरे दिलमें घर अपना तो बना लो
दिल खाने ख़ुदा है वीरान रह न जायें
भर भर के जाम साक़ी हम मय कशों को दे दे
महफ़िल में पियासा कोई महमान रह न जायें

अब क़तल कर चुके हो पामाल लाश कर दो
तोक़ीर तुम्हारे दिलमें अरमान रह न जायें

P. 5287. दादरा पी० ५२८७

कमर बल खागई में हुई हलकान - वाह वाह रे - ओहे - -
सैयां ने मोरी हड्डी भी तोड़ डाली पसली मरोड़ डाली राम
अरे कैसा हूं जवान तू देख ले मेरी जान - तू खिलादे मुझको पान -
सैयां तू मोरे हाथों को दाब मेरे पैरों को दाब - अरे दाब दे
हुई मैं परेशान हुई मैं हलकान - कमर बल - -

दूसरी तरफ़ :— तादरा

हमें रे लग जायेगी नजरिया राम
हमरो गुलाबी रुपटटा हमें लग - उई हमें - वाह वाह हमें - -
चाहे सैयां मारो चाहे सैयां छाड़ो
हम से छिपे न फजरिया - हमें रे लग - -
सास ननद मोरी जनम की बैरन
हम से भरो न गगरिया—हमें लग जायेगी - -

—:-०-:—

P. 5337. होली पी० ५३३७

फागन के दिन चार सखी री अब ना बलम मोहे मंगावे
सोना दूंगी रूपा दूंगी मोती दिये अनमोल
जोबना देती मैं मोल करूंगी राड़ करूंगी बलम न दूंगी उधार
सखी री अब न बलम मोहे मंगावे फागन के दिन चार

दूसरी तरफ़ :— होली

बृज में धूम मचावत कान्हा
सब सखियां मिल अर्ज़ करत हैं
अंखियां न मरत गुलाल - बृज में धूम - -
गुलाबी रे बगल में बीन कहीं चोरोसे फिर आया
अचम्भा था यही लेकिन अभी आंखों में फिर आया - बृज - -

P .5662. भजन पी० ५६६२.

धनुष तोड़न हरन भज मन धनुष तोड़न - -
लङ्का और जस द्वीप की गौवें आईं चरन—धनुष - -
रावी साथी और मोरी मन्दर करत पूजा भरन—भज - -
बन्सी ऐसी बजाई कृष्ण गौवें आईं चरन—भज मन - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

ईश्वर को भज लें प्राणी होजा पार पार पार
कुछ खबर नहीं है पलकी—जोड़ी है माया छल की
क्यों खोई सुध भी तन की—पड़ेगी मार मार मार—ईश्व - -
तुलसी जग में आन के जो सब सें मिलियो धाय
ना जानूं किस भेष में नारायण मिल जाय—ईश्वर - -
नहीं मात पिता कोई साथी जितने हैं तेरे नाती
यह धर्म रहेगा साथी नहीं कोई यार यार यार—ईश्वर - -
तुलसी मीठे बोल से जस उपजत चहुं ओर
वसी करन यह मन्त्र है तज दे बचन कठोर—ईश्वर - - -

P. 5677. ठुमरी पी० ५६७७

उठो मोरी प्यारी अब भोर भई
बीती रंन तोये सोवत शशी की जोत अब निकस गई—उठो - -
जान जाये यार है फिर उस गली में जाना मुझे
या कोई नादान समझो या कोई दाना मुझे—उठो - - - -

दूसरी तरफ़ :— मल्हार छाया

जाने न दे होरी माई सजन को—मैं क्या दीन करता हूं
पल पल बून्द को - जाने - -
घटा कारी बिजरी चमकत है सदा रंगी रहे बनी
बरसे है मेंहा बून्द बून्द कर—जाने न दे - - - - - -
अब्र भी हो बारां भी हो और मोसमें बरसात हो
और ख़ुदा का फ़ज़्ल हो और दिलबर भी पास हो—जाने - - -

P. 5729. दादरा काफ़ी पी० ५७२६

दिलों से क्यों नहीं बोलता - -
संवरियारे बाग़ो में मत जाइयो मंगादूं मालनिया तोरी ख़ातिर-दिलों - -
संवरियारे ठंडी सड़क मत जाइयो मंगादूं मोटर भी तोरी ख़ातिर-दिलो -
संरिया रे सेजों प मत जाइयों बुलादूं कामनिया तोरी ख़ातिर - दिलो - -

दूसरी तरफ़ :— सेहरा

मालन वानाके लाई क्या बे नज़ीर सेहरा
गुलदार है फूलों से रोशन ज़मीर सेहरा-मलान - -
पुखराज है नीलम भी गोहर से है मुरस्सा

क्या उम्दा ख़ुशनुमा हर दिल पज़ीर सेहरा-मालन - -
नोशे के मय जबीं पर ग्राकर हुई है हालत
सर पर है ताज शाही रुख़ पर वज़ीर सेहरा-मालन - -
नोशे ने उसे लगाबा लेता है रुख़ बोसे
देखो तो हो गया है कैसा शरीर सेहरा

P. 5846. **बागेश्री** पी० ५८४६

गहरी गहरी नदियां गहरावत हैं
ग्राप ही शामी पार उतर गये हमरो कौन खिवैया दैया-गहरी - -
देख दरिया की तरफ़ दिल का लहर ग्राती ह
किश्तयो उमर की ग्रफ़सास बही जाती है
न इसे संख लगे न इसे पाट लगे
किशती उम्र की ग्रफ़सोस यह किस तरह घाट लगे-गहरी - - -

दूसरी तरफ़ :— **होली**

ऐसे तुम ही क्या हो बृज के इजारे दार
मोरी चोलिया मसक दई फेर हाथ - ऐसे - - -
कर मोरी पकड़ो कलाई मोरी मसको चोलिया के कर दीने तार
तार - ऐसे - - -
राधा जी के बदन पर बसे तीस दस चोर
दस गोकुल दस हंस ह तो दस चात्रक दस मोर - ऐसे - - -

—:०:—

P. 6121. **मालकोस** पी० ६१२१

निर्दई से प्रीत दई ग्रब न करूं
घर जाग्रो लगाग्रो भई सो भई न जा

गई जा पनिया भरन - निर्दई - - - -
तुम ग्राग्रो सीने लगावो नन्द
डगरी रे ग्रब न गही तुमरी बिगड़ी मोरी - निर्दई - - - -
ठारे सखी क्यो रार मचारी मारी
मोरी नासंग चपरा - निर्दई - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— **जोगिया**

मोहे पिया मिलन को जानेदे बैरन मां
न मानूं रमाई तोरे पैयां परूं मासे रार न कर
माया भी करत हाथ को मल—सैयां - - मोहे - -
इतनी बिनती मानले मोरी सजनो बात सुनो तुम ग्रब मोरी
बेकल जियारा पिया बिन मोरे निकसत जात प्राण - मोहे - -

—:-०-:—

P. 6355. **पीलू दादरा** पी० ६३५५

चले जायेंगे-गोरी ताना न मारो चले जायेंगे
चुन चुन कलियां मैं सेज बिछाती
सोके सुलाके चले जायेंगे - गोरी - -
सोने का गड़ुग्रा गंगा जल पानी
पीके पिला के चले जायेंगे - गोरी - -
सोने की थाली में भोजन परोसा
खाके खिलाके चले जायेंगे - गोरी - -

दूसरी तरफ़ :— **दादरा**

सिपाही मिया ठाड़ा ग्रो मोरी गुइयां
वह तो मांगे बारह बरस की इश्क़ का मारा - सिपाही - -

वह तो पीये बोतल ब्रांडी नशे का मत वारा - सिपाही - -

वह तो सोवे री वृक्ष की छैयां नींद का मत वारा - सिपाही - -

——:-०-:——

मि० मयजुद्दीन खां

P. 122. भैरवीं पी० १२२

सांवरिया ने जादू डारा बाज़ू बन्द खुल खुल जात

जादू की पुड़िया पढ़ पढ़ मारे क्या करे बाज़ू बन्द खुल खुल जात

सांवरिया ने जादू डारा बाज़ू बन्द खुल खुल जात

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली खम्माच

सैयां बिन नाहीं आवत चैन कासे कहूँ जीके बैन - सैयां बिन - -

पियास पड़त जब नित चैन है, नापास सूरत दीखे ना - सैयां बिन - -

——

P. 804. गारा पी० ८०४

पानी भरे री कौन अल बेले की नार झमा झम - -

हाथन गड़िया कांधन गगरिया बांकी चित बनसे मोहे

घायल करें री कौन अल बेले की नार - झमा झम - -

हाथन - - कांधन - - बांकी - - अलबेले - - झमा झम - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

पिराये मोरी आंखियां राजा हम सेन बोलो - -

हम से न बोलो राजा हम से न बोलो - पिराये - -

राजा हम से न बोलो राजा हम से बोलो - पिराये - -

P. 807. खैयाल टोडी पी० ८०७

लंगर काकंरिया जन मारो मोरे अगवा लग जाये

सुन पावे मोरी सास ननदिया दौड़ दौड़ कर लाओ रे

लंगर का करिया जन मारो - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

रंग देख जियारा ललचात जी मेरो रे

या बिध मचो है फाग रंग देख - -

——:-०-:——

P. 9144. दरबारी टूडी पी० ९१४४

दीजो दर्शन मोरे प्यारे - - -

मैं तो दासी तेरी जनम जनम की

तू हो तो मेरा प्यारा राज दुलारे कृष्णा मुरारे

प्यारे - - - दीजो दर्शन मोरे प्यारे - - -

दूसरी तरफ़ :— काफ़ी

मोरे कानन में तोरी मुरली की धुन सुन भनक पड़ी मोरे कानन में

मन उरझे केते समझाऊं श्याम सुन्दर सुरतानन में

तोरी मुरली की धुन - - - मोरे कानन में - - -

P. 9145. भैरवीं ठुमरी पी० ९१४५

रसिया बेदर्दी मैं तो पनिया को गई रे

घर मेरा दूर है गागर सर भारी

जमना की लेटी अरी लट गई हां
पनियां को कौ गई - रसिया बेदर्दी में तो - - -

दूसरी तरफ़ :— पोलू

पी की बोली न बोल रे ओ पपीहरा रे
पी की बोली न बोल - - -
सेन पावें बिरहा के पिया से
देंगे पंख मरोड़—पी की बोली - - -

——:०:——

मि० मातादीन

P. 7478. कजरी पी० ७४७८

अरे मोर्वा बोलन लागे नाहर बिन कैसे जिऊंगी
अब तो मोरवा बोलन लागे नाहर बिन कैसे जिऊंगी - - -
क़दम कुंज तरो पंज पवन रस डोलन लागे ना
बिरहन कसी जियेंगी अब तो मोरवा बोलन लागे ना - -

दूसरी तरफ़ :— कजरी

देखो शाम नहीं आये घिर आई बदरी - - -
आई सावन की बहार अरे मुरीला बोले बार बार
परें बंदन फुहार घिर आईं बदरी - देखो - - -

———

मास्टर मेहर

P. 6478. भजन पी० ६४७८

करे मन मेरा रे शंकर जी की उपासाना - भोलाजी की उपासना
बड़ा सुख देखा मैंने भोला के ध्यान मं - शम्भू के ध्यान मं
ऐ मेरे बूढ़ मन्ना भगती से अब हां उभारना
जटा जूट सर गङ्ग बिराजें—गङ्ग बिराजें
गल रुंडन की माल नाग और नागना
अब नन्दी गण की करे असवारो—करे असवारी
सीस नवावे हैं हो दास यही है मनकी कामना - करे - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

कदम तले राधके नवा झूला डारोरी - - -
रतन जड़त कंचन को झूलो
रेशम पच रंग डारी—कदम तले - -
झूलत शाम शाम दोऊ मिल मिल
नवल मनोहर डोरी—कदम तले - - - - - - -
बोलत कोकिल मधू प्रिया बानी
मोरन गान करो री—कदम तले - - -
बाजत बीन ताऊस तम्बूरो
गाबत मिल मिल गोरी—कदम तले - - - -

———

P. 6533. इश्क़ मज़ाकिया पी० ६५३३

शर्बते वस्ल पिला माई डीअर कम टूमी
दर्द दिल की हो दवा माई डीअर कम टूमी

ज़िंदा रह सकता नहीं मैं तो कभी तेरे बग़ैर
बख़्श दे मेरी ख़ता माई डीअर कम टुमी
इस से बेहतर है कि तू क़त्ल है करदे मुझको
हिज्र की दे न सज़ा माई डीअर कम टुमी
ख़ून होटों के किये तेरे लब की सुर्ख़ी
लब को लब से तो मिला माई डीअर कम टुमी

दूसरी तरज़ :— ग़ज़ल

किया था जुर्मे वफ़ा लज़्ज़त सज़ा के लिये
सितम के लुत्फ़ उठाये मज़े जफ़ा के लिये
बड़ा मज़ा है कि ज़ालिम ने क़त्ल पर मेरे
जमा किया है रक़ीबों को मरहबा के लिये
बड़ा मज़ा है कि महशर में हम करें शिकवा
वह मिन्नतों से कहें चुप रहो ख़ुदा के लिये
हमारा किशतये दिल और फ़िराक़ का तूफ़ां
हुआ ख़िलाफ़ है ओ ना ख़ुदा ख़ुदा के लिये

——:——

P. 6621. ग़ज़ल पी० ६६२१

अबरू संवर के आते हैं क्या मिल के सामने
दो तेग़ वार करती हैं इक दिल के सामने
दिल जिगर प चल गई तेग़ निगाहे यार
बिसमिल फड़क के रह गया बिसमिल के साम
सोय साके ईद तजल्ली ये हुस्न यार
मजनू फड़क के रह गया महमिल के सामने
अबरू संवर के - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

तुम्हारा दिल अगर हम से फिरा है
तो बेहतर है हमारा भी ख़ुदा है
हमारी कुछ नहीं तक़्सीर लेकिन
सभी तुझ को कहेंगे बेवफ़ा है
हुए हो इस क़दर बेज़ार हमसे
कहो हम ने तुम्हारा क्या किया है—तुम्हारा - -

——————

मि० मेराजउद्दीन

P. 4571. बागेश्री (नूर की पुतली) पी० ४५७१

मुशकिल बहुत समझना है इस कायेनात का
जाय सुख़न करना इस अपनी बात का
अगर हमें क़रार दे इलाही दराज़ है
दिल को नहीं सब्र कि है क्या बेतराबका—मुशकिल - - -
गुमराह कोई जान दे पाया न उस्ताद है
वह आप भेद जानता है अपनी बात का—मुशकिल - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं (नूर की पुतली)

अपने मौला की मैं जोगन बनूंगी
जोगन बनूंगी बिरोगन बनूंगी—अपने मौला - - -
कोई जावे मस्जिद में और कोई जावे मन्दर
हमने तेरा जलवा देखा प्यारे दिल के अन्दर—अपने - -

कोयल बन कर जगंल ढूंढा बुलबुल बन कर गुलशन
कलियां कलियां चुन कर देखी बन कर तेरी मालन—अपने - -
तेरे इश्क़ में पहनी कफ़नी छोड़ा ज़ेवर गहना
तू जिस रंग में खुश हो प्यारे उसी रंग में रहना—अपने - -

———

मि० मेथिया

P. 5661. दादरा पी० ५६६१

धीरे पहनाश्रो मनहार चूड़ियां - - -
एक तो मोरी नाज़क बैयां काहे करे मोसे रार - मनहार - - -
एसी चुड़िया और पहनाओ पिया करे मोसे प्यार
मनहार चूड़िया - धीरे पहनाओ - -
मैं ने दी हार्डी ले बोले ना चाले ना—खुले ना दिल शाद रे
बोली रे प्यारी ए दिल तो प वारी ए - धीरे - -
ऐसी चुड़िया और पहनाओ - - धीरे - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

ख़ूने जिगर को पीते हैं बस ग़म में तेरे यार
मेरी नज़र जो तुम से लड़गई मैं पलंग के नीचे पड़ गई
मैं अग्नि जंसी जलगई बस ग़म में तेरे यार - खूने - -
मैं चुपके चुपके रोती - हूं हाथ मल के धोती

वह कहां गया मेरा मोती - मोती बिना नहीं सोती
बस ग़म में तेरे यार - खूने - - -

———:०:———

मि० मोहम्मद हुसैन, हरियाना

P. 3795. दरबारी कानेहड़ा पी० ३७९५

नाचत गोपाल लाल बारी बननन गोपाल लाल
तदर झूलत अंग नाचत हैं गोपाल लाल
मोर मुकुट पीतम बर कर काम सनजे जग
काट काट बार—नाचत - -

दूसरी तरफ़ :— मालकोस

पिया पिया पियारी पुकार
ताकन कब से पिया न मोरा होगा
कं जा मरन दीन डर पें इन्द नारी मान
हमारा कौन दीदे बीन धीर न - पिया - -

—:-०-:—

माष्टर मोहन सिंह

P. 6513. टोडी जोनपुरी पी० ६५१३

पीके दरस की रटना लागी - तरसत मोरे नैनां - सगरी रैन जागी
भूषण वस्त्र सब तज के सखीरी सगरे जग से सब बनूंगी मैं त्यारी
रटना लागी पी के दरस की - - - - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— बिहाग

लट उलझी सुलझा जा रे बालम
मोरे हाथन में महन्दी लगी है
माथे की बिंदिया अपने हाथ से लगा जा रे मोहन
लट उलझी सुलझा जारे बालम

——:-o-:——

P. 6700. शुद्ध बिलावल पी० ६७००

पनियां भरन नाहीं जाने देत गिरधारी कहा कहूँ मोरी आली
सांवर मुकट धारी रोकत बृज की नारी पनियां भरन - - -
लपकी झपक मोरी गागर फोड़ डारी
सुगर छैल से बहुत सो बिनती करत हारी—पनियां भरन - - -

दूसरी तरफ़ :— भीम पलास

जनम वृथा गयो प्रभु के भजन बिन
रात दिन नित पाप कमावे
राम के वेले क्यों आस पावे - प्रभु - - जनम , - -

——:——

P. 7102. ग़ज़ल पी० ७१०२

हाय किशती हिन्द की ग़र्क़ होने के लिये
था अविधा का भंवर इस को डबोने के लिये
आंधी ख़ुद ग़र्ज़ी की थी देश पर छाई हुई
ना ख़ुदा है रात था तदबीर करने के लिये -
हो गई थी एक रहमत फिर ईश्वर की दया

आगये स्वामी दयानन्द पार करने के लिये
वह सनावर शेर दिन फिर लेके बल्ली वेद की
ले चला किशती को यारो पार करने के लिये
ले चला किशती को यारों जिस तरह बतला गये
ख़ूब है रंगीन यह रस्ता पार करने के लिये
ले चला किशती को यारो पार करने के लिये
हाय किशती हिन्दुस्तान की थी ग़र्क़ होने के लिये

दूसरी तरफ़ :— भजन

मैं तेरा राम मुझे न दिलों से भूल
मक्का गये मदीना हो आये आजे न मिला रसूल
कोई नेरे कोई दूर बतावे न नेरे न दूर
सियाही गई सफ़ेदी आई घर चले सब भूल
कहत कबीर सनो भई साधु साहब हाज़िर हज़ूर
मक्का गये मदीने हो आये अजे न मिला रसूल

P. 7240. बागेश्री पी० ७२४०

कैसी तू मोसे करत छेड़ बेर बेर - - -
पन घट प नितु नितु मघ घेर घेर--कैसी तू मोसे - - - -
कहो जी मानदे घर कव`र कान बेग मोहे नाहीं हम अब ही कमर कर
छिन में न कासों गये - कैसी तू मोसे - - - - -
कहो जी मान दे - - - कैसी तू मोसे - - - - -

दूसरी तरफ़ :— भीम

हेरी मां मोरा मन हर लीनो - - -

दुखवा में कैसे कहूं जितने औगुन हम संग कीने
सो हमरे चित धर लीने
कुंवर श्याम ऐसो छल बल करे नैना मिला के मन बस कीने
हरी मां मोरा मन हर लीनो
नी सा रे मा पा धा नी सा - - - - - - -

P. 7861. ग़ज़ल पी० ७८६१

मुझ से न बोलने की कब तक ठनी रहेगी
मेरी या तेरी प्यारे क्या दुशमनी रहेगी - मुझ - - -
किस बात पर ख़फ़ा हो ज़ाहिर करो ख़ता को
महशर तलक शिकायत दिल में जमी रहेगी - मुझ - - -
ऐ दर्द दिल बता तू न कर रहम की निगाह तू
देंगे जो दर्द दिल की कब तक तनी रहेगी - मुझ - -
कमसिन शबाब ही पर लेलो दुआ किसी की
यहां हश्र तक प्यारे ताने ज़नी रहेगी - मुझ - - -
महमान हुस्न दो दिन रहता है सब प प्यारे
फिर बाद चार दिन के यह चांदनी रहेगी - मुझ - मेरी -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

अज़ल है साफ़ तेरी आशकार आंखों में—अज़ल - - -
भरा है ज़हर इन जादू निगार आंखों में
हलाल कर दिया आंखों में डाल कर आंखें
निगाह है कोई शमशीर यार आंखों में - अज़ल - -
लगा के नाज़ से ठोकर मिटा दिया ज़ालिम
खटक रहा था हमारा मज़ार आंखों में - अज़ल - -

अदू के साथ रात भर मज़े लुटे
भरा हुआ था ग़ज़ब का ख़ुमार आंखों में - अज़ल - - -
जवाब आंखों ही आंखों में दे दिया ज़ालिम
सवाल करके हुआ शरमसार आखोंमें - अज़ल

——0——

P. 8165. दादरा पी० ८१६५

कपोल तो हंस समान हैं नन्द दुलारे दूध समान अमोल
कपोल तो हंस समान हैं नन्ददुलारे
काहन हंस निवास करें निस वासर सेर समुद्र किनारे - दूध - -
शाम भई घनश्याम पधारत आप के मन्दिर जात सकारे
लाख करें उठन उठन न देत है नैन तिहारे
सानी नी नी सा पामा गा पानी सा - दूध - -
शाम भई घन श्याम - - - दूध - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

देखे बिना बारी बहियां पिया प्यारे से लग गये नैन
नाम तेरे दी गल विच माला सुमरत हूं दिन रैन - देखे - - -
सुपने में आगयो दर्शन दिखा गयो कर गयो जिया बेचैन - देखे - -
घड़ियां गिन गिन दिन गुज़ारां कर गैयो जिया - - देखे - -
तार गिन गिन रैन दे गुज़ारां - देखे - -
जब से गयो मोरी सुधहु न लीनी कर गयो जिया - - देखे - -



मि० के० मल्लिक

P. 2001. **दादरा** पी० २००१

अरे मोरे सैयां सोतन घर ना जा
सौतन घर ना जा बैरन घर ना जा - अरे मोरा - -
बार बार तोरी बिनती करत हूं और मैं पड़ूं तोरे पैयां
सौतन घर नाजा—अरे मोरे सैयां सोतन घर नाजा
वाली उमर मोरी मैं हूं लड़कैयां सौतन घर - - अरे मोरा - -

दूसरी तरफ़ :— **दादरा**

मानो मानो पिया मोरी बतियां रे - -
जब से पिया परदेस सिधारे
जानी कैसे कटे दिन रतियां रे - मानो - -
प्यारे पपीहर कहे तो बन में टेर
तुम्हें मेरी क़सम लिखो पतियां रे - मानो - -

P. 5245. **भजन** पी० ५२४५

सांवर बंसी वाला नन्द लाला मतवाला गोकुलके उजियाला
गोकुल का उजियाला प्यारे गोकुल का उजियाला - सांवर - -
कोई कहत है कृष्ण मुरारी कोई कहत है श्याम बिहारी
कोई रटे रट गिरधारी रटे तुम्हारी माला - नन्द लाला मतवाला - सांवर
कृष्ण कृष्ण कही सांझ सबेरे, कृष्ण ही नाम में सब दुख टारे
कृष्ण ही सब भगत उतारे पार लगानेवाला नन्द लाला मतवाला - सांवर
मोहन मूरति जब बीन बजावे - गोपी से कहती रविशशि शरमावे
नहीं जी नहीं जी कही देश बतावे गुण का प्याला नन्द लाला मतवाला -
सांवर - - -

दूसरी तरफ़ :— **भजन**

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले
गोविन्द नाम कह के तब जान तन से निकले - -
गंगा जी के तट हो या जमना जी के पट हो
मेरे सामने निकट हो तब प्राण तन से निकले - इतना -
बिन्द्रा बन की थल हो मेरे मुंह में तुलसी दल हो
विष्णु चरण का जल हो तव प्राण तन से निकले - इतना - -
जब कंठ पर प्राण आवे कोई रोग न सतावे
जम दर्श न दिखावे जब प्राण तन से निकले - इतना - -

P. 6120. **क़व्वाली** पी० ६१२०

हुस्न तेरा चन्द रोज़ा फिर फ़ना हो जायगा
जिस पर तुझ को नाज़ है वह ख़ाक में मिल जायेगा - हुस्न - -
बाम पर नंगे न बैठो तुम शबे महताब हो
चादनी छिप जायेगी मैला बदन हो जायेगा - हुस्न - -
मैं तो आशिक बरज़बां हूं बदज़बानी छोड़ दो
गालियां देने से ज़ालिम क्या मज़ा मिल जायेगा - - -

दूसरी तरफ़ :— **क़व्वाली**

मिलो तुम ग़ैर से साहब सलामत अपनी रहने दो
हम इस उल्फ़त से बाज़ आये मोहब्बत अपनी रहने दो-मिलो - -
अब हम से ग़ैर भी अच्छे हैं कि वे मांगे मिलें लाखों
न लेंगे एक बोसा हम सख़ावत अपनी रहने दो - मिलो - -

ज़िबह करने में तुम हम को बहुत अर्सा लगाते हो
उठा लो हाथमें ख़ंजर नज़ाकत अपनी रहने दो - मिलो - - -

मि० नबी बख्श

P. 6187. ग़ज़ल पी० ६१८७

जो भारत था जिन्नत का मंज़र यही है
मेरे हिन्द वालों आप का घर यही है
कि धर सर झुकाता है हो ले ब्राह्मण
तेरे राम लछमन का मन्दर यही है
तेरी मादरे हिन्द ऐ परतंत्र मुसलिम
जो बोली थी अल्लाहो अकबर यही है
नहीं कहते क्यों बन्दे मातरम् तू
यह मुर्दे जिलाने का मन्तर यही है
दिलाओ न डर हिन्द वालों से कह दे
गया जिस से डर कर सिकंदर यही है—जो - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

शोर है हर सू कि हिन्दुस्तान वाले मिट गये
दूसरों की जान बन कर जान वाले मिट गये
ढूंढ लो उन की भी क़ब्रें अपने महलों के क़रीब
चार दिन की बात हैं बल वान वाले मिट गये
किस हवा में उड़ रहे हो देख लोऐ ग़ाफ़िलों

आज तुम पर फ़ात पहलु तान वाले उठ गये
तुम तिजारत की इमारत को अत्र समझा करो
एक सही दो चार से जापान वाले मिट गये - शोर ...

P. 6329. ग़ज़ल पी० ६३२६

छोटी बड़ी सुइयां री जालीका मोरा काढ़ना
एक सुख पाया मैंने अम्मां के राज में - -
साथ सहेलियां री गुड़ियों का मोरा खेलना - छोटी - - -
एक सुख पाया मैंने भैया के राजमें - -
गोद भतीजा री लड़कोंका मोरा टेरना (फिरना)
एक दुख पाया मैंने सासके राज में
आधी आधी रात चक्की का मोरा पीसना
एक दुख पाया मैंने सैयांके राज में
सैयां तो है नादान यह ही तो मेरा झींकना

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

अब के बालम फिर पिनहादे आसमानी चूड़ियां
लाख जतन कर एक न मानूं होंगी लानी चूड़ियां
आसमानी चूड़िहां हों ढाक उन की छर्व हो
चोतरफ़ मीने का काम हो हों सुनहरी चूड़ियां - अब - - -
चूड़ी वाला चूड़ी लाया मैंने पहनूंगी कभी
एक तो मेरी नई जवानी यह पुरानी चूड़ियां

P. 6356. **ग़ज़ल** पी० ६३५६

ख़ुदाया उठती जवानी में मौत आई है
शहीद होगया दूल्हा मेरा दुहाई है
अभी तो हाथ से कंगन भी न खुल ने पाया था
क़ज़ा सुहाग दुल्हन का बढ़ाने आई है - ख़ुदाया - - -
ज़रा कनखियों से दुखिया दुलहन को देखों तो
सुहागन अब की जोगन सी बन के आई है
मैं सेहरा खोल कर बाधूंगी क़ब्र के सर पर
तुम्हारी ख़ाक से जीने को लो लगाई है
कलेजा ग़म से न क्यों टुकड़े हों नैयर
हमें तो लाश प रोने की भी मनाई है

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

ख़ुदाया कैसी मुसीबतों में यह ताज वाले पड़े हुए हैं
क़दम क़दम पर हमारी ख़ातिर सितम के जाले पड़े हुए हैं
हमारे महमां जो आये बन कर वह ज़ुल्म करने लगे हमीं पर
ग़ज़ब है अपने मकां के बाहर मकान वाले पड़े हुए हैं
हज़ारों बच्चों से बाप बिछड़े वह तेग़ क़िस्मत के होंगे टुकड़े
सुहागनों के सुहाग उजड़े घरों में ताले पड़े हुए हैं
हवा ज़माने की बिगड़ीं नैयर तो ज़ुल्म होने लगे सरासर
सुनायें फ़रयाद किस को जाकर दिलों में छाले पड़े हुए हैं

6374. **ग़ज़ल** पी० ६३७४

मदद न मांगेंगे हम किसी से तेरे सिवा दो जहान वाले
हमारे दिल ने लगाई है लौ तुझी से ओ आस्मान वाले

तेरी सदाक़त में मिट गये हैं कि बच्चे बच्चे भी कट गये हैं
मिले न तुझ से वह लुक गये हैं ज़बान दे कर ज़बान वाले
अलिफ़ से सीखा है दिल लगाना हुसेन सेती का सर कटाना
रुख़सत होना मकां लुटाना तेरे लिये ला मकान वाले
फिरे न जब जंग में अड़े हैं हां अज़ल से नेको प सब चढ़े हैं
वह तेग़ या तोप से लड़े है जहां में सच्चे क़ुरान वाले - मदद - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

हिन्दू मुसलिम से प्यार बढ़ायेंगे काबे वाले भी काशी में आयेंगी
कमली वाले को न्दिू से प्यार है मुरली वाले का मुसलिम यार है
दोनो भारत की गौवें चरायेंगे हां काबे वाले - - हिन्दू - -
मुसलिम हिन्दू के घर का चिराग़ है हां दोनों फूल हैं भारत बाग़ है
जिस ने काटी है उन को जलायेंगे - काबे - - हिन्दू - -
दोनो सेती लावादिल काम है गोकुल वाला या राधे मेरो श्याम है
जिस ने जड़ काटी उन को जलायेंगे - काबे - - हिन्दू

—:(- :: -):—

P. 5943. **नात** पी० ५९४३

मुझे शाने ख़ुदाई का जलवा दिखाया दिखाया फ़क़ीरने
मुझे कलमा रसूले अरब का पढ़ाया पढ़या पढ़या फ़क़ीरने
मैं ने अलहम्द का दीन सारा ओर आंखो से हूरों के झुरमट को देखा
मेरी आंखोंको बाग़े अरमने लुभाया लुभाया लुभाया फ़क़ीरने - मुझे
मैंने देखा अरब की मनव्वर कलीको उसके नबी और उस के वलीको
मुझे आशिक़ कर मुस्तफ़ा का वनाया बनाया बनाया फ़क़ीन ने—मुझे
सर पर फिर मत शैदा छाई मुसलमान हुई दिल से ईमान लाई
दोज़ख़ के चोलों से पल में बचाया बचाया बचाया फ़क़ीरने—मुझे - -

दूसरी तरफ़ :— मि० मोथिया दादर

महर बान तुझ को भी रश्के क़मर देखेंगे
अपनी आहों का कभी हम भी असर देखेंगे
बस गुज़र जायेगी बर्छी सी जिगरमें दिल में
तिरछी चित वन से कभी वह जो इधर देखेंगे
याद आजायेंगे उभरे हुए सरताज से
जब चमन में कोई और ताज़ा समर देखेंगे
छोड़ कर कुश्त कशा या रबकी रहमत को
बावफ़ा और कोई रश्के क़मर देखेंगे

पण्डित नत्थूलाल

P. 398

क़बीर पद — पी० ३९८

सज्जनो यह कबीर साहब का पद है राधा कृष्ण राधा कृष्ण कहिये
मन तू राधा कृष्ण बोल तेरा क्या लगेगा मोल—मन ..
दस पांच कोस नहीं चलता तेरा हाथ पांव नहीं हिलता
तेरे गांठ से दाम न खुलता तेरे दिलकी घुंडी खोल तेरा ... मन ...
मन तुरंगी घोड़ा घोड़े के पास बछेरा, तू करता मेरा मेरा
काया में क्या है तेरा घोड़े की बाग़ मरोड़ तेरा —मन ...
कर कौल जगत में आया मायां के संग लपटाया
यह माया है जगत ठगनी तू ठगनी का संग छोड़—तेरा ... मन ...
गोविन्द गोविन्द गाओ प्यारे गोविन्द गोविन्द गाओ ...

फेर जनम नहीं पाओ यूं कहते दास कबीरा
तुम भव सागर को छोड़—तेरा क्या — मन ...

दूसरी तरफ़ :— रामायण पद

श्री राम चन्द्र के बन वास के बा माता कौशल्या का विलाप
मैं कौन बन ढूंढू री माई मेरे दोनो बालक बन जाई मैं ...
कहत कौशल्या सुन केकई ऐसी मती क्यों आई
दशरथ प्राण तजेंगे बन सुनके पीछे रही रे पछताई—मेरे ... मैं ...
इस बात की कोई हिम्मत है पौढ़त पुष्प बिछाई
कांकर भूंखत क्यों कर सोवे कंद मूल फल खाई—मेरे ... मैं ...
आगे आगे श्री राम जी चलत हैं पीछे लछमन भाई
ताके पीछे सिया जी चलत है सीस कोट उपाई मेरे ... मैं ...
महीपाल रीकी रैन अंधेरी पवन चले पुर वाई
कौन वृक्ष सियां भटकत राम लखन दोऊ भाई
कहते तुलसी दास सुन मेरी मैया राम लखन सदाई
सब देवन को बन्द छुड़ाई पीछे अवध पुर आई - मैं ...

P. 974.

भजन — पी० ९७४

राम भजन करलीजे जिउरा राम भजन कर लीजे
साहब मेरा मांगेगा जब उत्तर कैसे दीजे—जियरा राम - -
आगे जाय पछतावन लागा पल पल यहू तन छीजे
तासूं जिय समझाय कहूं तोहे मुक्ती पद अब से कीजे—जियरा - -
राम जपत जम काल न लागे संगी रहे जन जीके
लाधू राम भजन कर लीजे हरी की दास रहीजे—जियरा - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

नारायण को नाम जियरा जप तन मन से नारायण को नाम
नाम हीतें केते जन तरया वह ही आतम अभीराम—जियरा जप - -
प्रीत करी वाको पार उतारे सोचित राखो श्याम—जियरा जप - - - -
तीन लौक का है यह तारन—विष्णु पति बिसराम—जियरा जप - -
कर दोऊ जोड़ कहे दलपत वह ही हमारे घनश्याम—जियरा जप -

P. 1686. भजन पी० १६८६

कलजुग में ऐसे पापी नर होवेंगे
पगड़ी बांधे पेंच संवारे ठुमक ठुमक पांव धरेंगे
गलियां के बिच बावरे नार पराई पापी तकत फिरेंगे—कलजुग
भूखे प्यासे साधू आवें उनको चपटि न देंगे
साला ससुरा नित जिमावें भाइयों में पापी राड़ लड़ेंगे—कलजुग
मात बहिन को कछु न माने मन में पाप धरेंगे
जब राजा को डंड पड़ेगा रोक रुपया पापी गिन गिन देंगे—मलजुग
लाल थन्व लूहनी को दहकाई उसी के संग बंधेंगे
तुलसी दास भजो भगवान पाप पुराय दोनों संग चलेंगे—कलजुग

दूसरी तरफ़ :—

भजन

राम नाम रस पीजे प्यासा पीजे रे पीजे रे पीजे रस पीजे
काम क्रोध मद लोभ गर्व छल प्रबल होने नहीं दीजे देदीजे रे दीजे—राम ...
ये ससांर असार जान के लेना हो यह तो लीजे रे लीजे रे—राम...
सभी उतङ्ग सुसंग बैठ के हरी चरचा नित कीजे रे कीजे रे कीजे रस—राम
हित मित बोल ले हो सखा बरेत्यों त्यों काम कीजेरे कीजे रे कीजे रसपीजे राम
राम दास जजांल काट गुरु के चरन सीस दीजे रे दीजे रे दीजे रस राम

——:-०-:——

P. 8953. हरिश्चन्द्र आख्यान भाग १ पो० ८६५३

भूल शब्द दौ भूल जो कोऊ जाने भूल।
नृप दशरथ हरिचन्द्र ने कीनो या को तूल॥

सज्जनो सच सिवाय दुनिया में कल्याण का मार्ग एक भी नहीं। सुनो कि जिस सत्य के लिये राजा हरिचन्द्र ने कैसे संकट सहन किये हैं। और अन्त में कैसे उत्तम फल को प्राप्त किया वह श्रवण कीजिये।

मुनि हित तज निज राज सहे दुःख मुनि हित तज निज राज।
सवा भार स्वुर्ण रहये बाक़ी वह ऋण मुक्ति काज॥ सहे दुख

अहो शिव राजपाट छत्र सिंहासन आदि सर्व सव बिश्वामित्र मुनी को अर्पण किया और मात्र सवा भार सोने की दक्षिणा बाकी रही। वह ऋण चुकाने के वास्ते आप पुत्र पनती साथ बेच कर पूरा करनेका संकलपकर काशीको चले और रास्ते में क्या २ संकट सहन किये हैं।

मुनि ऋण मुक्ति काज चले नृप मुनि ऋण मुक्ति काज।
कराठ सुकत रोहित रोवत मग।
जल न गहे महाराज। सहे दुःख मुनी हित - -

जहो शिव सोलह कला से सूर्य्य तप रहा है। पानी बिन कराठ सूख गये हैं। मगर मुनि का ऋण दिये बिना किसी ने पानी भी लिया नहीं। ऐसे अनेक संकट सहन करते काशी पुरी को आन पहुंचे।

रत्न जड़ित महलों में रहते हाज़िर दास सासी जिन को।
वह जड़ पशु की नाई बेचत है मुनि गङ्गातट उनको

अहो समय विश्वामित्र मुनि ने गंगा के किनारे बेचने को तय्यार किये। समय के बलिहारी। प्रभु की गति है न्यारी।

दूसरी तरफ़ :— हरिश्चन्द्र आख्यान भाग २

दया धर्म को मूल है पाप मूल अभिमान
तुलसी दया न छांड़िये जब लगि घट में प्रान

अहो जिस के हृदय में दया का अंकुर भी नही है ऐसे निदई विश्वामित्र मुनिने सती तारामति को एक वेश्या के घर वेचने की तैयारी की तो यह देख एक वृद्ध ब्राह्मण को दया हुई और मुनि को बिनती कर तारा और रोहित को ख़रीद कर अपने घर ले गया। मगर राजा को आख़िर में एक चण्डाल के घर बेच दिया।

मशान सेवा काज राजा को रखे गंगा के तीर।
अन्न गहे नहीं नृपति नीच को पिये गंग को नीर॥
समय की बलिहारी कहां नाथ और कहां नारी-समय - -

अहो शिव-मात्र एक गंगाका पानी पीकर सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र श्मशान की सेवा बजा रहा है। इतने में विश्वामित्र के प्रपंच से रोहित को सर्प डंस होने से मृत्यु हुआ।

तब तारामती उसको अग्नि संस्कारके वास्ते वहां ले आई। उसको देख राजा बोला यहां कर लिये बिना जलाने की मना है। यह सुन तारा बोली।

एक वस्त्र बिन कछु नाहीं स्वामी मैं कर कहां से लाऊं।
यह रोहत तुम पुत्र मृतक को देख हिय घबराऊं।
दया करो सुखकारी यह पुत्र मैं हूं नारी। दया करो सुख कारी॥

यह सुन हरिश्चन्द्र बोला तारा सुन।

दया हमारो काम न आवे स्वामी हुक्म हमारा।
सत्य तजूं नहीं प्राण गये तक यह प्रण बचन हमारा।
सत्यमय सुखकारी। प्रभु की गत है न्यारी - -

प्रिया एक क्षणभङ्गुर संसार के वास्ते जलाये बिना बस्त्र दे फिर वस्त्र दे जलाने की तय्यारी की। इतने में वर्षात बहुत पड़ा जिससे रोहित को गोद में ले तारा मती शिवाले में जा बैठी।

P. 1688. सत्यवादी राजा हरीश्चन्द्र भाग ३ पी० १६८८

भारत जननी निज स्वार्थ हित धरती एक न कान
अपने स्वारथ काज यह लेत और को प्राण

अहो विश्वामित्र ऋषि ने राजा हरिचन्द्रको अनेक दुख दिये परन्तु संतोष न हुआ, इस लिये काशी राजा के पुत्र को छुपा कर कोतवाल को जाकर ख़बर दी की तुम्हारे राजपुत्र को एक डाचनी शमशान में भून कर खाती हे। यह सुन शहर के लोग घबड़ाये।

बात सुनत लोक मांहि भयो त्रास, राजपुत्र डाचनी ने कियो नास
सुनि राजा क्रोधबंत भयो भारी, रुमो राणी कुंवरको लिये सिंमारी-बात -

अहो काशी राजा बड़ा क्रोधवान हो शोर करके शमशान भूमि में आन पहुंचा तब रोहितको गोदमें लिये तारामति बैठी विश्वामित्रने बताया, उसको देखते ही राजा क्रोध कर बोला। अरे डाचनी मेरे शहर के अनेक मनुष्यों का तंने भक्ष किया होगा और मेरे प्यारे पुत्र को भी खाने वाली तू ही है, मैं तेरे को मार बिना कभी न छोड़ूंगा। यह सुन तारा बोली।

पुत्र ज्वाल ते जलती मैं हूं निराधार दुखिनी नारी
हरी मम प्राण सुखी करो नृपति नहीं मैं पिशाच भारी

काशी राजाने तारामति के वचन पर कुछ ख़याल न किया और

नोकरों को हुक्म दिया, इस डाचनीका शीश चण्डालके हाथ उड़ादो यह सुन सेवकों ने शमशान की चौकी करने वाले राजा हरिश्चन्द्रको वहां बुलाया और कहा कि राजा को आज्ञा है कि इस डाचनीका शीश धड़ से जुदा कर दो। अहो समय

समय की बलिहारी प्रभु की गती है नियारी—समय - - -

दूसरी तरफ़ :— सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र भाग ४

अहो जिस समय तारामति का शीश छेदने का हरिश्चन्द्र को हुक्म हुआ तो हरिश्चन्द्र तलवार हाथ में ले बोला! प्रिया सुन

साहब के दरवार में साचे का सिर पांव
झूंठ तमाचा खायेगा कौन रंक या राव

प्रिया प्रभु के दर्बार में सांच की ही जय है इस वास्ते तू दलगीर न हो और जल्दी ही विश्वनाथ के चरणों में ध्यान लगा। आज जो यह हरिश्चन्द्र और जो यह हाथ तेरे मृदुल कंठको आलंगिन करते थे आज वह तेरा शीश छेदता है तो तू इष्ट देवका स्मरण कर और केवल सत्य धर्म और सत्य में ही सुख और सत्यमें प्रभु का धाम है यह समझ परम कृपालु प्रमत्मा के चरणमें लीन हो। यह सुन तारामतिबोली।

प्राणपति तुम बिन मेरे प्रभु कौन है
आपके कर मम मृत्यु दिया भगवान हो—प्राणपति - - -

मैं धन्य धन्य हुई प्रभु सत्य के काज मेह गंगा तट शिव पुर होवे बास हो—प्राणपति - - - -

तारामति बोली हे स्वामी नाथ मैं किसका ध्यान करूं आपही मेरे प्रभु मेरे सामने खड़े हैं और सत्यके कारण गंगा के किनारे आपके हाथसे यह देह छूटेगी तो मेरे जैसी भाग्यवान स्त्री दुनियां में कौन है।

यह सुन हरिश्चन्द्र के नेत्रों में जल भर आया और बोला हे विश्व नाथ तुम सत्य के साथी हो मैं अपनी देहका धर्म बजाता हूं यह कह जैसे ही तलवार उठाया कि साक्षात परमात्मा ने आकर हाथ पकड़ लिया और बोले।

धन्य धन्य सत्या वादी हरिश्चन्द्र मत मार सती नारी
मांग मांग ही वक्त. प्रसन्न मैं हू देख देख भारी

भगवान बोले! हरिश्चन्द्र, तेरी देख देख में बड़ा प्रसन्न हू मांग मांग जो मांगे सो दूं यह सुन हरिश्चन्द्र ने भगवानको बड़े प्रेम से नमस्कार किया और भगवान की कृपा से रोहित भी जीता होगया हरिश्चन्द्र बोले हे नाथ भक्तों को परीक्षा के वासते कलयुग में ऐसे दुख कभी न देंगे यह मैं मांगता हू और मेरी अयोध्या साथ मेरेको आपके धाम में रखिये।

कृपालु प्रमात्माने बड़े प्रसन्न हो सबको सुख स्वर्ग वास दिया। सज्जनो ऐसे सत के पालन वाले प्रजा का हित करने वाले राजाओंको सदा धन्य है।

इति श्री मार्कण्ड पुराणों सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र आख्यान
माधव रचित सभाजान दर्शनम् पूर्णम् नाथू लाल की
नमस्कार बोल श्री सत्य देव महा राजकी जय।

P. 1960. भजन पी० १९६०

संतो देखो दुनिया का ढंग सब का न्यारा न्यारा रंग - -
जी न्यारा मेरा पीतम प्यारा सबमें व्यापक सर भंग
रोते खखत मैं ने पाया हृदय प्रेम हर का - सन्तो - - -
अजब है यह माया इस दुनिया की जब से पड़ गई छाया

ऐ माया छाया छोड़ देखो जो मन तुम पाया - संतो
करनी का फल कब हू न जाये कर देखो सब कोई
कुफल से सुफल हो कुफल से दुख होई - संतो - - -
घर को छोड़त है दल पल यह सुनियो सब संसारा
साहब सच्चा दिल में रखलो तब ही करो भव पारा

दूसरी तरफ़ :— भजन

ख़बर नहीं है जग में पल की राम सुमरले सुमरन करले कौन
जाने कल की - ख़बर - - -
भाई बंधु और कुटम्ब क़बीला मोहब्बत मतलब की
काया माया झूठी बाज़ी ये तेरी बलकी - ख़बर - - -
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी कर बातांछल की
पाप को पोट धरी सिर ऊपर किस बिध हो हलकी - ख़बर - -
जब लग हंसा है काया में तब लग मंगल की
छोड़ चले हंसा देही को मिट्टी जंगल की - ख़बर - - -
दया धर्म रखता साहब समरो बात यही सत की
राग द्वेष अभिमान राखो ज़िन्दगी लानत की - ख़बर

—:-०:—

P. 1961. बिहाग (विनय प्रत्रिका) पी० १९६१

मौसम कौन कुटिल खल कामी - - - -
तुमसे कहा विधि करुणा निधि तुम सुर अंतरयामी - मौसम - -
भरि भरि उदर विचरस पावत जैसे पुस्कर गामी
जो तन कियो ताहि बिसरायो ऐसा मिलत हरामी - मौसम - -
जहां सत सग तहां अति आलस बिसयन संग बिसरामी
पीहरि चरण हामी औरन को निस दिन करत गुलामी - मौसम - -

पापी प्रतीत अधम प्रनीतत सब प्रतीतन नामी
कीजे कृपा दास तुलसी पर सुनियो प्रीतके स्वामी - मौसम - - -

दूसरी तरफ़ :— मालकोस

ऐसो श्री रघुबीर भरोसो
बारिन बोरिस क्यों प्रल्हाद ही पावत नांहि भरोसो—ऐसो - -
मीरां के मारन के कारण राना जहर करो सो
राम कृपा से अमृत हो गयो हंस हंस पान करो सो—ऐसो
भारत में फल गीते इन्द्र हो गिन लपट रोसो
राम राम जप पच्ची टेरे हंसा कूद परोसो—ऐसो - - -
लंका जारो अजंनी के नन्द ने देखत पुरुष भरोसो
वाके राज्य विभीषण को कर राम कृपा भरोसो—ऐसो - - -
तुलसी दास नित भक्त राम को जो नर नारी करोसो
और प्रभाव न हाल में बरन् यही यम राज भरोसो—ऐसो - -

—:०:—

P. 1962. सुदामा चरित्र भाग १ पी० १९६१

मन के हारे हार है मन के जीते जीत,
परम ब्रह्मको पाइये जो मन की हो यह प्रतीत

सज्जनों यह संसार में माया से विरक्त रह कर परम कृपालू प्रतात्मा पर पूर्ण विश्वास रखता है, सर्वस्व सुख और सम्पती और मोक्षका देने वाला अमूल्य मन्त्र है। सुनो कि आगे द्वारिका में भक्त शिरोमणी वीर सुदामा जी कि जिन्हों ने जिस विद्वान आदि पुरुष से पुराण आदि पूर्ण अभ्यास कर उस में समाया हुआ मूल मंत्र के प्रभाव से अन्त में मोक्ष गतिको पाये। उन का शुभ चरित्र आप से निवेदन करता हू सो सुनो।

विप्र सुदामा प्रात उठि लई माल हरि को ध्यान धरि
दुख दरिद्रता दरिद्र के रही घरानी कर मेल करि
वस्त्र में मात्र रही लम्पोटी पात्र में रही तुम्बी सोटी
ऋषि मुनी के हाथ लिगिंन में पत्र माल धरते खूंटी
नव दश बालक दयावन्त से कछ अन पानी देवे
कोई पुन लोके कोई बन सोइया कोई दीन खाकर हिच कोले लेवे

अहो प्रसन्न दरिद्रता ने वहां तक प्रवेश किया आख़िर ऋषि पत्नी के शरीर पर अखंड वस्त्र भी न रहा और शहर में से कुछ मांग कर लाना भी बन्द हुआ तब भूक से मरते हुए बाल्को का कष्ट देख कहने लगी कि हे प्रभु अब इन बालकों की रक्षा के कुछ यत्न करो, भिक्षा मांग कर लाना क्या विप्र के लिये अनिष्ट है।

इक यह विप्र जो विद्या हीन हो भीक मांग कर पेट भरे
इक वह ब्रह्मण ज्ञान हीन विपत देख डरे

प्रिया ! जो ब्रह्मन भीक मांग कर पेट भरता है वह केवल नरक का अधिकारी होता है। मैं किसी से याचना न करूंगा तुम प्रभु पर विश्वास रक्खो विशु बीर सब का रक्षण करेगा।

दूसरी तरफ़ :—

सुदामा चरित्र भाग २

हरिजनों बहुत सा विचार करके ऋषि पत्नीको याद आया कि द्वारिका में श्री कृष्ण प्रभु मेरे स्वामी के बाल मित्र हैं और जो वह उन के दर्शन को पधारें तो वह अन्तर यामी बिना याचना से सब कामना जरूर पूरी करेगें ऐसा विचार कर पति से कहने लगी।

स्वामी मित्र मिलन को जाओ, जो भी मति गंग में नहाओ-स्वामी - -
मित्र सो प्रभु मिलेगें दरस करि सुख पाओ - स्वामी - - - -

पत्नी की उत्तम सूचना से सुदामा को हर्ष हुआ और द्वारिका को जाने का निश्चय कर उदार चित वाले भक्त राम बोले।

मित्र को भेंटे में क्या ले जाऊं ख़ाली हाथ गये शर्माऊं - मित्र - - -
मित्र पुत्र सब आवें निकट तब उन को क्या दिख लाऊं - मित्र - - -

यह सुन सती ने पड़ोसियों से थोडे ताम्बूल मांग कर जंगतो से बांध ऋषि को देकर द्वारिका को बिदा किया कछुक दिन होंते सूर्य समान प्रकाशक मुनि रत्न जड़ित द्वारिका को जा पढ़ंचे और राज मन्दिर के प्रवेश के लिये शहर में प्रवेश किया।

थर थर कम्पत देह पिंजर सम लई समझ आकार
तुम बड़े नेक निभालो मुखवन्त निकत गये मार
सिर पातक सब देखत तरीक़ा क्या आयो पार
कोई कहे देहरी देह धरी यह मुक्ति दुवार को जाय

इस तरह देखते परते राज द्वार प आन पहुंचे और द्वारपाल से कहा कि प्रभु को खबर करो कि एक सुदामा नाम ब्राह्मण आप के दर्शन को चाहता है।

P. 1963. सुदामा चरित्र भाग ३ पी० १९६३

सजनो अन्तः पुर मै सुख शैया पर प्रभु बिराजे थे वहां जा सुदामा जी के आने की ख़बर सखी ने किया यह सुन प्रभु हर्षित हो द्वार की तरफ़ दौड़े।

कहां मम भ्रात कहां मम बंधु कहां मम भ्रात सखा है
इत उत डोलत भाई न दूजा मिले रूगत नियारी काहे अंग नृप भारी

अहो जैसे निर्धन को धन मिलने से आनंद होता है ऐसे आनन्द से प्रभु ने सुदामा जी महलमें ला रख चौकी पर विराजमान किये और अष्ट पटरानी आदि सब मिल कर सुदामा जी को सुगंधित जल से अशनान कर बाया औ प्रभु ने चरण धोये प्रभु ने चर्णामृत ले सीस चड़ाया। अमृत भोजन से ऋषि को तृप्त कर सुख शैया पर विराजमान किये-तब ऋषी जी चिनता करने लगे और प्रभु मित्रसे वाल्य अवस्था की आनन्द की बाते करने लगे।

गुरु घर संग रहे यह भ्राता याद है सब भूल गये हो - गुरु - - -

क्यों भूलूं प्रभु आप की लीला काज करें गुरूं - मित्र - - गुरु - -

इसी अनेक प्रेम की बातें कर दोनों मित्र के नेत्र प्रेम जल से भर गये तब कृष्ण प्रभुने लम्बा हाथ कर ताम्बूल की गांठको गहण कर ऋषि मित्र से कहने लगे। कि अहो मम धन्य भाग कि यह भेटे देवताओं कोभी दुर्लभ सो मैं आज पाया ऐसा कह ताम्बूल की मस्की कर प्रभु ने बड़े प्रेम से मुंह में धरी दूसरी मुस्की लेते ही लक्ष्मी जी बोली एक मुस्की ताम्बूल में को दीजो वही भगत

बरग समान दूसरी मुस्की फिर के लक्ष्मी ने कहा

नाथ कछुक हम को दीजे यह स्वाद अकेले न लीजे कछुक - - -

सज्जनो जैसे ताम्बूल प्रभु ने मुंह में धरा उसी वक्त सुदामाजी की झोंपडी को जगह स्वर्ग समान वैभव होयगा और ऋद्धी सिद्धी से उन की स्त्री और बालक सन्तुस्ट हुए मगर यह वात सुदामा जी को मालूम न थी यह सब विश्वास रूपी मंत्रका प्रभाव है सज्जनों।

दूसरी तरफ़ :— **सुदामा चरित्र भाग ४**

सज्जनों इस तरह से बहुत से दिन आनन्दमें बीते बाद में जब भक्त राम ने बिदा मांगी तो प्रभु प्रेम से दूर तक पहुंचा कर पीछे फिरे और ऋषि मन में विचार करने लगे कि सब मित्रों के घर कृष्ण जी बराबर जानते हैं देखो उन का ध्यान रक्खो लक्ष्मी से और मेरे पर प्रेम भी पूर्ण है प्रभु मेरे को लक्ष्मी के संसारिक मद प्राप्त नहो इस लिये मेरेको कुछ न दिया।

अहो इस से मैं अपना धन्य भाग समझता हूं ऐसे अनेक विचार करते हुए अपनी पुरन कुटीकी जगह पर आन पहुंचे और वहां अलौक जड़ित महल देख विस्मत हो बोले—

क्या मैं भूल गया निज भूमि-बन पति के महल

भये के कृपा ऊपर काम की खानी—क्या - - - - - -

हो प्रभु इधर तो सब रत्न जड़ित महल बन गये हैं तो मेरी झोंपड़ी और स्त्री पुत्र आदि की ख़बर मैं किस से पूछूं।

ऋषि पत्नी ने देखते ही दौड़ कर स्वर्ण पुष्पोंसे पूजा कर अन्तः पुर में ले आई और प्रभु की कृपाका प्रभाव सुनाया तब सुदामा जी प्रसन्न हो बोले।

जब दीना नाथ कृपा करें तब सब बनी आवें सुख सम्पती आनन्द घडी घर बैठ पावे - जब - - - -

सज्जनो - ऐसा स्वर्ग समान सुदामा जी वैभव पाये मगर जैसे पानी में कंवल विरक्त रहता है वैसेही यह भी शास्त्रोंसे निश्चय किया हुआ और अन्त में सदगती को प्राप्त हुए। ऐसे विद्वान भक्तों की सदा जय हो।

इति श्री भागवित पुराणे वश मस कंधे श्री सुदामा चरित्र माधो रचित दशनम् पूर्णाम् नाथू लाल की नमस्कार।

P. 4822. **भजन (ब्रह्म संगीत)** पो० ४८२२

हरी बोले हरी बोले हरी बोलो भाई

हरी नाही बोले वाको राम दुहाई - हरी - - -

मेरा मेरा कहे क्या फल पाया-हरी के भजन बिन झूठ कमाया हरी- -

काहे को दोनत पढ़ गीता हरी के भजन में सब कुछ होता-हरी - -

कहत कबीर हरि गुन गावो नाचत गावत बंसरी बजाओ - हरी - -

दूसरी तरफ़ :— **भजन (ब्रह्म संगीत)**

अब जिस बिध योग ठेराओ गुन अपना नाथ गहाओ

टिड्डी के मुख मलहार जैसे दकन न समावे - जैसे - - -

जो हाल हमारा पापी तुम जानत अन्तर यामी - अब - - -

तुमरा गुण सिन्धु विलासा मति उलटा पियाला
गुण की मति भर भर पीछे तू ज्ञान हमें सब दीजे - अब - - - -
वह कहां है अमृत प्याला जो बनता हुआ मतवाला
धर्म का नाश होने लागे तुम राज त्याग बन भागे
रीत प्रेम में यूं ना गुरु कौन सिखावे दूजा
प्रभात यह लखाओ और अपना हाथ बढ़ाओ - अब जिस - - -

—:-०-:—

P. 2093. द्रोपदी आख्यान भाग १ पी० २०६३

सद गुण सुख की खान है दुर गुण दुख भंडार
देखो द्रुपद सुता अरु पांडवखेल जुगार

सज्जनो यह संसर में सर्व मनुष्य जाति को अपने अपने कियेहुए शुभ और अशुभ कार्य के फल तत्काल मिलते हैं। उस का प्रत्यक्ष दृष्टान्त अपने महाभारत में सती द्रौपदी को प्रभु की सेवा से मिली हुई सहायता और प्राक्रमी पांडवों ने दुष्ट जुगार खेलने से पाया हुआ पराजय, उन का शुभ चरित्र आप से विदित करता हूं - सुनो :—

एक दिन दुर्योधन राज मंत्री बुलवाय दुष्ट सब आयेमन्त्र यह ठाना
नहीं युद्ध से जीते जायें पांडु बलवाना।
इस लिये रचो प्रपंच धरि मन खंट आज यह हन्त जुगार खिलाई
है शुकनी बड़ा खिलाड़ी कर तब भाई।
भरी सभा प्रेरि प्रतिहार सरत थिरे बार बार पांडव कुमार लिये बुलवाई
दियो आसन आदर कपट प्रेम जितलाई

अहो जब पांचो भाई दुर्योधन की सभा में आन पहुचे तब बड़े कपट प्रेम से उनको आसन देकर दुर्योधन ने शुकनी से कहा कि आज की दर्बार आनन्द उत्सवके लिये भरी गई है तो यहां कुछ आनन्द खेल खेलना उचित है।

यह सुनतेही शुकनीने चौसर लाय सभाके बीच धर दिया और कहने लगा कि महाराजा युधिष्ठिर यह खेल में बहुत प्रवीन है ऐसा कह पांडवों के आगे पासे धर सामने आप खेलने के लिये बैठ गया तब भीम सैन उनका प्रपंच से गुस्सा होकर कहने लगे।

यह बड़ी अजब की बात शकुनी के साथ पास धरी हाथ हमीं क्यों खेले तुम आओ हमारे साथ रंग में रेलें।

अहो जब शकुनी के साथ खेलने को पांडुओ ने इनकार किया तब दुर्योधन प्रपंच युक्ति से मरम वचन कहने लगा कि भाई यह शकुनी मेरे कहने से आप के साथ खेलता है अगर मेरा सब राज शर्तमें हारेगा तो हम सब बिन तकरार से कबूल कर लेवेगें। तो तुम वीर पुरुष हो शकुनी के साथ खेलने से डरते हैं बड़ी शर्मकी बात है। मरम वचन सुनी कान चढ़े भद्र सुध न रही सब तनकी

पापी पकड़ी हाथ पांडव जब शुभ गति गई सब मन की
जुगार की लत भारी करत सब जग की खुवारी

दूसरी तरफ़ :— द्रौपदी आख्यान भाग २

महारोग सब निकसे मिले वैद्य हुश्यार
कोटी उपायन नामिटे खग लत खेल जुगार

सज्जनो यह जुगार का खेलना केवल प्रपंचो और अधर्मियों का ही कर्तव्य है। सरल और सत्यबादियों के लिये नहीं है। मगर दुर्योधन के मर्म वचन युधिष्ठिर को ममता का मद चढ़ गया तब अपना हित और अहित सब भूल कर कीर्ति के प्रलय कारक पांसे हाथमें लेकर गर्वके साथ खेलना शुरू किया।

पहिले धन हारे तब दूसरे में सब राज
तीसरे दाऊ में बाजी गज जो थे सुख की साज

अहो—जिस वक्त सब दाऊमें युधिष्ठिर नष्ट हुवे तब सभा में बहुत सा कोलाहल होगया और उत्तम पुरुष कहने लगे कि अब यह खेल बन्द करना उचित है मगर कहा है कि हारे जुगारी दुगना खेलते हैं इस लिये युधिष्ठिर ने अपनी तरफ़ का कुछ भी खयाल न किया।

अहो करम की गत है नियारी रे—क्या तू भूल रही जग तारी रे
नहीं करवे को करम करावे—करवे को दे विसारी रे
समझ समझ नर परे कोप में—मानी तजे सुख भारी रे—अहो - -

इसी तरह से दुष्ट दुर्योधन की संगति से जुगार के कर्म रूपी आवरनों में सत्यवादी पांडुओ सब बुद्धी हर लिया और आख़िरमें निरपराधी सती द्रोपदी को जुगार के दांव में रक्खी ता ब्रह्माण्ड में हा हा कार हो गया पृथ्वी डोलने लगी और सज्जन पुरुषों के नेत्रों से जल की धारा बहने लगी मगर जुगार के मद में मस्त किये हुए पांडुवो को कुछ खयाल न हुआ। तब शकुनो ने पांसे हाथमें ले सब सभाके सन्मुख हो खेलना शर्त साबित कर खेलना शुरू किया।

तब नृपति को लाख राखी शकुनी पासे उठाये
डारी निशान बचाये कूंटी परी चित यह किये
पांडव सब गये हारी—भये और वह सुखकारी—पांडव - -

——:o:——

P. 2094.

द्रौपदी आख्यान भाग ३ पी० २०६४

अहो जब पांडव जुगार में द्रौपद सुता को हार गये तब जैसे तमाम वृक्ष पर बिजली पड़ कर ख़ाक हो जाते हैं वैसे निर्जीव जैसे बनकर भूमि पर नज़र लगा कर बैठ गये मगर दुष्ट दुर्योधन ने बड़े आनन्द से दुशशन को बुला कर कहने लगा कि अब द्रौपदी अब हमारी दासी बन चुकी है। तुम जाकर उसको मेरी सभा में ले आओ फिर मैं मेरे किये हुए अपमान का बदला लूं यह सुनते ही दुशासन ने जाकर द्रौपदो से कहा—

तुमरे पति सकल राज पाट और नारी
अब तुम दासी बन रहौ दुर्योधन घर जारी

हे द्रौपदी अब तुम महाराजा दुर्योधन की दासी बन चुकी हो तू उनकी आज्ञानुसार राज सभा में जलदी चल नहीं तो केश पकड़ ले जाऊंगा। यह

सुनते ही जैसे मदोनमति का नाद सुन हरनी कम्पती है वैसे द्रौपदी कम्पने लगी और सब शरीर के रोम खड़े होगये मगर चित्त वर्ती को ज़रा स्थिर कर बहुत दीनता से नेत्रों में जल भर बहुत करुणा से दुशासन से कहने लगी।

बीर तुम जानत हो सगरी रीत बीर बोलत हो क्यों नहीं
राज सभा में नारी जाये नहीं रानी जाय नहीं जी
मैं हूं रजस्वला एक वस्त्र धर आऊं कहो किन रीति—मैं - - -

अहो जैसे क्षार जमीन में अमृत पानी पड़ने पर भी कुछ अंकुर नहीं निकलते वैसे द्रौपदी की अनेक विनती और करुणा भरी प्रर्थना से भी दुशासन के क्रूर हृदयमें कुछ दया न हुई और आख़िर में जैसे पक्षीको बाज़ पकड़ता है। वैसे ही सुकोमल द्रौपदीके केश पकड़ कर खींचता हुवा राज सभामें ले आया। तब द्रौपदी को देखते ही दुर्योधन ने दुशासन से कहा यह मेरा अपमान करने वाली मगरूर द्रौपदी के तमाम बदनके वस्त्र निकाल कर नग्न कर। यह बज्र समाम बचन सुनते हो प्रलयकार के सूर्य समान भीमसेन के नेत्रोंमें से क्रोध रूपी अग्नि की ज्वाला बहने लगी भुज डंड ठोक हाथमें गदा ले खड़ा होगया उस वक्त भीष्मादि तमाम वीर पुरुषों के हृदय कपने लगे मगर युधिष्ठिर ने समय बिचार नेत्रोंका इशारा कर बिठा दिया तब द्रौपदी को सब आशा नष्ट होगई और कहा अब ईश्वर सिवाय मेरा कोई सहारा नहीं

दूसरी तरफ़ :— भाग ४

सज्जनो इसी तरह से द्रौपदो बहुत सा विलाप कर रही थी कि इतने में क्रूर दुशासन ने एक हाथ से द्रौपदी के केश और दूसरे हाथ से साड़ी का पल्ला पकड़ते ही जैसे कसाई के हाथ में फंसी हुई गऊ दीनता से जुगार कर धर्म पुरुष को राह देखती है वैसे द्रौपदी प्रभु की राह देखती चारों तरफ फेर फेर कर करुणानाथ से अस्तुति करने लगी—

कि हरी देर करो किन काजू—यह दुष्ट लेत निज लाजू—ए - -
समये गये फिर आपका करिहो—मरि हूं मैं अब आजू
बिरख तुम्हारो जाय प्रभु तब—हत हो है सब सकल समाजू—कि - -

अहो सती की प्रेम भरी अस्तुति प्रभु के सुरो पर पड़ते ही भगत मुक्तल भगवान गरुड़ को सवारी कर अन्तर सतमें आये और सती को दर्शन दिया तब द्रौपदो प्रभुके चर्णमें मन लगाय निर्भय होय खड़ी रही और दुशासन एक दम वस्त्र को खींचने लगा।

खींचत खींचत हारो दुशासन तनक न तरसआयो
प्रभु प्रताप के तेज बढ़ो दुर्योधन दुख पायो
द्रौपद सुता पाई रे प्रभु षांडव दिये हैं छुड़ाई—द्रौपद - - - -

अहो बाज़ी गरके खाये हुए जादूको जन्त्र के मुआफिक द्रौपदी के शरीर पर से एक से एक वस्त्र निकलने लगे परन्तु प्रभुकी कृपा से सतो का किंचित बदन न खुला और अलौकिक के प्रभाव से कौरव का सब प्राक्रम नष्ट हुआ सज्जनो देखिये कि महान प्रतापी पांडवो को भी दुष्ट जुगारके कृन्धा कैसे कष्ट हुए हैं और प्रेम भक्त से सतो द्रौपदी को प्रभु ने कैसोसहायता की है। सो यह आप सहज में समझ सकेंगे।

तो मेरी प्रार्थना है कि आप सब सज्जन पुरुष दुर्गुण रूपी दुष्ट पिचाश से सदा दूर रहेंगे और सद्गुण रूपी सुधा का सदा सेवन करेंगे।

इति श्री महाभारते सभा परबे सती द्रौपदी चीर हरण आख्यान माधव रचित सभा मान दर्शनम् पूर्णम् नाथूलाल की नमस्कार

—•—

P. 3949. बिहाग पी० ३९४९

सब दिन होत न एक समान
प्रगट होत पुरवाकी कर हि तज मन शुद्ध ज्ञान - सब - - -

कब हुक राजा हरिश्चन्द्र की सम्पती देव समान
कब हुक दास व पत्य गृह रहित अम्बर हरत मसान - सब - -
कब हुक युधिष्ठिर बैठे सिंघासन अनुचर श्रीभगवान
कब हुक द्रौपद उत्तर कोख केश दुशासन तान - सब - - -
कब हुक राजा राम चन्द्र बिचरत कोट प्रमाण
कब हुक रुदन करत फिरत हैं महा बन उद्यान - सब - - -

दूसरी तरफ़ :— क़ाफ़ी ज़िला

बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को करारी है
हमारी मात की करनी सकल दुनिया से नियारी है
विमुख राम को कीन्हों ऐसी जननी हमारी है
लगी रघु वंश में अग्नि अवध सगरी उजारी है
भरत सर लोच धरनी से यही करता गुज़ारो है - बिन - - -
सुना जब तात का मरना मनो बर्छी सी मारी है
जब व्याकुल हुआ व्याकुल नेन से नीर जारी है
धरूं मै ध्यान सूरत का मुझे तृष्णा जो भारो है,
परूं रघुनाथ के पांव यही तुलसो विचारी है - बिना - - - -

P. 4740. खम्माच पी० ४७४०

सज्जनो महात्माओं ने कहा है कि—

तन मरे माया मरे मर मर गये शरीर
आशा तृष्णा ना मरे कह गये दास कबीर
तृष्णा को त्याग प्रमात्मा का भजन कीजिये—
तृष्णा तू न गई मेरे मन से—बेर बेर तोके समझायो कोटन कोटि जतन से—तृष्णा - -
बाकी के सब जनम के साथी ज्योत गई नैनन से

पग ठाये देह कांपन लागी लाज गई लोगन से—तृष्णा - - -
बात पित कफ़ आन गहयोरे सुत बोला बतकर से
भाई भतीजा प्रेम प्यारा नार निकासत घर से—तृष्णा - - -
प्यारी रिपुवन नाथ भजि ले लोभ न कर परधन से
तुलसी दास काहू से न मिले बिन हरि भजन किये से

दूसरी तरफ़ :— मालकोस

दिन नीके बीते जाते हैं - - - - - -
सुमरन कर मन राम नाम दिन नीके बीते जाते हैं - -
पुत्र क्लात्र मित्र पर्वारा मतलब के हैं कौन तुम्हारा
अपने दिल में करो विचारा देखत हूक सुनाते हैं - दिन - -
लख चौरासी फिर फिर भाई जा में कछु नही कीनी कमाई
जब जम से भिर पड़ी लड़ाई फिर पोछे पछताते हैं - दिन - -
उत्तम देह धरि मन भाई राम नाम भजले सुख दाई
कहत कबी करी सुर कमाई वही परम पद पाते है - दिन - -

P. 5288. इमन कल्याण पो० ५२८८

गाइये गन पती जव बन्दन
शंकर सुवन भवानी नंदन गाइये गण पति - - -
पी पी सदन गज वदन मिलाय के
कृपा सिंधु सुन्दर सब नायक—गण तपी जग वंधन
प्रीय सुद मंगल दाता विदया वारिध वृद्धि विधाता - गण
मांगत तुलसी दास कर जोरी
बस हो राम सिया मानस

दूसरी तरफ़ :— माण्ड

भज ले राम नाम सुख धाम तेरा पूरन हो सब काम
कासी जावे मुथरा जावे तीरथ फिरे तमाम
जाय हिमाचल करे तपस्या नही पावे विसराम - भज - -
जटा ये रखाई भस्म रमाई जङ्गल किया मुकाम
सत गुरु की संगत नहीं कीनी मिले न आतम राम - भज
आतम साधे कोच न साधे साधे प्राणायाम
घटमें बृह्म स्वरूप नहीं तो कीनो जगमें नाम
बन्दक आगम करें निरंतर जग से हो उप राम
बृह्मा नन्द परम पद पावे होवे मन विसराम - भज

—:-०-:—

P. 6375. हनुमान आर्ती भाग १ पो० ६३७५

जय बजरंग बाला जय बजरंग बाला
पूरी आस विश्वास जपूं में जप माला - जय - - -
आपे की व अवसार त्रिलोचन वाला
राम सेवन को जन्म लियो है हनुमन्त मत बाला- जय - - -
बृह्म बाण सिंगार आकन की माला
तेल सिंधूर बिराजे ऐसे अजंनी के लाला - जय - - -
जरण फलों की जाति बजरंग कष्ट हरण वाला
कठिन गहे के बन्द छुड़ावे सुख सम्पति वाला - जय - - -
पावन गिर के अधिपति बजरंग जती वृत वाला
बज्रका चोट लंगोट बिराजे बज्जर का ताला - जय - - - -

दूसरी तरफ़ :— हनुमान आर्ती भाग २

जय बजरंग बाला जय बजरंग बाला
पूरी आस विश्वास जपूं में जप माला - जय जय जय बज्रंग बाला

विकट संत विकराल लोचन विकराला - लचोन विकराला
कुंभ करन राक्षस को जीते छजन को ब्बाला - जय जय - -
कूद पड पर लङ्क छध लावन वाला
छिन में लंका जारी आये बल वंत बहुकाला - जय जय - - - -
रावण मारयो सीता वारी राम रघुकुल अज वाला
आपे से रघुबीर कहत हैं सीता के वालन वाला - जय - -
दे दे सीता राम पौढ़ दसरथ के लाला
क्योंकि हनुमन्त वीर खड़े है आपै रख वाला - जय - - -
ताड़े तुलसी दास ऐसे कृपाला
मूल दास की (अरज़ी) विनती छनियो राम अज वाला - जय - -

P. 6961. **रामायण बाल काण्ड पुत्र यष्टो** पी० ६९६१

सज्जनो अयोध्या पुरी के राजा दशरथ बुढ़ापे में भी अपना कोई वंश का पुत्र न देख कर गुरु वशिष्ट के पास जा कर पुत्र प्राप्तिके लिये प्राथना करते हैं सो गुरु वशिष्ट क्या कहते हैं-छनिये।

चौपाई—धरियो धीर होई है पुत्र चारी - रघुबन बिधि सब प्रभ यह भारी
श्रृंगी ऋषि हि वशिष्ट बुलावा - पुत्र लागे शुभ यत्न करावा

टीका—हे राजन भक्तो के भय दूर करने वाले संसार में विख्यात चार पुत्र होंगे इस लिये धीरज धरो-उन्हीं विशिष्ठ ऋषि ने श्रृंगी मुनि को बुला कर शुभ पुत्र यष्टो यज्ञ कराया जिस के प्रभाव से—

चौ०—नवमी तिथि मधु मात पुनीता - शुकल पक्ष उदि चैत हरि प्रीता
मभदी वश यति प्रयत्न कामा - पावन काल लोक विश्रामा

टी०—पवित्र चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को उदय चैत्र नक्षत्र में दोपहर के समय जबकि न अधिक शीत था न अधिक धूप थी-इस विश्राम

योग पवित्र समय में राजा दशरथ के यहां श्री रामचन्द्र जी का जन्म हुआ और उस के पश्चात् क्रमसे लक्ष्मण, भरत और शत्रुहण जी का जन्म हुआ।

सज्जनो आज कल संतान के लिये पुरुष और ख़ास स्त्रियों दुरपाखंडी-अनाचारी नीच, भंगी चमार, धोबी आदि कुतूल्यो की शरणमें जाते हैं और अनेक कल्पित देवताओं के पास जाकर बकरा मुर्गा काट कर घोर पाप कमाते हैं अपने धर्म का नाश कर दुख उठाते हैं लेकिन लाभ कुछ नहीं होता-संतान भी नहीं होती और धन जन का नाश कर के निर्धन, निर्जीव होकर हाथ मल कर पछताते हैं। दशरथ ने बुढ़ापे में भी अति मनोहर पुत्र को प्राप्त किया यह रामायण से पहिली शिक्षा मिलती है। बोलो श्री राम चन्द्र देव जी जय।

दूसरी तरफ़ :— विश्वा मित्र आगमन रामायण बाल काण्ड

सज्जनो--संतान का प्रेम बड़ा विचित्र होता है मनुष्य अपना सर्वस्व को अर्पण कर के अपने प्राण तक देने को तैयार हो जाता है लेकिन अपनी प्यारी सन्तान को अपने हृदय से पृथक नहीं करता इस लिये वेद कहता है "आत्मा वजायते पुत्रः" पुत्र मनुष्य का आत्मा ही होता है।" जिस समय ऋषि विश्वामित्र अपने यज्ञको निर्विघ्न समाप्त करने के लिये राम और लक्ष्मण को राजा दशरथ से मांगते हैं तो दशरथ क्या कहते हैं - छनिये।

चौ०—चौथे पन पायो छत चारे - बीर वचन नही कहयो विचारे
मांग हो भूमि देऊं धन कोषा - प स्वसो देऊं आज सर दोषा

टी०—ऐ मुनि ! मैंने बुढ़ापे में चार पुत्रों को प्राप्त किया है अथवा आपने कुछ विचार कर के न कहा-आप चाहे जमीन-गऊ-धन ख़ज़ाना और मेरा सव स्व भी मांग लीजिये-मैं निस शंकोच दे सकता हूं।

चौ०—देह प्राण से प्रिय कछु नाहिं - तो मुनि प्रियो निमश अभमाहिं
कहन कीचड़ा अति घोर कठोरा - कहां सुंदर पुत्र परम किशोरा

टी०—देह और प्राण से प्रिय कुछ नहीं है लेकिन वह भी मैं एक पल में दे सकता हूं। भला आप विचार कीजिये कि कहां तो भयंकर राक्षस और

कहां अति कोमल शरीर वाले यह सुन्दर बालक ! बड़ा अन्तर है । लेकिन वशिष्ट ऋषि के समझाने और विश्वास दिलाने पर दशरथ ने अपने दोनों पुत्र राम और लक्ष्मण को विश्वा मित्र के लिये दे दिये और उन्हों ने विश्वामित्र से पूर्ण धनुर्वेद को पढ़ के और अनेक राक्षसों को मार के ऋषि के यज्ञ को निर्विघन पूर्ण कराया ।

किसी कविने ठीक कहा :— (कवित)

पीवंती निधे सोभे मेव भव नभ - खाददी वृक्षा पयम फलानि

धारा धुविपरश्ति नातम् पथं हेतु - परोपकार आष्टांग वैभव

बड़े आदमीयों की सब ही विभूति परमार्थ के लिये ही है । बोलो श्री राम चन्द्र देवकी जय ।

P. 6984. रा०अ०का० दशरथ केकई सम्वाद भाग १ पो० ६६८४

सज्जनो जिस समय मनुष्य एक स्त्री वृत को तोड़ कर अनेक स्त्रियों से प्रेम कर लेता है और इन्द्रियों का गुलाम बन जाता है उस समय उस को बुद्धि नष्ट हो जाती है और बड़े बड़े भयंकर कामों को भी बिना वचार कर डालता है । देखिये जिस समय राजा दशरथ राम चन्द्र को कल राज तिलक करने की खुश ख़बरी सुनाने के लिये अपनी प्राण प्रिय केकई के महल में जाते हैं तो केकई शोक ग्रस्त कोप भवन में पड़ी हुई देख राजा दशरथ क्या कहते हैं। सुनिये :—

चौ०—अनहित तारे प्रिय किह कीना - कहि दुई सर कहि जम चलीना

सकुन तोरा मरी हियो मारो - कहा कपट विप्र नर नारी

टी०—हे प्रिय ! आज तेरा किस ने अनहित किया है - कौन आज मृत्यु को प्राप्त होना चाहता है - मैं तेरे अमर बैरी को भी मार सकता हूँ विचारे पुरुष स्त्रियों की तो कथा ही क्या है ।

चौ०—यही सो मांगू मन भावनी बाता - भूषण साज मनोहर गाता

लखहि न भूप कपट चतुराई - कोई कुटिल गण गुरु पढ़ाई

टी—हे प्रिय ! जो तू गहना-वस्त्रादि मन चाहि चीज़ मांगना चाहती हो वह हंस कर मांग ले लेकिन राजा ने उस की कपट भरी चतुराई को न पहिचाना कि यह बड़े कपट भरे कुटिल गुरू की पढ़ाई हुई है यह सुन केकेई कहती है । सुनिये:

चौ०—मांग मांग यह कहयो प्रिय कबहु लियो न दियो

दैन कहयो बरदान देवि नियो पावत संदियो

आपने दो बरदान देने को कहा था अभी न दियें ।

बोलो श्री रामचन्द्र देव की जय ।

दूसरी तरफ़ :— दशरथ और केकई का सम्वाद भाग २

सज्जनो ! केकई कहती है—मेरे को दो बरदान देनेको कहा था सो वह भी न दिये इस पर दशरथ कहते हैं ।

चौपाई—झूठ ही दोष हमहि जन लेहू - दुई के चार मांग कन लेहू

रघु कुल रीति सदा चलि आई - प्राण जांय प वचन न जाई

टी०—हे प्रिय ! हमें झूठा दोष क्यों देती हो-अब दो की जगह चार क्यों नहीं मांग लेती-रघुकुल की सदा से यही रीति चली आई है कि प्राण चले जांय पर वचन न जाये । अब कुटला केकई अपने दो बरदान क्या मांगती है सो सुनिये :—

चौ०—सुनहु प्राण पति भावत जीका - देवहु यह एक बर से भरत ही टीका

ता पश भेष विशेष उदासो - चौदह बरस राम बन बासी

टी०—हे प्राण पति ! एक यह बरदान मांगती हूँ कि भरतको राज तिलक करो दूसरा कह कि राम चन्द्र जो चौदह बरस के लिये तपस्वी का रूप धारण कर बन में रहें । राम के बन बास सुन कर राजा को बेचैनी हो जाती है वह दुखी होकर कहता है ।

चौ०—किह कहो तज दोष राम अपराधु - तव कहु कहत राम सोठि साधू

हे प्रिय सोच विचार कर राम का क़सूर कहो। यह सुन केकई कहती है।

देहो कि लेहो देहो कि लेहो कर नाहि - मोहे न बहुत प्रपंच सुहाई

हे राजन! या तो दो या इकार करके अकीरति करलो यह प्रपंच मुझे अच्छा नहीं लगता। राम अच्छे-तुम अच्छे और राम की माता कौशल्या भी अच्छी लेकिन मुझे मेरा बर देओ यह सुन राजा को छाती में घाव हो जाने से मूर्छित हो ज़मीन में गिर पड़ता है।

सज्जनो! बोलिये श्री राम चन्द्र देव की जय

P. 7037. रा० अ० का० राम सीताका सं० भाग २पी० ७०३७

सज्जनो! जिस के माता कौशल्या को धैर्य बंधाकर और बाप की आज्ञा लेकर राम चन्द्र जी बन जाने को तैयार हुए तो सीता जी भी साथ चलने को तैयार हुई। इस से सीता जी को समझाने के लिये राम जो क्या कहते है श्रवण की जिये।

चौ०—राज कुमारी सुखावनी सुनहो अनि भान्ति जनि जिये कछु गुणाहो

आपन मोर नेक जो चाहहू बचन हमार मान घर रह हू

टी०—ऐ राज कुमारी हृदयमें अन्यथा न समझ कर हमारी शिक्षा सुनो। अगर मेरा और अपना दोनों का भला चाहती हो तो हमारा कहना मान घर पर ही रहो।

चौ०—कान कठिन भयंकर भारी - घोर घाम हिम वारि तिहारी

तथा कंटक मग कंकर नाना - चलहि पियो दहि बन पद आना

टी०—बन बड़ा कठिन और भयंकर है। धूम और सरदी बहुत होता है, हवा खूब चलती है-रास्ते में ढाक के कांटे और कंकर बहुत हैं जिन पर बिना जूतों के पैदल ही चलना होगा।

चौ०—चरण कमल मृद मंजर तिहारी - मार्ग अगम भूमि घर भारी

कन्दर खोह नदी नद नारी - अगम अगाध न जाही तिहारी

टी०—तुम्हारे चरण कमल अति कोमल हैं और बड़े पहाड़ों के होने से रास्ता बड़ा कठिन हैं। ऐसे कन्दर गुफ़ा नदी और नाले हैं जिन को देखने से भय लगता है।

चौ०—नवर साल वन बिभरण शीला - सोठे के कोकिल विपन करीला

टी०—चन्द्र मुखी! ऐसा हृदय में सोच कर घर पर ही रहो बन में बड़ा दुख है।

बोलो श्री राम चन्द्र देव की जय

—:-०-:—

दूसरी तरफ़ :— राम और सीता सम्वाद भाग २

सज्जनों! राम चन्द्र जी बनमें जाते हैं तो सीता जी को कहा तुम घर पर ही रहो—अब सीता जी क्या कहती हैं सुनिये!

चौ०—तन धन धाम धरनी पुर राज् - पति विहिन सब शोक समाजु

भोग रोग सम भूषण भारू - यम यातना सर सती संसारू

टी०—हे स्वामी शरीर, धन घर ज़मीन, नगरका राज सब अपने पति बिना स्त्री के लिये शोकमय है और भोग रोग वत गहने भार रूप और संसार मृत्यु से भी अधिक दुख दाई हैं।

चौ०—जिया बिन देह नदी बिन वारी - तेसे ही नाथ पुरुष बिन नारी

मैंने सुकुमारी नाथ बिन योगू - तुमहि उचित तप मुख्य भोगू

टी०—हे नाथ! जैसे जीव रहित देह और जल रहित नदी व्यर्थ है वैसे हो पुरुष रहित स्त्री भी व्यर्थ है। इस लिये हे नाथ मैं बन चलने योग्य हूं। भला आप तप करें और मैं भोग भोगू यह उचित है।

चौ०—देखि दशा रघुपति जिय जाना - हठ राखे राखहि नेहन प्राणा।

कहे कृपालु भानु कुल नाथा - परि हरि शोच चलहु वन साथा

टी०—रामचन्द्रजी ने विचार किया कि चाहे प्राण चले जायें परन्तु सीता हट को न छोड़ेगी। ऐसा जान सीता से कहा है-सीते सोच को छोड़ दो और हमारे साथ बन को चलो।

सज्जनो ! मनुस्मृति में भगवान ने कहा है।:

(श्लोक) संतुष्टो भार्य्या भ्रात्रात भार्य्या तथा वच

यस्मन् न्योकले नीतम् कल्याणम् तत्रों वई धमम्

टी०—जिस कुल में पुरुष से स्त्री और स्त्री से पुरुष राज़ी रहते हैं उसी कुल में कल्याण का निवास है।

श्री राम चन्द्र देव की जय

——————:ः:——————

P. 7670. रामायण—राम दशरथका सम्वाद भाग१ पी० ७६७०

सज्जनो जब कि दशरथ की सारी रात्री इस प्रकार शोक में बीती है और सवेरे उठनेमें देर होजाती है तो समन्त आते है और राजा को योगत दशाको देख कर बड़ा अचम्भा करते हैं। बन राजा को आज्ञानुसार तथा राम चन्द्र जी को बुला कर कहते हैं अरो राम चन्द्र जी से केकई कहती है सुनिये—

बिन कहे हो मोहे दोई वरदाना - मांगे हो जो कुछ मोहे सुहाना

तोसा भयेहु भूप और शोचू - सानी न सब ही संवार संकोचू

टीका—राजा ने दो वरदान देने का कहा था तो जो मुझे अच्छा लगा वह मैंने मांग लिया तो सुन कर राजा का बड़ा शोक हुआ है क्यों कि तुम्हारे संकोच व श तुम्हें छोड़ नहीं सकते

सुत स्नेह सत वचन हित - संकट पड़हु न लेत

सखियो दो आये शीश धरे - मेटहु सकल कलेस

टीका—तो इधर तो पुत्र प्रेम और उधर प्रतिज्ञा पालन अथवा राजा बड़े

दुख में पड़े हैं। अगर हो सके तो आज्ञा को मान कर सारे दुखों को दूर करो। यह सुन राम चन्द्र जी कहते हैं सो सुनिये।

चौपाई—सुन जननी सो पुत्र बड़ भागी-जा पितु मातु भई अनु लागी

भरत प्राण प्रिय पावहि राज-बिधि सब सुन सुख बच आवहि

टीका—हे मात सुनो वे पुत्र भाग्यवान हैं जो माता पिता की आज्ञा को मानता है। इस पर भी भरत राज पावें गे अथवा सब प्रकार मेरा ईश्वर सोधा है।

चो० जोन जाऊं बन ऐसे काजा - प्रथम गल्प मोहे कोट समाजा

टीका—जो इस अवसर भी मैं बन को न जाऊं तो इस से अधिक मूरखता नहीं—बोलो श्री राम चन्द्र देव जी की जय।

दूसरी तरफ़ :— दूसरा भाग

सज्जनो राम चन्द्र जी केकई से बात करके अपने पिता के पास जाकर प्रणाम कर नम्रता पूर्वक बोले।

चो० सत कहूं कछु करु ढिटाई - अनुचित क्षमा हो जानि लरकाई

अति लग्यो बात लगी दुख पावा - काहे न कहन मोहे प्रथम जनावा

टी० हे पिता कुछ कह के ढिटाई करता हूं अगर कुछ अनुचित बात कहूं तो क्षमा करें। आपने छोटी सी बात के लिये इतना दुख क्यों पाया। पहिले ही मुख से क्यों नहीं कहा।

चौ० पिता मातु सुन आपु मांगी - चल्ये बन लो बोहड़ी पग लागी

आये भू पाली जन्म फल पाई - आये हो वेद ही हुई रजाली

टी—इस लिये माता जी से आज्ञा मांग रहा हूं और आप के चरण छू कर बन में जाऊंगा और आप की आज्ञा का पालन कर जन्म का फल पाकर जल्दी लौट कर आऊंगा अथवा आप मुझे आज्ञा दीजिये।

यह सुन कर राजा शोक दुखित होने के कारन सब कुछ छोड़ दिया है और राम चन्द्र जी माता कौशल्या से विदा मांगने चले गये।

सज्जनो पुत्र हों तो ऐसे हों धार्मिक भावों से योगित हों जो अपने माता पिता की आज्ञा को प्राण पर से पालन करने को तत्पर रहें अन्यथा कुत्ता बिलियों की तरह बच्चे बच्ची पैदा करने से कुछ लाभ नहीं।

बोलो श्री राम देव की जी - "नाथ लाल की नमस्कार"

—o—

P. 7862. **कथा रामायण सीता स्वयम्बर धनुष यज्ञ०पी० ७८६२**

सज्जनो जिस समय राम चन्द्र जी विश्वामित्र का यज्ञ पूरा करके राक्षसों का मारते हुए जनक पुर के यज्ञ देखने जाते हैं तो राजा जनक ने अती आदर से उच्च आसन पर बिठलाया और सब राजाओं के आजाने पर भांड लोगों ने जनक की प्रतिज्ञा सब को निम्न प्रकार से सुनाई।

चौपाई:—सुई प्रारी को दंड कठोरा - राज समाज आज जहीं तोरा

त्रिभुवन जे समेत विदेही - बिन ही विचार बेर हठी येही

टीका—जो इस शिव जी के प्रसिद्ध और कठोर धनुष को आज राज सभा में तोड़ेगा उसी का सीता बिना संकोच विचार से वरेगी और उसी वीर के साथ सीता का विवाह होगा यह सुन सभी उपस्थित राज कुमार कस कस कर धनुषको उठाने गये-जब न उठाने पर हार हार कर अपने आसन पर बैठ गये। मुनि विश्वामित्र की आज्ञानुसार राम चन्द्र जी उठे-यह सुन सीता जी की माता अपनी सखी से कहती है।

चौपाई—रावण बाण छुवा नहीं चापा - हारे सकल भूप करि दापा

सुन धनु राज कुवंर देहीं - बाल मराल कमंदर लेहीं

टीका—ऐ सखी जिस धनुष को रावण ने छुआ तक भी नहीं और सारे राजा बल कर के हार गये वह धनुष राम चन्द्र जी के हाथ में दिया जाता है। भला कहीं बाल हंस पहाड़ को उठा सकता है यह सुन उसका उत्तर सखी देती है।

चौपाई:—बोली चतुर सखी मृदु वाणी - तेज वंत लघु गिनये न रानी

रवि मंडल देखत लघु लागा - उदय ताछ त्रिभुवन तम भागा

टीका—राम चन्द्र जी ने धनुष को तोड़ दिया और सीता जी ने जय माला पहनाई।

बोलो श्री राम चन्द्र देव की जय

दूसरी तरफ़ :— कथा रामयण राम और लक्ष्मण सम्बाद

सज्जनो लक्ष्मण का बन जाने का निश्चय जान राम जी क्या कहते हैं। सुनिये—

दोहा—करुणा सिंधु सबंधु के सुनि मृदु बचन विनीत

समझाये उर लाई प्रभु जनि मेंह संभीत

टीका—राम चन्द्र जी प्रिय भ्राता के मीठे और धीरता युक्त वचनों को सुन कर लक्ष्मण को हृदय से लगा कर समझाने लगे।

चौपाई—मांगो बिदी मातु सुन जाई - आवो बेग चलहु बन भाई

मुदित भये सुनि रघु बर बानी, भयो लाभ ब ड़ मिटी ग्लानी

टीका—हे भाई माता जी से जल्दी बिदा मांग कर आओ और बन को चलो यह सुन लक्ष्मण बड़े खुश हुए-मानो बड़ा भारी लाभ हुआ और सारा शोक दूर होगया। सज्जनो भ्रात्री प्रेम ऐसा ही होता है देखिये लक्ष्मण अपने बड़े राज को ठोकर मार कर बड़े भाई राम चन्द्र जी के साथ भ्रात्री प्रेम के वश होकर बन जाने को तैयार हो लिया। परमात्मा वेदों में उपदेश देते हैं कि मनुष्य तुम आपस में भाई भाई से द्वेष मत करो। किन्तु प्रेम पूर्वक ठीक होकर रहो। लेकिन जहां इस वेद की आज्ञा का तिरस्कार किया जाता है वह देश वह जाती और वह मनुष्य दुखों के गहरे समुद्र में गिर पड़ते हैं इस लिये हे सज्जनों इस अपार संसार में मनुष्य जन्म पाके गाफ़िल न रहो और आतमवत सर्व भूतेश्वर यह वाक्यानुसार सभी जीव आत्मा को अपना समझ कर एक दूसरे से हिल मिल के सच्चे भ्रात्री भाव से रहो यह धर्म

वचन अनुसार रहने पर भारत वासियों का कल्याण है।

दोहा—तुलसी यह संसार में भांत भांति के लोग
सब से हिल मिल बैठिये नदी नाव संजोग

——:०:——

माष्टर निसार

P. 4980. ग़ज़ल पी० ४९८०

ग़ैर की बातों का आख़िर एत बार आ ही गया
मेरी जानिब से तेरे दिल में ग़ुब्बार आही गया
जानता था खा रहा है बेवफा झूठी क़सम
सादगी देखो कि फिर भी एतबार आही गया
ओ सितमगर तू नहीं आया तो क्या हम मर गये
चन्द दिन तड़फे मगर आख़िर करार आही गया
जी में था ऐ फ़रश उसे अपना मौदल के जबीं
बेवफ़ा जब सामने आया तो प्यार आही गया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दिले नादां तुझे हुआ क्या है आख़री ज़िदगी लवा क्या है
हम हैं मुश्ताक़ और वह बेबा
या इलाही यह माजरा क्या है - दिले - - -
कब्ज़ाये गुलिस्तां से आये हैं
अब तो जाती रहे हवा क्या है - देले - - -
हम को उन से वफ़ा की है उम्मीद
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है - दिले - - -

P.6217. मांड पी० ६२१७

कब तक खिंचे रहोगे कब तक तनी रहेगी
किस की बनी रही है किस की बनी रहेगी
उस की भी ग़ैर से हर दम जो पर बनी रहेगी
बरछी में दिल रहेगा दिल में अनी रहेगी
बावफ़ा पं जो यह रोज़ जफ़ा करते हैं
सख्त बेदर्द हैं ज़ालिम हैं बुरा करते हैं
तुम सलामत रहो अबाद रहो शाद रहो
हम तो जीते जहां तक यह दुआ करते हैं
मर मर के हम जी रहे हैं कि साहब से याद यह है
ऐ बद गुमान कब तक यह बद ज़नी रहेगी - कब

दूसरी तरफ़ :— मांड

कोयलिया मत कर पुकार करेजवा लागे कटार - कोयलिया - -
मधुर मधुर तोरे बन-बृहन के आवत चैन भरू भर आवत हैं नैन -
कूक उठत बार बार करेजवा लागे कटार - कोयलिया - - - -
कोयलिया जा उनके देस - पीतम को दे यह सदेस
तुम बिन पिया जोगिया भेस - तज दिया संसार - करेजवा - - -
कोयलिया - - - - -

——

P. 6218. भीम पलास पी० ६२१८

दई पिया बिन न आवे चैन - - - - - - - -
उन के नैन करें बेचैन - तारे गिनत काटे रैन - दई - - -
जोगन मनाऊं सजन तोरे - मानो जी मानो वचन मोरे
रैन रैन ऐसो बैन - दई पिया - - - - -

दूसरी तरफ़ :— माल कोस

कृष्णा माधो राम - आओ मोरे धाम - कृष्णा - - -
मन मोहन मुरली सुन तेरी मन भावत धुन
यही दशम के बो जलन - गा-पा दानि सा दानि सा
दा पा गा पा - - - कृष्णा - - -

P. 6219. असावरी पी० ६२१६

श्याम सनुमा न मारो लगत कलेजुवा में तीर
बावरी सांवरी सूरत पर वार श्याम - - -
भावें तनी ज कटारी मीई न न मारो नैन
मानो पिया जब म्हारो झूठ आली मोरारी बंधाओ धीर - श्याम -

रे पा मा पा धानि सा - - - - - गा मा पा - - श्याम - -
बावरी सांवरी - - भावें - - श्याम - - -

दूसरो तरफ़ :— असावरी

यह मेरी ओढ़नी क्या है मेरे दिल का नमूना है
बस इतना फ़र्क़ है उस का कि वह किसीका जूना है
न यह सीने के क़ाबिल है न वह सीने के क़ाबिल है
न दम इस में न दम उस में दुशवार छूना है - कि मेरी - -
उड़ा दी सुफ़ लिसों की नाख़ूनों से धज्जियां उसकी
तवा चूल्हा है ठंडा इस जलने में उफ़ जलन है - यह मेरी - -

मि० प्यारे इमामुद्दीन

P. 914. रसिया पी० ६१४

दिलजानी खटोले प सोजा—दिलजानी - -
वहीं बहू का पीसना रे वहीं ससुर की खाट
निकटत आवे पीसना रे दरकत आवे खाट—दिल - - -

दूसरी तरफ़ :— रसिया

मैं मेले को जाऊंगी—भैंयन की सूं मैं मेले को जाऊंगी
ना चाहिये तेरे गाड़ी रे बहली—मैं तो पैदल घिसटती आऊंगी
भैयन की सूं मैं मेले को जाऊंगी - - -
ना चाहिये तेरे लड्डु रे पेड़े—दाने भटकती आऊंगी—मैं तो - -
भैंयन की सूं मैं मेले को जाऊंगी (आहा क्या अच्छा मेला है)
ना चाहिये तेरे लड्डु रे पेड़े मैं तो दाने - - भैंयन की - - -

P. 1545. ज़िला पीलू पी० १५४५

ख़त लेजा गङ्गा राम हमारे गोने को - - - -
जब तो थी मैं बाली रे भोली अब हुए जमान जवान हमारे गोने को
ख़त लेजा गङ्गा राम - - - - - - - - - - -
क्या करूं कित जाऊं सखी री—कित मैं जाऊं समाय हमारे गोनेको
ख़त लेजा गङ्गा राम - - - -

दूसरी तरफ़ :— ज़िला पीलू

गोने में नहीं भलाई तेरी क्यों क़म्बख़तो आई—अररररर गोने - -
आधी रात झुकी अंधियारी पकड़ों हाथ उंगली का

चारों बन्द खुली चोलीके नारो खुलो खरेली का
बहुओं की सेज इत्र से छिड़की तीरथ भी कराई—गोने - - -
आई बहु खुशी हुए सासन घरसे नायन बुलवाई
पतली पतली करी कढ़ैया घर पुलवा में बटवाई
पास परोसी यूं उठ बोली आज बिर तेरी बहू आई—गोने - -
खुटा बाजारा रंधी कढ़ी थी उड़वा संग में लवा लाई
फूलों की सेज अतर से छिड़की तीर्थ भी कर आई—गोने

—— :-०-:——

मि० प्यारू क़व्वाल

P. 4669. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ४६६९

दिल में नज़रों में जो वह दुशमने ईमान रहे
सच तो यह है कोई काफ़िर ही मुसलमान रहे
तीर की नोक से माथे पे निशानी कर दो
ता शहीदों की तुम्हें हश्र में पहिचान रहे
सदक़े इस रहम के कहते हैं वह बाद क़ुरातन
ओ मुसाफ़िर तेरा अल्लाह निगहबान रहे
सीख ले मुझ से कुछ आदाब तलावत वआज़
याज़म लब पै रहे हाथ में क़ुरान रहे
लुत्फ़ मय यूं है कि माशूक़ भी हो ज़ेबे बग़ल
हाथ में शीशा रहे ताक़ पै ईमान रहे

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

लाग की आग किसी तरह बुझाई न गई
आंख जिस दिनसे लगी आंख लगाई न गई
हमको ज़ख़्मी तो किया तेग़से ठंढा न किया
आग जो तुमने लगाई वह बुझाई न गई
हमको दावा था कि उल्फ़त में उठा लेंगे पहाड़
वक़्त पर भूल गये बात उठाई न गई
चल भी ऐ तेग़ रवानी तेरी देखी हमने
हम तड़पते रहे और प्यास बुझाई न गई
आंखें दो जाम सही बल्कि हैं दो मयख़ाने
हमको तो आप से दो घूंट पिलाई न गई

P. 4741. भैरवीं पी० ४७४१

मैं तो यसरब में जाय बसूंगी बसूंगी
मनमें मोहम्मद मेरो समायो—नाम मोहम्मद धरूंगी धरूंगी—मैं तो - -
सुना है जबसे तुम्हारा है घर मदीने में—लगी हुई है हमारी नज़र मदीने में
शबे फ़िराक़ की कब हो सहर मदीनेमें इलाही पहुंचेगी क्योंकर ख़बर मदीने में
जो सदमा दिल में गुज़रता है तुम से कौन कहे
सितम फ़िराक़ जो करता है तुम से कौन कहे
तुम्हारा दम कोई भरता है तुम से कौन कहे
कि कोई हिन्द में मरता है तुम से कौन कहे
मन में मोहम्मद मोरे समायो
नाम मोहम्मद धरूंगी धरूंगी मैं तो
यसरब में जाय बसूंगी मैं तो

दूसरी तरफ़ :— असावरी

जहां में लाखों हसीन देखे मगर श्रो साजन कमलिया वाले - -
न रङ्ग तुझसा न रूप तुझ सा न तुझसा जोबन कमलिया वाले—जहां -
पड़ूंगी पयां करूंगी बिनती चरण पकड़ कर न जाने दूंगी
कभी जो छपनेमें तुम दया से दिखादो जोबन कमलियां वाले—जहां -
ऐ मोरे नबी मोरे आक़ा जा दिनसे लगी तोसे अंखियां
कल नाहीं पड़त बेकल जियारा तरसत नैनां धड़कत छतियां
तोरा नूरी बदन तोरी तिरछी बचन तोरी बांकी अदा तिरछी चितवन
तोरी जुल्फ़ सियाह व अलील सजा यां तक ख़सतन या ना गनियां
छपने में दर्श दिखावत हो ललचावत हो तरसावत हो तरसावत हो
मन मोहन हो तन छीनत हो तुय जानत हो कुछ मोहनियां
कोई रैन छपने में आन कर मोहे रूप अपना दिखा गया
कोई बात न मुखसे कह गया यूं ही हाय चुपका चला गया
मोहे यह जगत से पता मिला कि वे थे मोहम्मद मुस्तफ़ा
कोई कहता था मकी उन्हें कोई आके मदनी बता गया—जहां - -

P. 4902. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ४६०२

वह बज़्म ख़ास जो दरबार आम हो जावे
उम्मीद है कि हमारा सलाम हो जावे
मैं क़ायल आप के रोज़े का हूं वह क़ायल तूर
कलयम से न किसी दिन कलाम हो जावे
तेरे ग़ुलाम की शौक़त को जो देखे महमूद
अभी अयाज़ की सूरत ग़ुलाम हो जावे
मदीने जाऊं फिर आऊं दुबारा फिर जाऊं

तमाम उम्र इसीमें तमाम हो जावे
बुलालो जल्द मदीने में है अमीर को डर
कहीं न उम्र दो रोज़ा तमाम हो जावे

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

मैं तो जोगी बना फिरता हूं दिलदार के लिये
इलाही यह तेरा एक बन्दा मजबूरो अहक़र है
तेरी महबूब की फ़ुर्क़त में लेकिन सख़्त मुज़तिर है
न दुनियां की हविस है और न उस को ख़ुवाहिशे ज़र है
फ़क़्त तेरे करम के आसरे में यह ज़बान पर है
मय इश्क़ मोहम्मद में अजब कुछ कैफ़ मस्ती है
कि बदले जानके इक बूंद मिलजाये तो ससती है
बुलन्दी शौक़ को है जिस क़दर क़िसमत को पसती है
हुआ यही ज़बां पर है तबियत जब तरसती है

P. 4983. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ४६८३

ज़ेबा तोन था तुम को दिल लेके दग़ा करना
इनहोंटों से क्या कहना इन हाथों से क्या करना—ज़ेबा - -
वायदे पे न यां आना वायदा न वफ़ा करना
आना तो अलग रहना करना तो जफ़ा करना
मुझ को यह मेरे दिल ने जाते हुए समझाया
दिलबर की जफ़ा सहना क़िसमतका गिला करना
हम ने जो तुम्हें चाहा क्या इस में ख़ता मेरी
यह तुम हो यह आइना इंसाफ़ ज़रा करना—ज़ेबा - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

हाय क्या चीज़ ग़रीबुल वतनी होती है
बैठ जाता हूं जहां छांव घनी होती है
दिनको एक नूर बरसता है मेरी तुर्बत पर
रातको चादरे महताब तनी होती है
रुत बदलते ही बदल जाती है नियत अपनी
जब बहार आती है तो बदशिकनी होती है
हूक उठता है अगर ज़ब्ते फ़ुग़ां करता हूं
सांस रुकती है तो बरछी की अनी होती है
पील दो घूंट कि साक़ी रहे बात हफ़ीज़
साफ़ इन्कार से ख़ातिर शिकनी होती है—हाय - -

———०———

P. 5088. दादरा पी० ५०८८

दिल छीना निगाहें चुरा कर चले
कोई पूछे यह जादू सी क्या कर चले—दिल - -
यह ख़ुशी है तेरी भीख दे या न दे
तेरे दर के भिखारी दुआ कर चले
हम पूछा कि क़त्ल कीजियेगा - हंसके बोले कि हां निगाहों से
इतना कहते ही क़त्ल कर डाला - मुंह से आंखें मिला के आंखों से—दिल
पहले तो यह समझा था कि कुछ शर्मो हया है
कम देखना अइशाक़ को एक तर्ज़ अदा है
छुप छुप के मगर तीर रक़ीबों पै चमा है
हर वक्त. लबे ज़ख़्म से पैदा यह सदा है—दिल - - - -
देखा जो कभी मुझको तो दिख लाई यह शोख़ी

सब मेरी तरफ़ था तो नज़र और ही तरफ़ थी
क्या जानूं कि किस वक्त हुवा दिल मेरा ज़ख़मी
आवाज़ फ़क़त यह दिल मजरूह की सुन ली—दिल - -
आदमी ठोकर फिर न खाये कभी
रास्ते में झगड़ कर धोका कर चले—दिल -

दूसरी तरफ़ :— पीलू

हांरे ख़्वाजा प्यारे से लागी नैन - आंख - -
छीन लियो दीनो धरम सब मेरो
का के कलेजवा में सैन सैन - ख़्वाजा - - -
ख़्वाजा पिया सुध लेहु बेदम की
तड़पत हूं दिन रैन रैन रैन—ख़्वाजा - - - -
बजुज़ तुम्हारे कहूं किस से या ग़रीब निवाज़
सुनो मेरी मेरे मुशकिल कुशा ग़रीब नवाज़
बड़ी उम्मीद से हाज़िर हुआ हूं चौखट पर
मिटाइये न मेरा आसरा ग़रीब निवाज़
वहीं मदद के लिये आगये मईनुद्दीन
ज़बां से जब मेरी जब निकला किया ग़रीब निवाज़—ख़्वाजा - -

—:०:—

P. 5246. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ५२४६

एक नूर मुजस्सिमने लुभाया मेरा दिल है
या रब तेरे महबूब पै आया मेरा दिल है
शैदा रुख़े महबूब ख़ुदा का मेरा दिल है
कुरआं की क़सम मोमन नूं काबा मेरा दिल है
तू हूर का शैदा है तो मैं आशिक़ अहमद
ज़ाहिद तेरे दिल से तो अच्छा मेरा दिल है

बन जाये अगर ख़ाना ये नवालीं मोहम्मद
दावा मैं करूं अर्शें मोअल्ला मेरा दिल है
अब और कोई हुस्न हो वहशी उसे देखो
मैं बेच चुका हूं यह पराया मेरा दिल है—एक - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

तू वह गुल ख़ूबी है ऐ जलवेय जानां ना
हर गुल है तेरा बुल बुल हर शमय है पर्वाना
ए काश पहुंच जाना मैं तादर जानां ना
किस नाज़ से वह लहते आया मेरा मस्ताना
मस्ती में भी सर अपना साक़ी के क़दम पर हो
इतना तो करम करना ऐ नग़रिशे मस्ताना
या रब इन्हीं हाथों से पीते रहे मतवाले
यारब यही साक़ी हो या रब यही मयख़ाना—तू

P. 5289 ग़ज़ल क़व्वाली पी० ५२८६

उन के एक जां निसार हम भी हैं
हैं जहां जहां सो हज़ार हम भी हैं
तुम भी बेचैन हम भी हैं बेचैन - तुम भी हो बे क़रार हम भी हैं
जिस ने चाहा फंसा लिया मुझको - दिल बरोंके शिकार हम भी हैं
तुम अगर अपने गों के हो माशूक़ - अपने मतलब के यार हम भी हैं
कभी आकर तो फ़ातहा पढ़दो - आज ज़ेर मज़ार हम भी हैं
कौन सा दिल है जिस में दाग़ नहीं - इश्क़में याद गार हम भी हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

सुए हरम न गये (दैर) में क़याम किया
ख़ुदा ख़ुदा न किया हम ने राम राम किया
पढ़ी है देरे में तो यूं नमाज़ हम ने पढ़ी
बुतों को सजदा किया इश्क़ को अमाम किया
तड़प रहे हैं सरे राह चाहने वाले
दिखाके जलवाये दीदार क़त्ल आम किया
वह और होगा कोई हम नहीं हैं ऐ क़ातिल
लगाके ख़ून शहीदों में जिस ने नाम किया—सुए - -

P. 5340. ग़ज़ल क़व्वाली

क्या मिला तुम को मेरे इश्क़ का चर्चा कर के
तुम भी रुसवा हुवे आख़िर मुझे रुसवा करके
हर मर्ज़ के लिये ख़ालिक़ ने दवा पैदा की
मुझ को बीमार किया तुझ को मसीहा करके
मुझ पे तलवार का अहसान हुवा ख़ूब हुवा
मार डाला तेरी आंखों ने इशारा कर के
तुम ने की वायदे खिलाफ़ी यह नई बात नहीं
सब ही माशूक़ मुकर जाते हैं वायदा करके

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

ग़ैर का ज़िक्र वफ़ा छेड़ के जाते क्यों हो
ख़ाक में तुम मेरे अरमान मिलाते क्यों हो
जलवा अपना हमें छुप छुप के दिखाते क्यों हो

हम से परदा है तो फिर सामने आते क्यों हो
किस के मरने की तमन्ना में यह मांगी है मुराद
शमय मास्जिद में सरे शाम जलाते क्यों हो
हो चुकी शर्म उठालो रुखे रोशन से नक़ाब
ताली बे दीद से तुम आँख चुराते क्यों हो

—:०:—

P. 5537. **भैरवीं दादरा** पी० ५५३७

पिया मोहे दर्शन दिखाइयो कि नाहीं
कब से तुम्हारे प्यासे खड़े हैं
शराबन तहुरा पिलइयो कि नाहीं
करके दम सोरये अखलास पिला दे साक़ी
वह जो पीने में क़ल क़ल की सदा दे साक़ी
में वह कम ज़र्फ़ नहीं हूं कि जो भूलूं अहसान
भरदे सागिर तुझे अल्लाह जज़ा दे साक़ी
तू भी पी मैं भी पीऊं दोनों शराबी होजा यें
मैं पिलाऊं तुझे तू मुझ को पिलादे साक़ी
नशा चढ़ाता है सुराही से उतरतेही गिलास
चक्कर आजाये जो सागिर को घमादे साक़ी
हो मुझे पंजतन पाक की उल्फ़त का खुमार
पांच पियाले मुझे गिन गिन के पिलादे साक़ी—पिया - -

दूसरी तरफ़ :—

भैरवीं दादरा

जा मैं तोसे नाहीं बोलूं
बनाया खून को हमने शराब तेरे लिये
जिगर को हमने किया है कबाब तेरे लिये

खुदा के सामने में साफ़ साफ़ कह दूंगा
मिला है खाक में खाना खराब तेरे लिये—जा - -
सनद इस की नहीं क्यों देखते हो भर नज़र हम को
मज़ा तो जब ही आंखे फेरलो तुम देख कर हम को
तेरी नाज़ुक मिज़ाजी को अदू क्या खाक़ समझेगा
अर कुछ क़दर अपनी चाहता है याद कर हम को
बस अब जाने भी दो इसको यह सब किसमत की बात है
अदू के होलिये जब तुम यकायक भूल कर हम को—जा - -

P. 5664. **ग़ज़ल कव्वाली** पी० ५६६४

मसतों की तरह रंग नया लाये हुए हो
या साक़ी महफ़िल की तरह आये हुए हो
बहके हुए फिरते हो कि बह काये हुए हो
मस्तों की तरह दिल में मेरे छाये हुए हो
या तुम दिल बे खुद में जगह पाये हुए हो
ज़ुल्फ़ो की तरह खुद ही उलझ जाओगे देखो
काकुल की तरह आप ही बल खाओगे देखो
पछताओगे शर्माओगे ललचाओगे देखो
तुम दिल को मेरे फांस के फंस जाओगे देखो
बे तरह जो इस चीज़ से ललचाये हुए हो
गर सैर को जाते हो तो सामान भी लेलो
तनहा न चलो साथ में निगहबां भी लेलो
ईमान के तालिब हो तो ईमान भी लेलो
तुम जान के मालिक हो मेरी जान भी लेलो
क्यों दिल की तरफ़ देख कर ललचाये हुए हो—मस्तों - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

पर्दे में रहना यार का दुशवार हो गया
आलम तमाम तालिबे दीदार होगया
महशर में उस की शाने करीमी को देख कर
जो बे गुनाह था वह गुनहगार होगया—पर्दे - - -
काबे में भी ख़याल बुतों का रहा मुझे
मैं घर में भी ख़ुदा के गुनहगार होगया
क़ुर्बान जाऊं आप की तिरछी निगाह के
एक तीर था कि दिल के मेरे पार होगया—पर्दे - -

——:-०-:——

P. 5681. क़व्वाली पी० ५६८१

मैका छरतिया लगे तोरी प्यारी
न गुल से काम न बुल बुल से काम है मुझको
हमेशाह वरज़बां तेरा नाम है मुझ को
तेरा ही तज़करा बस सुबह व शाम है मुझ को
मैका छरतिया लगे तोरी प्यारी - - - -
छुरी वह लाये हैं आशिक़ की मुर्ग़ जां के लिये
ग़ज़ब की शाख़ निकाली है आशियां के लिये
ज़मीं को हम से ग़ुबार अस्मां है हम से ख़िलाफ़
न हम ज़मीं के लिये हैं न अस्मां के लिये
ख़ुदा जो पूछेगा क्यों जान दो जवानी में
दिखा के तुझ को कहूंगा कि इस जवां के लिये—मैका - -

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

नबी जी सूरतिया दिखानी पड़ेगी—लगी आग तन की बुझानी पड़ेगी
निगाहे कर्मसे इधर भी तो देखो - यह बिगड़ी तुम्ही को बनानी पड़ेगी

मेरा ख़ाना दिल होता जाता है वीरां - यह बस्ती तुम्हीं को बसानी पड़ेगी
सवा नेज़े पर जब हो ख़ुर्शीद महशर - तो दामन में उम्मत छिपानी पड़ेगी
बुरो से बुरी हैं गो उम्मत तुम्हारी—मगर आप को बख़शवानी पड़ेगी नबी - -

P. 5848. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ५८४८

तन तन के दस्ते यार में शमशीर रहगई
ग़ुल था कि मौत हो के बग़ल गीर रहगई
महवे नज़ारा खींचने वाला ही रह गया
पर खिंचते खिंचते यार की तसवीर रह गई
दूल्हा बना था मैं जो शहादत के शौक़ में
घूंघट से मुंह निकाल के शमशीर रह गई
ग़ैरों से शाद हो के मिलो तुम ख़ुदा की शान
मेरे गले से मिलने को शमशीर रह गई—तन - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

यूं ही जुदा जुदा गर ऐ जान मन रहेगा
सर सब्ज़ किस तरह फिर दिल का चमन रहेगा
साये की तरह हम भी होंगे जुदा न उन से
कुंज लहद में क्यों कर बे जान व तन रहेगा
भूले से तुम जो आना ठोकर लगा के जाना
लाशा वहीं हमारा जो बेकफ़न रहेगा
मरने के बाद तकिया होगा न कोई बिस्तर
मिट्टी के बिस्तरे पर तेरा बदन रहेगा
ऐ रूह की वह ज़ीनती बेकार है बशर को
मरने के बाद तन पर सादा कफ़न रहेगा—यूंही - - -

5928. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ५९२८

मोहम्मद की अल्लाहवाली कमलिया
अनोखी कमलिया निराली कमलिया
वह शाने नबुव्वत वह अज्ज़ तबियत
जहां जी में आई बिछाई कमलिया—मोहम्मद - - -
रसालत के दरया को तेरा क एक निकली
किनारे लगा देने वाली कमलिया
मुझे भी छिपालो मुझे भी उढ़ालो
सरे हश्र सुलतान आली कमलिया—मोहम्मद - - -
वह बेताबियां हिज्र की मिट गईं सब
कलेजे से जिस दम लगाई कमलिया
मिसाल उसकी दुनिया में क्योंकर मिलेगी
कि है आइना बेमिसाली कमलिया—मोहम्मद - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

कब हैं दरख़्त रोज़ये वाला के सामने
मजनूं खड़े हैं खेमये लैला के सामने
कह दीजियो सबा मेरी हालत ज़रा ज़रा
जाना हो गर तेरा मेरे आक़ा के सामने
एक इक बख़शवाये गे महशर में हक़ से वह
यूसुफ़ की बन पड़ेगी ज़ुलेखा के सामने
जलवे के देखने के लिये होश भी तो हो
रुख़ से नक़ाब उठा दिया मूसा के सामने—कब हैं - -

——:-०-:——

P. 5945. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ५९४५

वही देता है ख़ुदा दिल से जो बन्दा मांगे
चाहे अक़बी कोई मांगे कि वह दुनियां मांगे
मांगने वालों ने अल्लाह से क्या छोड़ दिया
यह दिल ग़मज़दा अब तेरे सिवा क्या मांगे
मुझ को क्या दे गये रे ओ मेरे देने वाले
तुझ से गर तुझको तेरा चाहने वाला मांगे
अपने मक़सूम से ज़ायद नहीं पाता कोई
मांगने वाला भला तेरे सिवा क्या मांगे
उस से मिलने की दुआ हिज्र में यूं मांगते हैं
जिस तरह प्यास में पानी कोई प्यासा मांगे

P. 6123. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६१२३

या तो ऐसी महरबानी थी वह या कुछ भी नहीं
इबतदा ही इबतदा थी इनतहा कुछ भी नहीं
देख कर तसवीर यूसुफ़ कह दिया कुछ भी नहीं
आप ही सब कुछ हैं गोया दूसरा कुछ भी नहीं
सैकड़ों दी झिड़कियां मुझ को हज़ारों गालियां
और फिर कहते हैं हमने तो कहा कुछ भी नहीं
अपने दम को आदमी हर दम गनीमत जान के
देर है फिर ख़ाक का बाद फ़ना कुछ भी नहीं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

मिलना था जो मिल जाते इस नूर मजर्रद से
क्यों जाके पलट आये दर्बार मोहम्मद से
मैं ने तो मोहम्मद के रोज़े पे ख़ुदा देखा

अल्लाह की आवाज़ें आईं किसी मरक़द से
अल्लाह के पल्ले में वहदत के सिवा क्या है
जो कुछ मुझे लेना है ले लूंगा मोहम्मद से
मरक़द पे तुम उसके चूप चाप चले जाओ
तुमने जो मुझे छेड़ा कह दूंगा मोहम्मद से

P. 6246. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६२४६

ठैर जावो अजमेर के जाने वालो - कि मेरे लिये भी तो रास्ता निकालो
अगर मैं न पहुंचू तो ख़्वाजा से कहना - कोई मर रहा है उसे भी बुलालो
ख़ुदा की खुदाई में ख़्वाजा बनेहो - तो बंदों को उस के ज़रा देखो भालो
यह उर्स मुबारिक यह ख़लक़्तख़ुदाकी - मुझे आज अजमेरमे बेच डालो
कहांतक करे मस्त अब ख़्वाजा ख़्वाजा - सताओगे कबतक उसे मार डालो

दुसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

याद क़दे नबी में मेरा दम निकल गया - सरसे मेरे अज़ाब क़यामतका टलगया
नूर ख़ुदाके नूरसे आलम हुआ है नूर-आये नबी तो दुनियांका नकशा बदल गया
क्या ख़ाक उस को नार जहन्नुम जलायेगी
जो आतिश फिराक़ मोहम्मद में जल गया
उफ़्ताद मेरे सरप कोई आके जब पड़ी
मुशकिल कुशा का नाम लिया और संभल गया

P. 6313. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६३१३

बस एक ही जलवे में हम बन गये शेदाई
जी भर के न देखा था होने लगी रुसवाई

करता है हया जब तक ओ पर्दानशीं करले
महशर में तो देखेंगे तुझको तेरे शेदाई
मारो भी जिलाओ भी आसान है सब तुम को
आंखों में हलाहल है होंटोंप मसीहाई
आशिक़ से हया करना माशूक़ प मर मिटना
क्या ढब है लगावट का उफ़रे तेरी चतराई
किस वास्ते मूसा को ज़िद तूर प पूरी की
दिखलाके झलक आख़िर किस की हुई रुसवाई

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

जो रुख़सार शहपर नज़र जायेगी
गुलों से तबियत उतर जायेगी
जो ज़ुल्फ़ पयम्बर बिखर जायेगी
मो अत्तर दो आलम को कर जायेगी
ज़ुलेख़ा अगर देख ले आप को
न यूसुफ़ प उस की नज़र जायेगी
कमर जब शफ़ाअत प बांधेंगे आप
तो जन्नत सब उम्मत से भर जायेगी
इधर कुये अहमद उधर है बहिश्त
बता रूह जल्दी किधर जायेगी - जो - - -

—:०:—

P. 6331. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६३३१

उस दिल का पूछना क्या जिस दिल में तुही तुहै
तू ख़ुद ही जानता है जो मेरी आरज़ू है

अल्लाह रे जज़्ब कामिल उफ़ उफ़ रे यह तसव्वर
मैं तेरे रूबरू हूं तू मेरे रूबरू है
बेकस की आस तोड़ो लेकिन ज़रा समझ कर
ला तक़नज़ु को देखो यह किस की गुफ़्तगू है
साक़ी के पांव पर हम ग़श खाके गिर पड़े हैं
इस बे ख़ुदी के सदक़े दिल आज क़िब्लारू है

दूसरी तरफ़ :— भीम पलासरी

किस केख़िरामे नाज़ ने क़ब्र में दिल हिला दिया
चैन से सोरहा थामैं किस ने मुझे जगा दिया - किस - - -
पूछान जीते जीकभो दर्द जिगर का माजरा
क़ब्र पर अब वह आये हैं ख़ाक में जब मिला दिया
तुम तो अदूप जान दो करते हो मुझ से दिल तलब
अब तुम्हें दिल से क्या ग़रज़ तुम ने तो दिल जला दिया-किस - -

—:०:—

P. 6358. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६३५८

दिल में आता है कि वह सुये जिगर जाता है
देखिये आज तेरा तीर किधर जाता है
क्या कहूं छुप के वह आंखों से किधर जाता है
शीशये दिल में परी बन के उतर जाता है
इस तरह याद तुम्हारी मेरे दिल में आई
जिस तरह तोर कलेजे में उतर जाता है
इश्क़ करना हो जिसे सीखले पर्वाने से
जी से जाता है मगर नाम तो कर जाता है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

बला तेरी ज़ुल्फ़ो के काले हुए हैं - यह दो सांप चोटी के पाले हुए हैं
जुदाई के सदमों को टाले हुए हैं - चले जाओ हम दिल सभाले हुए हैं
मैं उनको करूं सजदा क़ुदरत ख़ुदाकी-बहुत ऐसे बुत देखे भाले हुए हैं
किया ख़ानाये दिल में घर इन बुतोंने - यह काफ़िर भी अल्लाह वाले हुए हैं
ज़रा आइने में तो मुंह देख रखिये - बड़े आप दिल लेने वाले हुए हैं
अक्स दून की हम से लेता है गर दूं - इसी चांद के हम भी हाले हुए हैं

P. 6480. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६४८०

कौन कहता है निगालेगें वह हसरत मेरी
न मरव्वत उन्हें मेरी न मुहब्बत मेरी - कौन - - -
सच है अहसान का भी बोझ बहुत होता है
चार फूलों से दबी जाती है तुर्बत मेरी
तुम जफ़ा मुझ प करो ज़ुल्म करो क़त्ल करो
मैं यही मुंह से कहे जाऊंगा क़िसमत मेरी
वह पये फ़ातहा आये मेरी क़िसमत देखो
इस क़दर फूल चढ़े छुप गई तुर्बत मेरी
प्यार से तुम ने किसी दिन न लगाई ठोकर
इसी सदमे से मिटी जाती है तुर्बत मेरी

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

बुत में भी तेरा यारब जलवा नज़र आता है
बुत ख़ाने के पर्दे में काबा नज़र आता है

साक़ीके तसव्वर में दिल साफ़ हुआ ऐसा
जब सर को झुकाता हूं शीशा नज़र आता है

एक क़तरा मय जब से साक़ी ने पिलाया है
उस रोज़ से हर क़तरा दरया नज़र आता है

माशूक़ के रुतबे को महशर में कोई देखे
अल्लाह भी मजनू को लैला नज़र आता है

———:(-०-):———

P. 6515. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६५१५

इशतियाक़ दीद जब हद से सिवा हो जायेगा
सामने आंखों के वह जलवा नुमा हो जायेगा
क्या कहूं ऐ दिल ख़ुदी खोकर तू क्या हो जायेगा
वासिले हक़ होगा बंदे से ख़ुदा हो जायेगा
मेरी क़िस्मत में अज़ल से है यही लिखा हुआ
मैं जिसे चाहूंगा वह मुझसे ख़फ़ा हो जायेगा
हाय आकर के गये वह कान में पर्दे की बात
मैं तेरा हो जाऊंगा जब तू मेरा हो जायेगा

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

तुम हो कि कोई और है जो यां मेरे दिल का
लिल्लाह उठा दीजिये पर्दा मेरे दिल का
बुतख़ाना बुतों को है ख़ुदा के लिये काबा
क्या शेख़ व ब्रह्मण में है झगड़ा मेरे दिल का
काबा है कि बुतख़ाना है कुछ है तुम्हें क्या काम
अल्लाह को मालूम है रुतबा मेरे दिल का

मालूम नहीं तुम को अभी इश्क़ की घाते
दिल में रहे पर चोर न पकड़ा मेरे दिल का - तुम - -



P. 6536. भैरवीं पी० ६५३६

तेरे मरने वाले तडपते नहीं हैं—हटे इमतहानों से ऐसे नहीं हैं
ख़ुदा क्या जो आजाये फ़ौरन समझमें—जो समझे हैं तुझको वह समझे नहीं
इलाही बुलाले मुझे भी अदम में—कि दुनियां के बर्ताव अच्छे नहीं हैं
अज़ीजों से क्या एक उम्मीद रक्खूं—जो गरजे हैं या रब वह बुरे नहीं हैं
ख़्यालों के उलझन में मैं मुब्तला हूं—तेरी ज़ात के कोई झगड़े नहीं हैं

दूसरी तरफ़ :— जोगिया

जो रैन सपने में एक बालम मुझे सखी री नजर पड़ा था
अजब ही मन मोहनी थी सूरत निराली सज धज बना रहा था
असाये इन्नाफ़तहन्ना लेकर सदाये इन्नी रसल देकर
संभाल कर लफ़्केला की धुन को वह मुख से मुरली बजा रहा था
मैं तेरे जोबन की धूम सुन कर फिरूं थी बन बन जोगनियां बन कर
कभी पुकारूं थी या मोहम्मद कभी ज़बां पर ख़ुदा ख़ुदा था
अरब का बाशी अहद का प्यारा ज़बां पर था उम्मती का नारा
कमर में पटका जो मीम का था वह नाम अहमद बता रहा था



P. 6600. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६६००

फिर निगाह आप की बिजली न गिराये कोई
देखिये देखिये फिर लौट न जाये कोई

अपना परवाना बना कर मुझे वह कहते हैं
बे बुलाये मेरी महफ़िल मैंन आये कोई
मैं दुआ दूं तुझे क़ातिल तू मुझे क़त्ल करे
हाथ उठाये कोई तलवार उठाये कोई
दिल में पैदा हो जलन आंखों से आंसू हों रवां
पानी बरसाये कोई आग लगाये कोई-

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

मैं ने चाहा जो तुम्हे इसका गुनह गार तो हूं
मगर इतना तो समझलो कि वफ़ा दार तो हूं-मैं- - -
उमर भर आपने मुझको कभी अच्छा न कहा
ख़ैर अच्छा न सही आप का बीमार तो हूं
अभी क्या जाने कोई मुझ को तुम्हारा शैदा
कोई दिन और भी रुसवा सरे बाज़ार तो हूं
ताब नज़ारये अनवार तजल्ली न सही
मेरी हिम्मत है किमैं तालिबे दीदार तो हूं
दाग़ मरने नहीं देता मुझे रशक अग़ियार
वरने मर जाऊं अभी जान से बेज़ार तो हूं - मैं - -

P. 6659. ग़ज़ल भैरवीं पी० ६६५६

दू है तो तेरे तालिबे दीदार बहुत हैं - यूसुफ़ है सलामत तो खरीदार बहुत हैं
मनसूरके मानिन्द तरहदार बहुत हैं - हक़ एकका है कहनेको हक़दार बहुत है
फिर जाये ख़ुदाई तो बुतों से न फिरें हम - पत्थरमें भी अल्लाह के असरार बहुत हैं
ज़ंजीर है एक और कई लाख हैं क़ैदी - आशिक़ तेरे गेसू में गिरफ़्तार बहुत हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

बदली नज़र उधर तो इधर भी बदल गई
मेरी और उन की आंखों ही आंखों में चल गई - बदली - -
सुबह वसाल कहते हैं हसरत निकल गई
कहिये हजूर अब तो तबियत संभल गई
फ़रक़त की शब लगी थी पलक से पलक ज़रा
आकर तुम्हारी याद कलेजा मसल गई
तौबा तो कर चुका था मैं ऐ शेख़ क्या करूं
काली घटा को देख कर नियत बदल गई-बदली - -

P. 6682. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६६८२

पूछा जो किसी ने अहक़र ने क्यों तर्ज़ सुख़न को छोड़ दिया
बोले कि गया जब मौसमे गेल बुल बुल ने चमन को छोड़ दिया
चौंके न किसी दिन ख़ुबाव से हम ग़फ़लत, में गुज़ारी सारी उमर
ऐ वाय ग़ज़ब कब आंख खुली जब रूह ने तन को छोड़ दिया
आते हैं अजब अंदाज़ से वह डाले हुए रुख़ पर बालों को
ज़ुल्फ़े जो हटी इक शोर हुवा सूरज ने गहन को छोड़ दिया
अब आंख किसी पर क्या डालें नज़रों में कोई जचता ही नहीं
आंखों प तेरी सदक़ा करके जंगल में हरन को छोड़ दिया - पूछा- -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

क्या काम करके दिल से तसव्वर निकल गया
ऐनुल यक़ां का वहमोगुमां से बदल गया
दो चार मयकशों में जो कल दौर चल गया

पगड़ी के साथ शेख़ भी हाथों उछल गया

बेहोश हो चला था मैं उल्फ़त का पीके जाम

खाकर तमांचा इश्क़ का लेकिन संभल गया

तौबा के तोड़ने की ज़रूरत थी तोड़ दी

अपना तो एक जाम से मतलब निकल गया

आशिक़ की ज़िंदगी का भी है कोई एतबार

बस देखते ही देखते पर्वाना जल गया - क्या - - -



P. 6962. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६९६२

मर्ज़ इश्क़ की दवा भी है—मुझ में देखो तो कुछ रहा भी है

कुछ जफ़ा भी है कुछ वफ़ा भी है—दिललगी का यही मज़ा भी है

कभी पूछा न आज तक उसने—कुछ तेरे दिल में मुदुआ भी है

देख कर दिल को पूछते हैं वह—इस मकां में कोई रहा भी है

हां ज़रा फिर क़सम तो खाली लिजे—आज कल झूठ में मज़ा भी है

मर्ज़ इश्क़ की दवा भी है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

न मर्ज़ कुछ है न आसेब न साया हम को

यक परीज़ाद ने दीवाना बनाया हम को

हाय क़दमों से भी इक दिन न लगाया हम को

ध्यान में ख़ाक बराबर भी न लाया हम को

हम मरें भी तो न उनको हो यक़ीने उल्फ़त

नीमजां जिस की मुहब्बत ने बनाया हम को

देखिये ख़ाक में हम मिल गये मानिन्द तरक

आपने किस लिये आंखों से गिराया हम को

आज तक बात वह याद आके गला घोंटती है

वक़्त रुख़सत जो गले उसने लगाया हम को

——0——

P. 6985. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६९८५

मेरी क़ब्र प दो फूल डालते जाओ

किसी ग़रीब की हसरत निकालते जाओ

बुरा भला वह रक़ीबों से मुझ को सुनवायें

और उस प यह भी है ताकीद टालते जाओ

पते पते की सुनो मुझ से अब ज़रा सच सच

तुम्हें ख़ुदा की क़सम तुम झटालते जाओ

मुझे निकाने आये हो अपने कूचे से

निकलने वाले को दोज़ख़ में डालते जाओ

इलाज करते हो अब दर्द इश्क़ का ऐ दाग़

कहा था किस ने कि यह रोग पालते जाओ

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

कोशिशें बेकार हैं जब आदमी मजबूर है

हां वही होकर रहेगा जो तुझे मंज़ूर है

तेरे चेहरे पर नज़र जमती नहीं क्या सबब

आदमी है या हूर है या सरापा नूर है

दिल दुखा आंसू निकल आये कलेजा हिल गया

ऐ ख़याले यार क्या तेरा यही दस्तूर है

बैठजा ओ दम भर अरे बे मरव्वत बैठ जा

क्या मेरे हाथों से कुछ दामन भी तेरा दूर है

खिचने वाले मस्त से इतना ग़रूर अच्छा नहीं

तू अगर दूर क्या तुझ से ख़ुदा भी दूर है

P. 7020. भैरवी पी० ७०२०

कमली वाले ने जादू डाला है रे

सांवरी सूरत मोहनी मूरत वह तो ओढ़े कमली काला है रे—हां -

ऐ मनमोहन यशरब धनी क़ौशीन के राजेश्री

चन्द्र मुकट सूरज बदन निरंकार ज्योति मनहरी

है कौन सा ऐसा हसीं तुझ से करे जो हमसरी

ऐ चहरये ज़ेबाये तू रश्क बुतां आज़री

हर चन्द व सिफ़त मी कुनम दरे हुस्न ज़ां बांलातरी—कमली - -

दर्शन को तुमरे रूप के ख़ालिक़ का जब चाहत भई

कौसीन में तुम को बुला खोल ओट मुख से मैयम की

वह तो हुआ तो वह हुआ आपस में फिर यह बात भई

मन तो शुदम तो मन शुदी मन तन शुदम तू जान शुदी

ताकस न गोयम बाद अजीं मन दीगरम तू दीगरी—कमली - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

मख़दूम अली साबिर तोरी कलियर की नगरिया आंखों में बसी है

पुरविया हूं बहुत लीजिये पिया मारी ख़बरिया अब जान चली है—मख़ -

नैनां तोरी मतवाली पिया दिलमें उमगं है यह सावरी रंग हैं

अब क्यों न मैं इतराऊं सखी मारी चूंदरिया साबिर ने रंगी है

द्वारे जो तोरे आऊं दिये घी के जलाऊं बिपता को सुनाऊं

ख़ुश होके चढ़ाऊं तोरे रोज़े प चदरिया यह मनमें बसती है—मख़दूम - -

P. 7038. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ७०३८

है सद फ़ना जो हदफ़ तीर नज़र है

चीरो मेरे सीने को तो दिल है न जिगर है

सुनते हैं कि हर सिम्त नज़ारा है उसीका

जो आगे न पीछे न इधर है न उधर है

शरम आती है कहते हुए आशिक़ हूं किसी का

नालों में न तासीर न आहों में असर है

लग़ज़िश हुई जब हज़रत आदम से बशर को

आसी को बुरा क्यों कहो वह भी तो बशर है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

वाअज़ बड़ा मज़ा हो अगर यूं अज़ाब हो

दोज़ख़ में पांव हाथ में जामे शराब हो

माशूक़ का तो जुर्म हो आशिक़ ख़राब हो

कोई करे गुनाह किसी पर अज़ाब हो

साक़ी हमारे जाम में क्या बाल पड़ गया

ऐसा नहो कि ग़ैर की झूठी शराब हो

महबूब की दुआ को शबे क़द्र चाहिये

यूसुफ़ के देखने को ज़लेख़ा का ख़्वाब हो—वाअज़ - -

P. 7105. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ७१०५

बदमस्ती शबाब में फ़िक्र मआल क्या
ऐसे में सूझता है हराम हलाल क्या
मिल जाये मुफ़्त है यह तुम्हारा सवाल क्या
दिल को समझ लिया किसी मुर्दे का माल क्या
जो आये तो हज़रत ज़ाहिद यह जानिये
जिन्नत का हाल क्या है जहन्नुम का हाल क्या
पत्थर के बुत को लाख बनाये कोई हसीं
जब जान ही नहीं है तो हुस्न जमाल क्या
दिल मांगते नही मुझे मोहताज जान कर
सच है करे फ़क़ीर से कोई सवाल क्या - बद - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

उड़ते हैं होश अबरूये दिल बर के सामने
क्या मुंह किसी का क्या जो आये खंज़र के सामने
साक़ी अगर मैं जाम से महरूम रह गया
शिकवा करूंगा साक़ी कवस्सर के सामने
गो ज़ख़्म खाचुका हूं मगर जो नहीं भरा
जाना पड़ेगा फिर मुझे ख़ंजर के सामने
तुम सख़तियां करो तो क्यों न हो दिल चूर चूर
शीशे की क्या बिसात है पत्थर के सामने - उड़ते हैं - -

—:-०-:—

P. 7216. भैरवीं पी० ७२१६

पिया तोरे कारन मैं तो जोगन भई
अरे जोगन भई रे बिरोगन भई—पिया तोरे कारन - - -

इज़्ज़त खोई अरे लाज गंवाई
अपने बेगाने से दुशमन भई—पिया तोरे कारन - - - -

दोहा :—आह करू तो जगजले और जंगल जल जाय
यह पापी जियारा न जले कि जामें आह समाय
परदेसो की पीत को सब का मन ललचाय
वामें इतना खोट है रहे न साथ ले जाय
पिया तोरे नगर में मोरी आदर करे न कोय
सब सखियां मांहे दुर दुर करें मैं मुड़ देखूं तोय

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

मुख प डारे चूंदरिया चलन की बेरिया
न कुछ सीखो गुन ढंग गोया न कुछ सीखो चतुराई
सास ननदिया ताना दीहैं बलमा तो रखनाई
चलने की तयारी करो अब तुम क्यों देर लगाई
बारे बलम की चार कहर्वा डोलिया लेकर आई
खोट कपट मत सरोहरा कि मंज़िल बड़ी दूर
नेकी करले साथ लो कि पूंजी हो भर पूर

—:-०-:—

P. 7242. भीम पलासरो पी० ७२४२

ख़ास दस्त ख़ुदा का संवारानबी - आसमान रसालत का तारा नबी
नूर ज़ात अहद आलम आरायनबी - ख़ातिम मुह्रा नबिया हक़ का प्यारा नबी
वह नबी कौन यानी हमारा नबी
सब से पहिले पैयम्बर थे आदम सफ़ी - किसी को याद उन के नबूवत मिली
फिर इसी तरह नौबत रसालत की थी - क़ुरान बदली रसूलों की होती थी
चांक बदली से निकला हमारा नबी

हक़ने सबको दिया मोअजज़ा एक एक-सबने ज़ाहिर किया मोअजज़ा एक एक
सबसे सादिर हुआ मोअजज़ा एक एक-हर नबी को मिला मोअजज़ा एक एक
मअजज़ा बन के आया हमारा नबी-ख़ास दस्ते ख़ुदाका सवारा नबी

दूसरी तरफ़ :— **भीम पलासरी**

तौहीद भी रोशन है उस नूर मुजरदसे
ख़ाली न फिरा कोई दर्बार मोहम्मद से
मूसा से कोई पूछे जाते हो कहां सुन लो
कुरान के पर्दे में बात है मुहम्मद से
जो कुछ मुझे लेना है जो मुझे कहना है
अल्लाह से कह कह कर ले लूंगा मोहम्मद से
यह रम्ज़ ख़ुदाई है अग़ियार न समझेंगे
अल्लाह तो देता है मिलता है मोहम्मद से

——:-०-:——

P. 4669. **ग़ज़ल क़व्वाली** पी० ४६६९

किया दुज़दीदा निगाहों से इशारा किस ने
मलकुल मौतके माथे गई मारा किस ने
दावरे हशर मेरे क़त्ल का अरसा गुज़रा
मुझ को मालूम नहीं है मुझे मारा किस ने
आलिमुलग़ैब है तू मुझ से सरे हश्र न पूछ
मैं ज़बां से न कहूंगा मुझे मारा किस ने
अज़ल तुम आज कहां जाम सब लेके चले
सच बताओ तुम्हें शीशे में उतारा किस ने - किया - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल क़व्वाली**

बदल बदल के रक़ीबों का नाम लेते हैं
वह अपने आप ही लुत्फ़े कलाम लेते हैं
वह छेड़ छाड़ के मुझ से मुदाम लेते हैं-बदल - - -
कि दोनों हाथों से मेरा सलाम लेते हैं-बदल - -
ख़ुदा हो दोस्त तो दुशमन भी दोस्त होता है
रक़ीब उन से मेरा इंतक़ाम लेते हैं
किया है नाक में दम वाअज़ा ने क्या कीजे
ग़ज़ब है दीन का दुनिया में काम लेते हैं -बदल - -

P. 7445. **सलाम** पी० ७४४५

सलामी शाह की इमदाद को सारी ख़ुदाई थी
मगर मंज़ूर हज़रत को रज़ाये किबरियाई थी
गला खंजर से काटा शिमर ने किसी रहबरदीं का
सरे गुमराह में क्या वह गुमराही समाई थी
इधर क़तरा उधर दरिया इधर तनहा उधर लाखों
अकेले थे इधर सरवर उधर सारी ख़ुदाई थी
रन में कहते थे लोइनों से शाह तशना दहन
बन्द पानी जो किया तुम ने तो क्या होता है
अरे मेरे मुंह में तो मोहम्मद को जबां का है असर
शजर ख़ुश्काप थूको तो हरा होता है
इधर क़तरा उधर दरिया इधर तनहा उधर लाखों
अकेले थे इधर सरवर उधर सारी ख़ुदाई थी-सलामी - -

दूसरी तरफ़ :— सलाम

आंखों से तेरे ग़म में आंसू बहा दिये हैं-

दो किश्तियों मे भर कर मोती लुटा दिये हैं

महबूबके नवासे यूं हो सहीद पियासे-अरे कौसरके जाम जिसने लाखोंलुटा दिये हैं

अल्लाह रे यह हिम्मत देखो बराये उम्मत-मैदान करबलामें सरको कटा दिये हैं

सलाम उस को जो दुल्हा बना था रन के लिये-

टपकते आंसू थे सेहरे तले दुल्हन के लिये

सफ़र में रहती थी हर दम जो याद छ़ारा की-

हुसैन रोते थे दो दो पहर वतन के लिये

किया था वायदा जो बचपन मे मारे जाने का-

गला कटा दिया आख़िर उसी सख़ुन के लिये

जनाब हक़ से जिसे हुल्ल ये बहिश्त मिले-

हज़ार हैफ़ वह मोहताज हो क़फ़न के लिये

मह बूब के नवासे यूं हों - - - कौसर के जाम जिस - - - -

P. 7480. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ७४८०

ऐसा फूंका है दिल की लगी ने मुझे

लगे रो रो के आने पसीने मुझे

बे करारी मेरी एक आफ़त हुई, किया बदनाम तेरी गलीने मुझे

रुख़सत ऐ शोमी बख़्त जाता हूं में

है बुलाया नबी ने मदीने मुझे

दिल उस की तमन्ना से अबाद है

किया बर बाद जिस की लगी ने मुझे

फिर सताता है रह रह के हिज्रे नबी

आज पहुंचादे यारब मदीने मुझे—ऐसा फूंका - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

यह दिल लगी भी क़यामत की दिल लगी होगी

ख़ुदा के सामने जब मेरी आप की होगी

तमाम उम्र बसर यूं ही जिंदगी होगी

ख़ुशी में रंज कभी रंज में ख़ुशी होगी

तेरी निगाह का लड़ना मुझे मुबारिक हो

यह जंग वह है कि आख़िर को दोस्ती होगी

सलीक़ा चाहिये आदत है शर्त इस के लिये

अनाड़ियों से न जिन्नत मे मय कशी होगी

बहुत जलायेगा हूरो को दाग़ जन्नत में

बग़ल में उस के वहां हिंद की परी होगी

यह दिल लगी भी क़यामत की दिल लगी होगी

——:——

P. 7602. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ७६०२

पहलू में बैठकर कोई पुरसान हाल है

ऐ दर्द उठ के कह दे तबियत बहाल है

तुम ख़ुद न हो असीर कहीं मुझ को फांस कर

दिल में समा के दिल से निकलना मुहाल है

कहदो यह कोह कन से कि मरना नहीं कमाल

अरे मर मर के हिज्र यार में जीना कमाल है

अरे बुत कह दिया जो मैंने तो अब बोलते नहीं

अरे इतनी सी बात का तुम्हे इतना मलाल है-पहलू - -

दूसरी तरफ़ :— गज़ल क़व्वाली

तेरे ग़म में रोते रोते हुआ खून पानी पानी
बस अब और क्या सुनाऊं अरे शबे हिज्र की कहानी -तेरे - -
अरे मेरे दुशमनों से क्यों तुम मेरे हाल के हो पुरसां
मेरी दास्तां हो सुनना अरे तो सुनो मेरी ज़बानी - - -
अरे न सही विसाल लेकिन हो विसाल का सहारा - - -
मुझे अपने हाथ की तुम अरे कोई भेज दो निशानी - - -
अरे कभी बात कीन हंस के मुझे उमर भर रुलाया - -
न मिला कभी वह दिल से अरे मिली खाक में जवानी - - तेरे

P. 7671. पीलू पी० ७६७१

अपना रोज़ा दिखा कमली वाले मुझे
तरसती हैं ज़ियारत के लिये हर दम मेरी आंखें
रहा करती हैं हिज्रे यार में पुरनम मेरी आंखें
हिन्द से छये तैबा बुलाले मुझे
तमन्ना है कि चूमूं रोज़ये आली को आंखों से
लगाऊं शौक़ में हर बारमें जाली को आंखों से
अरे यह तमन्ना है मौला बुलाले मुझे
अरे शहीदी की तरह से देदूं जाकर जान रोज़े पर
कि पूरे हों दिले बेताब के अरमान रोज़े पर
दे रहा है फ़ल्क टाले बाले मुझे
अरे कभी वाग़ मदीने की हवस करती नहीं दिल से
फ़जूं नाले नहीं क्यों कर मेरे शोर अना दिल से
अरे या मदीने बुलाया उठाले मुझे-अपना - -

दूसरी तरफ़ :— गज़ल क़व्वाली

अल्लाह का जलवा बन्दों को दिखला दिया कमली वाले ने
जो चांद छिपा था बादल में चमका दिया कमली वाले ने
मय खाना गिरा बुतख़ाना उठा बुत ख़ाना पलट कर काबा बना
जो पर्दा पड़ा था जहालत का उठवा दिया कमली वाले ने
मुशरक था कोई काफ़िर था कोई मोमिन का पता दुनिया में न था
तौहीद का नुक़्ता उलझा था सुलझा दिया कमली वाले ने
कांधे प बिठा के घर से चले ऊंटों की तरह बोली बोले
हसैन का रुतबा आलम को दिखला दिया कमली वाले ने

—:-०-:—

P. 7721. दादरा पी० ७७२१

मैं जान गई हो बालम तोरी चतुरैयां
तुम भी क्या झूठ बका करते हो तौबा तौबा
वायदा हर रोज़ किया करते हो तौबा तौबा
मुझ को फ़िक़रे ही दिया करते हो तौबा तौबा
छुप के गैरों से मिला करते हो तौबा तौबा - मैंजान
हम तो रोते हैं तड़पते हैं पुकारते हैं
आप दिन रात रक़ीबों में मजा करते हैं
जब कभी आते हैं इक हश्र बपा करते हैं
बस वहीं रहिये जहां आप रहा करते हैं - मैंजान - - -
छेड़ हर वक्त की अच्छी नहीं है याद रहे
अजी मालूम है यह सारी हक़ीक़त मुझ को
मस्त के वास्ते मुझ से न मिलो तौबा करो
मुंह न खुलवाओ मेरा ज़िदन करो जाओ हटो - मैंजान - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा पीलू

समझलो तेरी अदा को बनो न तुम क़ातिल
निगाहे नाज़ से करते हो क्यों मुझे बिसमिल

यह शेवा खूब नहीं है यह ज़ख़्म है बातिल
तड़प रहा है यहां ख़ुद ही ज़ख़्म खाया दिल

बान मारो न - - -
सतारहे हो दूतरफ़ा ग़म से क्यों मुझ को
मिला रहे हो अरूस अदम से क्यों मुझ को
गिरा रहे हो निगाह करम कर क्यों मुझको
हलाक करते हो तेरो करम से क्यों मुझ को
संभल संभल के निगाहों के वार करते हो
बदल बदल के सितम अख़्तियार करते हो

P. 7863. भैरवीं पी० ७८६३

अरे चार दिना है इसमें बसेरा दुनिया झूठी है - - - - -
अरे हस्ती से जो कि बार सफ़र का उठाये है
अरे वह कुछ न कुछ निशानी यहां छोड़ जाये हैं
कोई तो बाग़ वहरे मुसाफ़िर लगाये हैं
पुख़्ता कुआं किसी का किसी की सराय है
अरे मरकज़ में ख़ुद तो चल दिये आराम के लिये
छोड़ा निशां अपनां फ़क़त नाम के लिये—दुनियां - - - -
कोई कहता है कि यह सारा ज़माना है मेरा
कोई कहता है कि यह ख़्वेश यगाना है मेरा
कोई कहता है कि आलिम का ख़ज़ाना है मेरा

अरे यह किसी ने कहा गोर ठिकाना है मेरा
कुछ बजुज़ गोर भला हाथ लगा है किस को
मौत के हाथ से छुटकारा मिला है किस को—दुनियां - - - - -

दूसरी तरफ़ :— भैरवीं

वह मुझ को रोज़न से झांकते हैं जो हम सरे राह चल रहे हैं
सवारी ठंरी है रास्ते में अज़ीज़ कांधे बदल रहे हैं
चले जवानी में हम अदम को रक़ीब भी हाथ मल रहे हैं
सफ़र हो किस तरह से मुबारिक सभों के आंसू निकल रहे हैं—वह - -
अरे शब को जा निकला था इक दिन मैं मज़ार दोस्त पर
इस जहत से मिसल अब आंखें मेरी ख़ूंबार हैं
क़ब्रपर अलहमद पढ़ कर दोस्त के मैं ने कहा
हम गरेबां चाक मातम हैं तेरे ऐ यार हैं
और तू भी है कुछ शाहवज़ीर ख़ाक ऐ नाज़ुक बदन
शमय रोशन हैं गुलों के क़ब्र पर अम्बार हैं
क्या हुआ मरने के बाद ऐ राहिये मुलके अदम
किस तरह के लोग हैं वां यार क्या अतबार हैं
फूल हैं किस रंग के पत्ते हैं किस अन्दाज़ के
मुर्गों ज़रीं बाल हैं या पर उन बरी मन क़ार हैं
क़ब्र से आई सदा ऐ दोस्त बस ख़ामोश रह
हम अकेले हैं यहां अहबाब न अग़ियार हैं
फूल कैसा बाग़ कैसी अक़्ल तेरी है कहां
कुंज तनहाई है औ यार गले के हार हैं
वह हमारा पैकर नाज़ुक जो तुझ को याद है
आज ख़ाक क़ब्र से उन पर मनो के बार हैं

बस ज़्यादा बात कर सकते नहीं लें घर को जा
दिल में अज़ुरदा न हो क्या करें लाचार हैं—वह - - - -

P. 8042. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ८०४२

उस ने कहा मैं क्या करूं मैं ने कहा कि ज़ुल्म कर
उस ने कहा कि ताब के मैं ने कहा कि उम्र भर—उस ने - - -
उस ने कहा कि तू कौन है मैं ने कहा कि फ़क़ीर हूं
उस ने कहा घर कहां मैं ने कहा दरबदर
मैं ने कहा कि दर्द है उस ने कहा कि है तो हो
मैं ने कहा दवा बता उस ने कहा कि जल्दी मर
मै ने कहा कि जान दूं उस ने कहा ख़ुशी तेरी
मैं ने कहा कि हुक्म दे उस ने कहा कि जल्दी मर—उस ने - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

ज़ीनत का शाना गल एक शमय कुछ पर्वाने थे
बीच में लैली थी और चारों तरफ़ दीवाने थे—ज़ीनत - - - -
एक तरफ़ जलती थी यह और एक तरफ़ जलते थे वह
सोज़ उल्फ़त से मनव्वर दोनों मातम खाने थे
शमय रोती थी यह अहवाले तबाही देख कर
एक उस की जान थी और सैकड़ों पर्वाने थे
सुबह तक जारी रहा यह दास्ताने हुस्नो इश्क़
फिर न बाक़ी शमय महफ़िल थी न वह पर्वाने थे—ज़ीनत -

--:०:--

P. 8167. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ८१६७

आंखें तेरी दीवानी दिल तेरा तमाशाई
यह भी तेरी शैदाई वह भी तेरा शैदाई—आंखें तेरी - -
छुपकर यूंही तरसाना यां रहम न फ़रमाना
रुसवा ही किये जाना ओ बायसे रुसवाई—आंखें - -
करते नहीं परवा तुम करते नहीं चारा तुम
अच्छे हो मसीहा तुम अरे अच्छी है मसीहाई
हर जा तेरा अफ़साना गुलशन हो कि वीराना
मैं ही नहीं दीवाना तू भी ता है हरजाई
निकले हैं वह बन ठन कर और साथ में हैं ग़मज़
अरे है हाथ में जलवों के आईनये यकताई

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

बस मुझसे न कर परदा जो तू है वही मैं हूं
तू नूर है मैं साया जो तू है वही मैं हूं
अल्लाह रे यकरन्गी मजनूं और अनालैला
बोल उट्ठे न क्यों लैला जो तू है वही मैं हूं
मन्सूर था दीवाना कुछ रख न सका दिल में
मसजिद में पुकार उट्ठा जो तू है वही मैं हूं
यह तुरफ़ा हिकायत है मैं तुझ से हूं तू मुझ से
मैं अब्र हूं तू दरया है जो तू है वही मैं हूं

P. 8289. कौवाली पी० ८२८९

उलझी उलझी बिखरी बिखरी रुख़ प बल खाई हुई
रफ़्ता रफ़्ता ज़ुल्फ़े जानां भी तो सौदाई हुई

रात के जागे हुवे आंखों में नींद आई हुई
बात भी मुंह से निकलती है तो घबराई हुई
यह सलोनापन यह सिन यह चाल अठलाई हुई
लूट लेती है जवानी जोश पर आई हुई
जो कहा था मैंने तुमसे तुमने एक एक से कहा
अब ज़रा सोचो तो इस में किसकी रुसवाई हुई

दूसरी तरफ़ :— कौवाली

हमनाम ख़ुदा के हैं ये रुतबा है अली का
बन्दा जो ख़ुदा का है वोह बन्दा है अली का
मूसा की तरह मरतबा आला है अली का
जो नक़्श क़दम है यदे बज़ा है अली का
काबे में विलादत हुई मस्जिद में शहादत
और आग़ाज़ और अन्जाम भी अच्छा है अली का
अली को हक़ ने उतारा तो एन काबे में
खुली जो आंख तो पहले ख़ुदा का घर देखा
अपने अक़ीक़ दिल पर यह अल्लाह कन्दा है
अल्लाह सा ख़ुदा है न हैदर सा बन्दा है
काबे में विलादत हुई - - - - - -
हमनामे ख़ुदा दस्ते ख़ुदा शेर ख़ुदा हैं
क्या जाने कोई मरतबा क्या क्या है अली का

—

P. 8522.

गज़ल क़व्वाली पी० ८५२२

दिल को मेरे तसख़ीर किया उस अरबी ने
मक्की मदनी हाशमी वो मुत्तलबी ने

क्या बांका अमामा सरे अक़्दस प बंधा है
कैसी तने पुरनूर प नूरी क़बा में
है दामने रहमत में सरदाश रवा है
येह माह लक़ा नूर के सांचे में ढला है
दिल को मेरे - - - -
जब अरसये मेहशर में बहम ख़ल्क़ हो सार
और आये शफ़ाअत को मोहम्मद की सवारी
येह मेरी दोआ है कि जब आये मेरी बारी
उसवक़्त ज़बां पर मेरे येह शेर हो जारी
दिलको मेरे तसख़ीर - - -

दूसरी तरफ़ :— गज़ल क़व्वाली

रसूले ख़ुदा सब का प्यारा है रे
हुवा जब शायक़े दीदारे हज़रत ख़ालिक़े यकता
तो जिबरीले अमीं को भेजकर जन्नत में बुलवाया
फ़रिशतों ने जो येह जाहो हशम सरकार का देखा
तो लफ़्ज़े मरहबा के साथ फ़ौरन मुंह से येह निकला
रसूले ख़ुदा सब - - -
वोह बख़शवायेगा मेहशर में हमें अपनी शिफ़ाअत से
पढ़ें कलमा न क्योंदिन रात हम उनकी मोहब्बत से
उसीके हम सनाख़्वां हैं निराला है जो ख़िलक़त से
वही मसरूर करेगा हमें जन्न की नेमत से
रसूल ख़ुदा सब - -
सवाले क़ब्र का ज़ाहिद नहीं कुछ दिल में खटका है
वसीला रहमते बारी ने ऐसा हम को बख़्शा है
नकीर न आके पूछेंगे अगर बन्दा तू किसका है

तो कहदूंगा अरब का रहनेवाला कमली वाला है

रसूले ख़ुदा सब - - -

P. 8584. ग़ज़ल पी० ८५८४

अजब अदा से चमन में बहार आती है।

कली कली से मुझे बूए यार आती है॥ अजब - - -

हवाये सर्द के झोंके नहीं हैं बादा कशो।

नसीमे रहमते परवरदिगार आती है॥

न एक रोज़ भी तरके शराब हो साक़ी।

कि एक साल में फ़स्ले बहार आती है॥

कुछ अख़तियार किसी का नहीं तबीअत पर।

येह जिस प आती है बे अख़तियार आती है॥

उस आइने की सिकन्दर तलाश है मुझ को।

जिस आइने में नज़र शक्ले यार आती है॥

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

हाय तोरी बांकी नज़रीया ने मारा

मोरे प्यारे सैयां तैबा के मियां

बांके नैनों से फिर हो इशारा -हाय तोरी - -

नबी का रुख़े आरिज़ सांवला है और सलोना है

लबे रुख़ों में हैं एजाज़ और आंखों में टोना है

येह ख़न्जर है कि अबरू है नज़र है या कि नशतर है

ख़ुदा जाने कि क्या है जो खटकती दिल के अन्दर है

इश्क़ सरकार हुवा गर्म बाज़ार हुवा

तीर ग़मख़ार हुवा मरने तैयार हुवा

अब मदीने में उसे जल्द बुलालो सरकार

आपके हिज्र में शायक़ को है जीना दुशवार

हाय कीजे करम अब ख़ुदारा

हाय तोरी बांकी नजरिया ने मारा

P. 8643. ठुमरी पी० ८६४३

अरे मरजाऊंगी पिया रूठो न मोसे

मैं तो मरजाऊंगी पिया रूठो न मोसे

प्रीत तुम्हारी मन में रखूंगी

कोई पूछेगा मुझसे मुकर जाऊंगी - रूठो न मोसे - - - -

अरे पपीहा बावरे आधी रात मत कूक

मैं सुलगती थी धीरे धीरे तै ने डारी फूंक

अरे काटूं चोंच पपीहा की तापर छिड़कूं नोन

पिव मोरा मैं पी को तू पी कहै तो कौन

हे रे। पिया हम तुम दोनों एक हैं और कहने को दो

अरे मन से मन को खोजियो तो कबहू न दो मन हो

छब दिखला कर मन हर लीनो

छोड़के तुमको किधर जाऊंगी - पिया रूठो नु मोसे

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी

कोई ऐसी दवा दुख की न मिली

मेरे दुख को जो दिल से मिटा देती

कोई पीत की एसी चली न हवा

यसरब नगरी में उड़ा देतो - कोई - - -

मुझे पूछते सब तैबा में अगर

किस बांके जवां ने मोह लियो

तो मैं लेके बलायें रो रो कर
तेरे रौज़े को बढ़के बता देती
मुझे हश्र में जब ऐ शाहे अरब
ले जायें मलक दोजख़ की तरफ़
कभी तेरी शफ़ाअत करती मदद
कभी रहमत आके बचा देती
क्या डर है मुझे रोज़ें महशर
जब तू है हमारे पक्ष पर
मोरी खलती सियहकारी जो वहां
तोरी काली कमलिया छुपा देती

—:०:—

P. 8703. कौवाली बतर्ज़ नाटक पी० ८७०३

हिजरे ग़ौसुलवरा नागवार है
आंख खूं बार दिल बेक़रार है
अब गवारा नहीं दर्दे फ़ुरकत मुझे
ज़ब्ते गम की नहीं ताब व ताक़त मुझे
मुज़तरिब रखती है दिलको हसरत मुझे
हां दिखा ग़ौसुलआज़म की सूरत मुझे
अर्ज़ मेरी यह परवरदिगार है
ग़म गवारा नहीं हिजरे महबूब का
ऐ तपे इश्क़ हां अपनी तेज़ी दिखा
ख़ाक करदे जलाकर तू बहरे ख़ुदा
ले उड़ सूये बग़दाद बादे सबा
मुझको शौक़े तवाफ़े मज़ार है
रहम से काम ग़ौसुलवरा लीजिये
ख़ाक पर गिर पड़ा हूं उठा लीजिये

हां गदा अपने दर का बना लीजिये
रौज़ये पुर ज़िया पर बुला लीजिये
ज़िन्दगी का नहीं एतिबार है - हिज्रे ग़ौसुलवरा नागवार - -

दूसरी तरफ़ :— कौवाली बतर्ज़ नाटक

मोरा तेबा में मदफ़न बनावो रंगीले सैयां - - -
दरस दिखादो मस्त बनादो इश्क़ का जाम पिलादो
रंगीले सैयां तैबा - - -
मतवाली आंख अपनी दिखादो रसूले पाक
मस्तों को और मस्त बनादो रसूले पाक
होश उड़ादो मस्त बनादो मस्तों को हस्ती मिटादो
रंगीले सैयां तैबा - - - -
परदा दुई का उठादो रंगीले सैयां तैबा - -
मीमे मोहम्मदी से ख़ुदा का ज़हूर है
परदे में हूर या कोई घूंघट में नूर है
शायक़ को तुम नाम सुनादो
राज़े अहद का पता बतादो रंगीले सैयां तैबा
लफ़्ज़ अना का सिखादो रंगीले सैयां
रंग में अपने डबादो रंगीले सैयां तैबा - - - - - - - - -

—:०:—

P. 8881. नात पी० ८८८१

दिल पर जो खिंचा है वोह नक़्शा है मोहम्मद का
सर में जो समाया है सौदा है मोहम्मद का
हर शै में हर एक जानिब जिसपर है नज़र डाली
देखा तो यही देखा जलवा है मोहम्मद का

किस प्यार से हूरों ने चूमी है ज़बां मेरी
जब नाम मेरे मुंह से निकला है मोहम्मद का
कहती हैं मेरी आंखें बस मुझसे यही असग़र
गर दीद के क़ाबिल है रौज़ा है मोहम्मद का

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दिल है वही कि जिसमें तेरी आरज़ू रहे
गुल है वही कि जिस में मोहब्बत की बू रहे
यारब मिटे न दामने क़ातिल से रंगे खूं
मक़तल की यादगार हमारा लहू रहे
क़ातिल ख़ुदा करे कि बर आये यह आरज़ू
तुझपर नज़र रहे तहे ख़न्जर गुलू रहे
जामे तहूर ख़ल्द में पीना है ऐ जलील
कुछ कुछ अभी से आदते जामो सबू रहे - दिल है वही - - -

P. 8970. ग़ज़ल पी० ८९७०

यूंही ज़ुल्म प ज़ुल्म न ढाया करो
ज़रा ख़ौफ़े ख़ुदा दिलमें लाया करो
तुम्हारे कूचे में दीवाना वार फिरते हैं
क़दम क़दम प संभलते हैं और गिरते हैं
अरे कभी गिरते को आके उठाया करो
बाद मरने के भी तुम याद रहोगे मुझको
ग़ैर मुमकिन है कि मैं दिल से भुलादूं तुमको
गरचे तुमने भुलाया भुलाया करो
तुम आवो शौक़ से गुलशन में सैर करने को

मगर यह अर्ज़ है मेरी इसे ज़रा सुन लो
साथ अपने न ग़ैरों को लाया करो
यह माना साग़रे बेताब को जलाते हो
अदू के कूचे में अपना क़दम जमाते हो
अरे कभी इसकी तरफ़ भी तो आया करो

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

खींचिये तेग़ अगर आप हैं हिम्मतवाले
क़त्ल को जश्न समझते हैं मोहब्बतवाले
देखिये कब तेरी तलवार गले मिलती है
इसी उम्मीद प जीते हैं मोहब्बतवाले
देख लो शमअ प जलते हुवे परवाने को
ऐसे होते हैं जो होते हैं मोहब्बतवाले
तुम हो बेदर्द तुम्हें दर्द हमारा क्या हो
क़दर करते हैं मोहब्बत की मोहब्बतवाले
वह मुझे और भी तड़पा गये यह कहके जलील
सब्र कर ओ मेरे बेचैन तबीअतवाले

P. 9070. कौवाली दादरा बतर्ज़ नाटक पी० ९०७०

तेरे फ़िक़रे में वायेज़ न आयेंगे
हम दरे ख़ाज़ा प सर को झुकायेंगे
हमारा मूनिसो यावर अगर नहीं है न हो
दयारे इश्क़ में रहबर अगर नहीं है न हो
जज़्बे उलफ़त को रहबर बनायेंगे
सर के बल सूय अजमेर जायेंगे

न लोगे क़ाफ़िलेवालो तुम अपने साथ न लो
मगर अकेले न जायेंगे तुम यह याद रखो
पीछे पीछे चलेगा हुजूमे शौक़
सर के बल सूए अजमेर जायेंगे
दिखा न वायज़े नादां तू सब्ज़ बाग़ मुझे
कि सैरे बाग़े जहां का नहीं ख़याल मुझे
सैरे अजमेर मतलूब दिल को है
बाग़े जन्नत में क्या लुत्फ़ पायेंगे
कोई बताये तो उस दर से क्या नहीं मिलता
जलाल व जाह कि ताजो लवा नहीं मिलता
कूचये ख़ाजा ज़र्रा-नेवाज़ है
हम जो मांगें गे असग़र वोह पायेंगे

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

आहिस्ता बर्गे गुल ब फ़िशां बर मज़ार मा
बस नाज़ुक अस्त शीशये दिल दर कनार मा
एक दिन जो बहरे फ़ातेहा तुरबत प मैं गया
फूलों की चादरें भी चढ़ाते थे जा बजा
थीं चंद क़ब्रें वां प बुज़रगों की जा बजा
था एक क़ब्र पर यह ब ख़त्ते जली लिखा
आहिसता बर्गे गुल ब फ़िशां - - -
यह सुन के बार बार तअज्जुब मुझे हुवा
बाशिन्दगाने कुर्ब से पूछा यह माजरा
यह कौन से बुज़ुर्ग थे क्या इनका नाम था
आती है जिनके क़ब्र से यह बरमाला सदा
आहिसता बर्गे गुल ब फ़िशां बर मज़ारे मा

यह कौन से बुज़ुर्ग थे क्या इनका नाम था
आती है जिनके क़ब्र से यह बरमला सदा
आहिसता बर्गे गुल ब फ़िशां बर मज़ारे मा
बस नाज़ुक अस्त शीशये दिल दर कनारे मा
मालूम यह हुवा कि यह हैं आशिक़े हज़ीं
ता ज़ीस्त वस्ले यार मोयस्सर हुवा नहीं
बाद अज़ वफ़ात क़ब्र प आया वोह मह जबीं
जब बर्गे गुल चढ़ाये तो आवाज़ यह सुनी
आहिसता बर्गे गुल ब फ़िशां - - - -

P. 9739 ग़ज़ल क़व्वाली पी० ९७३९

खुली है बोतल भरे हैं साग़र शराब मेहफ़िल में चल रही है
गिलास भर भर के दे रहे हो तबीअत अपनी बदल रही है
जो शीशा आये तो साक़ी आये जो साक़ी आये तो मैं पिलाये
ग़ज़ब है यह इनतिज़ार यारब कि जान अपनी निकल रही है
अदू को देते हो जाम भर कर फिर उसपे तुर्रा कि मुसकुराकर
तुम्हारे सर की क़सम हमें तो यह बात मेहफ़िल में खिल रही है
न छेड़ वायज़ बायाने महशर ग़फ़ूर है वोह ख़ुदाय महशर
वहां की बातें वहां प होंगी यहां तो इस वक़्त ढल रही है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

साक़ी भी है चमन भी है ठन्डी हवा भी है
टूटे जो आज तौबा तो ऐ दिल मज़ा भी है
रग रग फड़क रही है नया रंग देखकर
क़ातिल भी है छुरी भी है मेरा गला भी है
ज़ाहिद की तह ख़श्क मुसलमां नहीं हूं मैं

इश्क़े बुतां भी दिल में हैं यादे ख़ुदा भी है
मेंहदी मेरे लहू की मुबारक हो आप को
रंगे हिना भी इस में है बूये वफ़ा भी है

P. 9779. पीलू दादरा पो० ६७७६

मोहब्बत का बुरा हो दिल को रोकूं या जिधर थामूं
मेरे काबू से यह दोनों के दोनों निकले जाते हैं
ऐसे बेदरदे के पाले पड़े हैं
फ़ुरक़त में जीने के लाले पड़े - ऐसे बेदरदे - -
उसकी गलियों में फिरा करते हैं मारे मारे
एक दिन भी न कहा उसने कि आ रे आ रे
देखते ही मुझे कैहता है वोह जा रे जा रे
वरना दम भर में भुला देंगे इशारे सारे
ऐसे बेदरदे के पाले पड़े हैं- - - -
दर्द रह रह के सताता है हमें ऐ सागर
चैन आये भी तो किस तर्ह से आये दम भर
भूले भटके भी कभी पड़ती नहीं उनकी नज़र
उम्र आख़िर हुई लेकिन न ख़बर ली आकर
ऐसे बेदरद के पाले पड़े हैं - - -

दूसरी तरफ़ :— पीलू कहर्वा

मार डाला मुसकुराकर नाज़ से
हां मेरी जां फिर उसी अन्दाज़ से
सांवरी शक़्ल जो देखूं किसी मतवाले की
गो मुसलमान हुं पर बोल दूं जे कालो की
न छेड़ो गाली दूंगी रे भरने दे गागरी -
तू कौन देस से आया यां कुंवें प झगड़ा लाया

तेरी टांगें तुड़वा दूंगी रे भरने दे—न छेड़ो गाली दूंगी - - -
तू बारा बरस की छोरी फिर दुनिया कहती गोरी
तेरे गले में रेशम डोरी रे भरने दे - - -
मैं जल भरने को आई पनघट पे रार मचाई
तेरी बन्सी छिनवा दूंगी रे भरने दे—न छेड़ो गाली दूंगी - - -

—: o :—

मि० पृथ्वी राज

P. 7722. भजन पो० ७६२२

ग़रीब घर से निकल जब सुदामा आये थे
हज़ारों चीथडे तन पर सजा के लाये थे
हजारों सख़तिया सहकर वह द्वारिका पहुंचे
वह बंसी वाले से पहिले ही लौ लगाये थे
कहा जो मित्र सुदामा ने बंसी वाले को
द्वारपाल यह सुनते ही मुसकराये थे - हां हां - - - - - - - -
दिये थे पत्नी ने चावल जो द्वारिका आते
फटे से चीथड़े में शर्म से छिपाते थे
तुम्हें हमारी ही सौगंध मित्र सच कहना
हमारी ख़ातिर ही घरसे बांध लाये हो
किया ग़रीब को पल में धनी मुरारी ने
यह मित्रताई के माधो ने गुर बताये थे—हां गुर - - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

दिखलादे झलक ब्रज राज लालानित ध्यानलगो तोरे चरणन में
मुख जोहत जोहत नैन थके तुम आप बसो मेरे तन मन में

तोरी लंकाकी घुंघर आली केस-लट नागन सी मन मेरे बसीं
तोरे पलक में मोरे नैन बसें तुम आप बसो मोरे हृदय में
कभी आप तो भूल आओ प्रभु तुम्हें प्रेम यदि है भगवन में
मारी नैया को पार लगाओ प्रभु-तुम्हे प्रेम यदि है भगवन में
तेरो सेवक चरण करे बिनती-मोहे कृपा दृष्टि कर दोशक्ति
लेऊं नाम तुम्हारा करूं भक्ती मोहे बेग बुलाओ बिन्द्राबन में

P. 9249. भजन पी० ६२४९

ऐ भोले भाले शम्भु भसमी रमानेवाले
माथे को चन्द्रमां की सज से सजानेवाले
औरोंको सब पदार्थ मीठे खिलानेवाले
और आप ख़ुद धतूरा और भांग खानेवाले
अपनी जटाओं में ही गंगा छुपानेवाले
गंगा को छोड़िये अब काशी बसानेवाले
भक्त और अपने जन का बन्धन छुड़ानेवाले
रावण को तुम हो भगवन लंका दिखानेवाले

दूसरी तरफ़ :— भजन

रक्षा करो हमारी हनुमान राम रसिया
हम हैं शरण तिहारी हनुमान राम रसिया
तुसीं आप फूंकी लंका सिया दी मिटाई शंका
जयदा बजाया डंका हनुमान राम रसिया
लंका दे विच मचा रण घायल हुवे जी लक्ष्मण
लाये तुसीं संजीवन हनुमान राम रसिया

—:-०-:—

P. 9430. ग़ज़ल पी० ९४३०

किसी का तीरे नज़र दिल प खाये बैठे हैं
उठा है दर्द कलेजा दबाये बैठे हैं
जो बात करते हैं हमसे बिगड़ के करते हैं
किसी के आज सिखाये पढ़ाये बैठे हैं
मेरे सताने का अन्दाज़ यह निकला है
अदा से ग़ैर का दामन दबाये बैठे हैं
कभी न आये बुलाने से मेरे जीते जी
यह आज क्या है जो मदफ़न प आये बैठे हैं
बुतों को छोड़ के अलताफ़ अब तो मस्जिद में
ख़ुदा की बन्दगी करने को आये बैठे हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

शेर। यह जोबन तंग चोली से निकलकर जब उभरते हैं
जिगर में आशिकों के तीर बनकर यह उतरते हैं
किसी हसीन से हम लौ लगाये बैठे हैं
चराग़ ख़ानाये दिल को बनाये बैठे हैं
ख़ुदा करे वह कहें आज मेरे घर आये
बजाय फ़र्श के आंखें बिछाये बैठे हैं
गले प फेर दो खन्जर यह आप की मरज़ी
क़ुसूर वार हैं हम सर झुकाये बैठे हैं
इन्हीं के इश्क़ में हालत मेरी हुई अबतर
यही तो हैं जो मेरा दिल चुराये बैठे हैं
हमें तो आपके वादे प एतिबार नहीं
हज़ार बार तुम्हें आज़माये बैठे हैं

मास्टर राहत

P. 5247. क़ौवाली पी० ५२४७

मिला कर नज़र मुस्कुराना बुरा है, मेरे दिल प बिजली गिराना बुरा है
न कर ज़ुल्म उस पर जो मजबूर होवे, कि टूटा हुआ दिल दुखाना बुरा है
न पामाल तुर्बत करा ठोकरों से, मज़ार ग़रेबा मिटाना बुरा है
तुम तो हमदर्द तवी हो क्या नहीं तुमको ख़बर
गमज़दों की हिज्र में किस तरह होती है बसर
शाम बालें पर जलाये वां से बर सर नोहे गर
शब को जा निकला था मैं कामिल मज़ारे दोस्त पर
हसीनों की तिरछी निगाहों से बचना, कि इन बरछियों का निशाना बुरा है
न महरूम जाओगे तुम यां से राहत, सख़ी से तमन्ना सुनाना बुरा है

दूसरी तरफ़ :— क़ौवाली

यह दस्ते हविस बनके रह ज़न किसी का
शबे वस्ल लूटेगा जोबन किसी का
मचलता है जब मनचला दिल हमारा
दिखा लाते हैं रूए रोशन किसी का
गिराने काहै बिजलियां चर्ख़ जिस पर
उसी शाख़ पर है नशीमन किसी का
दरप क़ासिद आन्यद वस्ल यार आने को थी
क्या इसी दम आसो परवरदिगार आने को थी
बाद मेरे क्यों नोयद वस्ल यार आने का थी
वह चमन ही मिट गया जिस मे बहार आने थी
रंग बे तासीरी सोज़ बकाव देखा किये

दिल जले हसरत से सूये आस्मां देखा किये
रंगे गुलशन जलवये बरक़ तपां देखा किये
और असीरे दाम सुये आशियां देखा किये
न फिर हश्रमें में किसी की सुनूंगा
जो हाल आगया अपने दामन किसी का
बड़ी आस से फिर देखा क्या मैं
जो सोना नज़र आया मदफ़न किसी का

P. 5290. क़व्वाली पी० ५२९०

जिगरमें दाग़ और धब्बे मह कामिल में रहते हैं
ख़लश सोने में नावक तरकशे क़ातिल में रहते हैं
यहां यह लुत्फ़ है सब एक हो मंजिलमें रहते हैं
अज़ल से दौनो हुस्नो इश्क़ मेरे दिल में रहते हैं
बहम लैलाव मजनूं एक ही महमिल में रहते है
तजल्ली शमय की पर्दा वही पर्वाना हो जाना
कहीं आइना बनजाना कहीं हुस्न अपना दिखलाना
बनाया लामकां होकर सभों के दिल का काशाना
ताअज्जुब है किसीने आज तक देखा न पहचाना
मज़ा यह है वह बेपर्दा हर इक महफ़िल है रहते हैं
मुझे ज़ुल्मत में डाला था मेरे असयां की कसरत ने
उठाये आंखों से ग़फ़लत के पर्दे अब रहमत ने
बताई राह मुझ को मुर्शद राह हक़ीक़त ने
मेरे कानों में आहिस्ता कहा पीर तरीक़त में
जिन्हें तू ढूंढता है वह तो तेरे दिल में रहते हैं

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

कोई क्या समझे जो आलम आशिक़ कमिल काहै
उस को आता हैं वहो जो काम यां मुशकिल काहै
कोई क्या जाने कि क्या रम्ज़ किसी बिसमिल काहै
ज़ेर खंज़र सर झकादो मशवरा यह दिल काहै
देखना है अब तो कितना हौसला क़ातिल काहै
जिस तरह वहशत करे चाक गरेबां का अदब
जिस तरह अज़मत करे यूसुफ़ के दामां का अदब
हर मुसलमां पर है वाजिब जसे कुरआं का अदब
अहले दिल को चाहिये गोर गरेबां का अदब
उस के लिये टुकडा ज़मी कूचये क़ातिल काहै
तर्क की ख़ुद आपने रस्ममुहब्बत जानकर
फेर ली यूं आपने चश्मे मरव्वत जान कर
आशिक़ शोरीदा सर पाबंद हसरत जान कर
पांव से मलते हो नाहक़ बे हक़ीक़त जान कर
बाक़ी और करना नहीं टुकड़ा हमारे दिल काहै

P. 5341. क़व्वाली पी० ५३४१

मर मिटेंगे जब तो राह इश्क़ पर दिल आयेगा
बेकसों का क़ाफ़िला जब सूये मंज़िल आयेगा
वक्त आरायश जो आइना मुक़ाबिल आयेगा
हश्र होगा सामने क़ातिल के क़ातिल आयेगा
क़द्र हो जायेगी फिर तुम को हमारे दर्द की
जब तुम्हारा भी किसी माशूक़ पर दिल आयेगा

हल्क़ पर शमशीर होगी दिल के टुकड़े हाथ पर
इस रतह रोज़े क़यामत एक बिसमिल आयेगा
लैली पर्दा नशीं तन्हा न होगो दश्त में
क़ैस इक दीवाना होगा पीछे महमिल आयेगा
वस्ल की शब कह रहा है उनसे यह उनका हिजाब
सुबह क्या होगी जो आइना मुक़ाबिल आयेगा
फ़ैसला होगा तभी उस वक्त हुस्नो इश्क़ का
पेशे दावर हश्रमें जिस वक्त क़ातिल आयेग

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

सितम कीजियेगा जफ़ा कीजियेगा - सिवा इसके दिल लेके क्या कीजियेगा
अगर मुझ को मश्क़ जफ़ा कीजियेगा - मेरे बाद फिर आप क्या कजियेगा
गुंचे खिलते हैं तो कहती है यही बादे सबा-चमन दहर के फूलों में नहीं बूये वफ़ा
शिकवा जान मुहब्बत की शिकायत है बजा-
यह ग़रीब दिल पर दर्द से आती है सदा
सितम कीजियेगा जफ़ा कीजियेगा-सिवा इसके दिल लेके क्या कीजियेगा
अगर मुझ को मश्क़ जफ़ा कीजिगा - मेरे बाद फिर आप क्या कीजियेगा
मसल है कि नेकी का बदला बदो है-सिवा दिल जलाने के क्या कीजियेगा
फ़क़त एक बोसे की तालिब है राहत भला होयेगा गर भला कीजियेगा

P. 5538. ग़ज़ल पी० ५५३८

यह तड़पना शबे ग़म हिज्र के बीमारों का
और आस से सूए फ़लक देखना बेचारों का
तुम सलामत रहो तुर्बत भी मिटाते जाओ
नाम फिर कौन मिटायेगा वफ़ा दारों का

दिल में चुभते हैं कभी दिल से निकल जाते हैं
मेरा सीना है कि तरकश है सितमगारों का
मेरी मैयत प वह राहत यह खड़े कहते हैं
आज दुजिया से मिटा नाम वफ़ादारों का

दूसरी तरफ़ :— खम्माच

पहुंच के मंज़िल मक़सद प कुछ ठहर लेना
अजीतों का सफ़र की न कुछ असर लेना
ज़रा मेरे दिल पर कुरते की ख़बर लेना
अभी न कूचये क़ातिल की राह कर लेना
समन्दे उम्र से ए शहसवार उतर लेना
हवा के झोकों में मुश्क खतन की ख़ुशबू है
कहीं खिला हुआ शायद किसी का गेसू है
निगाहे लुत्फ़ में भी इक सितम का पहलू है
बचे जो तेग़ से दो बरछियों प धर लेना
सद आफ़रीं दिल ख़ुद रफ़्ता तेरी हिम्मत को
ज़री बतादो यह राही दश्त उल्फ़त को
अमीर जाते हो बुतख़ाने की ज़ियारत को
पड़े जा राह में काबा सलाम कर लेना

P.5665. भजन पी० ५६६५

कोई नहीं आवत जगत मां कोऊ के काम
आये हैं काम वही अन्त मां भजो भगवान को
माता पिता दारा सुत सकल कुटम्ब मैं देखे
कोउ नाहीं लेत बचाय जम दूतसों

रोवत वे आसीका लाल चलत न प्यारे ऐको
माया तो बिखोले खाली चले हर धाम को
तुरते उठाय काया चिता धर फूंके
लौट के ख़बर कोउ लेत नाहीं जायके
नारी तो पराई पुंजो नार तो बताय दीनी
प्रलय के पीछे कोउ लेत नाहीं नाम को
अरे भजो उन को प्रहा लागे कोउ पारे दीनी
राखौ अन्तर मारो अन्तर तनिकन रूज गयो
दर से गिरायो बिचार दिल में डारी पीत
रूदत मेले भयो लेत नाम राम को

दूसरी तरफ़ :— भजन

बिना राम रघुनाथ अपना कोई नहीं
बाग़ लगायो बगीचा लगायो और लगायो केला
इतने में प्राण निकस गयो लूट लियो सब डेरा
तीन दिन तक त्रिया रोवे छह महीने तक भाई
जनम जनम की माता रोवे कर गयो आस पराई
देहरी तक महरी का नाता द्वार तक जात भाई
रोवे कुटम्ब मरघट के साथी प्राण अकेला जाई
पाँच पचीस बराती आये लेचल लेचल होई
कहत कबीर बुरा न मान्यो यह गत सब की होई

—:०:—

P. 5682. ग़ज़ल पी० ५६८२

ख़ुवाह सूली की तरफ़ या सूए ख़ंजर ले चला
अहले दिल कहने लगे इस रुख़ वह दिल बर ले चला

क्या कहें क्यों कर चलें हम शौक़ क्यों कर ले चला
तेग़ जब मक़्लत में वह शौक़ सितमगर ले चला
हम ख़ता वारो को फिर बेबस बनाकर ले चला
तुम उठे पहलूसे हम करवट बदल कर रह गये
दर्द की मानिन्द उठे और संभल कर रह गये
ज़इफ़ के पाबन्द थे दो गाम चल कर रह गये
देखते ही देखते हम हाथ मल कर रह गये
दिल को जब नीची निगाहों से वह दिलबर ले चला
कोई जिस दिन से गले मिल कर हुआ हम से जुदा
जो गुज़रनी थी वह गुज़री दिल प शाहिद है ख़ुदा
जाने जां हरगिज़ नहीं यह शेवा अहले वफ़ा
इस क़दर से अतनाई इस क़दर जोरे जफ़ा
जान भी ज़ालिम और दिल भी सितमगर ले चला

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

करीब चेहरा पुर नूर वह काकल अगर होगी
तमशा होगा यह एक शाम होगी सहर होगी
निगाहें होती हैं हर वक्त दश्त नजद के सदक़े
फ़क़त कहने को है मजनूं कि लैला बेख़बर होगी
ज़हे क़िसमत वह यूं मातम करेंगे मगर दुशमन का
गरेबां चाक होगा आस्ती अश्कों से तर होगी
तही ऐ शोख़ी तज़ निगाह नाज़ बत लादे
जो दिलमें चुभ के रह जायेगी वह किस की नज़र होगी
क़वी हुशियार रहना तुम किसी की शोख़ चशमी से
यही वह फांस है जो बाइस दर्दे जिगर होगी

P. 5731. क़व्वाली पी० ५७३१

कोयले कूकीं बहार आने का सामां होगया
जब पपीहा बोल उठा टकड़ गरेबां होगया
लाश पर मेरी अजब अबरत का सामां होगया
तेरे गेसू क्या खिले आलम परेशां होगया
तुम फ़क़त आंखों की गरदिश से समझ लो राज़ दिल
अब जो होना था बयान शामे हिजरां होगया
उस की हिम्मत देखना उस का कलेजा देखना
जो तुम्हारा नाम लेकर तुम पर कुर्बां होगया
दिल तो राहत पहिले ही माइल था उन के हुस्न पर
दोस्त हम समझे थे जिस को दुशमने जां होगया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

परसां है कौन कुशतय गेसयेयार में
रोता है बेकसी प अंधेरा मज़ार का
अल्लाह रक्खे बरक़ को तारों को ज़रों को
रोशन है कैसे नाम दिल बेक़रार का
दामन भरा है फूलों से और शमय हाथ में
सामान ले चले हो यह किन के मज़ार का
बेचैन कर दे क्यों न ग़ज़ल मेरी सब को शम्स
है नज़्म इसमें हाल दिले बेक़रार का

———o———

P. 5809. नात पी० ५८०९

सुनिये नसीम जानफ़ज़ा जाकर सूये सेरब ज़रा
बाब हरीम ख़ास में कहना बसद आहव बक़ा

गर और कोई दम रही यूंही ज़माने की हवा

मिट जायेगी क़ब्ल सहर शमय ख़िलाफ़त की ज़िया

उठिये बस या मुस्तफ़ा यह वक्त है इमदाद का

पहिले रगोंमें मसल ख़ूं था सब्रे अय्यूबी भरा

अब आदमों याक़ूब के गर्दने वां पाई है जा

उफ़ क़तरा क़तरा ख़ून का आफ़त का तूफ़ान बन गया

हाय वह तलतम गर्क़ हो जिसमें सफ़ीना नूह का

इस्लाम की किश्ती बचा ऐ जहांके नाख़ुदा

हर अहले दिल पर होते हैं इस दर्जे ज़ुल्म नारवा

थर्रा रहे हैं दिल जिगर यारा नहीं फ़रियाद का

लिल्लाह अब सुन लीजिये बेकस क़ौमों की इलतजा

जुज़ आपके किससे कहिये वह दर्द दिलका माजरा

ऐ ताजदार नबिया ऐ शाफ़ें रोज़ जज़ा

दूसरी तरफ़ :— नात

सुए शहर मदीना जो गुज़रे सबा तो नबीजीसे कहना बराहे ख़ुदा

मुझे अपने ही रोज़े प लीजिये बुला कि तड़पता हूं हिज्रमें तेरे शाहा

न तूनार सक़रका है ख़ौफ़ो ख़तर न गुनाहोंका डर मुझे शामो सहर

यह ख़ुशी है मुझे कि हबीब ख़ुदा मेरे होयेंगे हामी बरोज़ जज़ा

मुझे हिन्दमें मरने का रहता रे ग़म मेरे दिल को है हर दम रंजो अलम

कि वह शहर मदीना है रबकी क़सम वहां मरनेमें आती है बूये बक़ा

——:-०-:——

P. 5849. ग़ज़ल पी० ५८४९

टुकड़े हुए जिगर के मेरे दिल के सामने-

बिसमिल तड़प के रह गया बिसमिलके सामने

मजनूकी आह सर्दमें भी रंगे इश्क है-

बन कर वह यार आई है मंजिलके सामने

लैला संभल के बैठ कि आमद है क़ैस की-

कुछ गर्द उठी है नाशकी मंजिलके सामने

महशर दूसरा कहीं महशर बपा न हो-

मुझको ले चलो मेरे क़ातिलके सामने

लाता हूं अब जवाब ख़ते शौक़ नामा बर-

बैठा हूं इन्तज़ारमें मंज़िल के सामने

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

जब किनारों तक ग़मे दुनिया का साग़िर आगया

यक बेक घबराके लब पर नाम हैदर आ गया

तशगाने शौक़ का अल्लाहरे जोश आरज़ू

या अली कहता हुआ नज़दीक कवस्सर आ गया

ज़रब से उसकी न बचता पैकर गाव ज़मीं

वह तो कहते बीचमें जबरईल का पर आ गया

अब तो ऐ मौला मदद कीज क़बी मजबूर की

अब तो सरपर आफ़ताब राज़ महशर आ गया

——:-०-:——

P. 5929. नात पी० ५९२९

तोरे द्वारे पड़ी जगत बीत गयो-मोरो आस न तोड़ ग़रीब नवाज़

या ख़ुवाजा मोईन मीरन के मीर पीरोंकी पीर वल्लियनके ताज

तुम नबी अली के प्यारे हो हुसैन की आंखों के तारे हो

जग तरन हो जग पालन हो जग दाता हो तुम जग के राज

औगुण पर तुम निगाह न करो-मोरी नाथ गहे की लाज रखो
मैं बुरी हूँ-भली हूं—तुम्हारी हूं महाराज मो प दया करो

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

तोरे प्रेम की बतियां जो सुन पाऊंगी
त ोरे निस दिन सजना मैं बल जाऊंगी
पाऊं अपने पिया को जो एरी सखी
गरे डारके बंयां लिपट जाऊंगी
पिया आवत नाहीं हो देर भई
मोरी सूनी सजरिया मैं डर जाऊंगी

P. 5946. क़व्वाली पी० ५६४६

मैं ख़ूब समझता हूं कि तुम कौन हो क्या हो
गर कुफ़र न होता तो मैं कहता कि ख़ुदा हो
बस है वह नमाज़ अपनी जो इस दर प अदा हो
वह क़ब्लाये इसलाम हो वह क़िबला नुमा हो
मिटनेही प मौक़ूफ़ है गर शकल दिखाना
मैं ख़ाक हुआ जाता हूं तुम जलवा नुमा हो
सनते हैं मेरे हाल को दिल से शाहे वाला
क्यों हो न असर आह में जब दस्ते शफ़ा हो
इतनी है क़वी यह दिल ख़स्ता की तमन्ना
यह हाथ हों और दामन महबूबे ख़ुदा हो

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

अदा देखते हैं चलन देखते हैं-हसीनोंका हम बांकपन देखते हैं

नये आज उनके चलन देखते हैं-हमारे वह दाग़े कहन देखते हैं
तेरी जामय ज़ेरीके कल थे जो आशीक़-उन्हें आज पहने कफ़न देखते हैं
जिन्हें हम समझते थे ज़ुल्फोंका आशिक़-उन्हें हम असीर रसन देखते हैं
ताइश्क़ने आना किया तर्क शायद-उदास आपकी अंजमन देखते हैं

P. 6124. नात पी० ६१२४

ऐकाश पहुंच जाता मैं तदरे जनानां-
वह नाज़ से फ़रमाने आया मेरा दीवाना
कोई कहे सौदाई चाहे मुझे दीवाना-
पर रंग के डूबा है मेरा बाना
क्यों हुस्न हक़ीक़त को नज़रों ने मेरी जानां-
क़त्ले आमके मजमे में माबूद को पहचाना
काबा जिसे कहते हैं और जिसे बुत ख़ाना-
पाबन्द शरियत है कोई कोई मस्ताना
होशियारों के तेवर हैं अन्दाज़ है रंदाना-
यह बज़्म है रिन्दों की या है ख़ुदा ख़ाना
कुछ राज़ नहीं खुलता ऐ साक़ीए मैख़ाना-
सिजदा में सुराही है और बज़्देमें पैमाना

दूसरी तरफ़ :— नात

काहे को छेड़त मोरी कर काहे लीनी-डगर चलत देखो गारी मोहे दीनी
मगमें डारो नन्द को छोड़ा-गाह मटकी मारी छीनी - - -
शाम की बातें देखो यह बिन्दा-कोई न बात हम कही - - - -

P. 6188. भैरवीं नात पी०६१८८

सनाय मोहम्मद यह क्या हो रही है-मेरी जान दिलसे फ़िदा हो रही है

सरासर इधर तो ख़ता हो रही है-उधर मग़फ़रत की दुआ हो रही है

दोहा—ऐ वे नियाज़ मालिक मालिक है नाम तेरा

मुझ को है नाज़ तुझ पर मैं हूं ग़ुलाम तेरा

जिस दम अजल यह आये पयाम तेरा

कु़र्बान जान कर दूं सुनते ही नाम तेरा

मैं हूं ज़ईफ़ बन्दा तू मालिक क़वी है

आसियां है फ़ेल मेरा बख़शिश है काम तेरा

सरासर इधर तो ख़ता हो रही है - उधर मग़फ़रत की दुआ हो रही है

दूसरी तरफ़ :— नात

जोहरी दातों दुर्रे अदनी कहते हैं-चो ग़नी ख़ुद हैं वह सरदार ग़नी कहते हैं

अहले यसरब उन्हें मक्के का धनी कहते हैं

ऐसी सुरतका हसीं कोई न देखा न सुना-नूरका चेहरा है क्यों कर न ख़ुदा हो शैदा

जज़बये हुस्न उसे कहते हैं ऐ सले अला-तेरी सरकार में यूसुफ़ भी मिसाल मूसा

इक नज़ारे के ख़ातिर अरनिये कहते हैं

शबे मयराज में हूरों ने यह पूछा बाअदब-कौन हैं यह कि जिन्हें पास बुलाता है रब

बोले जबरईल यह हैं खतम रुसल शाह अरब-मुस्तफ़ा नाम है सर्दार दो आलम है लक़ब

यही वह है जिन्हें मक्की मदनी कहते हैं

———:(-०-):———

P. 6247. पहाड़ी पी० ६२४७

मार फुंकारो थारो जोबन का—थारो जोबन भूला खाये चमरी

क़ादरिया क़साई थारो बछड़ो चरावे—मंगला रोशनी जलावे चमरी

क़ादरिया क़साई थारो पड़ो जेल में (कैदमें) मंगला ऐश उड़ावे चमरी

क़ादर कसाई थारो लहंगा सिलावे—मंगला मग़ज़ी लगाये चमरी

दूसरी तरफ़ :— दस टंकी

इश्क़ चढ़ा पहाड़ प जो खड़कन लागे बांस

रहे बोरे चिकनी मिट्टी के कोई छप्पर बनवालो रे

इश्क़ करे और क्यों डरे करके क्यों पछताय

नफ़ा न कुछ इस में मिले और जान मुफ़्त में जाय जी

और इश्क़ कर के कोई बशर तो सुख से नहीं सोता है

अब सुनाता हूं मै तुम को एक किस्सा नया

इस में देना तुम हरगिज़ दख़ल ही नहीं

वह जो था भाई विचाज़ाद दस टंकी का

हुस्न देखा तो वह ख़ुद दीवाना हुआ

वह भी मरने लगा अपनी हमशीर पर

इश्क़ करने में रक्खी कसर ही नहीं

जामे पचामे सब तजे बसन्ती - तापर पतलून चढ़ाई जी

बैठन नाहीं पतलून देत है - ठारे करत हैं मुताई

और धुन अंग्रेज़ी कैसी बनाई जी

घर जाय के अंग्रेज़ी बोलत है समझत नांहि लुगाई

मांगत वाटर देत है रोटी-बोल उठे झुंझलाय जी

डेम यह तू क्या ले आई जी

———:०:———

P. 6314. गज़ल पी० ६३१४

मैं क्या बताऊं कि किस ग़म से बेक़रार हूं मैं
फ़रेब ख़ुदरये हुस्ने जमाल यार हूं मैं
शहीद जुम्बिश तेग़े निगाह यार हूं मैं
जिसे क़रार न आये वह बेक़रार हूं मैं
जहां में जिस का नहीं कोई पूछने वाला
उसी ग़रीब सितमगर की याद गार हूं मैं
हजूमे दाग़ जिगर की फ़सुर्दगी को न पूछ
ख़िज़ां ने लूट लिया जिस को वह बहार हूं मैं
क़वी है नाज़ मेरे दिल उसकी रहमत पर
बरोज़ हश्र करम का उम्मीदवार हूं मैं

दूसरी तरफ़ :— गज़ल

सिकूं हुआ है ग़म रूह व जुल्फ़ होने से
भर आये फ़ल्मे जिगर रात दिन के सोने से
क़रार हंसने से आता है अब न रोने से
कहीं के हम न रहे हाय दिल के खोने से
यह किस के इस्म गिरामी का था असर यारब
बची जो नूह की किश्ती तबाह होने से
ग़ुबार फैल कर इसी आलम से दाग़े जिगर
हरा हुआ है यह जंगल हमारे रोने से
वह बामे इश्क़ का ज़ीना था जिस का नाम है तूर
कलीम खुलगया पर्दा कलाम होने से

—:-०:—

9. पहाड़ी पी० ६३५९

हर इक अहले दिल आज बा चश्म पुरनम
यह कहता था बिकते हैं बाज़ार में हम
जो तू मुश्तरी है तो ऐ शाहे आलम
ब तेग़ अदाये तू सरमीय फरोशम
बनोक सनानत जिगर मी फ़रोशम - जिगर मी फ़रोशम
सुनो जब न बेदम की तुम बन्दा पर वर
तो फिर कहिये किस से कहे दिल की जाकर
कहां जायें अब छोड़ कर आप का दर
असीरी ज़पर्वाज़ गुलज़ार बेहतर
ब कुंज क़फ़स बाल व परमी फ़रोशम

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी

चली पी की नगरिया बन ठन के दुल्हन मोरा मैके में जी घब रावत है
ऐसो झूठे नगर से कूच भयो वह तो सांचा नगर कह लावत है
मोरे बाबल को डोला सजाने तोदो मोरे बीरन को कांधा लगाने तोदो
मोरे भाग सुहाग की आई घड़ी सखी काहे को देर लगावत है
मोरे मैके के कपड़े उतार धरो नहलाके कपूर से मांग भरो
मोरी माता पिता कुछ ग़म न करो ससराल बनरी जावत है

P. 6376. गज़ल पी० ६३७६

क्यों ऐ ख़याले जाना तू दिल से कम न होगा
उस वक्त क्या करेगा जब मेरा दम न होगा
जिस ने हंसी से छेड़ा हम आह भर के रोये
ऐसा कोई जहां में पाबन्दे ग़म न होगा
मैयत प मेरी आकर अफ़सोस उन का कहना

ऐ जान देने वाले अब कोई ग़म न होगा

उम्मीद वस्ल ही पर क़ायम है ज़ीस्त अपनी

हम जो के क्या करेंगे जब तेरा दम न होगा

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल।

काबे में गर बुतों का नहीं अब क़याम है-हम जा चुके यहीं है हमारा सलाम ह

सुनते हैं आज तेरी अदा बेनियाम है-यह सच है तो ज़माने का क़िस्सा तमाम है

क्या इमतियाज़ शाहो गदा हो सके यहां-सहीर इश्क़ वह है यूसुफ़ ग़ुलाम है।

इस क़दर है बज़्म उन को रक़ीबों से आशनागिर-हम देखते हैं दूर से गरदिश में जाम है।

P. 6479. ठुमरी पी० ६४७६

देखो नन्द के लाल छेड़ करत-भरन नाहीं देत गगरिया

तुम नाहक़ को काहन सताते हो-इन बातों से कोई न मज़ा पाते हो

यूं हीं तरसोगे प्यारे नाहीं आइ हूं मैं तोरी सजरिए

सब सखी थारी देखत हे संग को मेरो-गहे गर्वलगाये-लेती लाज मेरी

बिन्दा श्याम हैंगे खोट-न आइ हूं तोरी सजरिया

दूसरी तरफ़ :— ठुमरी

ऐरी गुइयां न आये मोरा सैया - मैं ढूंढू कहां उन का

कैसे करेगी प्यारी रयत कारो - जाके प्यारे को मेरे तू समझारी

समझा के मेरी गुइयां घर लाओ मेरी गुइयां

मेरी प्यारी जाऊं वारी वहीं जारी ला बिहारी

जोबन यूं ही हैं मोरे बीते जाते - वह सौतन के घर हैं आते जाते

नहीं आते क्या करूंगी ज़हर खाके मरूंगी

चाहे आवें या न आवें सतावें तड़पावें - ऐरी गुइयां - - -

उन ही प जान दूंगी बैठ रहूंगी चाहे आवें या न आवें

बिन्दा मोहे सतावें - घर सौतन के जावें चैन पावें तरसावें तड़पावें और लुभावें

P. 6516. गोड़ सारंग पी० ६५१६

गागर न भरन देत तेरो कान्हा माई - हंस हंस मुख मोड़ मोड़ छिट काई

कहो घूंघट पट खोल खोल सांवरे कों धाई

गागर न भरन देत तोरे कान्हा माई-जिस मत को भली बात लालको सिखलाई

नागर डगर जगर करत रार मिचाई

हूं तो पीर जमना तीर नीर भरन आई -गिरधर प्रभु चरण कमल मेरा मिल जाई

दूसरी तरफ़ :— होली

देखो होरी के खिलैया कैसे बन बन आये

कोऊ मुख सियाही मले कोऊ रोरी गाड़ी देत है - देखो होरी - -

कोई नाचत कोई टपकत मटकत कोई गत भाड़ बताये

सखी संग में सब बृजनन्दन - इत से भाग कहां जावे-देखो होरी - -

कोई गले लाये कोई मुंह चूमत कोई कर कुछ ही चलाये

सब पिये बहुत हैं बिन्दा इन से राम बचाये - देखोहोरी - - -

P. 6537. भैरवीं पी० ६५३७

सबा बेशक आती इधरही से तू है-कि तुझमें मदीने के फूलों की बू है

जो बेदाग़ कांटा जो बेदाग़ गुल है-वह तू है वह तू है वह तू है वह तू है

नहीं कोई बे ऐब इस बोस्तानमें-जो कांटोंकी ख़ू है वह फूलोंकी बू है

अमीर गुनहगार कों कुछ नहीं डर-हिमायत को हैदर शफ़ायत को तू है

सबा बेशक आती इधर ही से तू है-कि तुझ में मदीने के फूलोंकी बू है

दोहा—सुन ऐ बादे सबा तू जानिबे तैबा अगर गुजरे

तो जाकर सामना बाबे हरीम खास के परदे

दर अक़दस प अपना सर झुकाकर मेरी जानिबसे

बसद अदाब यूं कहना कि ऐ मालिक मदीने के

कि तुझमें मदीनेके फूलोंकी बू है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

कैसे सोये हो भारत प्यारे कैसे सोये हो धर्म दुलारे अब-जागो-जागो-जागो

आओ होश में आखें खोलो निज उन्नत दबज्भा उठालो

अब ग़फ़लत को तुम तियागो - प्यारे प्यारे भारत जागो

निज देश की ओर निहारो - उसे उन्नति पर पहुंचाओ

जिन देशों ने उन्नति की है - सब का कारण विद्याही है

बस विद्या प्रचार में लागो - प्यारे प्यारे भारत जागो

प्यारे इतनी बिनती है तुम से हमारी - सुधरें भारत की नरनारी

यही ईश्वर से बर मांगो - प्यारे प्यारे भारत जागो

——0——

P. 6601. पहाड़ी पी० ६६०१

क्या प्यारी तेरी सूरत मेरे दिल लुभाने वाले

बाल तेरे घुंघर वाले मांग निकली है मशशीर

तेरी भवीं चढीं कमान दिलके घायल करने वाले

तेरी आंखें बड़ी रसीली मध की माती डोरे लाल

वह हो जाता है बिसमिल जिस पर इक नजर तो डाले

क्या प्यारी तेरी सूरत - -

तू मिलता क्यों नहीं प्यारे तुझ को ज़रा तरस नहीं आवे

क्या मिलेगा ज़ालिम तुझ को मेरे दिल दुखाने वाले

चाल तेरी है बांकी लचकत जैसे मतवाला

दिल करता है पामाल धीमीचाल के चलने वाले

क्या प्यारी तेरी सुरत मेरे दिल लुभाने वाले

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

वह फल खाये चमन में जो लगाये है शजर पहिले

मजाज़ी से हक़ीक़ी हो लगाये दिल अगर पहिले

दो०-सजन दरस दिखायके कि हर मारा मनलीन-कृपा करत न देर भई

फिर हम को दुख दीन

तुम्हारे इश्क़ में प्यारे नफ़ा पीछेज़रर पहिले

हमरी हैगी नाव पुरानी आन पड़ी मझधार-कौन जुगत अब कृपा

करो कि तुम होगे जग तार

जो अन्दर नूह किशती थी गई कैसे उतर पहिले

—:०:—

P. 6660. ग़ज़ल पी० ६६६०

किसी का दिल कभी भूले से तुम अगर लेना-

हमारी महरोवफ़ा को याद कर लेना

हिना मिले न अगर तुम को वक़्त आरा यश-

हमारे ख़ून से तुम अपना हाथ भर लेना

तुम्हारे कूचे से जाती है लाश आशिक़ की -

शरीक होलो जनाज़े प फिर संवर लेना

जो दफ़न कर के चले दोस्त मुझ को मैंने कहा-

कभी कभी तो ख़ुदा के लिये ख़बर लेना

दूसरी तरफ़ :— घनगोर

उठी है घनगोर घटा यह बरसन लागे-कैसी करूं नींद नहीं आवे
गरज रहे बिजली चमके सुनी कोयल कूक मुझे - बिरहन को यह सताये-उठी-
एक तो अंधेरी पिया बिन डर लागे - सूनीसेज जिया तरसे-
कासे कहूं एरी सखी बीती-सगरी रैन बिन्दा-देखो घर श्याम नहीं आये-उठी- -

P. 6683. नात पी० ६६८३

इधर भी देख कि सीने फिगार हम भी हैं-ग़मे फिराक़ से बाहाल ज़ार हम भी हैं
गली मे तेरी ग़रीबुलद यार हम भी हैं-निगाहे लुत्फ़ के उम्मीद वार हम भी हैं
दिये हुये यह दिल बेक़रार हम भी हैं - -
तेरे सिवा कहें अब किस से मुदुआ दिलका-
कि खलक़ में नही हाजित रवा कोई तुझसा
शफ़ी उम्मत आसी है तो बरोज़े जज़ा-
हमारे दोस्त तमन्ना की लाज ही रखना
तेरे ग़ुलामों में ऐ शहर यार हम भी हैं
मिले जो तख़्त सुलेमां तों यां नहीं मंज़ूर-
न शाने क़ैसरो कसराय न रुतबाये ग़फ्फ़ूर
जो आरज़ू है तो यह है बसद ग़रूर से दूर-
जो सर प रखने को मिल जाये कफ़्श पाये हुज़ूर
तो फिर कहेंगे कि हां ताज दार हम भी हैं - -
इधर भी देख कि सीने फ़िगार हम भी हैं-ग़मे फ़िराक़ से बाहाल ज़ार हम भी हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हिज्र दिलबर में मेरी जान रहे या न रहे-खानये तन में मेरी जान रहे या न रहे
हाथ उठाऊंगा न उलफ़त से बुतों ब ख़ुदा-इस में चाहे मेरा ईमान रहे या न रहे

उम्र भर उस बुते काफ़िर की मुहब्बत में कटी—हम ख़ुदा जाने मुसलमान रहे या न रहे
वायदा वस्ल है कल देलो गिरह आंचल में-भूल जाओगे तुम्हें ध्यान रहे या न रहे
हिज्र दिल बर मे मेरी - - - - - - - - - -

P. 6702. घनगोर पी० ६७०२

प्यारे नन्द लाल मेरे काहे रोकत डगरिया-प्यारे - - -
नित ही करत झगड़ा हम से पनघट नाहीं जाने देत
देखत सब नारी मोरी पैयां क्यों गहें रे-काहे - - -
बिनती करूं मैं नाहीं वह मानत-सुनत नाहीं मेरी
छीन लीनी है गले को हार-मांगू नहीं देरे
बिन्दा देख ढीट लंगर पर बस मोरी लाज लेत
दूंगी दुहाई अब ही जाय नन्द जी के डेरे

दूसरी तरफ़ :— भजन

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पट सोई - मेरो तो - - -
तात मात भ्रात बंधू अपना नहीं कोई
छोड़ दई कुल की कान क्या करेगा कोई - मेरो तो - - -
संतन ढग बैठ बैठ लोक लाज खोई
आंसू जल सींच सींच प्रेम बल बोई - मेरो तो - -
अब तो बेल फैल गई आनन्द फल होई - मेरो तो - -
आई मैं भगत जान जगत देख मोहि
दासी मीरां गिरधर प्रभु तारो अब मोहि - मेरो तो - -

P. 6963. **ग़ज़ल** पी० ६९६३

मज़हब का हो क्यों कर इल्मो अमल दिल ही नहीं भाई एक तरफ़
किर किट की खिलाई एक तरफ़ कालिज की पढ़ाई एक तरफ़
क्या ज़ौक़इबादत हो उन को जो मुश्कलबों के हैं शंदा
हलवाये देसी एक तरफ़ होटल की मिठाई एक तरफ़
ताऊन तप और खटमल मच्छर यह सब कुछ पैदा कीचड़ से
बम्बे की रवानी एक तरफ़ और सारी सफ़ाई एक तरफ़
हर सिमत तो है एक दाम भला-रह सकते हैं ख़ुश किस तरह भला
अग़ियार की काबिश एक तरफ़ आपस की लड़ाई एक तरफ़
फ़रियाद किये जा ऐ अकबर कुछ हो ही रहेगा आख़िर कार
अल्लाह से तौबा एक तरफ़ साहब की दुहाई एक तरफ़

दूसरी तरफ़ :— **क़व्वाली**

मोहब्बत में मर मर के जीना पड़ेगा-कोई ज़हर देगा तो पीना पड़ेगा
वह फिर वायदा मिलने का करते हैं यानी-अभी कुछ दिनों हम को जीना पड़ेगा
हमें जिस में होगी रहाई क़फ़स से-वह शायद ख़ज़ां का महीना पड़ेगा
जुदाई के दिन कैसे काटे कटेंगे-बरस दिन का अब हर महीना पड़ेगा
नसीहत को आते हैं ग़म ख़्वार आसी-गरेबां को फिर आज सीना पड़ेगा

P. 6986. **नात** पी० ६९८६

सिफ़्त क्यों कर करूं रूए शहन शाह रसूलां की
सरासर है यह ़ूरत मुतला अनवारे यज़दां की

हमारा दिल उलझते ही वह ज़ुल्फें होगईं बरहम
ख़बर क्यों कर हुई यारब परेशां को परेशां की
कहेंगे अहले महशर मुझ को दीवाना मोहम्मद का
मेरे हाथों में होंगी धज्जियां मेरे गरेबां की
इन ही के नाम से रोशन हुआ इस्लाम आलम में
यही हैं चार शमये रोज़ये शाह रसूलां की

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल नात**

इक शोर है महशर में सरदार नबी आया-सरदार नबी आया - - -
उम्मत की शफ़ाअत को मक्की मदनी आया-खुल जाये सब कलियां - -
फिर तूर जलायेगा फिर ग़श्त में आयेगा-लब परजो कहें मूसा लफ़्ज़ अरबी आया
खुल जायें यह सब कलियां इस्लाम के गुलशन की-यह बादे सबा का झोंका ऐसा न कभी आया
शैदाये मोहम्मद हूं क्या कम है श्रफ़ इतना-महशर में कहेंगे सब देखो वह क़बी आया

P. 7021. **मुबारिक बदि** पी० ७०२१

बर तोई महफ़िल शाहाना मुबारिक बाशद- (दूल्हा दुल्हन की जोरी बन रहे)
साक़िया बादओ पैमाना मुगारिक बायद-दुल्हन और दूल्हा सलामत सालामत बाशद
दुल्हा भी सालामत रहे दुल्हन भी सालामत रहे वाह वाह
बाद शादी के ख़ुदा दे कोई फ़रज़न्द रशीद छटे महीने हो छट महीने हो बाद -
हम भी आकर कहें हर आन मुबारिक बाशद- (डालिये डालिये जेब में हाथ
अली तेरी पुश्ते पनाह शाह मरदां बाशद-हाफ़िज़ इन दोनों काकुरआं मुबारिक बाशद

आमीं ! आमीं ! चांद सूरज की जोड़ी बनी रहे आमीं !) हमेशाह दिलबर सर
जान मुबारिक बाशद

दूसरी तरफ़ :— सेहरा

बना के ला गुल ताज़े का बाग़बां सेहरा (अजी हुज़ूर मुबारिक मुबारिक २)
बना के ला गुल ताज़े का बाग़ां सेहरा (वाह भई)
भाइयों की जोड़ी सलामत रहे और रोज़ सेहरे बंधते रहें
कि सर से बांधेगा तु शाह नौजवां सेहरा
नज़र मिलाये हम से कि हम सना ख़्वां हैं
उठाइये तो ज़रा रुख़से महरबां सेहरा (वाह वाह वाह)
(दीजिये दीजिये जब हम बरात बढ़ने देंगे)
(पांच सौ रुपया मय दुशाला-पांच सौ रुपया मनीआर्डर करके भेज दीजिये)
किसे किसे है ख़ुशी और कितनी कितनी है
यह कह रहा है अज़ीज़ों का इमतहां सेहरा-(सब साह बान डालिये जेबमें हाथ)
बजाय फूलों को गूंधा हैं दिल के टुकड़ोंसे-
तुम्हारी रूह अगर है तो मेरी जां सेहरा-अजीनेक काम में इतनी देर !
क़वी यह कह दो कि राहत ज़रा सुना देना
कि सुनने आये हैं महफ़िल में क़दर दां सेहरा- (जनाब इतने में मामला नही
होगा दीजिये दीजिये हज़रत)
बना के ला गुले ताज़ा का बाग़बां सेहरा

P. 7039. नात पी० ७०३६

फिरता है नज़र में रुख़ ज़ेबाये मोहम्मद-ऐ सले अला बरक़ तजल्लाये मोहम्मद
यासीन का हर लफ़्ज़ है दांतो की सिफ़्त में है सुरत तो हाक दे रयनाये मोहम्मद
दम भर के लिये जैसे चमक जाती है बिजली-यूं जाके सर अर्श पनाह गाये
मोहम्मद

मैं हश्र में अल्लाह से फ़रियाद करूंगा-दिल में लिये जाता हूं तमन्नाये मोहम्मद
सुनते हैं जो यह शम्स कहीं ज़िक्र मदीना-बेसाख़्ता कह उठते हैं हम हाय मोह
म्मद

दूसरी तरफ़ :— नात

नगहत वद व आलम ज़गल रूये मोहम्मद-जन्नात नसारे चमन कूये मोहम्मद
सो सन बसनाये लबे नेकुये मोहम्मद-संबल बहबादारी गेसुये मोहम्मद
शमशाद ग़ुलामे कदा दिल जोये मोहम्मद
रोशन न शुदे रोज़ अज़ल ताबक़यामत-हरगिज़ न शगुफ़्ते चम निस्ताने नब वत
बोदे मतजल्ला न शबे तूर ब अजलत-पुर नूर न गश्ते शबेमयराज रसालत
गर जलवान करदे क़मरे रूए मोहम्मद-निगहत बद व आलम-ज़गल रुह मोह

—:-०-:—

P. 7106. दादरा पी० ७१०६

सैयां घर मां लगाये चन्दन बरवा - -
वाहरी चन्दन की हरी हरी पतियां सींचें भोजी सिंचावें देवरा
वाहरी चंदन में पड़ो है झूला-झूले भोजी झुलावें देवरा
टूट गई रसरी पलटगयो पटरा-धर पीटन भौजन ऊपर देवरा
वाहरे चन्दन बर्वा - - सैयां घर में लगायें चन्दन बर्वा

दूसरी तरफ़ :— पीलू

अरे तोरी हुंटवां पर नथनी और कलेलें करे हो-जियारा हाले डोले हो
कूचये यार में कल मैं ने पुकारा कि मैं आज
एक दिल बेचता हूं है कोई लेने वाला
दिल फ़रोशी की सदा सुन के यका यक घर से
मस्त नाज़ आगया दर्वाज़े प वह मत वाला

इस दिल रुबा सनम का जब से किया नज़ारा
आंखें दिखाके उसने बेमौत मुझ को मारा
कुछ बसचला न मेरा अरे बेसाख़ता पुकारा-जियारा हाले डोले
गुंचे खिलते हैं तो कहती है यही बादे सबा
चमन घर के फूलों में नहीं बूये वफ़ा
शिकवा तन जान मुहब्बत की शिकायत है बजा
ए क़वी यह दिल पर दाग़ ले आती है सदा-जियार - -
तोरे-हुंदवां पर नथनी अोरे कलालें करे हो (वाह वाह
जियारा हाले डोले हो - - - -

P. 7217. **दादरा** पी० ७२१७

मार डाले पतरिया की टन गन रे
मियां बाज़ारु जो जाते हो दोशाले के लिये-दो गज़ तनज़ेब भी लाना मेरी
ख़ला के लिये (वाह
लौंग इलायची भी लाना मसाले के लिये-लेते आना सुनवां से कंगन रे
मियां बाज़ार में जाकर ख़रीद करने लगे-वह कौल आशना के पूरे करने लगे
गिरो जायदाद अपनी धरने लगे-बाल बच्चे मियां के भूकों मरने लगे
बेच खाया जोरुवाकी नथ लटकन रे-मार डाला पतरिया की टन गन रे
ऐसा डसा चुड़ैल ने कि भूत बन गये-सारे जिस्म से सुख के ताबूत बन गये
कौड़ी रही न पास तो मज़दूर बन गये-डायनकी मोहब्बतमें मियां चोर बन गये
लूट खाया पतरियां ने तन धन रे

दूसरी तरफ़ :—

ग़ज़ल मज़ाक़िया

किसी रंडी के फन्दे में आना नहीं
यार आना नहीं यार आना नहीं - किसी रंडी - -

किसी रंडी के फन्दे में आना नहीं-बे वफ़ाओं से दिल को लगाना नहीं
यह भोली सूरत चिड़ियों को फंसा लेने का फंदा है
चिड़ीं मारों का और - इन रंडियां का एक धंधा है
मीठी बातों के फन्दे में आना नहीं-किसी - - - -
दग़ा दिल में मुंह पर चाह का इज़हार करते—
ज़माने हुस्न को और यह टकों को प्यार करते हैं
यहीं इंजाम इनसभों का आख़िर कार होता है—
ज़बां पर उफ़ गले में जूतियोंका हार होता है
शर्म होतो कभी मुंह दिखाना नहीं (ख़ूब कहो) किसी रंडी - -

P. 7243. **दादरा** पी० ७२४३

यहां आने में लाखों बहाने हुए - - -
यह अब्स कहना है मौक़ा न था और घात न थी
इक कज अदा के सिवा और कोई बात न थी
दिन को आसकते न थे आप तो क्या रात न थी
मेहेन्दी पांव में न थी आप के बरसात न थी
बस यही कहिये मंजूर मुलाक़ात न थी
यहां आने में लाखो बहाने हुए - - - -
क़ासिद के ब मिन्नत जो रवाना किया वहां
सामान जुमला ऐश मुहैया किया यहां
आहट प कान दर प नज़र थी कि नाग हां
क़ासिद ने आके कह दिया मेहेन्दी लगी है वां
बस खूं टपक पड़ी नगहे इंतज़ार से - - - (हाय मार डाला)

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

देखूं तो ज़रा पर्दाये हस्ती को हटा के
बालें में मेरी कौन है पर्दे में कज़ा के
ज़ख़्मों से दिले राज़ को गुल ज़ार बना के
सब तीर तेरे रक्खे हैं फूलों में बसा के
पामाल हुआ आप ही झोकों से हवा के
खुद मिट गया नक़्श कफ़े पा मुझ को मिटा के
ठोकर की निशां से है वसीअ ज़ीनत मदफ़न
उस ने तो बनाया मेरी तुरबर को हटा के-देखूं - -

—:०:—

P. 7446. ग़ज़ल पी० ७४४६

अग़ियार सीपूं सीपूं यह जां पुकारते है
क्या आप इन गदहों को डंडो से मारते हैं
लाला से शमय बोली रो रो के देख भया
चांटे उचक उचक के पर्वाने मारते हैं
(वाह बेटा) (वाह मेरे बेटे वाह)
दिल को मेरे दुखाया तूं मैं भी भों प ढेला
वे देखे क्यों वे क़ातिल यू तीर मारते हैं
(वाह वाह ! जैसी रूह हों वैसे ही फ़रिशते)

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

इधर मन बैठे हैं उधर मन हार बैठे हैं
हटींडा बीच में लेने वह चड़ीदार बैठे हैं
गये दफ़्तर जो पहले पीर से इक बिन तुझे देखा

कचहरी बंद दफ़्तर में मियां इतवार बैठे हैं
कहा करते थे वालिद कैस के फ़र्ते मोहब्बत से
खुदा मालूम किस जंगल में बरखुरदार बैठे हैं
वह जो ओढ़ हुए रूमाल रोज़न कार बैठे हैं
हकीम बू अली सीने के बरखुरदार बैठे हैं
अगर गल गश्त है मंज़ूर आओ ऐश बाग़ आओ
दरख़्तों पर चढ़े वां तालिबे दीदार बैठे हैं।

—

P. 7481. नात पी० ७४८१

हामिल बार अमानत है इनसान हैं यही—
जलवा अपना ही अयां देख कर हैरां है यही
अव्वल आख़िर है यही ज़ाहिर बातिन है यही—
यह जो सूरत है तेरी सूरत जानां यही
यही नक़शा है यही रंग है समा यही-हामिल - - -
अरे है नमाज़ अपनी वही जिस में नक़िबला हो न क़याम—
न तो औक़ात मुईन न अताअत न क्याम
नकज़ा है न अता है न दुआ है न सलाम—
अपनी हस्तो के सिवा ग़ैर का सजदा है हराम
मज़हब पीर मुग़ां मशरबे रिंदां है यही
जिस्म ख़ार की है तेरा ग़ैरत दौलतमें तबाह—
अपनी हस्ती के पर्दा कर दीदये बातिन से निगाह
कहीं है मवल गदा और कोई शहनशाह—
बिस्तरा टाट का गो पारा कम्बल का कुलाह
ताज खुसरू है यही तख़्त सुलेमां है यही-हामिल - - -

दूसरी तरफ़ :— नात

इक शोर मचा है रोजे जज़ा सरदार दो आलम आवत हैं
जो अहमद नाम खुदा के दुलारे शाह रसलां कहलावत हैं
ऐ कालो कमलिया वाले पिया मुझे भूल न जाना रोज़े जज़ा
इस बात की रखना लाज शहा हम तो तुमरे कहलावत हैं
गुल कारी है दस्त क़ुदरत की यह जगह है बहार न्योदत की
यह क़मरियां बाग़ रसालत की कह पीपी शोर मचावत है
है शग़ल किसी का नाराज़नी कहता है कोई रबे अरनी
मोह ताजन को वह अरब के ग़नी कब देखं जमाल दिखावत हैं

—:-०-:—

P. 7603. गज़ल पी० ७६०३

नकिसी की आंख का नूर हूं न किसी के दिल का क़रार हूं
जो किसी के काम न आसके मैं वह एक मस्ते गुब्बार हूं
मैं नहीं हूं नग़मये जां फ़िज़ा मुझे सुन के कोई करेगा क्या
मैं बड़े बरोग की हूं सदा किसी दिल जले की पुकार हूं
मेरा रंग रूप बिगड़ गया मेरा यार मुझ से बिगड़ गया
मेरा यार मुझ से बिछड़ गया - - - - - - - - - - -
जो चमन ख़िज़ा से उजड़ गया मैं उस की फ़सले बहार हूं
न तो मैं किसी का रक़ीब हूं नहीं मैं किसी का हबीब हूं
जो बिगड़ गया वह नसीब हूं जो उजड़ गया वह दयार हूं
कोई फूल मुझ प चढाये क्यों कोई मुझ पशमय जलाये क्यों
कोई मुझ प अश्क़ बहाये क्यों कि मैं बेकसी का मज़ार हूं
न किसी की आंख का नूर हूं न किसी के दिल का क़रार हूं

दूसरी तरफ़ :— गज़ल

दामन उठाया पहिले तो उठता गुबार देखकर—
फिर कुछ समझ केरो दिये मेरा मज़ार देखकर
रौनक़े बाग़ दिल गई रोए निग़ार देखकर—
बक़के ख़िज़ां चमन हुआ लुत्फ़े बहार देखकर
दिल की लगी बुझाये कौन रोते को अब हंसाये कौन
अरे तुम ने तो आंख फेर ली हालते ज़ार देख कर
अबला पा निकल गये कांटों को रोदेते हुए
सूझा न कुछ भी रास्ता महमिल यार देखकर
चुप कलीम इस लिये तूर का माजरा कहो
अरे कुछ तो बताओ क्या हुआ जलवये यार देख कर
अरे दामन उठाया पहिले तो उठता ग़ुबार देख कर-फिर कुछ - -

P. 7672. भजन पर्ज पी० ७६७२

हां रे सरन में आये हैं हम तुम्हारे दया करो ऐ दयाल भगवान
न हम में बल न हम में शक्ति न हममें साधन न हम में भक्ती
तुम्हारे दर के हैं हम भिकारी दया को ऐ बयाल भगवान
जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी दया करो ऐ दयाल भगवान
प्रदान कर दो महा शक्ती भरो हमारे में ज्ञान भक्ती
तुम्हीं कहावोगे सर्व शक्ती दया करो ऐ दयाल भगवान

दूसरी तरफ़ :—

कहां गये वे दिन बुढ़िया बोल तब तो धारतही या तन प्रसन्न रूप अतोल
अब तो जंग सहरा की लागी उड़ गये जोबन झोल-कहां गये - -

चेत भये सारे कच कारे पट के किलत कपोल

भूल गया नैना कमनियती झोल कटे कच कोल-कहां गये

जिन प वारन थे जीवन धन मन की खिड़की खोल - - -

आज न ताक़त तब अंगन को दे रसिया बिन मोल-कहां गये - -

अब क्यों डग मगात डोलत डोलत है इत उत डांवा डोल

सब तज भज शंकर स्वामी को अरे प्रीत प्रेम की धूल



P. 7723. **क़व्वाली** पी० ७७२३

हर तरफ़ शोर यस्त गोग़ा (आहे) रा बबीं-रक़्स तोरू हाल मूसा रा बबीं

आं तजल्ली हाय ज़ेबा (आहे) रा बबीं-सोख़्त बे वजह हम तमाशा रा बबीं

कुश्त बे जुर मम मसीहारा बबीं

तूने कब देखी सना माह की-बक्ते तोलद राह मोहब्बत की मिली

वही जाने आग (हां) जिसके लगी-(अरे) कह अज़ दीदार यूसुफ़ ग़ाफ़लीं

दाज़ यूसुफ़ो ज़ुलेख़ारा बबीं

फ़िक्र कब हो उन को नंग (हां) नाम की-जिस ने जान अपनी

मोहब्बत में खोदी—हर तरफ़ - - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

नज़र आया निराला ढंग दुनिया से नया आलम

नहीं मुमकिन वहां तक बार पाये कोई ना महरम

न कोई उस जगह मक्लस न कोई इस जगह हम दम

नमीं दायम च मंज़िल बवद शब जाय के मन बूदम

बहर सोर क़स बिसमिल बूद शब जाय के मन बूदम

छुरी खींचे हुए ग़मज़े मिज़ां ताने हुए भाले

वह लम्बे बाल घुंघरू वाले भौंरे की तरह काले

हज़ारों इस निगाहे मस्त से मतवाले कर डाले

परी पैकर लगा रे सरो क़द के लाल रुख़सा रे

सरापा आफ़ते दिल बुवद शब जायके मन बूदम

कलेजे में जलन जब आतिशे फ़ुर्क़त से दूनी हो

सकून सब्रो क़रार ताक़त हाथ से जाये तो जाये

तड़प कर तुम भी खुसरू की तरह नहीं पुकार उठो

मरा अज़ आतिशे इश्क़ कि दामन सौख़ते खुसरू

मोहम्मद शमय महफ़िल शब जाय के मन बूदश

—:०:—

P. 7864. **नात** पी० ७८६४

होरे नहीं क्या जानता आलम की शान कबरिया तुम हो

यह परदा है शरीअत का कि मह बूबे ख़ुदा तुम हो

नहीं जोश मोहब्बत में सर सर मद को कट वाया

कहीं मनसूर के मुंह में अनलहक़ की सदा तुम हो (हक़ है)

उलटा कर लफ़्ज़ अहमद से जो देखा अरे मीम का परदा

तो नक़्शा इस की वहदत का नज़र आने लगा तुम हो

रहें कब तशनये लब हम आप के कहला के महशर में

नसीम जाम को सर हो शहीद अरे कर बला तुम हो

मुनीर अपने गुनाहों से डरते क्यों अब क़यामत में

शफ़ीअ रोज़ महशर मालिक रोज़े जज़ा तुम हो-नहीं क्या - - -

दूसरी तरफ़ :— **नात**

अरे क्या जलवे हैं उस के पेश नज़र सुभान अल्लाह सुभान अल्लाह

यह अरज़ वस्मा यह शम्सो कमर सुभान अल्लाह सुभान अल्लाह

हर ग्रानका है इकरंग नया ग्ररे हर रंग की है इक शाने जुदा
वहदत का शजर कसरत के समर ग्ररे सुभान ग्रल्लाह सुफान ग्रल्लाह
इस दर्जे तरक़्क़ी ख़ाक को दी वह होश में ग्राकर शौक़े नबी
इस शौक़ का ख़ुद मंज़ूर नज़र सुभान ग्रल्लाह सुभान ग्रल्लाह
बस जायेगी इस मे सांस तेरी हो जायेगा तु पाकीज़ो नफ़ीस
ग्ररे दिन रात कहा कर ए ग्रकबर सुभान ग्रल्लाह सुभान ग्रल्लाह

P. 8043. ग़ज़ल पी० ८०४३

रोती है वहशत मुझे मोहतांज सामां देख कर
दुकड़े दमां देख कर पुर्ज़े गरेबां देख कर
इस तरह गुज़री हयाते चंद रोज़ा दहर में
ग्रांख गोया खुल गई ख़्वाबे परेशां देख कर
शौक़ की वार फ़्तिगी ने रब्त पैदा कर दिया
हसरतें बढ़ने लगीं खंजर को ग्ररयां देख कर
क़त्ल का बस राज़ यह है ग्रक्स रुख़ खंजर में था
मैं गले मिलने लगा तस्वीर जानां देख कर

दुसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

रक्खें न ग्राप गुल को मेरे दिल के सामने
बिसमिल शगुफ़्ता होगा बिसमिल के सामने
नक़ा चला है नजद को लैला की है दुग्रा
परदा उठे तो क़ैस हो महमिल के सामने
ग्रब क़िसमत ग्रज़माने की सूरत है एक ही
तलवार कह दूं खींचेगें क़ातिल के सामने

ग्रादाब क़त्ल गाह सिखाती है सब को तेग़
गरदन रहे झुकी हुई क़ातिल के समाने
जाने को यूं तो जान गई सर गया मगर
सद शुक्र बात रह गई क़ातिल के सामने

———:०:———

P. 8168. ग़ज़ल पी० ८१६८

चिटख़ के कहता है ग़ुन्चा ग़ुन्चा गुलों से बढ़कर बहार तुम पर
चहक रहे हैं चमन में बुलबुल हज़ार जानें निसार तुम पर
जलाया दोज़ख़ को कैसा कैसा बसाया ख़ुल्दे बरीं को क्या क्या
मज़ा हो रोज़े जज़ा जो रखदे जज़ा को परवरदिगार तुम पर
तुम ग्रौर मोहब्बत का उसकी दावा तुम्हारी ग्रांखें ग्रौर उसका जलवा
ग्रमीर तुमको हुग्रा है सौदा जुनूं का जिन है सवार तुम पर
चिटख़ के केहता है - - - -

दूसरी तरफ़ :— नात

यह ग़म है कि उस रश्के क़मर को नहीं देखा
नाले किये क्या क्या न किया ख़ब सा रोया
इतने में मुसौविर को ज़रा रैहम जो ग्राया
नक़्शे कई तसवीरों के वह सामने लाया
बोला कि यह युसुफ़ हैं यह मूसा हैं ये ईसा
ग्ररे मैने कहा इनमें से किसी पर नहीं शैदा
जब सामने की मेरे शबीहे शहे वाला
बे साख़्ता उस वक़्त ज़बां से मेरी निकला
दिल को मेरे तसख़ीर किया इस ग्ररबी ने
मक्की मदनी हाशमी यो मुत्तलबी ने

आरासता जब होगा दिला - - - - -
और लावेंगे तशरीफ़ - - - - -

P. 8169. नात पी० ८१६९

मूसा से कहो देख लें सरकारे मोहम्मद कि मोहम्मद कि मोहम्मद
अल्लाह का दीदार है दीदारे मोहम्मद कि मोहम्मद कि मोहम्मद
सोते से जगा दे मेरी किसमत को इलाही कि इलाही कि इलाही
सोते में दिखादे मुझे दीदारे मोहम्मद कि मोहम्मद कि मोहम्मद
जन्नत को कहीं ढूंढते जाना तो यक़ीं है कि यक़ीं है कि यक़ीं है
देखी न वो क्या है पसे दीवारे मोहम्मद कि मोहम्मद कि मोहम्मद
कह दो कि बुलायें न मुझे खुल्द में हूरें
अच्छा हूं तहे सायए दीवारे मोहम्मद कि मोहम्मद कि मोहम्मद

दूसरी तरफ़ :— नात

किस बादये वहदत का आता है ये मसताना
हर नक़श क़दम पर है जिस मस्त के मैखाना
उस बादय वहदत का जो हो छका मसताना
कब मुंहसे लगायेगा वह सागरी पैमाना
किस आग में जलता है जाना तेरा दीवाना
कुछ शमअ की सूरत है कुछ हालते परवाना
मजनूं भी मुझे अब तो यूं देखके कहता है
किस ग़ैरते लैला का आता है ये दीवाना
किस बादये वहदत - - - -

—:—:—

P. 8290. ग़ज़ल पी० ८२९०

मिटा मिटा जो निशाने मज़ार बाक़ी है
शहीदे नाज़ की एक यादगार बाक़ी है
रिहा कर अब तो खुदा के लिये हमें सैयाद
कि सुनते हैं अभी फ़सले बहार बाक़ी है
ज़रा तो और खुदा के लिये ठहेर ऐ मौत
अभी तो हसरते दीदार यार बाक़ी है
खुदा के वासते सूरत देखादे ओ ज़ालिम
लबों प दम है तेरा इन्तिज़ार बाक़ी है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

यहां भी आप बाज़ आते नहीं मसताना चालों से
बस अब तो भर गया मैदाने मेहशर पायमालों से
ज़बाने हाल से कहते हैं गोया फूल गुलशन के
जिगर टुकड़े हुआ जाता है बुलबुल तेरे नालों से
हज़ारों को हुआ सौदा हज़ारों को हुआ सकता
तुम्हारे बिखरे बालों से तुम्हारे गोरे गालों से
सुना तूने दिले नालां प आया है पयाम उनका
ज़रा हम से भी मिल लेना अगर फ़ुरसत हो नालों से
यहां भी आप बाज़ - -

—:—:—

P. 8291. ग़ज़ल पी० ८२९१

बुत कहें या सिफ़ते हुसने खुदा दाद करें
हिज्र की रात किया कहके तुझे याद करें

ग़मरसीदा है जो तड़पेगा तो मर जायेगा
आप इतना तो ख़याले दिले नाशाद करें
अपना होता तो शरीके ग़मे हिजरां होता
बेवफ़ा दिल था गया जाने दो क्या याद करें
आशियाना न जला जानेदे नाराज़ नहो
बाग़बां ले ले व.सम अब से जो फ़रयाद करें
दिले बेताब की बर आयें उमींदे अक्सर
मेहरबानी जो ज़रा यह सितम ईजाद करें
बुत कहें या सिफ़ते - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— नात

शौक़ है बादाकशी का तेरे मस्ताने को
मये तौहीदसे भर साक़िया पैमानेको
नहीं मुमकिन कि मोहब्बत में न रुसवाई हो
मेरी जां मान न तू ग़ैरके समझाने को
हरमो दैरके जलवे यहीं आते हैं नज़र
रख सलामत मेरे अल्लाह सनम ख़ानेको
दम मोहब्बत का तेरी भरता है दिन रात मुनीर
यूं तो ज़ाहिर में मुसल्मान है क़सम खाने को
शौक़ है बादक़शी का तेरे - - - -
मये तौहीद से भर साक़िया पैमाने को
शौक़ है बादाकशी का - - - -

———

P. 8523. भैरवीं पी० ८५२३

दिल से निकल के आहे रसा अब किधर गई
कैसी हवा थी जो मुझे बेचैन कर गई

जाने को लाख बार यही अर्श पर गई
रोना ये है कि आह मेरी बे असर गई
मिलना जो है तो हश्र में मिल लेंगे जावो तुम
ग़ैरों से यह न पूछो कि मैयत किधर गई
उनके सिधारने का क़रीब आगया है वक़्त
राहत उठो कि लज़्ज़ते ख़ाबे सहर गई
दिल से निकल के - - - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

फ़स्ले गुल का क़ातिला जब से रवाना होगया
ख़ानये सैयाद मुझको आशियाना होगया
तबअ बरहम उनकी मुझसे दोस्ती पहले से थी
हाथ गेसू को लगादेना बहाना होगया
मेरी तुरबत को तकल्लुफ़ की ज़रूरत क्या रही
जब ग़ुबार उठा हवा से शामियाना होगया

——— :-०- ———

P. 8585. नात पी० ८५८५

तेरी ज़ात आलम में आई न होती
तो ज़ाहिर ख़ुदा की ख़ुदाई न होती
मोहम्मद की गर ज़ात आई न होती
तो कलमे से दिल की सफ़ाई न होती
अली को जो दुनिया में पैदा न करता
तो मुशकिल ही होती कुशाई न होती
शेर । मोहम्मद गुल अस्त व अली बूये गुल
बनी फ़ातेमा अन्दर आं बर्गे गुल

जो हाजत रवा ऐसा पैदा न होता
तो आलम की हाजत रवाई न होती
नबी अपनी उम्मत प आशिक़ न होता
तो उम्मत की मुशकिल कुशाई न होती-तेरी ज़ात - - -
तो ज़ाहिर ख़ुदा की ख़ुदाई न होती-तेरी ज़ात - - -

दूसरी तरफ़ :— नात

क्या उमीदे मग़फ़िरत ऐसे ख़तावारों में हूं
दिल की बख़शिश ही नहीं मैं उन गुनहगारों में हूं
(वाह वाह) नेक व बद दोनों किये हैं काम मैं ने ऐ करीम
बेगुनाहों में खड़ा हूं या गुनहगारों में हूं
(वाह रे वाह वाह रे वाह) क़हर से उनकी बिगड़कर उसकी
रेहमत ने कहा
जितने आसी हैं मैं उन सबके मददगारों में हूं
(वाह वाह वाह वाह) काबे वाला होके करता हूं बुतों से छेड़ छाड़
जोड़ता तसबीह का रिशता मैं ज़ुन्नारों में हूं
मुद्दत बादा परसती कौन लायेगा यक़ीं
जबकि येह दुनिया न थी मैं जब से मैख़ारों में हूं

—:—

P. 8644. नात क़व्वाली पी० ८६४४

या ख़ुदा जिस्म में जब तक कि मेरी जान रहे
तुझ प सदके, तेरे महबूब प क़ुरबान रहे
दिल वही दिल है जिस दिल में तेरा सामान रहे
जान वह जान है जिसमें तेरा ईमान रहे

ना उमेदी से बचाना मेरे दिल को यारब
वस्ल मुमकिल नहीं तो वस्ल का अरमान रहे
कोई मैहशर में नहीं पूछने वाला यारब
मुझ गुनाहगार सियहकार का भी ध्यान रहे
कुछ रहे या न रहे पर ये दोआ है कि अमीर
निज़अ के वक्त सलामत मेरा ईमान रहे
या ख़ुदा जिस्म - - - - -

दूसरी तरफ़ :— नात

तेरा करम जो शहे ज़ी वक़ार हो जाये
ज़र्रये ख़ाक भी ताजदार हो जाये
हसब जो रौज़ये पुरनूर का येह क्या साक़ी
उतर के चांद चराग़ मज़ार होजाये (वाह वाह)
जो देख पाय गुले दाग़हाय इश्क़े रसूल
गले का हार नसीमे बहार हो जाय
गर इसमे इसकी कारे नेक देखनी हो अगर
गुनाहगार ज़रा शर्मसार हो जाये
हुज़ूर हश्र में रौनक़ अफ़रोज़ हों तो अमीर
गरम हों बाम तो सुअ पुकार हो जाये

—:—

P. 8704. नात पी० ८७०४

मेरी किशती को आन के पार लगा तोरे रुख़ के बारे संयदना
मेरे हाल प अबतो करदे दया तोरे रुख़ के बारे सैयदना
तोरी याद में कबसे बेकल हूं तोरे हिज्र में हरदम रोवत हूं
मोहे सपने में आन के दर्स दिखा तोरे रुख़ के बारे संयदना

कहीं उनके दुवारे जाय अगर यही कहियो सबा वोह रौज़े को
तोरे हिज्र में रोती है दुनिया तेरीतोरे रुख़ के बारे सैयदना
तुझे कहते हैं रब तू है सब का वली तोरे मिलने से दिल की है यास खुली
मेरे हाल पभी कर बहरे ख़ुदा तोरे रुख प बारे सयदना

दूसरो तरफ़ :— ग़ज़ल

ऐ काश दरे शह पर जा पहुंचे यह मसताना
अरे साक़ी से तआरुफ़ होहाथों में हो पैमाना
दिखलादे झलक अपनी ऐ जलवये जानानां
वोह शौक़ अता करदे होजाऊं में मस्ताना (वाह वाह)
किस आग में जलता है जानां तेरा दीवाना
कुछ शमअ की सूरत है (अहो) कुछ हालते पर्वाना
(वाह वाह)

P. 8882. ग़ज़ल पी० ८८८२

किसी के इश्क़ में रोते हुये लहू आये
ख़ुदा का शुक्र कि मैहशर में सुरख़रू आये
वही शहीदे नज़र है तुम्हारा मैहशर में
कफ़न में जिसके टपकता हुआ लहू आये
लें वोह जान तो लें ख़ैर यह ख़ुशी उनकी
कहूंगा हाल कहीं वक्ते गुफ़्तगू आये
लहद के फूल उठाकर वोह सूंघने को हैं
फ़ना के बाद भी यारब वफ़ा की बू आये (वाह वाह वाह)
हबीब वाह उन्हीं को देखकर वोह कहते हैं
जिसे हो हुस्न का दावा वोह रूबरू आये—किसी - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

किसी पर नहीं है भरोसा किसी का
अरे हां न हमदर्द दिल हो कलेजा किसी का
कोई नाउमीद से है जांकनी में
कोई देखता है तमाशा किसी का
अरे ख़ुदा से मैं हरबार तौबा हूं करता
बढ़ाकर घटाना न रुतबा किसी का
रहे ख़ूने नाहक़ का मैहशर प दावा
न खुलवाओ अब मुझ से परदा किसी का
किसी पर नहीं है भरोसा किसी का
न हमदर्द दिल हो कलेजा किसी का

P. 8971. मुसज़ाद। पी० ८९७१

काबे व कलीसे में वह कहते हैं क्या है, सब सजदों की जा है
और उनको तो मेरे दर्द भरे दिल में मज़ा है, हां रहना रवा है
जब उनसे बयां कीजिये तकलीफ़ जुदाई, अरे अल्लाह रे सफ़ाई
फ़रमाते हैं यह दिल लगाने की सज़ा है, अरे चाहत का मज़ा है
परकालये आतश है मेरी आहे शरर बार, फूंका मेरा घर बार
मेरा न मेरी ख़िरमने हसती का पता है, बस नामे ख़ुदा है
बेदम वहां ख़त की न पयामी की रसाई, अरे अल्लाह रे सफ़ाई
बेकार हैं नामे यह अबस आहो बुका है, अब होना हो क्या है
काबे व कलीसे में - - -

दूसरी तरफ़ :— मुसत ज़ाद

आंख बरछी की अनी थी कि संभाली न गई, दिलका ख़ूं होके रहा
जब पड़ी सीने प मेरे कभी ख़ाली न गई, जान को साथ लिया

कुशतये नाज़से कहती है यह मक़तल में क़ज़ा, क्यों जी ! कुछ बस न चला
तुम बचाते तो रहे जान बचाई न गई, न रुका तीरे अदा
मैकदे में हरम व दैर कलीसा में गये, हम जहां जाके रहे
दिल से तू और तेरी तसवीरे ख़याली न गई, तुझको ही सजदा किया
जब कहा उनसे कि फिर तुम मेरे दुशमन से मिले, कहके क़ायम न रहे
बोले बेदम यह तेरी ख़ाम ख़ियाली न गई, और तेरा शक न गया
आंख बरछी की अनी - - -

P. 9071. भजन पी० ६०७१

रामचन्द्र तुम्हीं तो हो प्राण के बचैया
पापिन के सकल पाप नाश हो करैया
हमारी निमित्त कष्ट उठायो लैके मानुष जन्म आयो
कामदेव जोर ढायो सुर्ग के बसैया
अन्त न पापी मन डराय देही मोरो थरथराय
काहे नैया डगमगाय सुर्ग के बसैया
राहत की सुन लो आज
वाकी तुमरे हाथ लाज
बिगड़े सब बनावो काज
जगत के सहैया
राम चन्द्र तुम्हीं - - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

मिले दो लाल दशरथ को मुक़द्दर हो तो ऐसा हो
पिता और पुत्र का नाता जो ख़ुशतर हो तो ऐसा हो

जनकपुर में धनुष तोड़ा बियाहा जाके सीता को
जो शक्ती हो तो ऐसी हो दिलावर हो तो ऐसा हो
भ्राता कैसा होता है कोई पूछै यह लछमन से
न छोड़ा साथ बन में भी ब्रादर हो तो ऐसा हो
मिले थे रामको भाई भरत और शत्रुघन लछमन
जगत में भागशाली और सिकन्दर हो तो ऐसा हो
मिली राहत यह परजा को बना हर एक दिल में घर
किसी अवतारकी मूरत का मन्दिर हो तो ऐसा हो

—:-०-:—

P. 9250. ग़ज़ल पी० ६२५०

रंग है आज मये हो शरबा दे साक़ी
फूल का भर के कटोरा मुझे लादे साक़ी—रंग है - -
नमाज़ पढ़ते हैं और रोज़े प जीते हैं मस्त
अभी उठ बैठें जो क़ुम क़ुम की सदा दे साक़ी
नशा चढ़ता है उतरते ही सुराहो से गिलास
चक्कर आजाय जो सागर की दिखा दे साक़ी
वारिसी मैं का इस अकबर को लगा है चसका
किशतिये बादये वारिस में बिठा दे साक़ी। रंग है - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

शक्ल जब बस गई आंखोंमें तो छुपना कैसा
दिलमें घर करके मेरी जान ये परदा कैसा
बा अदब हैं तेरे सब कुशतये नाज़ ए क़ातिल
सांस लेंगे न दमे ज़ब्ह तड़पना कैसा
क्या कहा तुमने कि हम जाते हैं दिल अपना संभाल

यह तड़पकर निकल आयेगा संभलना कैसा
गमें बाज़ारिये ख़ुरशीद कयामत हुई सद
हश्रमें दाग़े मोहब्बत मेरा चमका कैसा - शक्र जब - - -

P. 9364. पी० ६३६४

नात

महबूबे ख़ुदा शाफ़ये महशर है हमारा
फ़िरदौस जिसे कहते हैं वोह घर है हमारा
तैबा की इवज़ गुलशने फ़िरदौस न लेंगे
मुशताक़ तुम्हारा दिले मुज़तर है हमारा
उम्मत है मोहम्मद की सना पूछते क्या हो
फ़िरदौसमें ख़ीमा लबे कौसर है हमारा
उम्मतमें तुम्हारी हैं गुलामोंमें तुम्हारे
तक़दीर हमारी है मुक़द्दर हैं हमारा
मैहशरमें हमें ले चलो जन्नतमें फ़रिशतो
वां जलवा फ़िगन साक़िये कौसर है हमारा

दूसरी तरफ़ :— नात

जो यूसुफ़में इशक़ मिज़ाजी की ख़ू है
तो अहमद में इशक़े हक़ीक़ी की बू है
कहा हक़ से अहमद ने मेराज की शब
बतादे ये क्यों आज परदे में तू है
जो साक़ी से मांगी शराबे मदीना
तो पूछा यह मुझसे कि तू बा वज़ू है
तेरी राह में अपनी हसती मिटा दूं
अज़ल से तेरे दिल में यह आरज़ू है
फ़रिशते ये कहते थे आपस में हंसकर

मोहम्मद की प्यारी अजब गुफ़्तगू है
नहीं तेरा कोई दो आलम में हमसर
तेरी ज़ात पाकीज़ा ला वहद हू है

P. 9431. पी० ९४३१

ग़ज़ल

क़त्ल के शौक़ में कहता हुवा क़ातिल क़ातिल
लब के बाहर निकल आया है क़ातिल क़ातिल
जो मेरी तेग़ ज़रा उनके हैं घायल क़ातिल
हश्र में पूछेंगे कहते हुये क़ातिल क़ातिल
मैने देखा नहीं ऐसा कोई बांका दरजा
दोदा हरनाम से है मेरे लिये क़ातिल क़ातिल

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

मुबारक जवानी पर आना किसी का
हुवा औज पर अब ज़माना किसी
शबे वस्ल तो चैन से गुज़री लेकिन
सितम होगया रुठ जाना किसी का
छुपाकर दुपट्टे से मुंह अपना बोले
मज़ा दे गया मुसकुराना किसी
(वाह वाह राहत हुसैन क्या गा रहे हो)
जहां जिसको ताका वहीं उसको मारा
क़यामत है या रब निशाना किसी का
जवानी के आलम में अंगड़ाई लेना
वोह तन तन के जोबन दिखाना किसी (आह)
जहां जिसको ताका - - -

P. 9634. ग़ज़ल पी० ६६३४

मज़ा मिला उन्हें सुनने मुझे सुनाने में ।
कोई तो बात थी ऐसी मेरे फ़िसाने में ।
हम इस ख़ियाल से खुद हो गये कफ़स में असीर ।
कि सख़्तियां हैं बहुत आशियां बनाने में ।
जहां की बात हो वायज वहीं वोह अच्छी है ।
शराब ख़ाने की बातें शराब ख़ाने में ।
वोह देख सैहने गुलिस्तां से भी धुवां उठा
ग़ज़ब का सोज़ था बुल बुल तेरे तराने में ।

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

सब से तुम अच्छे हो तुम से मेरी क़िसमत अच्छी ।
यही कमबख़्त दिखा देती है सूरत अच्छी ।
हुस्ने माशूक़ से भी हुस्ने सुख़न है कमयाब ।
एक होती है हज़ारों में तबियत अच्छी ।
ज़ोर व ज़र से भी कहीं दाग़ हसों मिहते हैं ।
अपने नज़दीक तो है सब से इताअत अच्छी ।

—:०-:—

P. 9740. नात पी० ९७४०

मेरा दिल वही दिलरुबा भी वही है ।
जो है मुद्दई मुद्दआ भी वही है ॥
जो दर्दे जिगर है शिफ़ा भी वही ।
मरज़ भी वही है दवा भी वही है ॥
तयेयुन से बाहर हुवे जब तो समझे ।

जो है इबतिदा इनतिहा भी वही है ॥
मोहब्बत की आंखें ग़ज़ब की निगाहें ।
जफ़ा भी वही है वफ़ा भी वही है ॥
वही ज़िन्दगी है वही मर्ग अकबर ।
बक़ा भी वही है फ़ना भी वही है ॥
मेरा दिल भी वही दिलरुबा - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

लेता है बोसे उठके कफ़े पाय यार के ।
अल्लह रे हौसिले मेरे मुशते ग़ुबार के ॥
तुम अपनी शोख़ आंखों की तारीफ़ करते हो ।
और फिर मुक़ाबिले में दिले बे क़रार के ॥
सैय्याद ने क़फ़स में ख़बर तक न की हमें
आये भी और गुज़र भी गये दिन बहार के ॥
गुल कर सके न मेरी शबे हिज्र का चराग़ ।
झोंके बहुत से आये नसीमे बहार के ॥
लेता है बोसे - - - - - -

———— :०: ————

P. 9780. भीम पी० ९७८०

वही क़स्र वही गुलज़ार भी है जो वह यार नहीं तो कुछ भी नहीं ।
गुल ग़ुंचा है फ़स्ले बहार भी है वह निगार नहीं तो कुछ भी नहीं ॥
कभी सक्तह है कभी आहो फ़ुग़ां कभी दर्दे जिगर कभी सोज़े निहां ।
दिले ग़मगीन है और ग़मे यार भी है ग़मख़्वार नहीं तो कुछ भी नहीं ॥
वही तख़्ते तजम्मुल मसनदे जम वही माही मरातिब जाहो हशम ।
वही क़स्र वही दरबार भी है सरकार नहीं तो कुछ भी नहीं ॥

दूसरी तरफ़ :— भीम

मोलिमे गुल है अजब रंग है मैख़ाने का
शीशा झुकता है कि मुंह चूम ले पैमाने का
ख़ूब इन्साफ़ तेरी अन्जुमने नाज़ में है
शमअ का रंग जमे ख़ून हो परवाने का
मैं समझा हूँ तेरी इशवा गरोंको साक़ी
काम करती है नज़र नाम है पैमाने का
रात भर आतशे हसरत से जला करती है
शमअ पर सब्र पड़ा है किसी परवाने का
सोहबते पीरे मुग़ां में यह खुला राज़ जलील
ख़ुल्द कैहते हैं जिसे नाम है मैख़ाने का

माष्टर रामऔतार

P. 7604. ग़ज़ल पी० ७६०४

छुपके बैठे किस लिये आरे जाने जहां परदेमें हो
चाहनेवालोंमें क्यों साहब नेहां परदेमें हो
जिसको कहते हैं मुहब्बत क्या उसी का नाम है
तुम रहो बे परदेमें बाहर और मैं यहां मिहा परदे में हो
आये वह परदे से बाहर मुंह प परदा डालकर
बोले मीमे मारफ़त की दास्तां परदे में हो

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

सर जहां रक्खा था वह संगे दरे जानाना था
क्या ख़बर इसकी हमें काबा था या बुतख़ाना था - सर जहां - - -
मस्त होकर यों उबल पड़ना न था ज़ाहिद तुझे
इतनी ही फिर क्यों न पी जितना तेरा पैमाना था
किस ख़ुशामदसे सगे लैलाके लेता था क़दम
कामका हुशियार मजनूं नामका दीवाना था

—:०:—

P. 7673. पूरब का दादरा पी० ७६७३

राम कहे गोरखधंधा मैं का जानूं-धंधा मैं का जानूं-अरी हां - - -
अहद अहमद का अलग पत्ता जानत-यह जगत छर छंदा मैं का जानूं - -
राम कहे - - -
अरी जानत हूं इक अरी नाम मोहम्मद—अरी नाम मोहम्मद - - - -
जगत भरे का धंधा मैं का जानूं—धंधा मैं का जानूं - - -
कानन देख फंसे ज़ुल्फ़न मा—ज़ुल्फ़न मा—फन्दा मैं का जानूं
कहत नवाब कहां वां गिरधर-मोर करम बे गंदा मैं का जानूं
राम कहे गोरख धंधा - - राम कहे - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

अरे नज़र आये गेसू बालम तोरे अंगना
क़यामत सितमगर से नज़र का चार होजाना
सिमत है उस प तीरों का जिगर के पार होजाना—नज़र - -
दमे नज़ारा उन की चितवने कहती है शोख़ी से
क़यामत ढायेंगे हम आशिक़ों हुशियार होजाना—नज़र - -

तोरे सोने की अंगठी मोरे हीरा का कंगना
तोरे लाख रुपैये मोरे बाला जोबना-नज़र - -

P. 7724. **तिलंग** पी० ७७२४

नीके नैनन वाले रसिया—रचके चितवा हमरी ओर
मोहन तो संग सखी करोरों हम संग काहे रचव बियाह मोहन
हम किरिया सब घोर—रच के चितवा हमरी ओर - -
नेम धर्म का रेठा बुवाथी रेठा से मल मल धोवा
जोबना होयेगा गोर र च के चितवा हमरी ओर
कहत नवाब पिया तुम ज्ञानी हम तोका चतुर बखानी
सजये कह रगया भोर रचके चितवा - - नीके नैनन - -

दूसरी तरफ़ :— **दादरा**

तोरे नैना की ग़ज़ब कटारी बा
एक तो नैना रसीले छैलके - - दूजे ज़ुलफ़िया संवारी बा-तोरे - -
का दूं सखियां का लौंग ऐ इलायची - - ख़ाली भरम कटारी बा-तोरे - -
मैके की सारी प फूलों न सजनी झूटा यह गोटा किनारी बा-तोरे - -

P. 8292. **बसन्त** पी० ८२९२

रुत आई बसन्त पवन डोलै - -
प्रेम के गडुवा नयन जल पानी -
ता में जुगिनिया कुसुम घोले
रुत आई बसन्त - - -

पिया तो हमरे मुख छूसे न बोलें
हमरो मोल कमल मोलै
रुत आई बसन्त पवन डोलै
कहत नवाब सनौ मोरी सजनी
मन की कोइलिया गजब बोलै
रुत आई बसन्त पवन डोलै - - -

दूसरी तरफ़ :— **होली**

सुन बमनां न होली जलाये आज—सुन बमनां - -
मोसे शाम सुंदर हैं कोहाये आज—सुन बमनां - - -
कल के कहे पर रूठ गये हो
कौन उन्हें समझाये आज
सुन बमनां न होली जलाये आज - - -

—:•:—

मि० मोहम्मद रफ़ीक़ ग़ज़नवी

P. 9781. **मालकोंस** पी० ९७८१

लाऊं वोह तिनके कहां से आशियाने के लिये।
बिजलियां बेताब हों जिसको जलाने के लिये॥
वाय नाकामी फ़लक ने ताक कर तोड़ा उसे।
मैं ने जिस डाली को तोड़ा आशियाने के लिये॥
दिल में कोई इस तरह की आर्ज़ू पैदा करूं।

लोट जाये आस्मां मेरे मिटाने के लिये ॥
इस चमनमें मुर्ग़े दिल गाये न आज़ादी का गीत।
आह यह गुलशन नहीं ऐसे तराने के लिये ॥

दूसरी तरफ़ :— बागेश्री

नाला है बुलबुले शोरीदा तेरा ख़ाम अभी
अपने सोने में इसे और ज़रा थाम अभी
बे-ख़तर कूद पड़ा आतशे नमरुद में इश्क़
अक़्ल है मेहवे तमाशाय लबे बाम अभी
अब्रे नैसां यह तुनुक-बख़्शिये शबनम कबतक
मेरे कुहसार के लाले हैं तिही जाम अभी
ख़बर इक़बाल की लाई है गुलिस्तां से नसीम
नौ-गिरफ़्तार फड़कता है तहे दाम अभी

——:-०-:——

माष्टर सादिक़

P. 5811. ग़ज़ल पी० ५८११

हम से निगाहे यार जो दो चार होगई
बरछी इधर लगी तो उधर पार होगई-हम से - -
आंखें मिलाई थी मैं ने मिज़गाने यार से
लो ऐन मुज़तराब में सरकार होगई-हम से - -
अल्लाह रे तेरी अकबर क़ातिल की चाल ढाल

तिरछी कभी चली कभी हम सार होगई-हम से - -
पाई सबा यह तिफ़्ले बह्मन में इस शमय
बाकी हमारे वास्ते दुस्तार होगई—हम से - - - -
क्यों ग़म में पुर ग़ुरूर है दुनियां में बार बार
तुझ पर नज़र जो ऐ मज़े मुख़्तार होगई-हम से - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

किसे ख़बर थी किसे गुमां था हमारे दिलमें वह घर करेंगे-हमारे - - हां - -
तेरी फ़ुर्क़त की तेग़ मार कर कि उन के नाले असर करेंगे-कि उन - - हां - -
है इश्क़ उल्फ़त के तेरे अगर तमाशे जब हुस्न के चलेंगे
किसी का सीना फ़िगार होगा किसी का ज़ख़्मी जिगर जलेंगे-किसी का-हां
यह मशवरा दर्दो रंज फ़ुर्क़त का हम ने सीखा है हर तरह से
वह शब गुज़ार देंगे रोते रोते तो तड़प तड़प कर कहा करेंगे-तो तड़प - - हां -
है इश्क़ उल्फ़त के तेरे अगर तमाशे जब हुस्न के चलेंगे
किसी का सीना फ़िगार होगा किसी का ज़ख़्मी जिगर जलेंगे-किसी - हां - -

P. 5850. ग़ज़ल पी० ५८५०

हमारे दिल को वह क़बज़े में लाये बैठे हैं
पराई चीज़ को अपनी बनाये बैठे हैं-हमारे - -
जब उनके घर प पुकारा तो यह सदा आई
हम अपने पांव में मेंहदी लगाये बैठे हैं-हमारे - -
बुरे ज़माने में जिस के लिये हुए ऐमाल
वह ही तो अब मुझे दिल से भुलाये बैठे हैं-हमारे -
ख़ुदा के वास्ते इक और हो नज़रे रहमत
हाय दर्द से कलेजा दबाये बैठे हैं—हमारे - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

जो ज़ंजीर रहमत हिलानी पड़ेगी उसे अपनी बिगड़ी बनानी पड़ेगी
मेरा ख़ानाये दिल होता जाता है वीरां-यह बस्ती भी मौला बसानी पड़ेगी
मोहब्बत न करते मुहब्बत न बढ़ती-लगी जो मौला बुझानी पड़ेगी
संभालें जिस दम हों ख़ुर्शीद रोशन-तो दामन में उम्मत छिपानी पड़ेगी
मेरा ख़ानाये दिल होता जाता है वीरां-यह बस्ती भी मौला बसानी पड़ेगी

——:-०-:——

P. 6248. ग़ज़ल पी० ६२४८

बता नसीब कि हम बे वतन किधर जायें
जो वही न यही अस्मान किधर जायें
तू ही बता वह कि गुज़रे हुए ख़ुशी के दिन
कहां मिलेंगे उन्हें ढूंढने अगर जायें
जिगर में ज़ख़्म कलेजे में दाग़ सरपर ख़ाक
कि ख़स्ता हाल उन्हें लेके चश्मतर जायें—बता - - -
तुही बता वह कि गुज़रे हुए ख़ुशी के दिन
कहां मिलें उन्हें ढूंढने अगर जायें—बता - - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

गुलशने हिन्दमें अब कोई भी दिल शाद नहीं
अर्श गुल आई है पर बुल बुले आबाद नही
सब है आमानों का फल मिज़्गे संयाद नहीं
सच तो यह है कि हमें अपना ख़ुदा याद नहीं
रंजो ग़म से जो मिले ज़ोर से क़िस्मत ने कहां

अपना घर नाज़ से छुटा जब कि मैं आबाद नहीं
इश्क़ दोद आता है और बच के निकल जाता है
कैसी हुशियार हम हैं जो कहीं फ़रहाद नहीं-गुलशने
सब है आमानों का फल मिज़्गे संयाद नहीं
सच तो है कि हमें अपना ख़ुदा याद नहीं

मि० सरदार सिंह

P. 7218. पहाड़ी पी० ७२१८

भाई फ़ैज़ जी ! आज मेरा दिल बड़ा आनन्द है अगर आप चाहो तो ज़रा कृष्णा भगवान नन्द कनन्द जोती सरूप को ज़रा जय तो बुलाओ।
बोला श्री कृष्णा चन्द्र देव की जय !
सूरत सांवरी जी—माधो मन मोहन बनवारी
कंश कृष्णा के हृदय भायो था दर प आज़ारी
भेजी मारन शाम सुन्दर के इक दिन पुर नारी
(आ हा हा हा हा ! वाह ! वाह ! वाह !)
(ऐ भाई छैला जी नन्द कनन्द कृष्णा भगवान के वास्ते इक दिन पोदना नारी भेजी गई - जी ने - फिर के आखदे ने - पोदना नारी अगवत कहन्दी आये)
घर जसमत दा पुत्र दी ऐ भाइयो-वह पापन हथयारी
तहनून को ज़हर लगा कर पहुंची जहां झूलें गिरधारी
सूरत सांवरी जी माधो मनमोहन बनवारी—सूरत सांवरी - - -
बोलो कृष्णा बलदेव की जय !

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी

बंसी जरा बजा जा बंसी बजाने वाले इक बार देखता जा दिलको लुभाने वाले
क्या चाल है निराली दिलको मसलने वाले इक बार देखता जा मस्ती में जाने वाले

जमना का हो किनारा (वाह वाह सरदार सिंह जी बहुत अच्छे)
और वक्त हो सुबहका जमना का हो किनारा - - - - - - -

P. 7865 ग़ज़ल पी० ७८६५

आह भी ख़ाली गई और आह की तासीर भी
यार भी मुझ से फिरा बिगड़ी मेरी तक़दीर भी
साफ़ ज़ाहिर हो गया हां आप की बातों से मुझ को
ग़ैर भी अच्छा है मुझ से ग़ैर की तक़दीर भी
इस से ही तसक़ीन दे न कुछ दिले बेताब को
फिर पास तक अपने नहीं ज़ालिम तेरी तस्वीर भी
वस्ल से महरूम रक्खेगा तू मुझ को उम्र भर
आंख भी कहती है तेरी और तेरी तक़दीर भी
ज़ुल्फ़ और अबरू से मुझ को साफ़ ज़ाहिर हो गया
पास है क़ातिल के ख़ंजर और है ज़ंजीर भी

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दिल गया दिलबर गया और हाथ मलता रह गया
क़ाफ़िला लूटा गया फ़रियाद करता रह गया
पा बहरे इश्क़ से हो गये फ़रहाद क़ैस
इक अकेला मैं किनारे पर सिसकता रह गया

क्या बला नाज़ल हुई सर पर राहे इश्क़ में
डर से मेरा है फ़क़ आगे चलता रह गया
दिल की उल्फ़त प जो ग़ालिब हाय आगई बादे ख़िज़ा
गुल बहारे बाग़ में अफ़सोस खिलता रह गया

———०———

मि० शाम लाल

P. 7674. दादरा पी० ७६७४

हां रे चिरैया मोरे मन से उतर तिव ना
बड़ी बड़ी आंखियां बसें कजरा रे
हां लगाइयो तिव ना गोरी करेंगी शामत झूमत तिव ना-चिरैया - - -
जोबना सनम चिरैया तिवना रे
अरे लगाइयो तिवना-गोरी तोरी चितवनिन झूमत तिवना - - - -

दूसरी तरफ़ :— दादरा

हाय लड़कपन का ज़माना होता क्या जानें
अभी मौत ही नहीं दिल ही नहीं दिल ही नहीं
गाना—ऐ मैं का जानूं राम अरे छलबल की बतियां - - -
हां हमरे पिया आये औरन से मिलत हैं
हम से करत है चत्तर बतियां रे मोरी सुध न लो
मैं काजानूं राम - - - - - - -

भाई शंकर गवैया

P. 8755. हमीर पी० ८७५५

ऐसी लचक चलत ब्रज नारी
बड़े बड़े नयन बिचक जरा उमंगे
जोबन मतवारी - - - ऐसी लचक - - -

दूसरी तरफ़ :— बसन्त

मा बसन्त सुनाये कोयलिया - - - -
एक तो पिया बिन जाग रहिली बिज
दूजे कोड़ावे जियरा
निज बैरिन नंद आन सतावे जिन मुजरइया

———:-०-:———

मि० सुरेश बाबू

P. 8756. खम्माच पी० ८७५६

बालम मोरा नैनाँ तोरे रसीले
रसीले रसीले रे बालम
लाख कही मोरी एकौ न माने
अच्छे भये हैं हठीले बालम - - - -

दूसरी तरफ़ :— पलाड़ी

रामा अयोध्या नगरी
याहीतन हील नाहू

जैसे जंगल में कूकै कोयलिया
वसा वैसा मोरा भीतर कलेजवा - - - -

—:०:—

मि० शमसुद्दीन

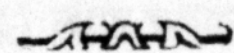
P. 9432. ग़ज़ल पी० ९४३२

शेर। एक आलम को आज़मा देखा
जिसको देखा सो बेवफ़ा देखा
क्यों दिल हम न तुझ से कहते थे
दिल लगाने का कुछ मज़ा देखा
बुरी है तेरे ग़म में हालत किसी की
न छोड़ेगी ज़िन्दा मोहब्बत किसी की
अगर प्यारी प्यारी है सूरत किसी की
तो फिर क्यों न आए तबीयत किसी की
मेरे हाथों में गुल है और गुल खू रेज़ रखता हूँ
जला कर तुमने मारा है यह दस्तावेज़ रखता हूँ
इधर भी करम तेरा बादे सबा हो
तरसती है फूलों को तुरबत किस की

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

उस बुते काफ़िर प जबतक दिल मेरा आया न था
चैन से अपनी गुज़रती थी कभी खटका न था
हाले दिल सुनकर मेरा जामे से बाहर हो गये
यह तो क़िसमत का गिला था आपका शिकवा न था

चलदिये मक़तल में मुझको नीम बिसमिल छोड़कर
यह भी उनकी एक अदा अन्दाज़ माशूक़ाना था
मेरे मरने की ख़बर सुनकर कहा उस शोख़ ने
मर गया अच्छा हुवा वहशत ज़दा दीवाना था



मि० सोराब जी और धोंदी

P. 12. रेलवे स्टेशन पी० १२

धुंए की गाड़ी
ऐ टिकिट लेने वाले टिकिट लेलो नहीं तो रह जाओगे !
माास्टर साहब हमको हैदरा बाद जाने का है। हैदरा बाद का टिकिट दो— मास्टर साहब हमको गुलबरगे का टिकिट दो—चलो पास मत जाओ पास मत जाओ गाड़ी आता है।

(आवाज घंटी सीटी और गाड़ी)

धुंए की गाड़ी उड़ाये लिये जाये
ऐसा फ़िरंगी पैसे का लोभी धुंए की (फक फक फक) धुंए की
ज़ात नहीं देखे जमाअत नहीं देखे एकहीमें सबको बिठाये लिये जाये
धुएं की (ऐजी मियाँ) धुएं की (ऐजी बाई) धुएं - - -
हिन्दू मुसलमां भंगी चमार से टिकिट के रुपये गिनाये लिये जाये
धुएं की (फक फक फक फक) धुएं की - - -
पक्के पान के बीड़े-पान चुरट सिगरेट दियासलाई
पेडरू सिगरेट-लमलेट सोड़ावाटर-चुरट सिगरेट

चलो गाड़ी जाता है (आवज़ सिटी)
औलराइट (आवाज़ घन्टी सिटी और गाड़ी).

देख मैंने तुझे कहा न कि रह जायेगा रह जायेगा अब सारी रात ठंड में मरना पड़ेगा ! मोटर काट दूसरी गाड़ी कब जावेगी ! हप हप फुर्र। ख़ुदा मालूम यह क्या बकता है। ऐ मियां क़लन्दर बकस ओ हमारे घर को राम राम कह देना हम दूसरी गाड़ी में आवेंगे हो तार में जाइयो और तार में आइयो और मां भी तार में देखियो-सलामालेकूम।

दूसरी तरफ़ :— सङ्गीन बकावली

यह बड़ा खानदानी घोड़ा है हमारे अब्बा जान ने इस को
अरबस्तिान के जंगल में से पकड़ा था। हां चलने दो

चल घोड़े असवार रे चल घोड़े असवार
तिक तिक तिक तिक हांकू घोड़ा सन नन कोड़ा मार रे
चल घोड़े असवार—चल घोड़े असवार रे चल - - -
नानक बादर गाज़ी अख़तर केवड़ा बोतल चार रे
चल घोड़े असवार—चल घोड़े असवार रे चल - - - -
तन बल जांचू यान बना तू तन देख मेरा सिंगार रे
चल घोड़े असवार—चल घोड़े असवार रे चल - - - -
तिक तिक तिक तिक हांकू घोड़ा सन सन कोड़ा मार रे—चल - -
वंस मोर (आवाज़ ताली) आर्डर आर्डर
ऐ मारवाड़ी बैठ जा-ऐ मार वाड़ी काहे के वास्ते बैठ
जायेगा ज़रा फिर से हम को गाना सुनाओ
चल घोड़े - - तिक तिक - - - चल

P. 161. हरिश्चन्द्र पी० १६१

भंग का लोटा हा हा हा - - -
आज बहुत भंग पी-खूब नशे में हूं। ओ हो हा ज़मीन फिरती है में

फिरता हूँ मेरी पगड़ी फिरती है-लेकिन गाना तो ज़रूर गाऊंगा।

मन मैल मिटे तन तेज बढ़े दे रंग भंग का लोटा
भाई सो सोग टले सो रोग जले करे भंग अंग को मोटा
जब तार जमे आसार रमें नव हांथ भरे जी सोटा
तन काम मन काम हो साफ़ आदमी खोटा—हो सुनो
मन मैल मिटे तन तेज बढ़े दे रंग भंगका लोटा
ले क़ंद दूध में घोला—क्या भंग बना अनमोला
कर पार भंग का गोला—हर बार बोल बम्भोला
उठ भोरे नहां ले भंग—चढ़ाले भंग जमाले रंग निराले ढंग
दिखादे जंगी कुंडी सोटा—मन मैल - - आहा हा हा
मन हरा बदन हरा गुलाबी बाग़ चमन हरा
चौतरफ़ ज़मीन आस्मान सब हरे हरे
एक तान पान को लपेट पाग बार तत
भंग पीके देखले ज़हांन सब हरे हरे
चाट में मिठासके उचाट मन कभी नहो
देखले मिठाई के थाल सब हरे हरे

अकछीं हा हा हा अकछीं हा हा हा—सरदी होगई है छींक भी आती है। और हिचकी भी आती है कोई याद करता होगा मेरा बाप याद करता है। अर र र र सामने से गुरु जी आन पहुंचे—कम्बख़्त यह कहां से आन पहुंचा कब से कहां था और क्या कर रहा है स्वामी मैं तो तब से यहां खड़ा था गुरू जी आपकी सूरत उतरी भौं चढ़ी हैं कहो तबियत तो अच्छी-है गुरू जी राम राम—जियो बेटा गंगा राम!

दूसरी तरफ़:— चन्द्रावली

फूल वाली और मुर्ग़ी चोर का झगड़ा

अरे वाह बी फूल वाली—अहो आंखें मार रही है अरे तेरे नख़रे

में गरम मसाला—अच्छा ज़रा गाना तो सुना
दो फूल जानी लेओ दो फूल जानी लेओ - - - -
फूलों में फूल चमेली नरगिस खड़ी रसीली
गजरे सुहाने लेओ—दो फूल जानी लेओ - - -
मालन हूं छैल छबीली फूलों की मैं रंगीली
चम्पा बुनानी (सुभान अल्लाह) चम्पा बुनानी यारो लेओ—दो फूल - -
अरे बी फूल वाली ज़रा देखें तुम्हारी डाली—हैं हैं नख़रे कर रही है

अरे अगर तू एक नख़रा करेगी मैं सौ नख़रे कर के गाना सुनाऊंगा—ले सुन—

गजरा बेचन वाली नदान यह तेरा नख़रा—गजरा - - -
गालों प लाली यह तोरे निराली बातों में है भोली भाली
उई उई बातों में है भोली भाली
कहीं लड़ गई कहीं डर गई कहीं लड़गई कहीं डरगई
यह तेरा नख़रा—गजरा - - - -

——:०:——

P. 163. मुरीदे शक पी० १६३

अरे यारो यह कमबख़्त खूसखसा जान ऐसी हरामज़ादी मिली है। घरमें खानेका ठिकाना नहीं है और कहती है कि रेशम की साड़ी और रेशम की चोली पहनाओ। कहां से पहनाऊं चूल्हें में से पहनाऊं। लो कम्बख़्त सामने से वही आती है।

मोहे रेशम की साड़ी पहनाओ—मोहे - - -
साड़ी पहनाओ चोली पहनाओ—बनिया दुकनिया प मोहे ले जाओ
गोटा किनारी देहली से मंगादो—दांतों के मैं तेरे कुर्बान
हां मेरी जान एक बार (बोसा)
साड़ी लादो चोली लादो फिर बोसा मांगो

चलो मारकीट आओ—पहिले पैसे तो दिखलाओ
पास पाई नहीं चार मारवाड़ी दे उधार
तो हो प्यार की बाहर—लाओ—मोहे - - -
वन्स मोर (आवाज ताली)

अरे यारो तुम को तो वन्स मोर की सूझी है—देख प्यारी तुझे कहता हूं! जैसा वक्त, वैसी बात करनी चाहिये—साड़ी तो नहीं है धोती है—नहीं मैं धोती नहीं पहनूंगी। इस का का बाप मरजा इस का हजारों आदमियों के सामने मेरी फ़ज़ीहत करती है। अरे यारो शादी करना तो मुझ से पूछ कर करना नहीं तो बरबादी होगी।

दूसरी तरफ़ :— अला उद्दीन

हरे बी बी जान सुनिये ज़री—सुनिये मेरी खून की भरी—हां - - -
सो बरस की आन मेरी आई हूं दिल जान
हैं बुआ मुग़लानी की सब बातें मुझे याद—हां बी बी - - -
दाल न खुरम भात न खुरम हलवा खुरम शवद
पिस्ता व बदाम खुरम नाज़कुनम बदं—हां बी बी - - - -
दस्त नम की दाहोन ख़ाली कोमल फकरंद
बन्दा जला नवरा करंद कसतल तेरी मौत—हां बी बी - - - -
एक तो बरस मदीने-में जो यह थी गुजरात
शीरा पूड़ी लड़वा कदा वल्लतना भात
वक्त अलल क़िस्सा मिलल-ज़िहत सपाटा
पाल मलल खेल अलल काल पटाका—हां बी बी - -
सुद्धा अजु उनका जो कष्ट की है बात
पेट के नाफ़ी चढ़ते चांदनी खिलीरात—हां बीबी - - -
वन्स मोर (आवाज़ ताली)

P. 164. अली बाबा पी० १६४

अली बाबा का पैसे के लिये आहो ज़ारी करना
अश्क़ बारी बे क़रारी क्यों मेरे सरताज है
क्यों तुम्हारी आहो ज़ारी हद से अफ़ज़ू आज है
बे क़रारी क्यों नहो आलम में जिस का राज है
उसका बन्दा कौड़ी कौड़ी के लिये मोहताज है
हाय पैसा पैसा पैसा - - -
सारी पैसे की बहार पैसे से कारो बार
पैसे का प्यार पैसे से यार ग़ार ताबेदार
गर हो कोई चमार याकि हो कुम्हार
पैसे हों चार तो बे शुमार कहलावे इज़्ज़त दार
पैसे की सब को चाह मोहताज हो या शाह
पैसा पैसा पैसे की वाह वाह। पैसे की - - - -
हो पैसा का मज़दूर लेने हैं चार ज़रूर
कहें उस को दूर बेक़सूर दूर बे शऊर
धोबी हो चाहे हज्जाम पर होवें पास दाम
सब खासो आम सौ सौ सलाम ज़रूर करें मुदाम
पैसे की सब को चाह मोहताज हो या शाह—पैसा - - -
वंस मोर - - (आवाज़ ताली) आर्डर आर्डर

ऐ मारवाड़ी बैठ जा। ऐ भाई साहब तुम ने पैसे का गाना गालिपा है तो हमारा बैठने का जी नहीं होता है ज़रा फिर से हम को गाना सुनाओ।

सारी पैसे की बहार पैसे से कारो बार-पैसे का प्यार यार गार ताबेदार
गर हो कोई चमार याकि हो कुम्हार-पैसे हो चार तो बे शुमार कहलाये इज्ज़त दार
पैसे की सब को चाह मोहताज हो या शाह पैसा - -

दूसरी तरफ़ :— भूल भुलैयां

दिलदार यार छैला से नैना लगायेंगे
नना लगायेंगे संना लगायेंगे—दिल दार - - -
यार मेरा आला जोबना मेरा बाला
सूरत मोरे सैंयां की मन को न भाये रे—दिल दार - - -
बात मेरी भोली उमर मेरी कोली
आंख मार गबरू से नैना लगायेंगे—दिल दार - - - -
वन्स मोर (आवाज़ ताली) आर्डर आर्डर

ऐ मारवाड़ी बैठ जा—ऐ मारवाड़ी काहे के वास्ते बैठ जायेगा फिर से हम को गाना सुनाओ।

इस से भले मानस का मार वाड़ी को थप्पड़ मारना मार वाड़ी का चिल्लाना शोर मिचाना—ऐ सपाई ऐ सपाई यह देखो हम को मारता है-है है है।

(सुभान अल्लाह) क्या गाना सुनने आया है सलामालेकुम अरबाबे महफ़िल कहो कैसी सुनी ज़रा हारमोनियम बजे हारमोनियम।

P. 289. आबे इबलीस पी० २८६

कि मैं बन चली हूं मालनिया—कम सबरी लटक मटक
क्यों चली है कामनिया-कि मैं बन चली हूं - - -
मैं तुलसी बन कर आई चमन के अन्दर
तोंड़ गुलाब सेवती चम्पा चमेली ख़ुद तर
हर जाई जुई नर जिस्त हज़ार जी गर
गुलों से शाख दूर करियां—हां कम - - - कि मैं - - -
जोहर एक गुल से हर एक गुल है आला

पर ख़ुशनुमा है सब में अजब गुल लाला
फिर बोल करी थी उस को तेरी है आला
करूं क्या क़ुदरत की बतियां—कम सबरी - - कि मैं - -
वंस मोर - - - (आवाज़ ताली) आर्डर आर्डर

ऐ मार वाड़ी बैठ जा। ऐ मार वाड़ी काहे के वास्ते वैठ जायेगा हम नहीं बैठेगा। ऐ भाई हेटू खाँ इस के एक धप्पा लगा—इस तरह एक भले मानसका मार वाड़ी के धप्पा लगाना—मार वाड़ी का चिल्लाना शोर मचाना। ऐ सपाई।

दूसरी तरफ़ :— (मुर्ग़ी चोर) ताज नेको

अरबाबे महफ़िल आप से एक पोशीदा बात करना चाहता हूं। मैं काना मुर्ग़ी चोर हूं अपने अपने मोहल्ले की मुर्ग़ी को संभालिये। आज कहीं चोरी करने का नहीं मिला तो मूढ़ मारकेट से चुरा लाया हूं बड़ी ख़ानदानी मुर्ग़ी है। शहर की मुर्ग़ी दिन में एक अंडा देती हैं लेकिन हमारी मुर्ग़ी दिन में छह अंडे देती है।

एक एक दिन में छह छह अंडे बच्चे देती सेती
प्यारी मुर्ग़ी चुरा के मैं घर लाया।
कुक कुक कुक कुक कुक कुक करती चोंच दबाकर घर लाय
चले सफ़र में कस के लंगोटे हाथ में लेकर कूंडी सोटे
निर्मल भंग के पीकर लोटे-लाये ताज़ा माल सब-बनी ख़ूब भंग
बदां घर में सोयेगा मुर्ग़ा इस का रोयेगा

अररर इस का बाप मरजा इसका सामने से बुन्दू क़साई आन पहुंचा। सलामालेकुम मुर्ग़ी चोर! सालामालेकुम बुन्दू मियां! कहां से आये कहां को जावोगे। अरे यार आज सुबह से मेरी मुर्ग़ी नहीं मिलती तुम ने तो नहीं चुराई। अबे भले आदमी के बच्चे किस के गले पड़ता है यह तो हमारी मुर्ग़ी है। तूने इसको बग़लमें क्यों दबा रक्खा है बाहर निकालमे देख।

यह बड़ी ख़ानदानी मुर्ग़ी है ; शहर को मुर्ग़ी एक दिनमें एक अंडा देती है लेकिन हमारी दिनमें ६ अंडे देती है। सुन यह हमारे ससुर साहबने शादीके तौर प इनाम दी हुई है। अरे हरामज़ादे किस को गले पड़ने आया है यह मेरी मुर्ग़ी है तेरी मुर्ग़ी नहीं है।

अच्छा अच्छा होने दो
एक एक दिन में छह छह अंडे बच्चे - - -
सलामालेकुम कलमुर्ग़ी का नाश्ता हो जावेगा

P. 292. नाज़ां पी० २९२

अरे यारो अबदुल छैल का गाना किसी को याद है! अरे हां जनाब मुझे याद है। तो भले आदमी के बच्चे कोने मे क्या खड़ा है बाहर निकल के सुना।

सुनो मेरे यारो यह छैल का कहना अकेले रहना बड़ा मुशकिल
जंजाल हैं जोरू बच्चे पामाल हैं अच्छे अच्छे
ख़ुश हाल हैं कच्चे कच्चे जानी के यार-सुनो - - -
जोरू लावे घर बनावे थार के पक्की है खोर
तेल नहीं है नान मंगाओ लाओ लकड़ियां बीन
सुनो और मज़े का सीन-चोरी करो क़ैद भरो चाहे गड़ो चाहे मरो कुछ भी करो जोरू को पैसे का प्यार-सुनो - - अजी जाओ जी।
अजी जोरू है ख़ंजरकी धार! अजी जाओ जी
अजी जोरू है फ़रमांबरदार! अजी जाओ जी
अजी जोरू है फ़रमांबरदार करे ख़सम चार लड़े बार बार बार
जोरू को पैसे का प्यार—सुनो - -
वंस मोर - - - (आवाज़ ताली) आर्डर आर्डर

ऐ मोहम्मद मियां बैठ जा—अबे जाबे भले आदमी के बच्चे हम कुछ मारवाड़ी हैं जो बैठ जायेंगे-मारवाड़ी का ख़ूब हंसना हा हा हा हा हा हा

दूसरी तरफ़ :— भूल भुलैयां

ख़ुदा हमारी जोरू को हमारे सिर पर सलामत रक्खे यारो ठीक कहना तुम को तुम्हारे बाप की क़सम है, है ऐसो किसो की। यह तो हमारे बाप दादे के बड़े नसीब हैं कि ऐसी ख़ानदानी औरत मिली है।

चलो बीं ऐयारा चलो—
तेरी मेरी जोड़ी बनी पिया पियारे प जाऊं निसार
वाह रे पिया प्यारी प जाऊं निसार—तेरी मेरी - - -
सुनलो पिया प्यारी आजा मे वारी
मोरी जान नैनां से नैना मिला ओ
अजी मुझे भारी सी साड़ी दिला लारे उसमें गोटा किनारी मसाला
तुझे भारी सी साड़ी दिला लाऊं में उस मेंगोटा किनारी मसाला
ओरे आला सुन्दर तुम पर मन हर जोन वह सामान
चल मैं क़ुर्बान मैं क़ुर्बान हूं कर-जोड़ी - - - प्यारे - - - - तेरी - -
वन्स मोर - - (आवाज़ ताली) आर्डर आडर

ऐ मारवाड़ी बैठ जा ऐ भाई साहब-ये इतने आदमी बाहर खड़े हैं तुम उसको कुछ नहीं बोलता जब देखो जब मारवाड़ी बैठ जा मार वाड़ी बैठ जा। हम काहें के वासते बैठेगा ज़रा फिर से हम को गाना सुना ओ।

होने दो भाई होने दो
तेरी मेरी जोड़ी बनी पिया प्यारे पर जाऊं निसर - -

P. 293. ख़ुशौं द ज़रनेगार पी० २९३

आये वह बेवफ़ा यहां उसकी बला को क्या ग़रज़
जाये दरे क़बल कर मेरी दुआ को क्या ग़रज़-आये - -

मौत तो है दिले हज़ीं और बहाने हैं बहुत
आये जो उसके हाथ तेग़ मेरी क़ज़ा को क्या ग़रज़-आये - -
जोबन बीता जात है और पीतम नाहीं पास
नैना निरखत हैं डगर कि पी मिलन को आस
खुर्शीदे अली से आये क्यों रुख़ प जुल्फ़ लाये क्यों
उस को सबा से है उम्मीद मुझ को सबा से क्या ग़रज़-आये

दूसरी तरफ़ :— तलिस्मे सुलेमानी

फ़र्दे और इमाम ख़ां दोनो शिकार करने को जाते हैं फ़र्दे खां निहायत डरता है (शेर की आवाज़ से) या अल्लाह बचाइये यह हमारे मालिक नज़रुल ख़च्चर की नौकरी से कोई दिन जान की तबाही है। यह भले आदमी के बच्चे शेर और बबर का मारना गेंद बाज़ी का खेल समझते हैं। मुझे अगर शेर की आवाज़ सौ माइल दूर से सुनाई देजाती तो मारे डरके मेरा पायजामा ढीला हो जाता है (शेर की आवाज़) अल्लाह रे मरगया रे मेरा बाप रे।

क्यों फ़र्दे खां क्यों डरते हो ? क्या बहादुरी का नाम डुबोते हो ? ज ज ज जनाब म म म मैं ड ड ड रता तो नहीं हूं (आवाज़) अरे मरगया रे मेरे बाप। अल्लाह रे मरगया रे मेरे बाप।

चलो भाई नन्हे खां
झड़प करो झड़प वह तीर कमान जाने न पायेगा
वह यहां से है निशान—झड़प - - - - - - - - -
चलाओ तीरो कमान से खालीन जाए निशान
नहीं नहीं मैं वह करूंगा मैं उसे तेरी निशान
वह खाके गश गिरा तो के शेर बात बान
तड़प तड़प के दे गंवा वह अपनी जान
चलाओ और कुछ वह आता है यहां

अब देखिये वह आता है (आवाज़)

या अल्लाह मरगया रे मेरे बाप—शेर बबर की लड़ाई गेंद बाज़ी का खेल समझे हैं कभी हमारे बाप ने भी तलवार न चलाई थी कि मैं जंगल में तफ़ंचा पकड़ के खड़ा हूं अच्छा भाई फिर होने दो

बस चुप रहो जो चुप वह शेर ने मारलो ओ सरवरे ज़मान
उस की करो सरकार तीर कमान में तीर से बींध के करूंगा
नीम जान

P. 317. हामान पी० ३१७

करम कर मेरे हाल पर ऐ करीम
तेरा नाम है गफ़्फ़ूरुल रहीम—करम
तुही दोनो आलम का सुलतान है
रहमेनुमा या तेरी शान है—करम - - -
फ़ना होने वाला है सब कारोबार
रहे नूर तेरा सदा आशकार—करम कर - - -
तुही दोनो - - - रहमेनुमा - - करम

दूसरी तरफ़ :— असीरे हिर्स

अरे ओ हसीना अरे ओ हसीना—हां हां क्या कहते हो अरे मेरी जान तुझको देख कर आया मुझे पसीना भला मैं कब से किवाड में से देख रहा हूं तू क्या करती है मैं कपडे बदलती हूं। अरे हरामज़ादी कितनी फूल गई है लोगों की नज़र लग जायेगी तो बे मौत मर जायेगी। हां चलो तोरी छल बल है नियारी तोरी कल बल है नियारी
करो बातें न मोसे संवरिया जान।

तोरी जुल्फ़ें हैं काली तोरे गालों प लाली

तोरे नैनों के लागे कटरिया जान—छल - -
जाओ जाओ नदान मोहे न बनाओ जान-नैनों से नैनों मिलाओ मोरी जान
छोड़ो जी हाथ करो औरों से घात नहीं होगी यह बात
मियां वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह वाह—तोरी - -
वन्स मोर (आवाज़ ताली) आर्डर आर्डर
अरे बेटी अमीना ओ बेटी अमीना तेरा बच्चा रोता है कहां गई
(बच्चे का रोना) आहा हा।
देखो साहब ख़याल करने की बात है गाना ऐसी चीज़ है अपने बच्चे को रोते छोड़ा और यहां गाना सुनने को आई।

P. 318. **कबीर पद** पी० ३१८

जनाबे आली कबीर साहब का पद ग़ौर से सुनिये।
मुखड़ा क्या देखूं दर्पन में तेरे दया धर्म नहीं मन में-मुखड़ा - - -
कागज़ की जो नाव बनाई ले डाला समन्दर में
धर्मी धर्मी पार उतर गये पापी डूबें जल में—मुखड़ा - - -
देस मार के पतड़ी रे बाज़ी तेल डाला सर तन में
देखि बदन साफ़ उजेरा गंगा चले जी पट में-मुखड़ा - -
हाथ परे तेरे पांव मे मुड़की उतार लिये एक पल में
पापी काया को नाहीं भरोसो तेरा जिया जंगल में
आम की डाली प कोयल राखी मोर राखूं बन में
घर बारी को घर में राखूं तपसी राखूं बन में-मुखड़ा - - -
राम राम जियो बेटा गंगा राम

दूसरी तरफ़ :— कनक तारा

ले घास लेट-ऐ लास लेट वाला कैसे बाटली दिया है
ऐ छह पैसे को ! छह पैसे को अरे पांच पैसे को देता है

अरे जाओ जाओ तुम ने लिया और हम ने दिया-
घास लेट का गाना तो सुन—
मैं तो मार वाड़ को बनिया रे बम्बई शहर को आयो
मैं मार वाड़ के निओ संता पांव नहीं तो जूतो घास लेट ले घाश लेट
घास लेट की फेरी ले पिंजरा पोल में कुन्ता हूं तो मार वाड़ - -
जात बचाव धन्दा करीने पैसा पोट कमायो-
आधी आधी जमा करीने लाडी जी कोलायो मैं तो
लाड़ी जी जो मुखड़ा खाल्यो मारे मन को भायो
लटक महक कर जारी थाने म्हारो जी ललचायो मैं तो - -

P. 319. **बज़्मे फ़ानी** पी० ३१९

अरे यारो घरमें खाने का ठिकाना नहीं है और हमारी जोरू जी चटाख़े जान कहती है कि रेशम की साड़ी और रेशम की चोली दिलाओ कहां से दिलाऊं चूल्हेमें से दिलाऊं-क्या करूं साहब कमसिन औरत है, कहा मानना पड़ता है—आगई क्या करे हम भी—
मोहे रेशम की साड़ी दिलाओ साड़ी दिलाओ चोली पहनाओ
अरे बनिया दुकनिया प मोहे लेजाओ-मोहे - -
गोटा क़िनारी देहली से मंगादो लाखों के नामें क़ुर्बान हां मेरी जान—
एक बार बोला साड़ी लादो चोलो लादो फिर बोसा मांगो
चलो मारकीट आओ-पहिले पैसे तो दिलवाओ पास पाई नहीं
वार मारवाड़ी दे उधार--फिर प्यार की बहार-लाओ-मोहे - -
देख प्यारी चटाखा जान साड़ी भी नहीं है और चोली भी नहीं है धोती है अगर तुझे पसंद है तो पहन ले जैसा वक्त वसी बात करनी चाहिये। ख़ैर तू नाराज़ मत होजा मैं किसी मारवाड़ी के पास से क़र्ज़ा लेता हूं और तुझे एक दर्जन साड़ी और एक दर्जन चोली दिलवाऊंगा।

अबे बच्चे को तो संभाल (बोली बच्चा) अरे चुप हरामज़ादे ! एक हरामज़ादी ने तो नाक में दम कर दिया अब तू कहां से पैदा हुआ। हा हा हा हा हा।

दूसरी तरफ़ :— भूल भुलैयां

यारो ख़ुदा हमारी जोरू को हमारी पगड़ी पर सलामत रक्खे यारों ठीक कहना तुमको तुम्हारे बाप की क़सम ! है ऐसी किसी की। चलो बी बी चलो।

तेरी मेरी जोड़ी बनी पिया प्यारे प जाऊं निसार-तेरी - -
वाहरे पिया प्यारी प जाऊं निसार-(चल) तेरी मेरी - - पिया - -
पिया प्यारी आजा मैं वारी मोरी जान नेना से नंना मिलाओ
मुझे भारी सी साड़ी दिलाला रे उसमें गोटा किनारी मंगाला
तुझे भारी सी साड़ी दिला दूं मैं उसमें गोटा किनारी मंगाला
तू आला सुन्दर दिलबर मन हर जान मैं समान चल क़ुर्बान
मैं क़ुर्बान तू हर आन जोड़ी बनी- पिया (वाह भई वाह) पिया - -
तेरी मेरी जोड़ी - - पिया प्यारे - - पिया - -

वन्स मोर - - (आवाज़ ताली) आडर आडर

ऐ मारवाड़ी बैठ जा—अबे जाबे हम नहीं बैठने वाले—आज हम ने किराया दिया है हम काहे को बैठ जावें।

—:-•-:—

P. 192. मज़ाक़िया पी० १९२

आँख लाल नाक लाल दोनों हैं गाल लाल-बोतल का रंग लाल ताड़ी का ढंग लाल-खट्टी भी लादो मिठी भी लादो सीरा भी लादो पंसी भी लादो। हा हा हां। खुदा भला करे तेमुल जी सेठका ऐसी चढ़ी उतारी देता है कि केवड़ा भी उस के सामने झक मारता है। सलाम तेमुल जी

सेठ एक बाटली खट्टी मिठी मिला कर देओ अरे यार नब्बू, जाबू, अरे क्या यार मई में मिला था उस के साद आज मुंह दिखाया। बोल मत यार बड़े लबड़ें मेंथा—अरे क्या लबड़ें में था। एक का सिर फोड़ डाला था—बहुत अच्छा किया—चल सब बातें छोड़ और हुक्म कर हुकम—लाओ तेमुल जी सेठ एक दस बाटली चाढ़ाऊ भेजदो—अरे यार जाबू तु तो रोज़ क़िले ऊपर नाटक देखने जाता है कभी हमें भी तो ताड़ी का गाना तो सुना—अरे सुन यार अभी नया तमाशा मनूसे मनकुस निकला उस में एक बहुत अच्छा गाना सुनाता हूं ले सुन—सुना।

पिलादे मेरे प्यारे ताड़ी के छह छह गिलास
ताड़ी भी लादे और सीरा भी लादे मिठी की होवे बहार खट्टी मिठी
बहार मेरे प्यारे ताड़ी के छह छह गिलास-पिलादे - - -
हरयल भी हावे खजूरें भी होवें पीनेमें हो ताक़त दार-(वाह भाई वाह)
ताक़त दार दार मेरे प्यारे ताड़ी - - - पिलादे - - -
शीशे में सारी ताड़ी हो ताड़ी में शीशा हो ज़ोर दार
शीशे हैं दिहल गागकी ऐ ताड़ी भी मज़ेदार-पिलादे - - -

दूसरी तरफ़ :— इन्ते क़ाम

ऐ वफ़ादार जी वफ़ादार-जी आई आई
प्यारे वफ़ादार कहो मिज़ाज कैसा है
बतलायें क्या कि क्यों कर औक़ात काटते हैं
बेक़ारारियों में हम रात काटते हैं
हम भी इसी तरह से औक़ात काटते हैं
बेताबियों में अपने दिन रात काटते हैं
कोई नहा है हम दम दिल किस तरह से बहले
तनहाई में हम अपनी औक़ात काटते हैं
जब कि कोई मोनिदो गमख़्वार तनहाई नहीं

किस लिये तस्वीर मेरी तुमने खिंचवाई नहीं
बात करने के उस ने शफ़ा पाई नहीं
इस लिये तस्वीर जानां हम ने खिंचवाई नहीं
दिल के आइने में क्या उस ने जगह पाई नहीं
ले लिये गैरों ने बोसा और वह शरमाई नहीं
इस लिये तस्वीर जानां हम ने खिंचवाई नहीं

अब झगड़े को छोड़ो और कोई गाना सुनाओ :—

किया करते हैं हम यार तेरी याद में हम नाले
मुझ को तुम से हैगी चाह तुझ को ज़रा नहीं पर वाह
ऐसे सनकी के हमराह ख़ुदा न पाला डाले—किया - -
मुझ को करती क्यों है ख़्वार तुझ पर पड़े ख़ुदा की मार
ऐसे सनकी के हम राह ख़ुदा न पाला डाले—किया - -

बन्स मोर - - (आवाज़ तासी) आर्डर आर्डर
ऐ पारसी बैठ जा (पारसी ज़बान)

मि० सोराब जी और भग्गू

P. 1370. मज़ाक़िया पी० १३७०

अमीरों का नायकों के घर में ख़राब होना

हमारा पेशा रोज़गार दुनिया से निराला है-हमने हज़ारों नादानों को देखा भाला है—सकेड़ों का दिवाला निकाला है बन्दगी नायका जी ! आइये आइये शहज़ादे साहब तशरीफ़ लाइये। अरे गुलगु ! ऐ बेटा गुलगु ! आया आया। अम्मां जान क्या हुकम है। अरे वहां क्या कर रहा था ? बन्दा शाइरी का दम भर रहा था-अरे ख़ब्ती पागल आग

लगे तेरी शाइरी को। क्यों मियां तुम्हारा क्या नाम है ? बन्दे का नाम गुलगु है ! तो कोई तुम्हारे शेर भी याद है। हां याद है।

मां हमारी आकर के बैठी जब कि गाने के लिये
हम हुये तैयार तबला भी बजाने के लिये

अरे गड़ बड़ छोड़ो कोई गाना तो सुनाओ—हां हां सुनिये—

आयो जी कान्हा गल गल संग मोरे-गल गल - - - आयो - -
मोर मुकट गिरवर गिरधारी-गल गल संग मोरे - - आयो - -
गल गल खड़ा बन्सियां बजावत है-क्या करूं रे अरी सखी मन को वह लुभावत है-चलो चलो तो देखें कैसो टेर सुनावे है
खड़ा रस्ते में गादियां झुलावे है-डगर चलत निपट निडर
पिया मन भावे री—गल गल - - - आयो - - -

अरर यह बिस्मार ख़ां कहां से आया—नसीहत की बात कह के इनको भगा देगा ! क्यों बिस्मार ख़ां क्या हुकम है। लक लानत है जो ऐसे अमीर भी नायका के घरमें आते हैं और अक्सर अमीर आदमी इसी में तबाह हुए जाते हैं।

अगर इन का कोई नेक काम में खर्च करने को या ग़रीब भाइयों की मदद करने को कहे तो कुछ नहीं और ज़र फ़ाहिशा को देकर बरबाद करते हैं। लाहौल विला क़ुवत।

दूसरी तरफ़ :— मि० भग्गू ख़ुबसूरत तबला

जल थल में तू है पल पल में तू है दाता विधाता वक हामी
रघुनाथ दुखमे गाथ जग अनूप रूप कीर्ति गामी-जल - - -
तुम पर काले काम ने रहमत में सुख नाहो कोई
इलाही तुझ को गफ़्फ़ल रहीम कहते हैं
कहीं करें न वज़ू देख दलील न हामी

कि उस के बन्दे हैं जिस को करीम कहते हैं
कष्ट हरन को तुम्हारे चरन यह दुनिया यें आये—जल - - - -

——0——

मि० सूरजबली

P. 971. भजन द्रौपदी विनय १ पी० ६७१

बिन काज आज महाराज लाज गई मेरी
दुख हरो द्वारिका नाथ शरण में तेरी
एक जा तन बंध कठोर महा दुख दाई
कर पकड़त मेरो चीर लाज नहीं आई
अब गयो धर्म को लाज पाप रहो छाई
तन अधन प्रभाती और लाज बिन ताई
कुटिल जरजाधन करन करें किन केरी-दुख - - -
तुम दीन की सुध लेत देवकी नन्दन
महिमा अनन्त भगवन्त दुख भंजन
तुम कियो सिया दुख दूर जामतन खंडन
आरत दुख खान कृपाल मुनिन नन्दन
करुणा निधान ऐ भगवान करी क्या देरी-दुख - - -
तुम सुन गइन को टेर बहुत अबिवासी
रन माहिं चढ़ायो जाय काट गल फांसी
मैं धरूं तिहारा ध्यान द्वारिका बासी
अब काहे लाज समाज करावत हांसी
अब कृपा करो जगलाज जान कृपा चेरी-दुख - - -
तुम पत राखो प्रह्लाद दीन दुख टारो

हे थम्ब फाड़ देख तुम कंसको मारो
तुम पिता माता की जाय कटाई बेरी-दुख - - - - -

मि० उस्मान खां

P. 4671. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ४६७१

अब लड़कपन छोड़ दे ज़ालिम शबाब आनेको है
इन हबाबों की कटोरी में गुलाब आनेको है
इस पते से ढूंढियो क़ातिल मेरे दिल दार को
चश्म नरगिस चाल मतवाली शबाब आने को है
थोड़ी सी जा छोड़ दो ऐ रहने वाले गोर के
इस नई बस्ती में इक ख़ाना ख़राब आने को है
टिक टिकी जो बंध गई रुख़सार पर उन के मेरी
शर्म से गर्दन झुको मुंह पर नक़ाब आने को है
ज़ेरे दीवार इस लिये है आशिक़ों का झमगटा
बाम पर वह माहे कामिल बे नक़ाब आने को है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

राज़ी हैं अपने क़त्ल पर ऐ बुत ख़ुशी से हम
बैठे हैं हाथ धोए हुए ज़िंदगी से हम
हम अपना आप खाते हैं अल्लाह रे ज़ब्ते इश्क़
जो दिल में है वह कह नहीं सकते किसी से हम
अब भी हज़ार हैफ़ हमारा हुआ न तू

तेरे लिये बुरे हुए ज़ालिम सभी से हम

अनवर ख़ुदा के वास्ते छोड़ो बुतों का इश्क़

समझाये जाते हैं तुम्हें यह दोस्तो से हम

—:•:—

P. 4672. दादरा पी० ४६७२

छा रही काली घटा जी मेरा घबराये है

सुन री कोयल बावरी तू क्यों मल्हार गाये है

ऐ पपीहा आ इधर मैं भी सरापा दर्द हूँ

आम पर क्यों तू झुक गया मैं भी तो देखो ज़र्द हूँ

फ़र्क़ इतना उस में उस मुझ में आह है

और आज़ारों से बढ़ कर इश्क़ का आज़ार है

आशिक़ों में जान दिल का डालना बहार है

बेवफ़ा से दिल्लगी कर क्या कोई फल पाये है

क्या यह बीमारे अलम उस दर्द से बच जायेगा

या युहीं खा खा के ग़म आख़िरश मर जायेगा

ऐ मसीहा कुछ तो बोलो क्या तुम्हारी राय है

दूसरी तरफ़ :— दादरा

मैं काहे करूं आज पिया नहीं आये-उन बिन जिया घबराये- मैं - - -

ग़मे जुदाई में जल जल के दिल कबाब हुआ

लगाना दिल का एक आफ़त हुई अज़ाब हुआ

तुम्हारे हुस्न से शर्मिन्दा आफ़ताब हुआ

ज़ुल्म का ऐ बुत काफ़ि शराब हुआ

बिन सातन भिरमाये मैं काहे करूं - - -

तुम्हारे हुस्न पे यह दिल निसार होता है

जुदाई में जल कर तेरी फ़िगार होता है

तुम्हारे हिज्र में दिल अश्क बार होता है

फ़िराक़ में तेरे दिल बेक़रार होता है

तड़प तड़प जिया जाये—मैं काहे करूं - - -

दिया था दिल तो उसे लेते जान समझ कर

हज़ार हैफ़ कि वह बेवफ़ा इश्का अमर

लगा उन से नाहक़ लिये बला सर पर

तड़प के कहता है हर दम यह दिले मुज़तर

चांद पिया नहीं आये—मैं काहे करूं - - -

—•—

P. 5248. काफ़ी पी० ५२४८

काकुल की तरह आज जो बल खाये हुए हो

आज तो सितम है कि सितम ढाये हुए हो

जानां तो कर देखा नहीं इक़रार न हो

आज और है कल और नहीं इस का ठिकाना

हो जायेगा चंद रोज़ में यह हुस्न रवाना

इस जोबन पै मेरी जान तो इतराये हुए हो -काकुल - - -

क़ातिल की नज़र ख़ार हैं क़ातिल में हटाने

मौसम तो है गर्माई हो या छुटी जवानी

क्यों ग़ैर ने क्या आंख लगादी मेरी जानी

तेवर में नुमायाई है कि भड़काये हुए हो-काकुल - - -

अल्लाह करे आप भी आशिक़ हों किसी पर

और के सिवा चैन न पावें दमभर

दूसरीतरफ़ :— क़व्वाली

अदू के सामने मुझ को ,तलब करते हो महफ़िल में
इसी को कहते हैं इनसाफ़ सोचो तो ज़रा दिल में
दमे रोज़ नामीलने का किया है इसरार कब
टिक कर रह गये थे थक के इस दुशवार मंजिल में
तड़पता छोड़ कर क्यों जारही है फ़ैसला कर दे
अरे ओ तेरा क़ातिल नाम को है पाक बिसमिल में
कभी शमशीर खिंचती है कभी खंजर निकलता है
उमंगे हैं भरी क्या क्या मेरे जल्लाद के दिल में
खटकती है ग़ज़ब कांटे की सूरत कोई शय हर दम
कोई ख़ंजर का टुकड़ा रह गया है ज़ख्मे बिसमिल में

P. 5342. क़व्वाली पी० ५३४२

हिजाब दूर तुम्हारा शबाब कर देगा
यह वह नशा है तुम्हें बे हिजाब कर देगा
किसी के हिज्र में दर्द से दुआ मांगे
निगाहे आई ख़ुदा कामयाब कर देगा
मेरा ख़याल मुझे कामयाब कर देगा
ख़ुदा इसी को ख़ाका ख़्वाब कर देगा
भलाई करती मैं अपने छने बलायें के खौफ़
ख़ुदा हमें कभी कामयाब कर देगा

दूसरो तरफ़ :— क़व्वाली

माशूक़ हो बगल में जलसे हों मैकशी के
हमारे लिये यहीं है सामान दिल लगी के

लिल्लाह तो बोलो है रात थोड़ी बाक़ी
मुंह तो इधर को फेरो दिन हैं हंसी ख़ुशी के
वह शोख़ झूठे वायदे करता है रोज़ कल के
इतना नहीं समझता दिन हैं चला चली के
क्यों तेग़ तेरी क़ातिल रुक रुक के चल रही है
क्या लेरही है ज़ालिम बदले कभी कभी के

भाई विलायत

P. 5249. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ५२४६

बग़ैर यार के सब गुल हैं ख़ार आंखों में
खटक रही है चमन की बहार आंखों में
ग़ज़ब किया सरे महफ़िल में उस सितमगर ने
चुरा लिया है मेरा दिल हज़ार आंखों में
दोहा—झलक दिखा के मुझे दिलरुबा ने लूट लिया
मुझे तो पहिले ही तेरी अदा ने लूट लिया
गुमान से खींची कमान निगाहों से मारा है तीर
फ़लक ने बर्छी उठाई अदा ने लूट किया—चुरा - -
यूहीं न कहेगा यह घर मेरे पसन्द नहीं
तुम आके देख तो लो एक बार आंखों में—खटक - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

सामने बैठ के दिल को जो चुराये कोई
ऐसी चोरी का पता ख़ाक लगाये कोई
वह लाखों हैं लगे सीने के अन्दर हैं मेरे
जख़्मे दिल किस तरह उस बुत को दिखाये कोई
कूचये ज़ुल्फ़ में मुद्दत से भटकता हूं मैं
मुझसियाह बख़्त को रस्ते पे लगाये कोई
कूचे जाना से जो निकले तो निकल कर रहमत
मुन्तज़िर है कि हमें फिर भी बुलाये कोई—सामने - -

——:-०-:——

P. 7040. भैरवीं पी० ७०४०

दोहा—उल्फ़त जिसे कहते हैं वह आज़ार का घर है
बस में है न दिल और न क़ाबू में जिगर है
नावक है न नशतर है न भाला न तबर है
दिल में जो चुभो है वह हसीनों की नज़र है
दर्दमन्द हिज्र हूँ मेरी दवा पर्दे में हो
मौत का भी सामना अब या ख़ुदा पर्दे में हो
रूबरू अग़ियार के मुझ को न शर्मिन्दा कर
या इलाही मेरा उनका फ़ैसला पर्दे में हो
या इलाही दर्द क्यों उठता है यह रह रह के आज
शायद कि कोई तीर उनका रह गया पर्दे में हो—दर्द - -

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी

दोहा—मिटादे अपनी हस्ती को अगर कुछ मरतबा चाहे

कि दाना ख़ाक में मिल कर गुले गुलज़ार बनता है
फ़ना बग़ैर बक़ा का पता नहीं मिलता
ख़ुदी मिटाओ न जब तक ख़ुदा नहीं मिलता
यह कौन कहता है हरजा ख़ुदा नहीं मिलता
ख़ुदा ख़ुदा कहो फिर क्यों ख़ुदा नहीं मिलता
जो मांगने का तरीक़ा है उस तरह मांगो
दरे करीम से बन्दे को क्या नहीं मिलता-फ़ना -

—:-०-:—

P. 7291. कोनसिया पी० ७२६१

दोहा—शिकवा करते हैं ज़बां से न गिला करते हैं
तुम सलामत रहो हम तो दुआ करते हैं
तुम अगर हाथ उठा कर कोसो हम को
देखने वाले यह समझें कि दुआ करते हैं
इन हसीनों से कोई भूल के उल्फ़त न करे
यह दग़ाबाज़ हैं मिल मिल के दग़ा करते हैं
माशूक़ बेवफ़ा हैं अब के ज़माने वाले
जान मुफ़्त दे रहे हैं दिल के लगाने वाले
(हम को अफ़सोस है हम इस ज़माने में क्यों पैदा हुवे)
दो दिन के हुस्न पर तू मग़रूर हो न इतना
बिगड़े हुसीन लाखों जलवे दिखाने वाले
गर तुम जफ़ा करोगे हम यह दुआ करेंगे
जीते रहे हमारे दिल के दुखाने वाले

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी

दिल जले डरते नहीं इश्क़ में जल जाने से

लज़्ज़ते सोज़े जिगर पूछिये पर्वाने से
(हम उफ़ करने वाले नहीं हैं-जलाओ जितना जी चाहे-आपका अख़तियार है)
चश्म साक़ी का इशारा यह पैमाने से,
देख हुशियार न जाये कोई मैख़ाने से
रस भरीं आंख तेरी देखी है जब से साक़ी
मेरी नीयम नहीं भरती किसी पैमाने से
जी में आता है साक़ी से इजाज़त लेकर
दिल को शीशे से मलूं आंख को पैमाने से—दिल - - - -

P. 7482. **कौंसिया** पी० ७४८२

दिखाया मेरे रेहबर ने अन्धेरे में उजाले में
कभी गुलशन में लैहराता कभी मकड़ी के जाले में
कभी वह दैहर में काबे में मसजिद में अज़ाँ देता
कभी माथे लगाकर तिलक बैठा है शिवाले में
कभो वह फूल नरगिस में कभी रैहता है लाले में
कभी माशूक़ के दिल में कभी आशिक़ के छाले में
दिखाया मेरे रेहबर ने अन्धेरे में उजाले में - - - -

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

अरे एक ज़माना हो गया उस यार को रूठे हुये
अरे या इलाही जोड़ दे क़ुदरत से दिल टूटे हुये
अपने दिल को ढूंढने के वास्ते जो मै गया
उन के कूचे में मिले दिल सैकड़ों टूटे हुए
हाय दर्द आफ़त है एक अकेली जान पर

वक्त बिगड़ा है इधर और वह उधर रूठे हुए
क्या तड़प कर जान देदी अंदलीबे ज़ार ने
उड़ते फिरते हैं क़फ़स में आज पर टूटे हुए
जिस तरह से टूट कर जुड़ता नहीं शीशा कभी
इस तरह से जुड़ नहीं सकते हैं दिल टूटे हुए-एक - - -
इक ज़माना होगया उस यार को रूठे हुए

—:-०-:—

P. 7675. **भीम** पी० ७६७५

शैर—अदालत इश्क़ में अरज़ी सनम पर हम लगायेंगे
जलाया ख़ाक कर डाला यही दावा जमायेंगे
अदालत से जो हो डिगरी तो दिल की दाद पायेंगे
करा इजराय डिगरी को तुझे पकड़वा मंगायेंगे
नलें असबाब मनकूला न लेंगे ग़ैर मन क़ूला
फ़क़त ज़ुल्फ़ दुता उसकी यही क़ुर्क़ी करायेंगे
गाना-बनते हैं संवरते है पौशाक बदलते हैं
अरे अब देखिये किस किस के अरमान निकलते हैं
खूं करते हैं लाखों के जब आंख बदलते हैं
गिरते हैं जो पांव में उनको भी मसलते हैं
क्या शक्ल है भोली सी क्या आंख में जादू
पड़जाये नज़र जिन पर फिर कब वह संभलते हैं
या रब न कोई देख इन ज़ुल्फ़ दराज़ों को
दर दर प फिराते हैं जो उन प मचलते हैं

दूसरी तरफ़ :— **ग़ज़ल**

शैर-तुम्हारे हुस्न का दुनिया में देखा न कोई सानी

मगर मग़रूर हो जाना चाहिये तुम को न ऐ जानी

गामा-जानी जोबना प न इतराया करो-कभी ख़ौफ़ ख़ुदा भी तो खाया करो

ग़ैर से इस दर्जे उल्फ़त दिल रुबा अच्छा नहीं

जान जां यह आशक़ों को बद दुआ अच्छी नहीं

अपने आशिक़ को यूंन जलाया करो—जानी - - - - - -

सामने आते हो मेरे डाल कर मुंह पर नक़ाब

ग़ैर से पर्दा नहीं किस वास्ते आली जनाब

देखो आशिक़ का दिल न दुखाया करो जानी - - -

बात कहता हूं अगर मानो उसे महरबां

एक तो है नाज़ुक ज़माना और तुम हो नोजवां

कभी शब को अकेले न जाया करो-जानी - - - -

P. 7866. ग़ज़ल पी० ७८६६

तूने तो मुझे ज़ालिम दीवाना बना डाला

अपने रुखे रोशन का पर्वाना बना डाला-तूने - - -

मस्जिद में जो वायज़ ने कौसर पयाम टेरा

रिन्दों ने वहीं अपना मैख़ाना बना डाला

ज़ाहिद को हुआ पैदा पीने का नया चस्का

कूज़ा जो वज़ू का था पैमाना बना डाला

तस्वीर सनम रखदी मिम्बर के क़रीब हम ने

काबे में भी छोटा सा बुतख़ाना बना डाला

अपनी जो साग़िर से कुछ काम नहीं होगा तो

साक़ी तेरी आँखों ने मस्ताना बना डाला

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हिना दर्दे दिल पर लगाई हुई है

किसी की क़ज़ा आज आई हुई है

करेंगे वह खूं आज आशिक़ किसी का

जो माथे पर त्योरी चढ़ाई हुई है

तेवर प बल है सोच में क्यों हो खड़े हुए

क्या आरहे हैं आज किसी से लड़े हुए

लिपटा के उन को प्यार की बातें किया करूं

मेरे गले में हाथ हों उनके पड़े हुए

ज़ाहिद हमें तो हुस्न परस्ती से काम है

देखे जहां हसीन वहीं जाखड़े हुए

सूरत है दिल फ़रेब तो अँदाज़ दिल रुबा

तुम तो अजीब चीज़ हुए जब बड़े हुए-तेवर - - - - -

—:-०-:—

P. 8044 ग़ज़ल पी० ८०४४

ज़बानें खुश्क देखी जब हमने ख़ारे मुग़ीलां की

लगादी है संखले दश्तमें पांव के छालों की

न रह जाय किसी सहरा में कांटे की ज़बां सूखी

इलाही आबरू रखना मेरे पांवों के छालों की

ऐ इश्क़ तूने हर एक आशिक़ को अपने क़ब्ज़े में लाके मारा

हां किसी की पर्दे में जान लेली किसी को जलवा दिखा के मारा

किसी को दिखला के ख़ाल मुश्की मिसाल दाने के पीस डाला

हां दिखा के ज़ुल्फ़े दुता का फन्दा लिटो की लिटमें फंसा के मारा

ऐ क़ैस और फरहाद से भी नकी वफ़ा इस इश्क़ ने

किसी को सहरा फिरा के मारा किसी को मजनूं बनाके मारा-ऐ - -

दूसरी तरफ़ :— नात

अब पार मोरी नैया महबूबे ख़ुदा करना

गर्दिश में यह बेड़ा है ठोकर से रिहा करना

फ़ुरक़त में जो अब तेरे कोई नहीं सहारा

पहुंचादे मदीने में कुछ हक़ से दुआ करना

इस रम्ज़ हक़ीकत को है कौन कोई जाने

यूसुफ़ से वतन छुटना याक़ूब जुदा करना

मेराज में यहख़ालिक़ से फ़रमाते थे यह हज़रत

उम्मत मेरी आसी है दोज़ख़ में रहा करना

अब पार मोरी नैया महबूबे ख़ुदा करना

P. 7447. नात पी० ७४४७

न क़ाब रुख़ से ज़रा ऐ सनम उठा लेना

किसी को जलवये हुस्न ख़ुदा दिखा देना

जलवये आरिज़ प नूर दिखाते जाते

तालिबे दीद को दीवाना बनाते जाते

फिर न आने की क़सम खाके उठे पहलू से

दे गये दाग़ कलेजे प वह जाते जाते

क़त्ल के बाद वह बे गोरो कफ़न छोड़ गये

हां मेरी मिट्टी को ठिकाने तो लगाते जाते—(वाह वाह)

था अगर उन को शहीदों का जिलाना मंज़ूर

उन से इतनी लबे शीरीं से सुनाते जाते

दूसरी तरफ़ :— भाई विलायत और पार्टी—ऐमन

मेरी जान तुझ प फ़िदा या मोहम्मद

अब यह ही मेरी सदा है मोहम्मद

तेरी शान का न कोई हुआ न होगा

तू नबियों का सर ताज है या मोहम्मद

नहीं ख़ुवाहिश जन्नत की मुझ को ऐ सरवर

मैं दर प तेरे ही रहूं या मोहम्मद—(सली अल्लाह)

न दोज़ख़ का डर न जन्नत की ख़ुवाहिश

देखा जब से रोज़ा तेरा या मोहम्मद-मेरी - - -

:(-o-):

पण्डित विष्णु दत्त

P. 4031. प्रह्लादको हिरणाकुशकी धमकी-क़व्वाली पी० ४०३१

बदल तेवर कहा राक्षस नेकि हेतबनाक लहजे में

भगत प्रह्लाद जी नृप के जब दर बार में आये

नहीं शीरीं मिला सकता कभी बहरे हलाहल में

नहीं मुमकिन सआदत पिसर ना हिंजाज़ में आये

मेरे दावा ख़ुदाई का हो मुनकिर मुझ से ही पैदा

ग़ज़ब है ख़ूने बुल बुल दुश्मने जांबाज़ में आये

अदू पर तेग़ तो चलने दे ओ इक़रार के भूले

बग़ैर देखना फिर क्या तेरे एतबार में आये

तेरा जब होगा सर तन से जुदा मालुम तब होगा

मज़ा क्या क्या तुझे कम्बख़्त इस इन्कार आये में

उड़ा दूं अपने ही फ़रज़न्द का सर अपने हाथों से
मेरा जोश जुनू जब मेरी तलवार में आये

दूसरी तरफ़ :— प्रह्लाद का जवाब—क़व्वाली

हिरणा कुश को सुन कर बात यूं प्रह्लाद जी बोले
पिता जी मौत ऐसी सब को इस संसार में आये
जहां में इस से बेहतर इसका इस्ते माल क्या होगा
अगर यह जिस्म फ़ानी काम पर उपकार में आये
ज़मीन चांद गरदिश छोड़ें अपनी यह मुमकिन है
नहीं मुमकिन मगर लरज़िश मेरी रफ़्तार में आये
मेरा महबूब आसकता नहीं लफ़्ज़ों की बन्दिश में
न वह इनकार में आये न वह इक़रार में आये
वले चश्म तमन्ना से अगर देखे कोई उस को
तो फिर जलवा नज़र हर एक दरो दीवार में आये
मुझे फांसी प लटकादो मुझे सूली प खिंचवादो
करो जो कुछ तुम्हारी इस तबअ खूंखुआर में आये
मैं वह शदाये हक़ हूं सर ज़मीं पर गौर से सुन लो
जिसे हक़ का नज़ारा ही नज़र तलवार में आये
झुकादी बस मुसाफ़िर कह के यह प्रह्लाद ने गरदन
सरे तसलीम खम है जो मिज़ाजे यार में है

———

P. 4421. भजन क़व्वाली पी० ४४२१

रोते रोते तेरी फ़ुर्क़त में जिगर बैठ गया
बंसी वाले तू मेरे जाके किधर बैठ गया

इश्क़ में तेरे हुए सैंकड़ों आवारा बतन
कोई गोकुल के इधर कोई उधर बैठ गया
दिल तो क्या जान भी कर दूंगा मैं तेरे अरपन
बंसीधर तू मेरे हृदय में अगर बैठ गया
अर्ज़ करने प भी तू क्यों नहीं आता माधो
सच बता किसका तेरे दिल में है डर बैठ गया
अर्ज़ प्रकाश नहीं सुनता नहीं तू सुनता
सच बता कानों प तेरे किसका असर बैठ गया

दूसरी तरफ़ :— द्रौपदी चीर हरण

प्रभु एक बार मुझे दरस अब दिखा देना
दुष्टों के पंज से दामन मेरा छुड़ा देना
मेरे सत धर्म को ज़ालिम बिगाड़ा चाहता है
सती प हाथ उठाने का फल चखा देना
मेरे तन की जो है साड़ी वह भी उतारी जाती है
भरी सभा में मेरी लाज को बचा देना
कहेंगे लोग हुई नग्न सभा बीच द्रौपदी
यही कलंक नग्न होने का मिटा देना
यही विनय है मेरी वासदेव तेरे प्रति
पतिब्रता हूं पतिव्रत मेरा बचा लेना

P. 4449. पीलू पी० ४४४९

धर्म के नाम पर प्यारो तुम्हें मरना नहीं आता
लहू से कासये तक़दीर को भरना नहीं आता

छुरी से पेट फड़वाना तुम्हें आता नहीं यारो
हक़ीकत की तरह क़ुर्बान सर करना नहीं आता
तुम हो औलाद शेरों की मगर अब बहरे हस्ती में
समय का फेर है सीधा तुम्हें तरना नहीं आता
तबाही का तुम्हारी एक ही कारण है बस मित्रों
तुम्हें कहना तो आता है मगर करना नहीं आता

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली पहाड़ी

कर जाओ काम दोस्तो भारत की शान रहे
दुनिया में तुम रहो न रहो यह निशान रहे
पसेमुरदन भी होगा हश्र में यही बयां मेरा
मै इस भारत की मिट्टी हूं यही हिन्दोस्तां मेरा
मैं इस भारत के उजड़े हुए खंडर का हूं ज़र्रा
यही पूरा पता मेरा यहीं है कुल निशां मेरा
अगर यह प्राण तेरे वास्ते ऐ देश काम आवें
तो इस हस्ती के तख्ते से मिटे नामो निशां मेरा
मेरे सीने में तेरे प्रेम की आनि भड़कती है
निगाहों में मेरी भारत तू ही है कुल जहां मेरा

—:-०-:—

P. 4599. भजन मीरा बाई पी० ४५६६

मेरे राना जी मैं भगवत के गुण गाना
राजा रूठे नगरी राखे-प्रभु रूठे कहां जाना-मेरे राना - -
दोहा-हर जगह मौजू है पर वह नज़र आता नहीं
योग साधन के बिना उस को कोई पाता नहीं-मेरे राना - -
राना ने भेजा ज़हर पियाला-अमृत कर पीजाना-मेरे राना - -

डिबिया में काला नाग जो भेजा ओम् अज्ञर कर जाना-मेरे - -
मीरां बाई प्रेम दिवानी-प्रभु रूठ कहां जाना-मेरे - -

दूसरी तरफ़ :— भजन कृष्ण

ज़रा अपनी बंसी बजा बंसी वाले
हमें मस्तो बेख़ुद बना बंसी वाले
तेरी राह तकते हैं गोकुल के मैदां
कि फिर आके गौवें चरा बंसी वाले
तेरे आने का मुन्तज़िर है ज़माना
कि जल्दी से तशरीफ़ ला बंसी वाले-ज़रा - - -
अजब प्रेम की तूने बंसी बजाई
कि चर्चा तेरी जा बजा बंसी वाले
दिया था जो उपदेश अर्जुन को तूने
वही फिर तू आके सुना बंसी वाले-ज़रा - -
जुदा भाई भाई हैं एक दूसरे से
उन्हें फिर तू आके मिला बंसी वाले-ज़रा - - -

—:❀—❀:—

P. 4673. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ४६७३

क्या से क्या अब हाय अपना आशियाना होगया
नावकी तरकस मुसीबत का निशाना होगया
हाय क़िसामे अज़ल ने रोज़ी जब तक़सीम की
अपनी क़िस्मत में क़फ़स का आबोदाना होगया
अब कहां है वह चमन वह गुल कहो वह दिल कहां
हो चुकी वह नग़मे साज़ी वह तराना होगया

पर कटे हैं ताक़ते पर दाज़ बाज़ू में नहीं
मुफ़्त ही दिल लगी अब वह ज़माना होगया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

कहीं सूरज है ज़र्रों में कहीं हैं चांद तारों में
वह गुल यकता है लाखों में हज़ारों में
जिगर तीरों की नोकों में तो दिल तेग़ों की धारों में
तमन्ना आफंसी कमबख़्त किन आफ़त के जालों में
ज़रा ऐ अबतर तू भी शरीके ताज़ियत होना
अकेली शमय किस किस के लिये रोए मज़ारों में
पड़े जो तेरी गरदन में टूटें हाथओ ज़ालिम
कि बूए ग़ैर आती है मुझे फूलों के हारों में

—ः-०-ः—

P. 4744. प्रार्थना पी० ४७४४

आजा आजा ओ मेरे कृष्ण प्यारे आजा
तेरी फ़ुर्क़त में जलूं नन्द दुलारे आजा
जो कन्हां तूने बन्सी बजाई तो आन खड़ी बिन्द्राबन में
सुन सुन बंसी की धनघोरें मेरे ताक़त रहीन तन में
रंग रंगीला छैल छबीला प्रभु गौवें चरावे बन में
उस दिन की बलिहारी ऊधो जिस दिन ठाकुर जनमे-आजा -
तेरे दीदार की मन में हविस है और ख़्वाहिश
दस्त बस्ता है अरज़ मेरे मुरारी आजा
तेरे भगतों प नये ज़ुलमो सितम होते हैं
सब दुख दर्द मिटा शाम प्यारे आजा

दूसरी तरफ़ :— भजन सुदामा प्रेम

आया जब निर्धन ब्राह्मण कृष्ण के दर्बार में
वस्ल गुल बुल बुल को होगया गुलज़ार में
फ़ारिग़ुल तहसील होकर किस जगह रहते रहे
रोज़ो शब बेकल रहा मैं आप के इन्तिज़ार में
पानी पटरानी के लाने में हुई लहमे की देर
अश्क उस वक़्त आगये फ़ौरन ही चश्मे यार में
हर तरह ख़ातिर तवाज़ह कृष्ण जी करते रहे
चन्द ऐसे दोस्त अब उन का हुये संसार में

—:(-::-):—

P. 4828. ग़ज़ल बागेसरी पी० ४८२८

जो दिल में बस रही है तस्वीर वह नहीं है
बाक़ी निशानियां हैं तामीर वह नहीं है
काबा बना था जिन से चक्कर में आगया था
आहें वही हैं लेकिन तासीर नहीं है
एक दिन था हिन्द का वह जब तू भी बोलता था
परजिगर आज उन की तोहीद वह नहीं है
अब जिस्म वह नहीं है अब जान वह नहीं है
अब अक़्ल वह नहीं है तदबीर वह नहीं है
सब स्वार्थ के नशे में दीवाने हो रहे हैं
बांधे जो धर्म को अब ज़ंजीर वह नहीं है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल बंगाली

दर्द से वाक़िफ़ न था ग़म से शना साई न थी
हाय वह दिन थे तबियत जब कभी आई न थी

एक वह दिन था कि तुम को दिल बरी आई न थी
आंख में जादू न था लब पर मसीहाई न थी
एक दिन देखी थी उस ने वहशते जुनूं की सैर
फिर तो लैला ख़ुद तमाशा थी तमाशाई न थी
बोसा लेने की क़सम का पास क्यों होता मुझे
आपने खाई थी कुछ मैंने क़सम खाई न थी
यासो आलम का न था यूं बेकसी छाई न थी
सौ बलायें थीं शबे ग़म एक तन्हाई न थी

——:——

P. 4984. **भजन माण्ड** पी० ४६८४

श्री राम कहने का मज़ा जिस की ज़बां पर आगया
मुक्त जीवन होगया चारों पदारथ पा गया
लूटे मज़े ध्रुव भगत ने हरी नाम के प्रताप से
संग प्रभुके जा मिला त्रिलोक में यश पा गया
प्रहलाद को लागी लो इस परम ब्रह्म के नाम की
नरसिंह हो दर्शन दिया हृदय से अपने लगा लिया
कपटी को मिलता नहीं वह शाम सुन्दर सांवरा
जिस ने सुमरन ही किया उस को दरस दिखा दिया
वेद संसारिक मुनी मन ध्यान में रहते मगन
भगतों में इक दास तुलसी राम रस बरसा गया

दूसरी तरफ़ :— कौंसियाभजन

जिन के हृदय राम नाम बसे तिन और को नाम लिया न लिया
जिन के घर एक सपूत भयो तिन लाख कपूत हुआ न हुआ
जिन के द्वार प गंगा बहे तिन कूप का नीर पिया न पिया

जिन बात करी परमारथ की तिन हाथ से दान दिया न दिया
तुलसी जिन चरनन गहे राम के तिन और को देव किया न किया
जिन के हृदय राम बसे तिन और को नाम लिया न लिया

——o——

P. 5732. **ग़ज़ल** पी० ५७३२

पूजा बुतों की छोड़ दूं दिल मानता नहीं
और तू अभी नादान है कुछ जानता नहीं
तू जिन्नत में जायेगा तो क्या मैं दोज़ख़ में जाऊँगा
ज़ाहिद तेरा ख़ुदा है तो क्या मेरा ख़ुदा नहीं
ऐ अब्र यों बरस कि जैसे मेंह बरसाता है
काली घटा तो छाई है पर दिल रुबा नहीं
क़ैसर बुतों के प्यार में हर गिज़ न दिल लगा
जौरो जफ़ा तो हैं मगर महरो वफ़ा नहीं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

चाहने वालों की भी आपको पहिचान नहीं
आंख लड़ने के तो यह तौर मेरी जान नहीं
दिल शकिस्ता हो भला उनको बुलाऊं क्यों कर
घर तो मौजूद है पर क़ाबिले महमान नहीं
दो घड़ी के लिये लाशे प मेरे आजाये
हाय तक़दीर कि मरने का सामान नहीं
ऐसे जीने से तो है डूब के मरना बेहतर
आबरू जिस में नहीं वह कोई इनसान नहीं

——:——

P. 6189. **पहाड़ी** पी० ६१८९

भारत के हिन्दुओं के नाम श्री कृष्ण जी का पैग़ाम सुनियेगा

मुझ को आने में तो भारत में कुछ इन्कार नहीं
पर बुलाने को मेरे आप ही तैयार नहीं
पहिले पैदा तो करो देवकी माता कोई
गोद उस की में मुझे आने में कोई आर नहीं
सुन कर गीता कुरुक्षेत्र में कूदा अर्जुन
उसको पढ़ लोग बने त्यागी पर समझदार नहीं
कोई अर्जुन हो तो गीता मैं सुनाऊं आ कर
मेरे उपदेश के तुम लोग सज़ावार नहीं

दूसरी तरफ़ :— कौंसिया

भारत में फिर से आजा बन्सी बजाने वाले
दुख दर्द सब मिटाजा गौवें चराने वाले
गौवें बिलख रही हैं गवाले तड़प रहे हैं
इक छब तो फिर दिखाजा गौवें चराने वाले
बन बन में तुझको ढूंढा कैलाश छान मारा
कुछ तो पता बता जा ओ बेनिशान वाले
दर दर भटक रहा है भिकारी तेरे दर का
सीने से तू लगा ले ओ लामकान वाले

P. 6249. **माण्ड** पी० ६२४९

निगाह फेर के उज़रे विसाल करते हैं
मुझे वह उलटी छुरी से हलाल करते हैं
देखी नब्ज़ न पूछा मिज़ाज भी तुम ने
मरीज़े ग़म की यूहीं देख भाल करते हैं
मेरे मज़ार को ठोकरों से ठुकरा कर
फ़लक से कहते हैं यों पायमाल करते हैं
हज़ारों काम मज़े के हैं दाग़ उल्फ़त में
जो लोग कुछ नहीं करते कमाल करते हैं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दोहा :—उल्फ़त में बराबर है वफ़ा हो जफ़ा हो
हर बात में लज़्ज़त है अगर दिल में मज़ा हो
दिल है तो तेरे वस्ल के अरमान बहुत हैं
यह घर जो सलामत है तो महमान बहुत हैं
वह फूल बढ़ते हैं दबी जाती है तुर्बत
माशूक़ के थोड़े से भी अहसान बहुत हैं
दिल लेके खिलोने की तरह तोड़ न डालें
डर मुझ को यही है कि वह नादान बहुत हैं
तुम को पसन्द आये न तो फेर दो दिल को
इस दिल के मेरी जान क़दर दान बहुत हैं

P. 6315. **ग़ज़ल** पी० ६३१५

दोहा :—लोग कहते हैं वह क़ातिल है ख़ुदा ख़ैर करे
मुब्तला इस में मेरा दिल है ख़ुदा ख़ैर करे
जिस ने मक़तल में तहे तेग़ किया लाखों को
दिल तो उस शोख़ प मायल है ख़ुदा ख़ैर करे
दिल में सामाई है कि दीवाने बनेंगे

मेरी लहद प कोई परदापोश आता है
चिराग़े गोरे ग़रीबां सबा बुझा देना
शबे फ़िराक़ के जागे कुछ ऐसे सोये हैं
बग़ैर हश्र के मुमकिन नहीं जगा देना

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

तबअ बिगड़ी हुई ज़ालिम की संभाली न गई
जो गिरह दिल में पड़ी थी वोह निकाली न गई
तू भी बेचन हुवा दिल के सताने वाले
दर्दमन्दों की दोआ देख ले ख़ाली न गई
ख़ाब में बोसे लिये सैकड़ों उस बुत के मगर
लब से मिस्सी न छुटी पान की लाली न गई
दिन क़यामत के गुज़ारूंगा इलाही क्योंकर
हिज्र की सख़्त घड़ी एक भी टाली न गई
नामाबर ख़त प मेरी आंख भी रख कर ले जा
क्या गया ख़ाक जो यही देखनेवाली न गई

—:०-:—

P. 9433. भजन पी० ९४३३

शेर। मोहसिन है मेहरबां है सारे जहां की मां है
आवो झुकायें सर का भारत हमारा मां है
प्यारा वतन हमारा जाने जहां हमारा
हिन्दोस्तां हमारा जन्नत-निशां हमारा
वीरान में घर अपना यूं मुद्दतों बसेरा
जब सर प आसमां था बस सायबां हमारा
इन जंगलों में गर हम गुलकारियां न करते

जन्नत-निशां न बनता हिन्दोस्तां हमारा
आकर बसे हम इसमें और इसको भी बसाया
हिन्दोस्तां के हम हैं हिन्दोस्तां हमारा

दूसरी तरफ़ :— भजन

शेर। मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा
फ़रज़न्दे औवलीं हैं हम मादरे वतन के
है यह ज़मीं हमारी यह आसमां हमारा
इस क़स्रे दिलकुशा की बुनियाद हमने डाली
हर संग व ख़िश्त पर है नाम व निशां हमारा
जब शर्क़ व ग़र्ब में था तूफ़ाने जंग बरपा
गुज़रा समनदरों से बेड़ा रवां हमारा
फ़ज़्ले ख़ुदा प हर दम यां आंख लग रही है
अबरे करम है उसका रोज़ी रसां हमारा

P. 9635. ग़ज़ल पी० ९६३५

(बेचारी ग़रीब बुल बुल का नाला ज़रा ग़ौर से सुनिये। क्या कहती है और कैसे कहती है।)

छोड़ दे ज़ुल्म व सितम करना दिले नाशाद पर
वरना ज़ालिम, अर्श भी हिल जायगा फ़रयाद पर।
ज़ुल्म जो है वह निराला जो सितम है वह नया।
आलमे ईजाद क़ुरबां है सितम ईजाद पर
आब व दाना था जो लाया खींचकर इस क़ैद में।
किस लिये और क्यों करें इसका गिला सैयाद पर।

मजनूं की तरह अपने भी अफ़साने बनेंगे
हम इश्क़ के बन्दे हैं पूजेंगे बुतों को
काबे के मकां में भी बुतख़ाने बनेंगे
पर्वाह नहीं जल जायेंगे महफ़िल में तो रहेंगे
तुम शम्य बनो यार हम पर्वाने बनेंगे
शीशे मे भरी मय है रंग है गुलाबी
हम को भी पिला दीजिये मस्ताने बनेंगे

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

इश्क़ की मंज़िल कड़ी है रहनुमा मिलता नहीं
महवे हैरत में खड़े हैं रास्ता मिलता नहीं
मासिवा क्या चीज़ है यारब पता मिलता नहीं
तूही तू है मुझ को तेरे सिवा मिलता नहीं
घर यें सूज़न खोगई बाज़ार में फिर क्या तलाश
छान मारी है ख़ुदाई पर ख़ुदा मिलता नहीं
ओ मेरे दिल की कशिश अब वक्त है इमदाद का
हम से वह बे महर रहता है ख़फ़ा मिलता नहीं

P. 6332. भजन भैरवीं पी० ६३३२

ऐ मेरे माधो मुझे क्यों शक्ल दिखलाता नहीं
दिल धड़कता है मुझे धीरज धराता क्यों नहीं
तू ने अर्जुन को सुनाई रथ प गीता बैठ कर
एक भी मुझ को बचन अपना सुनाता क्यों नहीं
दोहा—प्रेम संदेसा भेज दो आप मिलेंगे आ
हर उसके हो जात हैं जो हर का हो जाय - - - -

ऐ मेरे माधो मुझे सूरत दिखाता क्यों नहीं
क्या बजाता फिरता है पेड़ों प बन्सी बैठ कर
सामने आकर मेरे बन्सी बजाता क्यों नहीं
ज़िन्दगी का क्या ठिकाना ऐ प्यारे आन मिल
रोज़ो शब बेकल हूं मैं सूरत दिखाता क्यों नहीं

दूसरी तरफ़ :— भजन बलावल खम्माच

श्री कृष्ण तुमको बन बन गौवें चराते देखा
जमना के तीर तुमको बन्सी बजाते देखा
किया था कोप भारी इन्द्र ने द्वारिका पर
हरने को मान उसका पर्वत उठाते देखा
जब पकड़ लाया ज़ालिम केसों से द्रोपदी को
सुन कर के टेर उसकी वस्त्र बढ़ाते देखा
कहां तक करूं मैं वरनन श्री कृष्ण तेरी माया
मौक़े प तुझ को हमने निर्बल बचाते देखा

P. 6517. ग़ज़ल पी० ६५१७

दोहा—हिनाई हाथ से मोती सियाह बादल से बरसाये
शबे तारीक में सूरज अचानक हो गया पैदा
बस एक ही जलवे में हम बन गये सौदाई
जी भर के न देखा था होने लगी रुसवाई
करता है हया जब तक ऐ पर्दानशी कर ले
महशर में तो देख लेंगे तुझ को तेरे शैदाई

जो तू सोने की लंका का मान करे,
मेरे आगे वह मट्टी का घर भी नहीं
मेरे मन का सुमेरु हिलेगा नहीं,
मेरे मन में किसी का भी डर ही नहीं
तू ने सहस्त्र अधारा जो राखी वरीं,
हाय इस पर भी तुझ को खबर ही नहीं
पर त्रिया प तू ने जो ध्यान दिया,
क्या तुझे मूर्ख नरक का ख़तर ही नहीं
आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिल के सभी,
क्या मजाल जो शील को मेरी हरें
तेरी हसती है क्या सिवा राम पिया,
मेरी नज़रों में कोई बशर ही नहीं
क्यों न जीत सयम्बर तू लाया मुझे,
मेरी चाह जो थी तेरे दिल में बसी
तू था कौन शहर मुझे दे तो बता,
क्या सयम्बर को पहुंची ख़बर ही नहीं
हुवा सो हुवा अब मान कहा,
मुझे राम प जलदी से दे तू पठा
कहे सीता वगरना तू देखेगा क्या,
चंद रोज़ों में अब तेरा सर ही नहीं

दूसरी तरफ़ :— भजन

(एक राजकुमारी का अपने पिता को करमों का वर्णन। ज़रा ग़ौर से सुनियेगा)

मेरे करमों को राजा तु देखेगा क्या
तुझ कर्म बिना राज कैसे मिला

मुझे निश्चय है राजा कहूंगी यही
मुझे जो कुछ मिला है करम से मिला
हे पिता जो करम की विचित्र गतो
जो छण भर में राजा को रंग करे
इन करमों की रेख में मेख धरे
मुझे कोई भी ऐसा बशर न मिला
राजा राम का था दरबार लगा
उन्हे राजतिलक जब कि मिलने लगा
कहो राजा करम हैंगे कैसे बली
बनबास मिला पर तिलक न मिला
श्रीकृष्ण ने लाखों ही यत्न किये
किसी तरह से शहर द्वारिका बचे
जब आग लगी न किसी की चली
जल ढूंढा तो जल भी कहीं न मिला
राजा कर्म लिखा टाला टलता नहीं
चाहे कोई अनेक उपाय करे
यही निश्चय करो मत मान करो
बिन कर्म किसी को समर न मिला

—:०:—

P. 9365. ग़ज़ल पी० ६३६५

मुझे मसीह के एहसान से बचा देना
तुम्हीं ने दर्द दिया है तुम्हीं दवा देना
शबे विसाल में तुम जिस अदा से रूठे थे
वही अदा मुझे एक बार फिर दिखा देना

आशिक़ से हया करना माशूक़ प मर मिटना
क्या ढब है लगावट का उफ़रे तेरी चतराई
मारो भी जिलाओ भी ज़ेबा है सब तुमको
आंखों में हलाहल है होंटो प मसीहाई

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

दोहा—होली रमाई तन में और गेरू पेरहन में
फिर रहे हैं बन में हम यार की ख़ातिर
जोगी का वरन हमने लिया यार की ख़ातिर
क़ातिल मुझे मंज़ूर है गर क़त्ल हामारा
ता खैर न कर देर न कर बहरे ख़ुदारा
एक लमहे में कर दीजिये बस काम हमारा
हाज़िर है गला यार की तलवार को ख़ातिर
सजदा नशींबन में उम्र हमने गुज़ारी
मस्जिद के बने मुल्लां मन्दिर के पुजारी
ईसा बने मूसा बने दर दर के भिकारी
क्या क्या न जतन हम ने किया यार की ख़ातिर
अजी जो कुछ भी किया हम ने किया यार की ख़ातिर

—:०:—

P. 8974. भजन पी० ८६७४

ए कृष्णा मेरे प्यारे भारत में ज़रा आना
सोते हैं यहां वाले फिर उनको जगा जाना
रहते हैं फ़िकिर में हम ख़ुश होना नहीं आता
वह नाचने गाने का फिर रंग जमा जाना

दो वक्त मिले चुपड़ी ऐसी है कहां क़िसमत
मक्खन का मज़ा फिर से ख़ुद आके बता जाना
दिन रात यहां गौवें हैं क़त्ल बहुत होतीं
गोपाल ज़रा आकर तू इनको बचा जाना - ए कृष्णा - -
अब तर के क्या कहने भाई भी बने दुशमन
फिर दीन सुदामा का अरे मान बढ़ा जाना। - ए कृष्णा - -

दूसरी तरफ़ :— सेंधड़ा

जब से देखी ख़ाब में है मैंने सूरत शाम की। - जब से देखी - - -
तब से रटना लग रही है बस उसीके नाम की। - जब से देखी - -
मोहनी मोहन की छब ने मेरे मन को मोह लिया
हो चुकी नौकर मैं सुन्दर शाम की बिन दाम की। - जबसे देखी - -
ऐ सखी अबतो बता मुझको कोई ऐसा पता
फिर मयस्सर हो मुझे झांकी मनोहर शाम की
हरि का सुमिरन चाहिये करना सदा इन्सान को
बिन भजन घनश्याम के है ज़िन्दगी किस काम की-जब से देखी - -

P. 9251. भजन पी० ९२५१

(साहेबान ! सीता जीका रावण को मुंह तोड़ जवाब ज़रा ध्यान लगा के सुनियेगा।)

रावण तू धमकी दिखाता किसे,
मुझे मरने का ख़ौफ़ो ख़तर ही नहीं
मुझे मारेगा क्या अपनी ख़ैर मना,
तुझे होनी को अपनी ख़बर ही नहीं

रहम की उम्मीद क्या हो उस बुते सफ़्फ़ाक से।

कान भी धरता नहीं जो नालओ फ़रयाद पर

दूसरी तरफ़ :— कौंसिया

शेर। दारा से पूछिये कि वह लशकर कहां गया।

रुस्तम से पूछिये वोह शुजाअत कहां गई।

शद्दाद से कहो कि है बाग़े इरम कहां।

क़ारूं से पूछिये कि वह दौलत कहां गई।

बादशाह की क़ब्र प कहती है बे-कसी।

शेर। मिटे देखिये अहले शां कैसे कैसे।

हुवे ख़ाक पीर व जवां कैसे कैसे।

तुझे मरकबे मर्ग कुछ भी ख़बर है।

मिले ख़ाक में नौ जवां कैसे कैसे। - मिटे देखिये - - -

बने लुक़मये गोर अन्दाज़ वाले

अजल खा गई नौ जवां कैसे कैसे। - मिटे देखिये - -

परेशां हुई बुल बुलें कैसी कैसी।

उजाड़े गये गुलिस्तां कैसे कैसे। - मिटे देखिये - - -

———•———

P. 9741. ग़ज़ल पो० ६७४१

शेर। इस क़दर तेरा तसौवर कहीं बढ़ जाता है

आइना देखूं तो मुंह तेरा नज़र आता है

ऐ जान तेरी सूरत हर आन सामने है

हर लेहज़ा सामने है हर आन सामने है

दिल चाक चाक करके वह कह रहा है ज़ालिम

यह दिल अगर है तेरा पहचान सामने है

वादा किया था तुमने अच्छा क़सम तो खावो

रक्खो तो हाथ इस पर क़ुरआन सामने है

देखा न कोई होगा दो जान रखने वाला

एक जान मेरे तन में एक जान सामने है

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

जब तक किसी की चाह न थी क्या सुरूर था

मेरा ही दिल बग़ल में मेरे रश्के हूर था

वायज़ तेरे लिहाज़ से हम सुनके पी गये

क्या ज़िक्रे नागवार शराबे तहूर था

हम बोसा लेके उनसे अजब चाल कर गये

यूं बख़्शवा लिया कि येह पहला क़ुसूर था

देखा सलफ़ से आज तक इन्साफ़ इश्क़ का

तक़सीर वार था वही जो बेक़ुसूर था

——:-०-:——

मि० एम० सी० वियास

P. 7104. भैरवीं पी० ७१०४

कन्हैया जी मोरी गागर भरने दे—भरदे भरादे—सिर पर उठाय दे

पांच क़दम पहुंचाय दे रे कन्हैया जी मोरी गागर - -

इस जिन जानियो कान्हा—नीर गांव की बरसाना मेरा गांव

इस जिन जानियो कान्हा—अरे राधा अकेली—साठ सहेली साथ

कन्हैया जी मोरी गागर भरने दे

दूसरी तरफ़ :— **असावरी**

कुपथ मत जाना ऐ रणधीर
जाना भांगोरा यह शरीर—लोकनद नीर—नहीं जागीर-कुपत - -
मानू में गुन सत्य नहीं है—सत बिन तरमंज नहीं है
ज्यों मोती बिन नीर—कुपथ मत जाना - -
जीवन मूल सत्यको जानो—स्वाथ से तू बद मत ठानो
बन्यो नहीं बे पीर—कुपथ मत जाना

—:-०-:—

P. 7477. **कजरी** पी० ७४७७

मेरे आंगन में बन्सी बजा खिलौना मैं ले दूंगी
खेलन को दूंगी चक्की भंवरवा
झुन्जुना मैं दूंगी बजाय - खिलौना मैं ले दूंगी
मेरे अंगन में बन्सी बजा - - -
माखन मिसरया खाने को दूंगी
दुधवा मैं देउंगी पिलाय रे - खिलौना मैं ले दूंगी - - -
राधे मोहन के ब्याह करुंगी तुलसी मैं देउंगी चढ़ाय
खिलौना मैं ले दूंगी - - - - - - -

दूसरी तरफ़ :— **पूरबी**

मानो बलम परदेसवा न जाओ बरखा की बहार रे
निस अन्धेरी घेर आई बदरी
लग जईं हैं जियारा कि जियारा हो
नान्ही नान्ही बुन्दयां बरस जिया मेरी हैं
न इस जिया में शुमार हो - मानो बलम - - -

बोलें पपीहा रा उचट गइ हैं निन्दया
फिर छध आई हैं तुम्हारा हो
सारी रैन सय्यां तलफ़त बीती हैं
जिया मको हे हैं हमारा - मानो बलम - - -
उंची अटरिया खर उठ आईं मोरु अलग जीहें बिरह कटार हो
कैसे किधरी आईं धीर जिया बालम मोहे दुख हुइ है उपार हो
मानो बलम - - -

—:-० :—

P. 8039. **ग़ज़ल पोलू** पी० ८०३६

इन दिनों जोशे जूनूं है तेरे दीवाने को
लोग हर सू से चले आते हैं समझाने को
खूने दिल पीने को लख़्ते जिगर खाने को
यह ग़िज़ा मिलती है जानां तेरे दीवाने को
अरे शहर में लैला ने मनादी करवा दी
कोई पत्थर से न मारे मेरे दीवाने को—न मारे - - इन - -
ऐ मुसव्विर तेरी हाथों की बलायें ले लूं
खूब तस्वीर बनाया मेरे दिखलाने को

दूसरी तरफ़ :— **माण्ड**

मौसम कौन बड़ो परिवारी
सत्य है पिता धर्म है भ्राता लज्जा है महतारी
शील बहन सन्तोष पुत्र है क्षमा हमारी नारी—मौसम - -
आसा सास तृष्णा है साली लोभ मोह ससरारी
अहंकार है ससर हमारो रे सो घर को अधिकारी—मौसम - -
मन दीवाना रत सैराजा बुद्धि मन्त्री नियारी

काम क्रोध दोय चोर बसत हैं तिनकर डर अति भारी-मौसम - -
ज्ञान है गुरु विवेक है चेला सो मेरो हितकारी
पांच तत्व की बनी नगरिया तुलसी दास बिचारी-मौसम - -

P. 8289. होली पी० ८२८९

लाज की गारी दई कन्हैया ने मैंने कछु न कही लाज की गारी - -
मैं जमना जल भरन जात थी, आये मिले मग ही-कन्हैयाने मैंने कछु - -
लाज की गारी दई कन्हैया ने - - - - - - - - - -
जाय कहूंगी नन्द मेंहर सों आनके बहुदी कन्हैया ने-मैंने कछु न कही

दूसरी तरफ़ :— होली

मै तो अपने ही रङ्ग में रङ्गी - - - -
कन्हैया जी ने रङ्ग मोपे ही डारो - मैं तो अपने ही रङ्ग - - -
भर पिचकारी मोहे सन्मुख मारी-भीज गई मैं तो बस बस रे कन्हैया
मैं तो अपने ही रङ्ग में रङ्गी - - - - - - - - - - -

——:-०-:——

P. 8641. ग़ज़ल पी० ८६४१

उस हसीं को जो पागईं आंखें
क्या तमाशा दिखा गई आंखें
चार आंखें जो मेरी उनसे हुईं
दिल प बिजली गिरा गईं आंखें
लाख परदे में वोह छुपे जाकर
लेकिन उसपर भी पागईं आंखें
मेरे दिल में जिगर में सीने में

अब तुम्हारी समा गईं आंखें (ओ हो हो)
वाहरे उनका हुस्ने आलमताब
देखना था कि आगई आंखें
देख लेना ग़ज़ब हुवा बिसमिल
दिल में उनकी समा गईं आंखें

दूसरी तरफ़:— ग़ज़ल

तेरा सा हुस्नो शबाब ऐ सनम किसी में नहीं
ख़ुदाई देखी ख़ुदा की क़सम किसी में नहीं
बुरा है हाल मरीज़ों का तेरी उल्फ़त में
चलें ये दो क़दम इतना भो दम किसी में नहीं
तुम्हीं को तकते हैं महफ़िल में चाहनेवाल
ख़मोश बैठे हैं यूं जैसे दम किसी में नहीं
हमने ख़ूब देख लिया हमने ख़ूब जांच लिया
जो बात तुझ में है तेरी क़सम किसी में नहीं
जो देखे जलवये ख़ालिक़ को किस तरह देखे
कि हर किसी में वह है और फिर किसी में नहीं

P. 8702. ग़ज़ल पी० ८७०२

अब कोई और ज़माने में सहार न रहा
जिसको समझे थे हम अपना वह हमारा न रहा
न रहे तुम जो हमारे तो सहारा न रहा
कोई दुनियाय मोहब्बत में हमारा न रहा-अब कोई - - -
मैं ने देखा तुझे ऐ परदे में छुपनेवाले
मेरो आंखों को वह अब शौक़ नज़ारा न रहा

क्या कहें हाल ज़माने का ख़ुलासा यह है
तुम हमारे न रहे कोई हमारा न रहा

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

कहते हैं दिल थाम कर वोह मेरे मरजाने के बाद
होगा क्या दीवाना कोई ऐसे दीवाने के बाद
आतशे ग़म से जलकर मिलगया जब ख़ाक में
शमअ गेती रह गई महफ़िल में परवाने के बाद
बेकसी यह कहके रोती है हमारी क़ब्र पर
पूछनेवाला नहीं अब कोई मरजाने के बाद
यह अयादत का तरीक़ा ही जुदा दुनिया से है
देखने आयेहो मुझको मेरे मरजाने के बाद

—:०:—

P. 8879. भैरवीं पी० ८८७९

तुम ही काबे में भी हो बुतकदे में भी मकीं तुम हो
जगह वह कौनसी है जिस जगह हां हां नहीं तुम हो
मेरी आंखों में दिल में और मेरी नज़रों में मकीं तुम हो
निकलते ही नहीं बाहर बड़े परदा नशीं तुम हो
तुम्हारे देखने वाले तो तुमको देख ही लेंगे
यह सब कहने की बातें हैं बड़े परदानशीं तुम हो
तुम्हारे शेर सुन सुन कर तड़प जाते हैं बिसमिल भी
जनाबे दाग़ के ऐ नूह सच्चे जानशीं तुम हो

दूसरी तरफ़ :— झंझोटी

आज मुझ से उस हसीं की चार आंखें होगईं
नावके दिल सोज़ बनकर पार आंखें होगईं

आगया जो सामने वह जान से जाता रहा
क्या तेरी तलवार आंखें होगईं
गिर पड़े ग़श खाके मूसा देखने से भी गये
क्या समझकर तालिबे दीदार आंखें होगईं
उनकी नज़रें क्या फिरीं ख़न्जर गले पर चलगये
देखते ही देखते तलवार आंखें होगईं
हज़रते बिसमिल तुम्हें किस शोख़ ने बिसमिल किया
क्या किसी क़ातिल से फिर दोचार आंखें होगईं

P. 9362. ग़ज़ल पी० ९३६२

शबे वस्ल वोह रुठ जाना किसी का
वोह रुठे को अपने मनाना किसी का
जवानी प क्यों आप इतरा रहे हैं
रहा एक तरह कब ज़माना किसी का
अभी थाम लोगे तुम अपने जिगर को
सुनो तो सुनायें फ़िसाना किसी का
कभी बुतकदे में कभी है हरम में
है दोनों घरों में ठिकना किसी का
वोह कुछ सोचकर हो लिये उसके पीछे
जनाज़ा हुवा जब रवाना किसी का
मिला ख़ूब आराम मिट्टी में मिलकर
फ़लक बन गया शामियाना किसी का

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

इसे नाशाद करते हो उसे बरबाद करते हो

ज़माने पर तुम एक न एक सितम ईजाद करते हो
सुना है हुक्म औरों को दिया तुमने रिहाई का
मगर देखूं मुझे कब क़ैद से आज़ाद करते तो
हमें इतना बतादो बस हमें तसकीन होजाये
किसी दिन भूले बिसरे तुम हमें भी याद करते हो
जफ़ा भी मुझ प करते हैं वह मुझसे पूछते भी हैं
ये क्या तुमको हुवा है किस लिये फ़रयाद करते हो
अदू के साथ अकसर हिचकियां तुमको भी आती हैं
तुम्हें वह याद करता है उसे तुम याद करते हो

पण्डित वासदेव

P. 7041. भजन पी० ७०४१

दोहा—कहीं प राम बना और कहीं प श्याम बना
कहीं प भारती, कहीं प जा इस्लाम बना
कहीं मैख़ानों में रिन्दों का जाके जाम बना
कहीं हसीनों में बन ठन के दिले आराम बना
(एक भगत भगवान कृष्ण के आके फ़रियाद करता है)
कब तलक बैठे रहोगे कृष्ण जी रूठे हुए
लोग क्या कहेंगे यह जो वायदे झूठे हुए
आके फिर इस हिन्द में बन्सी बजादो प्रेम की
फिर से मिल जायेंगे जो आपस में हैं दिल टटे हुए

आप गर आकर के जोड़ें तब तो कुछ मुशकिल नहीं
वरने जुड़ सकते नहीं हैं आइने टूट हुए
हिन्दुओं की क्या कहें हालत कही जाती नहीं
बैठे हैं कायर बने मारे हुए टटे हुए
ऐ प्यारे श्याम सुन्दर दरश ज़रा दिखा जा
भारत निवासियों का दुखड़ा तू ही मिटाजा
एक दूसरे के हाथों नाला है हिन्द वाले
कीना व बुग़ज़ दिल से इनके तू ही मिटा जा
गङ्गाधर भगतों प गर यूंहीं ज़ुल्म होते रहे
किस तरह मोहन रहोगे आप फिर छूटे हुए

दूसरी तरफ़ :— भजन

दोहा—हम अपने सतियों की सत्यता को कह रहे हैं सुना सुना कर
निभाया पतिव्रत धर्म न हारी हज़ार मुशकिल उठा उठा कर
(माताओं! तुम्हारा क्या धर्म है इसे ध्यान देकर सुनो)
रात दिन जपती रहो माला पति के नाम की
बांछा रहती तुम्हे इस परम पति धाम की
लीन हो जाओ पति की चरण रज में देवियो
(तुम्हारा धर्म है कि पति के चरणों की धूल में मिलजाओ
रूप को जानो पति के मूर्ती श्री राम की
(यदि तुम्मारा पति किसी प्रकार से दुखित होजाये तो
तुम्हारा क्या कर्तव्य है)
दुर्भाग्य से गरचे पति हो नेत्राहीन भी
(जिस तरह महा भारत के अन्दर गांधारी के स्वामी धृतराष्ट्र नेत्रा-हीन थे गांधारी ने क्या किया आंखों पर पट्टी बांध कर दुनिया को बत-लाया कि माताओं का क्या कर्तव्य होता है)।

दुर्भाग्य से गरचे पति होजाये नेत्रा हीन भी
तुम भी ऐसी बन रहो आज्ञा है घंनश्याम की
गर सावित्री की तरह सेवा पति की तुम करो
ख़ुद बख़ुद मिल जायेगी सीढ़ी स्वर्ग के धाम की
(बनाने वाला कहता है-यदि तुम ने दूसरे पुरुष का सेवन किया तो दुखित होगी)
दुख ही दुख भोगोगी तुम देखोगी गर नर दूसरा
जिन्दगी में एक घड़ी बीतेगी न आराम की

———:o:———

P. 7244. भजन पी० ७२४४

दोहा—छुप के क्यों बैठा हुआ है श्री कृष्ण भगवान अब
इन्तज़ारी करता है तेरी हिन्दुस्तान अब
कट रही है गौवें बिचारी ऐ मेरे गोपाल जी
था जो कहते स्वर्ग हिन्दुस्तान बना शमशान अब
आये हैं दरस को ऐ शाम तेरे कूचे में
गश्त करते हैं सुबह व श्याम तेरे कूचे में
तेर दीदार की मनमें है तमन्ना रहती
नौकरी करते हैं बेदाम तेरे कूचे में
तरो ख़ातिर तेरे दर प हैं तड़पते हरदम।
ग़र न ख़्वाहिश हो तो क्या काम तेर कूचे में
कोई कहता है दीवाने कोई पागल हमको
कोई करता है यह बदनाम तेरे कूचे में
सांवरे गज की तरह तैयार हो गङ्गा धर प

श्री कृष्ण तुझको बन में गौवें चराते देखा
जमना के तीर तुझ को बन्सी बजाते देखा
प्यासे थे छाछ के तुम भूखेथे दही दूध के
सखियों के घर में तुझ को माखन चुराते देखा
सांवरे गज की तरह तैयार हो गङ्गा धर प
हो जाये मेरा भी कुछ नाम तेरे कूचे में

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

अजब हैरान हूं भगवन तुझे क्यों कर रिझाऊं मैं
इसके जवाब में सनातन धर्म की ओर से उत्तर दिया जाता है-मेरे आर्य समाजी भाई इसे ध्यान देकर सुनें।
श्रद्धा भक्ती से ए भगवन तुझे हर दम रिझाऊं मैं
ले मेवा और कदली फल तेरी सेवा में लाऊं मैं
करूं आवाहन में तेरा यदि हरजा तू व्यापक है
है साखी रूप तो मेरा चहियत घंटी बजाऊं मैं
तू सूक्ष्म से महा सूक्ष्म बसे हर ज़र्रे में तू ही
यह निश्चय रूपी पुष्पों को भला तुझ पर चढ़ाऊं मैं
तू है दाता तू है भोगता तेरा सब आशियाना है
यह दिया अन्न है तेरा तुझे पहिले खिलाऊं मैं
तुम्हारी ज्योती से रोशन हैं सूरज और तारे
यह तेरा रूप देखन को लोक जोति जगाऊं मैं
हज़ारों हैं भुजा तेरी हज़ारों शीश हैं तेरे
कि गणपति प्रेम भक्ती दस्तां चन्दन चढ़ाऊं मैं

———

P. 7483. ग़ज़ल पी० ७४८३

आज कल भारतवासी अपने भारतवासी भाईयों के साथ कितनी हमदरदी करते हैं और अपने हृदय पर कितना विश्वास करते हैं।

घर जला भाई का भाई से बुझाया न गया
क़ौम के वास्ते दुख दर्द उठाया न गया
हाँ रे अपनी कोठी में किये बिजली के तो रौशन लेम्प
देव मन्दर में तो दिया भी जलाया न गया
आप जी भर के तो खाते मलाई माखन को (लेकिन)
सूखा टुकड़ा किसी भूके को खिलाया न गया
बहु बेटियों के लिये लाख उड़ादी मुहरें
(लेकिन धरम के लिये—कोई माँगने को आजाये तो क्या होता है)
धरम के काम में पैसा भी लगाया न गया

बेस्वाओं को तो दें (कितनी हमदरदी रखते हैं बेस्वाओं के साथ और अपनी औरतों के साथ कितनी हमदरी रखते हैं) बेस्वाओं को तो दें साड़ियां रेशम की बहुत (लेकिन पड़ोस में बैठी हुई एक विधवा के साथ कितनी हमदरदी रखते हैं) धोती जोड़ा किसी विधवा को पिनहाया न गया।

ग़ैरो के आगे जा झुक्के हैं कमानी की तरह।
भूल कर सर किसी मन्दर में झुकाया न गया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

हमारी प्राचीन चीजों को आजकल किस तरह से बरता जा राहा है। उनका क्या नाम रखकर उनसे काम लिया जा रहा है :—

सारी बहार गुलिस्ताने रीडर ने छीन ली
रोज़ी तो पण्डितों की टीचर ने छीन ली

बेला चमेली चम्पा कोई अरे सूंगता नहीं
ख़ुशबूये अतर बूये लेवन्डर ने छीन ली
तासीर अर्क़ नाना तासीर बादयान
आइसकिरीम सोडा व जिन्जर ने छीन ली
रथ बहलियों के नाम तो मबज़ूल हो गये
इनकी कमाई अन्जन व मोटर ने छीन ली
वैदक हकीम को कोई पूछता नहीं
हिकमत जो इनकी थी वह तो डाक्टर ने छीन ली
रूमाल की बहार व गुल बन्द की फबन
जो कुछ रही सही थी वह मफ़लर ने छीन ली
क्या क्या कहूँ मैं जोवा यह कलयुग के चलन
हरकत जो बूज़मां थी मिष्टर ने छीन ली

——:०:——

P. 8170. ग़ज़ल पी० ८१७०

इक बाप के दो बेटे क़िस्मत जुदा जुदा है
एक शहनशाह जहाँ का एक फिर रहा गदा है
इश्क़ शजर तो एक है लेकिन समर दो उसके
एक तो भक्त हक़ीक़ी एक रात का घड़ा है
एक ही सदफ़ से मोती दोनों हुये हैं पैदा - - -
एक पिस चुका खरल में एक ताज में जड़ा है - - - -
एक पहाड़ के दो पत्थर हीरा बना एक कन्कर
कोहनूर एक बना है एक गार में पड़ा है
पत्थर तो एक ही है उसके हुये दो टुकड़े
एक की होती है पूजा एक फ़र्श में जड़ा है

चांदी तो एक ही है उसके हुवे टुकड़े
एक सीस का मुकुट है एक पांव का कड़ा है
बर्षा की बूंद बरसाती पड़ती हैं दो के मुंह में
एक सांप ज़हर उगले का खूराक हुवा है
एक ही शजर से दोनों पैदा हुवे हैं गलल्हे
एक है महबूब ज़ीनत एक क़ब्र में चढ़ा है

दूसरी तरफ़ :— आग़ाफ़ैज़—पहाड़ी

शेर ! सुनायें हाल क्या हमदम न जीते हैं न मरते हैं
कलेजा थाम लो अब दिल जले फ़रयाद करते हैं
कलेजा थामकर सुन लीजिये यह मेरा अफ़साना
जलाया इस सितमगर ने है मुझको मिस्ल परवाना
हया देखो बुतों की ग़ैर से मिलना और आशिक़ से
बिगड़ना रूठना त्यारी चढ़ाना और शरमाना
कहा ओ बेहया ग़ैरों के घर देखा तुझे
बोला जो देखा था हयावालों ने तो चाहिये था मरजाना
वह ज़िकरे फ़ज़ मरने पर लगे करने अज़ीज़ों से (क्या)
खुदा बख़्शे वह अच्छा था मगर कुछ कुछ था दीवाना

मि० वज़ीर खां

P. 9742. होली काफ़ी पी० ६७४२

हर दम कैसी होली - - - -
एक बार होली सहस्र बार होली

कब तक रहूं अन बोली -बोली तो घर पइयां झकझोली
ठाढ़ी तकत मंझोली - उड़त रंग झोली प झोरी । -
हर दम कैसी होली - - -
अबीर गुलाल भरो मोरी अखियन - चोली अन्दर ढोली
चोली में देखे सगोली के अमवा
तें जा आन टटोली, बता कहां गेंद लकोली
हर दम कैसी होली - - - -
जाय सखो टोली की टोली - मोहे ठगी एक भोली
करको निली कर आंख मचोली - नक छुख देह टटोली
कहो यह कौन ठठोली । - हर दम कैसी - -

दूसरी तरफ़ :— होलीकाफ़ी

तोरे सांवरे ने गाली दई - हे दई मैं ने कछू ना कही
गारी की गारी टोने का टोना लाख में एक सही
भूप सखी फागुन के दिनन में बदला लूं तो सही
मैं ने कछू ना कहो -
इत गोकुल उत लथुरा नगरी बीच में जमना बही
आप तो सैयां पार उतर गये मैं तकती रही
मैं ने कछू न कही - - - -

—:—:—

सैयद ज़हूर अहमद

P. 9782. ग़ज़ल पी० ६७८२

शान क्या मौला की है अदना को आला कर दिया
दैर को ऐ क़िबलये दीं तू ने काबा कर दिया

दीद को मूसा गये थे ख़ुद गिराकर आब में
तूर को ऐसा जलाया मिस्ल सुरमा कर दिया
आपही बनकर ज़ुलेख़ा आपही आशिक़ हुवे
मिस्र के बाज़ार में यूसुफ़ को रुसवा कर दिया
आरे से कटवा दिया था ज़करिया को तू ने ख़ुद
क्या ज़रा सी बात में इनसाफ़ पूरा कर दिया

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

इस इश्क़ जांगुदाज़ ने मजबूर कर दिया
सीने में दाग़ दाग़ में नासूर कर दिया
तुझ को ख़बर भी है कि सितमगर ने क्या किया
संगे जफ़ा से शीशये दिल चूर कर दिया
मेरी निगाहे यास में दुनिया उजड़ गई
दिल से ख़याले यार हो जब दूर कर दिया
ऐसी शराबे नाब का तालिब नहीं असीर
तेरी निगाहे मस्त ने मख़मूर कर दिया
तेरी निगाहे यास में - - -

मि० ज़मीरुद्दीन ख़ां

P. 6125. ग़ज़ल क़व्वाली पी० ६१२५

ख़ुदा करे न सुने कोई माजरा दिल का
बरोज़ हश्र भी रह जाये नाम क़ातिल का
चला हूं यूं दरे महशर दाद ख़ुवाही को
कि हाथ दिल प रहे लब प है नाम क़ातिल का
सता न मुझको भी ज़ेरे लहद कि हूं मजबूर
लिये हुये गोद में लाशा सितम ज़दा दिल का
यह कह के मर गया इक मुबतलाये दर्द फ़िराक़
जिसे अ. ल की हविस हो वह दाग़ ले दिल का

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल क़व्वाली

ख़दंगे नाज़ जानां कब हमारे दिल से निकलेगा
यह नशतरे जान हो लेगा न यह भी दिल से निकलेगा
न निकला है न निकलेगा मेरा अरमान दिल यारब
जो निकलेगा तो इक दिन ख़ंजर क़ातिल से निकलेगा
इधर शौक़े शहादत है उधर क़ातिल भी कमसिन है
हमारा दम तहे ख़ंजर बड़ी मुशकिल से निकलेगा

मिस्टर काश्यप

P. 9778. मज़ाक़िया दादरा पी० ६७७८

पिया ने मारे नजर के बांस - - -
बांस भी मारे खपचियां भी मारी - लग गई मोरे फांस।
पिया ने मारे - -
शेर। पाजामा चूड़ीदार यह कैसा बना दिया
गोया ग़िलाफ़ तकिये के ऊपर चढ़ा दिया
सुना है कि उनके कमर ही नहीं है
तो फिर वोह पजामा कहां बांधते हैं

गरदन में बाधे हैं यार पजमवा
या नक ही हो रहे खांस। - पिया ने मारे - -
शेर। मशरिक़ी रफ़्तार उलझी मग़रिबी रफ़्तार से
लड़गया छकड़ा हमारा उनकी मोटरकार से
ग़ैर का इतना ख़याल और हमसे ऐसी बेरुख़ी
उसकी नज़रों से, हमारी ली ख़बर पैज़ार से
यार तो मेरो बनो मेमवा - नित नये करत है डांस।
पिया ने मारे - -

दूसरी तरफ़ :— मज़ाक़िया ग़ज़ल

तीर की तेग़ की शमशीर की तलवार की चोंच
बढ़के सब चोंचों से निकली मेरी सरकार की चोंच
जब से फ़रयाद पे खोली है दिले ज़ार ने चोंच
ईद का चांद हुई उस बुते ऐयार की चोंच
लब तलक आया नहीं मेरे कभी हर्फ़ सवाल
मुझसे क्यों फिर गई आख़िर मेरो सरकार की चोंच
जब रक़ीबों से तुझे चोंच मिलाते देखा
रहा गई खुल के तेरी चोंच के बीमार की चोंच
जब रकिबों से तुझे चोंच मिलाते देखा
रह गई खुल के तेरी चोंच गे बीमार की चोंच
नासेहा चोंच भिड़ाता है तू नाहक़ मुझ से
तू न देखी ही नहीं मेरे तरहदार की चोंच

———o———

P. 9843. ग़ज़ल पी० ६८४३

ख़ाक में मिलकर गिला ऐ आसमां किस का करूं
नाम लूं किस बेवफ़ा का किसको मैं रुसवा करूं

तूने तो नाकामियों से अपना दिल बहला लिया
मैं शबे फ़ुरक़त में ऐ जोशे तमन्ना क्या करूं
छेड़ते हो ख़ाब में आकर फ़िसाना हिज्र का
चाहते हो आलमें रोया में भी रोया करूं

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

देखकर तुम को भी हो जायेगी हैरत देखना
दिल्लगी समझे हो आईने में सूरत देखना
लिखा आईने की क़िसमत में वोह सूरत देखना
देखनेवालो ज़रा पत्थर की क़िसमत देखना
रुख़ प आसारे ख़ुशी है ग़ैर भी है साथ साथ
किस तरह आये हैं वोह बैहरे अयादत देखना

मि० के, सी, दे

P. 9844. ग़ज़ल पी० ६८४४

जब तक आंखें वा रहें तेरा ही मुंह देखा करूं
तर रहे जब तक ज़बान मुंह में तेरा चरचा करूं
है यही मेरी तमन्ना है यही मेरी दुआ
सामने बैठा रहे तू और मैं देखा करूं
उम्र आख़िर हो गई मिलता नहीं दिल का पता
कब तक इस खोये हुवे को या ख़ुदा ढूंढा करूं
जुसतुजूये यार में आया है कुछ ऐसा मज़ा
आप को खोकर इसी को उम्र भर ढूंढा करूं-जब तक - -

दूसरी तरफ़ :— ग़ज़ल

उसके कूचे में जो तू ऐ दिल गया
सच बता ग़म के सिवा क्या मिल गया
दिल लगी थी दिल्लगी में दिल गया
दिल लगाने का नतीजा मिल गया
हाय वाह दिल जिस का हम समझे थे दोस्त
जाके दुशमन से हमार मिल गया
खू न मेरा जाश में क्यों आज है
इस तरफ़ से क्या कोई क़ातिल गया
मर मिटे हम हसरत दीदार में
ख़ाक में अरमान सारा मिल गया

—:०:—

पण्डित नत्थू लाल

P. 9633. नया गाना पी० ९६३३

सज्जनो ! जिन को प्रभु पर विश्वास है वोह किसी से डरता नहीं है।

जाके सिर पर सिरजन हार सोई नर कैसे डरै
जैसे केसरी गिरा गुफार विषय बन बन में फिरै
बालक को बेताल डरावैं जब लग समझत नाहीं।
बड़ा हुवा ता ठीक न मानै मल मल नहाय मन माहीं।
सोई नर - - - - - -

गेंडा को बहु डर बूचर का जब लग पड़दे पया
गोरू तुम ज्ञान से परदा फूटा जाई गगन घराइया
जाके सिर पर - - - -
लोक लाज डर ब्रह्म भजन में नाहक़ नर को आवे
चोरा मोरा कोई करे न भुपती के गुण गावे।
जाके सिर पर - - -
भानमती का जब हो पहरा तनु मन पती को देना।
जों तुम सदा रहे सेवा त्रिभुवन में रख लेना।
जाके सिर पर - - -

दूसरी तरफ़ :— नाया गाना

सज्जनों ! जहां देखिये वहां प्रभु ही प्रभु है।

जाती जिधर को नज़रिया हमारी - - -
खिला है यह दुनिया का सुन्दर बग़ीचा।
सब ही डाल पातों में तेरी हरारी
जाती जिधर को - -
करै काठ को नाच पुतली हज़ारों
कला एक तेरी से फिरती हैं सारी।
जाती जिधर को - -
बदलती हैं गत हमेशा जगत की
तुही सब के अन्दर में है निर्विकारी।
जाती जिधर को - - -
तेरी रोशनी से चमकता है अम्बर
ब्रह्मण्ड घट घट में तेरी उजारी।
जाती जिधर को - - -

———

संस्कृत रेकार्ड

मि० बी, सेवाकार बी, ए, बी, ,

P. 9783. गीत गोविन्द राम गौशाला १ पी०६७८३

रतिसुखसारे गतमभिसारे मदननोहर वेशम्
न कुरु नितम्बिनि गमनविलम्बनमनुसर तम् हृदयेशम्।
रतिसुख - - -
धीरसमीरे यमुनातीरे बसति बने बनमाली
पीनपोयोधर-परिसरमर्द्दन-चञ्चल-करयुगशाली।
रतिसुख - - -
नामसमेतम् कृतसङ्केतम् बादयते मृदुवेणम्
बहुमनुते ननु ते तनुसङ्गतपवनचलितमपि रेणम्
मुखरमधीरम् त्यज भन्जीरम् रिपुमिव केलिषु लोलम्।
चल सखि कुञ्जम् सतिमिरपुञ्जम् शीलय नीलनिचोलम्।
रतिसुख - - -

दूसरी तरफ़ :— भाग २

बदसो यदि किञ्चिदपि दन्तरुचिकौमुदी
हरति दरतिमिरमतिघोरम्। हे राधे - - -
स्फुरदधरसिधवे तव बदनचन्द्रमा
रोचयति लोचनचकोरम्। हे राधे - - -
सत्यमेवासि यदि सीदति मयि कोपिनि
देहि खरनयनशरघातम्। हे राधे - - - -
घटय भुजबन्धनम् जनय रदखण्डनम्
येन वा भवति सुखजातम्। हे राधे - - - -

तमसि मम जीवनम् तमसि मम साधनम्
तमसि मम भवजलधिरत्नम्। हे राधे - - -
स्मरगरलखण्डनम् मम शिरसि मण्डनम्
देहि पदपल्लवमुदारम्। हे राधे - - - -

मारवाड़ी रेकार्ड

मिस हुसैनी जान

P. 9745. मांड पी० ६७४५

गुमानी ढोला बेगाने पधारो म्हारे पाउना हो जी म्हारे पाउना
बागो जाजी ढोला गोठी कराजो साथेड़ा ने न्योति जमाउना रे
गुमानो ढोला - - - - -
ऊंचा अनदाता थारी हाजी गेखड़ा नीचे पीछू ला पाल
गुमानी ढोला - - - -

दूसरी तरफ़ :— देस

लागो नैनां रो नेह नहीं छूटै - म्हारे अनदाता से कहियो समझाय
लागो नैनां रो - - -
लग कर आंसू चुन्दर भीजे - थर थर कम्पे म्हारी देह
लागो नैनां रो - - - -

पण्डित लक्ष्मण शर्मा

P. 9746. गीत पी० ९७४६

किने डारी पिचकारी जी गोरी का बदन में - - -
म्हारा चढ़ता जोबन में किन डारी - - -
घूंघट की लपट में समझ गोरी का बदन में किन डारी - - -
म्हारा चढ़ता जोबन में किन डारी - - -
जिन डारी उन मोत्रे बतावो - नातर दूंगी में गारी जी
घूंघट की लपट में समझ गोरी का बदन में किन डारी - - -
बाई साहरा बीर बहूजी रा बेटा बालम मारी पिचकारी जी - -
घूंघट की लपट में समझ गोरी का बदन में किन डारी - -

दूसरी तरफ़ :— गीत

झुटना लियायो ए गोरी थारे पहरवा के ताईं - - -
कइयां पहरो जी ढोला म्हारा घर में सूत बरानी - - -
रखड़ी लियायो ए गोरी थारा पहरवा के ताईं
कइयां पहरो जी ढोला म्हारा घर में सूत बरानी
कटलो लियायो ए गोरी थारा पहरवा के ताईं
कइयां पहरो जी ढोला म्हारा घर में सूत बरानी
तमीनों लियायो ए गोरी थारा पहरवा के ताईं
कइयां पहरो जी ढोला म्हारा घर में सूत बरानी

—— :०: ——

सिंधी रेकर्ड

गुलाम हैदर

P. 8294. संघेड़ा पी० ८२९४

असां जी यार यारी जो ओहां खे को क़दर कोन्हे
असां जी इन्तिज़ारी जो ओहां खे को फ़िकर कोन्हे
घना एही हो रहियां हर हर ओहां जे पेश आया से
ओहां भी शोख चशमी कही असा खे भी सबर कोन्हे
ओहां जो कोह डुह नाहीं ज़मानो ही इहयां आहे
वलेकिन बेवफ़ाई जो असां में को बर कोन्हे
यार सोंहिया घर माना डिसम खुद इहियां था पहनन
असां जीआ अल्लाह वाही हसनन जो डुह कोन्हे
सनाई माठ कर मोंखां मत्थू मारन आजायो आ
असां जे शहर में शायद अनजां ईंड़ो असर कोन्हे
असां जी यार यारी जो ओहां खे को क़दर कोन्हे - - -

दूसरी तरफ़ :— क़व्वाली

अदालत इश्क़ में अरज़ी सनम तोते लगायेंदिस
जलाये खाक कियो मोंखे इहीयां दावा लगायेंदिस
दीवानी ॥ करेउं तुं वे क़लम ही फ़ौजदारी आ
चैन ते तोंझे पांजो खून मां साबित करायेंदिस
जिगर खां दिलदिमाग़ शायद इहीये मुंह सिंधा ते थेंदा
समन सोरन संधा जारी करे तोखे सिडाईंदिस
अगर अन्साफ़ आग़ा जो दुनिया के को न की थिव यारो
क़ियामत में त मौला के हक़ीक़त ही बुधा हेंदिस

मराठी गवैया

पण्डित माधवराव लेले

तरणा बिहाग पी० ७६४७

P.7647.

नादेरे तनत देरेना तदेरेना। नादिर दीर दिर देरेना यललमु
यलली यलले दिम तननननननन तदेरेना यलल मु यलल मु ॥ ध्रु० ॥
नादिर दिर तुदिर दिर तन देरेना तान देरेना तना दिर दिर दिर
तदानात देरेना तन देरेना देर नादिम तदीम तनोम तदरे तदरे
दानो धा धिटतक धुमकिटतक धित्ताकिडान् धातींधा
धिडनग तिरकडतक किडान् तिरकिड् धातिधा किडान्
तधा यलल मु यलल मु ॥ १ ॥

दूसरी तरफ़ :— अडाणा

दाता हो दयाल तूं है। दिन दुनियामें चांद संकट
दुःख हरते मै भुवसुवनें तूं ॥ ध्रु० ॥
मेरी पियवी धीर बंदा होया पिराने पीर।
सीने सीपरकर जग जाने जूं ॥ १ ॥

बंगला गवैया

मिस् इन्दु बाला

एमन पी० ४३९०

P. 4390.

तूमि एसो हे, तूमि एसोहे, तूमि ऐसोहे
एसोहे एसोहे

आमार दलित हियार परते परते
तूमि बोसोहे तूमि वोसो हे—वोसो हे वोसो हे
पातिग्राछि हे थार रतन आशन
रचियाछि देखो कुछम शयन
कोतो अभिलाष कोतो आकिंचन नयनेर कोने तूमि
एक बार चाह हे, एक बार चाह हे
पिक-मूख रित गुंजरित मन्द मलय समीर सिंचित
हे प्रिय सूरहद है चिर वांछित बारे करि तोरे
तुमि हासे हे—तुमि हासे हे, हासे हे

P. 9836. भजन पी० ९८३६

जग झूटा सारा साइयां देख क्यों ललचाया - - - -
माटी में मिल जायगी एक दिन तेरी कंचन काया—जग झूटा - -
सकल जमाती सुख के साथी झूटी ममता माया
बच बच कर चलना पाप ने मोह जाल बिछाय—जग झूटा - -
दुनिया सपना दुनिया का रंग चलता फिरता साया
साथ न कुछ ले जायेगा साथ न अपने लाया—जग झूटा - -

दूसरी तरफ़ :— भजन

बिश्व बात मम भ्रात छांड के कृष्ण भजन को करने दे
धर्म प्रत्येक धर्मी का धरका ध्यान धर्म से धरने दे—बिश्व बात - -
अधर्म पने का अलग ठाड़ी भन्डार भक्ती से भरने दे
नटवर नाव मिली तो भव सागर से तिरने दे
नाश बंद नर नाम छांड के कृष्ण नाम को भजने दे—बिश्व बात - -

P. 9874. परायेमै पी० ९८७४

सपना को बात तो सुनी लइजाउ प्रिया सपना की बात तो
हिजो राती सपना मां पूई घड़ो जांदों
फूलें को माला गले मा राख्यो तिमिले सुनि लिइ जाउ
प्रिया सपना की बात तो - - - -

दूसरी तरफ़ :— ठेठर

प्राण को प्यारा तारा हमारा इ घड़ि जाउ आब मेलें कसरी
स्वामिले पनि मिसुमती लिये हूनू गमो कुमति। प्राण को - - -
ईश्वर को दया हामी मायी भये सागर आब हामी तरने छौ
स्वामिले पनि सो मती लिये हूनू गमो कुमति ईश्वर की दया
हामी माथी यमे सागर आन हामी तरने छे।

—•—

P. 9875. झावरे पी० ९८७५

पीरथी लाम पूछ्रे माया चिचिन कीट धरम लि देउराम
भूइमा हिनिने बादरून हख चडने भइसो कागज काटने
बनवरीत दाउरा काटने कैपी। पीरथी लाम पूछ्रे - - - -
चिउछ साइली चिउछ साइली चिबे चरी
चिउछ तिमिर घरमा भ्याउनू जानू तमाखू को निउछ। पीरथी - -
पाकी गयो अमृत पाना गले पछो खाउला लमकि झमकि
केन गरछौं पलके पछि आउला। पीरथी - - -
आरको साइली हनर आर को साइली कागज काटने सरका
लइ मोरी लाइ लइजाउ मन में येसे लागयो बरख। पीरथी - - -
हिमाल चिली हजार पारी बाट पन्चरले खोला लुकी चोरो
लाछो पिरथी न भनविनु होला। पीरथो - - - -

दूसरी तरफ़ :— (कामिक) झावरे

पापी पेट छबड़ा जाली एस को लागो खाली
कूनत को बाहा पूरी दल्वा घेरुवा हसे लाई लोउफुम खाली
डराउ दो बाग भागदो हाती चाइपेने भलाई
साथी हो थूर थर कामे को सबैले देखछन
एक लइवस उनाती। पापी पेट - - -
वापर बाघ मालु चितुवा ईसब बनमा खाली हेरछु
तरकी भाग छु फरी लूग छू वोडार मटाली। पापी पेट - - -

—•—

गढ़वाली रेकार्ड

मिस्टर काश्यप

P. 9876. पहाड़ी पी० ९८७६

तिले ध्र व बौला बौजी रूम भूम - - -
दिल्ली को टिखट बौ रूम भूम
तू मेरी जोगी बौजी मैं तेरा भक्त बौजी रूम भूम। तिले
बूडड़ी होय जामे बौजी मोस सकाला बौजी रूम भूम - - -
दालम खटाई बौजी रूम भूम हमने किया करना
लागों की बटाई बौजी रूम भूम। तिले ध्र व बौला बौजी - - -

नैपाली रेकार्ड

मि० जीतू सिंह

P. 9871. पीलू बरवा विहाग पी० ९८७१

जगदीश गुण गावनूं भूली बसेऊ तिमि गायक भएऊत प्रीथामए
माता पिता को जीम दोसरीमा सेवा टहल सभूली बसेऊ
मोरे र पछी पिंडा चराएऊ गौदान गरेऊवत कीया गरेएऊ
ब्रह्मकुल मा जन्म लीएऊ तिमि ब्रह्मकुल मै जनै लगाएऊ
मरमर धर्म को जनै लगाएऊ न ऊत कीया भएऊ। जगदीश गुण - -
ब्रह्मकुल मा जन्मले पर नारी माथी नेहां लगाएऊ साधु भएऊत

दूसरी तरफ़ :— विहाग

कसै को पनि रहने छैल मार्तू बहनाई नागर गुमान। कस को - - -
सीरी गुजेसो री पसयनी पएलो चन्दन कपल को अलकन देखाऊ
झलक माया को बन्धन पायो। कसै को - - -
आङ्गनै मा फूलै फुल्यो गाथी डेउन माला कंकू नठ माल्यानेर छन
गोरा गोरा छाला पायो। कसै को - - - - - - - -
पानी माथी अछेर लेखदा लेखदै छैले जून सबै परछ सबै
भाई लाई हुकुम हुन्छ कजलै पायो। कसै को - - -

P. 9872. होरी पी० ९८७२

मज़ा को होरी जाई जानूं लागयो फाटन लागयो छातीमा
कोई बजाऊ छन वाला वमलाउ छन कोई बजाऊ छन बांसरी
आज रंग रंग की होरी मचाऊ छन कृष्ण ब्रिज मा मिलि जुलि
तिमि हामी गोपाल कृशन जो को दासी
भक्ती ज्यानले मंगूल गाउदै इ छन। मज़ा - - -

दूसरी तरफ़ :— होरी

श्रीकृष्ण बलराम गोकुल पूरी मादो होरि खेलू धूम मचाई
बरस की होरी खूब रामरो गारी धूम धाम ले भाई
श्री खेल्द छौंट होरी खेल।
बरी परी गोपिन धूम मचाउ छन। कृष्ण बलराम - - -
बाज वजछन धूम धाम सबै माई नाजद छन। कृष्ण - - -

—:-०-:—

P. 9873. चुडके पी० ९८७३

बाला सन खोला त्यो जालई हाननू माछाचै
परमो वाम यो गितें गाउने को होला मन छउ प्राण
जितु हो मेरी नाम हाथी लाई बुसेन फलम
को लागलो प्राण कसरी काटून दिन जून थिनै देखी
मयो त्यो बात चित एक घन्ट एकैं छिन सोइ दिनै देखनि
दिल मेरो बस्योच्यारा आफमा रातै दिन दिरार
चमक्यो मोति र चमक्यो सूजर की पौखें मा पिरथी मेलं न
जानी लायें प्यारा मस्ती को झोकें मा।

दूसरी तरफ़ :— चुडके

वाकई पो लागयो धाकं पो लागयो बरखइ
ज्यानको रितुले उनाई सौसताई ससाल मागै रमैना गित
धाप्यों निजितूले चौरंगी रोटत उज्यालो भयो गेसं जमान
को मोडें मा आकासें ज्यानै मा हाना जाज लेडने अंग्रज ल्याव
बासांले लाल हीरा जसतो पिथरी यियो घूटामों नियसाले
ठिगठिगे गाड़ी सिमसिमे पानी बजार छनी टिरेटी पस
अमली जोड़ी बिनतो छ हामेरा न घूटौ सयिरथी।

दूसरी तरफ़ :— पहाड़ी

बल ताधिना ताधिना दिल की निसेली मईं को बोली सेजा
गौडी दीनी देजा निरोली गौडी दीनी देजा
आप तो जांदा हंसन खेलन मईं को बाला सेजा। बल ताधिना - -
मारीछ सन्टोलो निरोली मारीछ सन्टोलो
यारों सकनोंदो तेरो सेंदी कोलटो। ताधिना - - -
गयों पीसा बारीक भगयानी गयों पीसा बारीक
मुखडो देखडे निरोली भों भुखडो मारे के
बल ताधिना ताधिना - - -

इति

